नितप्रति पूजार्चना एवं भक्ति हेतु सर्वोपयोगी संग्रह

जिनेन्द्र पूजा एवं भक्ति पाठ

गुणायतन, कुन्दकुन्द मार्ग, मधुवन, पो. शिखरजी-825329 जिला-गिरिडीह (झारखण्ड)

संकलन/सम्पादन
बा. ब्र. अशोक भैय्या

प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन धर्म प्रभावना चातुर्मास समिति एवं
श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र चूलगिरि ट्रस्ट

बावनगजा, बड़वानी (म.प्र.)

पर्वाधिराज पर्यूषण पर्व पर

परम पूज्य मुनिश्री प्रमाणसागर जी एवं

मुनिश्री विराटसागर जी महाराज के

सान्निध्य में आयोजित

श्रावक संस्कार शिविर - 2019 के अवसर पर प्रकाशित

कृति : नितप्रति पूजार्चना एवं भक्ति हेतु सर्वोपयोगी संग्रह

जिनेन्द्र पूजा एवं भक्ति पाठ

संकलन/संपादन

बा. ब्र. अशोक भैया

संस्करण :

तृतीय आवृत्ति 1750 प्रति (2019)

प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन धर्म प्रभावना चातुर्मास समिति एवं

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र चूलगिरि ट्रस्ट

बावनगजा, बड़वानी (म.प्र.)

मूल्य :

स्वाध्याय एवं भक्ति

मुद्रक :

विकास ऑफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स

45, सेक्टर-एफ, औद्योगिक क्षेत्र, गोविन्दपुरा, भोपाल

फोन : 0755-2601952, 9425005624

प्रस्तुति

पर्युषण पर्व के अवसर पर श्रावक संस्कार शिविर का आयोजन वर्तमान में जनता के बीच लोकप्रिय कार्यक्रम बन गया है। सभी के मन में वर्षभर इस आयोजन की प्रतीक्षा रहती है। इस वर्ष यह आयोजन जैन सिद्धक्षेत्र श्री दिगम्बर जैन मंदिर परिसर, बावनगजा, बड़वानी (म.प्र.) में हो रहा है। संत शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विद्यासागरजी महाराज के मंगल आशीर्वाद से उनके ही प्रखर वक्ता, शिष्य गुणायतन प्रणेता पूज्य मुनिवर श्री प्रमाणसागर जी एवं मुनिश्री विराटसागरजी के सान्निध्य में आयोजित उक्त कार्यक्रम में सुधीजनों के पूजा पाठ हेतु कृति के उपयोग को देखते हुए इसे प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा है शिविरार्थियों एवं पाठकों के लिये यह कृति उपयोगी होगी। इसी विश्वास के साथ हम इसे समर्पित कर रहे हैं।

बा.ब्र. आशोक भैय्या

अनुक्रमणिका

दर्शन विधि १
णमोकार महामन्त्र १
दर्शन पाठ (संस्कृत) १

पूजा खण्ड

मंगलाष्टक स्तोत्रम् ३
शुद्धि मंत्रादि ६
अभिषेक पाठ संस्कृत (माघनन्दिकृत) १०
सिद्धयन्त्रस्थापाना १३
सिद्धयंत्राभिषेक १४
श्री जी का अभिषेक पाठ १४
अभिषेक पाठ १५
शान्तिधारा पाठ १६
विनय पाठ २२
नित्य पूजा पीठिका २४
परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ २७
देवशास्त्र गुरु समुच्च पूजन (आ. १०५ पूर्णमति माताजी कृत) २८
समुच्चय पूजन ३२
नवदेवता पूजन (आ. १०५ पूर्णमति माताजी कृत) ३६
श्री चौबीसी समुच्च जिन पूजन (आ. १०५ पूर्णमति माताजी कृत) ४१
अर्घावली ४५
श्री सम्मेदशिखरजी की कूट अर्घ ४८
शांतिपाठ भाषा ५८
विसर्जन ६०
जिन भाषा स्तुति पाठ ६१
श्री आदिनाथ जिन पूजन (आ. १०५ पूर्णमति माताजी कृत) ६३
श्री आदिनाथ जिनपूजन ६७
श्रीपुष्पदन्त जिनपूजा (जिनेश्वर दास कृत) ७१
श्री वासुपूज्य जिन पूजन (आ. १०५ पूर्णमति माताजी कृत) ७५
श्री शांतिनाथ जिन पूजन (आ. १०५ पूर्णमति माताजी कृत) ७९
श्री शान्तिनाथ जिनपूजन ८४
श्री पार्श्वनाथ जिन पूजन (आ. १०५ पूर्णमति माताजी कृत) ८८
श्री पार्श्वनाथ जिनपूजन ९३
श्री महावीर जिन पूजन (आ. १०५ पूर्णमति माताजी कृत) ९७
श्री महावीर जिन - पूजा (कवि वृंदावन दास कृत) १०४
श्री सिद्ध पूजन (संस्कृत) १०८
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर पूजन (कवि द्यानतराय) ११२
श्रीरविव्रत पूजन (कवि द्यानतराय) ११४

सोलहकारण-पूजा (कवि द्यानतराय) ११८
सोलह अंगों के सोलह अर्घ १२१
पंचमेरु-पूजा (कवि द्यानतराय) १२४
दशलक्षणधर्म-पूजा (कवि द्यानतराय) १२७
रत्नत्रय - पूजा (कवि द्यानतराय) १३३
सम्यग्दर्शनपूजा (कवि द्यानतराय) १३४
सम्यग्ज्ञान पूजा (कवि द्यानतराय) १३६
सम्यक्चारित्रपूजा (कवि द्यानतराय) १३७
नन्दीश्वरद्वी - पूजा (कवि द्यानतराय) १३९
क्षमावाणी- पूजा (कवि मल्ल कृत) १४३
रक्षाबन्धनपर्व पूजन १४७
निर्वाणक्षेत्र-पूजा (कवि द्यानतराय) १५२
चारित्र शुद्धि व्रत पूजन (छोटे लाल) १५४
श्री दशलक्षण मण्डल विधान १६०
आचार्य श्रीविद्यासागर पूजन २२०
मुनिश्री १०८ प्रमाणसागरजी महाराज २२३
मुनिश्री १०८ विराटसागरजी महाराज २२७
महावीराष्टक-स्तात्रेम् २३०
भक्तामरस्तोत्र (संस्कृत) २३१
तत्त्वार्थसूत्र २३९
श्रीजिनहसस्त्रनाम-स्तोत्रम् २५०
छह ढाला २६४
मेरी भावना २७५
बारह भावना २७७
निर्वाण काण्ड (भाषा) २८२
सुप्रभात-स्तोत्रम् २८४
आचार्य-वन्दना २८६
आलोचना पाठ २८८
सामायिक पाठ २९१
आरती - पंचपरमेष्ठी २९३
आरती विद्यासागर जी २९४
आरती प्रमाणसागर जी २९४
प्रार्थना २९९
श्रावकप्रतिक्रमण २९९
सामायिक - महिमा ३०६
समाधि-भक्ति ३०८
जिनवाणी-भक्ति ३१०
दर्शन-भावना ३११

आशीर्वचन

पर्युषण पर्व के अवसर पर जिनेन्द्र पूजा एवं भक्ति पाठ के लघु संस्करण की आवश्यकता महसूस की जाती रही है। उसे ही ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत संस्करण को प्रकाशित कर प्रकाशक ने अनुकरणीय पहल की है। मेरा प्रकाशक बन्धुओं को अनेकशः आशीर्वाद।

- मुनि प्रमाणसागर

दर्शन विधि

शुद्ध जल से हाथ–पांव धोकर मन्दिर में प्रवेश करें एवं घर से सामग्री साथ लेकर आवें। खाली हाथ नहीं आना चाहिये। बाद में द्वार पर पहुंचते ही ॐ जय जय जय निस्सही निस्सही निस्सही शब्द का उच्चारण करते हुए मन्दिर में प्रवेश करें। तत्पश्चात् मन्त्र आदि पढ़ें –

णमोकार महामन्त्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।
चत्तारि मंगलं, अरिहंत् मंगलं, सिद्ध मंगलं,
साहू मंगलं केवलिपण्णात्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णात्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णात्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।।
ऐसो पंच णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढ़मं होई मंगलं।।

दर्शन–पाठ

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पापनाशनम्।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम् ।। १ ।।
दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वन्दनेन च।
न तिष्ठति चिरं पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम् ।। २ ।।

वीतराम-मुखं दृष्ट्वा, पद्म-राग-समप्रभम्।
नैकजन्म-कृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ।। ३।।
दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसारध्वान्त-नाशनम्।
बोधनं चित्तपद्मस्य, समस्तार्थ-प्रकाशनम् ।। ४।।
दर्शनं जिनचन्द्रस्य, सद्धर्मामृत-वर्षणम्।
जन्मदाह-विनाशाय, वर्धनं सुखवारिधेः ।। ५।।
जीवादितत्त्वप्रतिपादकाय, सम्यक्त्वमुख्याष्टगुणार्णवाय।
प्रशान्तरूपाय दिगम्बराय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय ।। ६।।
चिदानन्दैक-रूपाय, जिनाय परमात्मने।
परमात्म-प्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः।। ७।।
अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्यभावेन, रक्ष-रक्ष जिनेश्वर ! ।। ८।।
न हि त्राता न हि त्राता, न हि त्राता जगत्त्रये।
वीतरागात् परो देवो, न भूतो न भविष्यति ।। ९।।
जिने भक्ति र्जिनेभक्ति र्जिने भक्ति-र्दिने दिने।
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु सदा मेऽसतु भवे भवे ।। १०।।
जिनधर्मविनिर्मुक्तो, मा भवेच्चक्रवर्त्यपि।
स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि, जिनधर्मानुवासितः ।। ११।।
जन्म-जन्मकृतं पापं, जनमकोटिमुपार्जितम्।
जन्म-मृत्यु-जरा-रोगो, हन्यते जिनदर्शनात् ।। १२।।
अद्याभवत् सफलता नयन-द्वयस्य,
देव ! त्वदीय चरणाम्बुज-वीक्षणेन।
अद्य त्रिलोक-तिलक ! प्रतिभासते मे,
संसार-वारिधिरयं चुलुक-प्रमाणः ।। १३।।

दर्शनपाठ

कविवर बुधजन

प्रभु पतित पावन, मैं अपावन, चरण आयो शरण जी।
यों विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन मरण जी।। १।।
तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धि सेती निज न जान्यो, भ्रम गिन्यो हितकार जी।। २।।
भव विकट वन में करम बैरी, ज्ञान धन मेरो हर्यो।
तव इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिर्यो।। ३।।
धन घड़ी यो धन दिवस यो ही, धन जनम मेरो भयो।
अब भाग मेरो उदय आयो, दरश प्रभु जी को लख लयो।। ४।।
छवि वीतरागी नगन मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरैं।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत, कोटि रवि छवि को हरैं।। ५।।
मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयो।
मो उर हरष ऐसो भयो, मनु रंक चिन्तामणि लयो।। ६।।
मैं हाथ जोड़ नवाय मस्तक, वीनऊँ तुव चरण जी।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहुँ तारन तरन जी।। ७।।
जाचूँ नहीं सुर-वास पुनि, नर-राज परिजन साथ जी।
'बुध' जाजहूँ तुव भक्ति भव-भव, दीजिये शिवनाथ जी।। ८।।

मंगलाष्टक स्तोत्रम्

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः, सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवराः, रत्नत्रयाराधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते मंगलम्।। १।।

श्रीमन्नम्र-सुरासुरेन्द्र-मुकुट-प्रद्योत-रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन - सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्यायोगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मंगलम्।। २।।
सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं, रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री - नगराधिनाय - जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं, चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी, कुर्वन्तु ते मंगलम्।। ३।।
नाभेयादिजिनाः प्रशस्त वदनाः - ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु - प्रतिविष्णु लाङ्गलधराः, सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः, कुर्वन्तु ते मंगलम्।। ४।।
ये सर्वौषधि-ऋद्धयः श्रुततपो वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्गमहानिमित्तकुशलाश चाष्टौ वियच्चारिणाः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो, ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः, कुर्वन्तु ते मंगलम्।। ५।।
ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे, मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा, वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकार-गिरौ च कुण्डल-नगे, द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः, कुर्वन्तु ते मंगलम्।। ६।।
कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः, सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषणामपि चोर्जयन्तशिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः, कुर्वन्तु ते मंगलम्।। ७।।

सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किं वा बहुब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मंगलम्।। ८।।
यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां, जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो, यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुर - प्रवेश-महिमा, सम्पादितः स्वर्गिभिः
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं, कुर्वन्तु ते मंगलम्।। ९।।
इत्थं श्रीजिन-मंगलाष्टकमिदं, सौभाग्य-सम्पत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनै-र्धमार्थ कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय-रहिता, निर्वाण-लक्ष्मीरपि।। १०।।

।। इति मंगलाष्टक-स्तोत्रम् ।।

विद्यासागर-विश्व-वन्द्य-श्रमणं, भक्त्या सदा संस्तुवे,
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं, सर्वार्थसिद्धिप्रदं।
ज्ञानध्यान-तपोभि-रक्तमुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रयं,
साकारं श्रमणं विशालहृदयं, सत्यं शिवं सुन्दरम्।।

अभिषेक के समय ध्यान रखने योग्य

1. शुद्ध धोती दुपट्टा पहनकर प्रासुक जल से ही अभिषेक करें।
2. अमृत स्नान, अंग शुद्धि कर चन्दन लगाकर ही अभिषेक करें।
3. कार्यात्सर्ग पूर्वक दोनों हाथों से विनयपूर्वक श्रीजी को वेदी से उठाकर उच्चासन 'स्नपनपीठ' पर विराजमान करें।
4. पाषाण की प्रतिमा को न उठाकर वहीं गीले कपड़े से मार्जन करना उचित है।

5. श्री जी के चरणों में वस्त्र रखकर अभिषेक करना अनुचित है।
6. दोनों हाथों में कलश लेकर मन्त्रोच्चारण के साथ अभिषेक करें। पंक्तिबद्ध होकर अभिषेक करें।
7. जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक जन्माभिषेक पाठ पढ़ते हुए करना अनुचित है।
8. अभिषेक उपरान्त श्री जी का मार्जन स्वच्छ अहिंसक वस्त्र से करें। श्री जी को आड़ा-तिरछा या उल्टा न करें।
9. श्री जी को परिमार्जन उपरान्त सावधानी पूर्वक वेदी पर विराजमान कर अर्घ्य चढ़ाने के बाद हस्तशुद्धि पूर्वक मुनि, आर्यिका, त्यागी-व्रतियों को गंधोदक देने के उपरान्त स्वयं गंधोदक लें।

जलशुद्धि मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमतेपद्म-महापद्म तिगिंछकेसरि महापुण्डरीक - पुण्डरीक गंगासिन्धु - रोहिद्रो हितास्या-हरिद्धरिकान्ता सीता-सीतोदा-नारीनरकान्ता-सुवर्णरूप्यकूला-रक्ता-रक्तोदाः क्षीराम्भोनिधिशुद्धजलं सुवर्णघटं प्रक्षालित परिपूरितं नवरत्नगन्धाक्षत पुष्पार्चितमोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा इति मंत्रेण जलाभिमंत्रणं करोमि।

(जलशुद्धि कर कलशों में भरें)

अमृत स्नान मंत्र

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणि अमृतं स्त्रावय स्त्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं इवीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(शरीर पर जल सिंचन कर शुद्धि करें)

पात्रशुद्धि मंत्र

अनुष्टुप

शोधये सर्व पात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकली क्रियाम्।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतरजलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(पूजा के बर्तन चटाई आदि शुद्ध करें)

पूजाद्रव्य शुद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं झ्वीं क्ष्वीं हं सः असिआउसा समस्ततीर्थ पवित्र जलेन शुद्ध पात्र निक्षिप्त पूजा द्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

(जल सिंचन कर पूजा द्रव्य शुद्धि करें)

चन्दन तिलक मंत्र

उपजाति

पात्रेऽर्पितं चन्दनमौषधीशं शुभ्रं सुगन्धाह्वात चञ्चरीकम्।
स्थाने नवांके तिलकाय चर्च्यं न केवलं देहविकार हेतोः।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम् सर्वांग शुद्धि हेतवः नव तिलकं करोम्यहम्।

1. मस्तक, 2. शिखा, 3. ग्रीवा, 4. कान, 5. हृदय, 6. दोनों भुजाएं, 7. कलाई, 8. नाभि, 9. पीठ इन नौ स्थानों पर नौ तिलक लगावें।

(नव तिलक करें)

शार्दूलविक्रीडित

श्री मन्मन्दर मस्तके शुचिजलैर्धोते सद्र्भाक्षतैः,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितां त्वत्पाद्पद्मस्त्रजं।

इन्द्रोऽहं निज भूषणार्थक मिदं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्रा कंकण शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे।।
ॐ ह्रीं इन्द्रोचिताभूषणानि अवधारयामि।

(हार मुकुट यज्ञोपवीत धारण करें)

भूमि शुद्धि

ॐ ह्रीं महीपूतां कुरु कुरु ह्वूं फट् स्वाहा।

(भूमि पर जलसिंचन करें)

ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा। (भूमि पर पुष्पक्षेपण करें)

दिग्बंधन

(सभी दिशाओं में बन्द मुट्ठी से पुष्पक्षेपण करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्व दिशातः समागत विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष ह्वूं फट् स्वाहा।

(पूर्व दिशा में पुष्पक्षेपण करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशातः समागत विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष ह्वूं फट् स्वाहा।

(दक्षिण दिशा में पुष्पक्षेपण करें)

ॐ ह्वूं णमो आयरियाणं ह्वूं पश्चिम दिशातः समागत विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष ह्वूं फट् स्वाहा।

(पश्चिम दिशा में पुष्पक्षेपण करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशातः समागत विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष ह्वूं फट् स्वाहा।

(उत्तर दिशा में पुष्पक्षेपण करें)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं ह्रः सर्वदिशातः समागत विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष ह्वूं फट स्वाहा।

(सभी दिशाओं में पुष्पक्षेपण करें)

परिचारक मंत्र

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष ह्रूं नमः स्वाहा (सात बार)

रक्षा मंत्र

ॐ ह्रूं क्ष्रूं फट् किरिटं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्त्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षां क्षः वाः वाः ह्रूं फट् स्वाहा। (अपने ऊपर पुष्पक्षेपण करें)

शान्ति मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्य तेजोमूर्तये नमः श्री शान्तिनाथाय शान्ति-कराय सर्वविघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व परकृतक्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय सर्व क्षामडामरकृतविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट शान्ति कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा नमः सर्वशान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा।

(सभी दिशाओं में पुष्प क्षेपण करें)

मंगल कलश स्थापना

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादि ब्रह्मणो मतेऽस्मिन् विधीयमाने कर्माणि......वीर निर्वाण संवत्सरे,......मासे,...... पक्षे,........तिथौ,.........वासरे प्रशस्त लग्ने नवरत्न गंध पुष्पाक्षत बीज-पूरादि शोभितं.....कार्यस्य निर्विघ्न सम्पन्नर्थं मंगलकलश स्थापनं करोमि श्रीं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(ईशान कोण में कलश स्थापित करें)

मंगल दीपक स्थापना

रुचिर दीप्ति करं शुभ दीपकं सकललोक सुखाकर मुज्जवलम्।
तिमिर जालहरं प्रकरं सदा किल धरामि सुमंगलकं मुदा।।

ॐ ह्रीं अज्ञान तिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

(आग्नेय कोण में दीपक स्थापित करें)

माघनन्दिमुनिकृताभिषेक-पाठ

श्रीमन्-नता-मर-शिरस्तट-रत्न-दीप्ति-
तोयाव-भासि-चरणाम्बुज-युग्म-मीशम्।
अर्हन्त-मुत्नत-पद-प्रद-माभि-नम्य,
तन्मूर्ति-षूद्य-दभिषेक-विधिंकरिष्ये।।

अथ पौर्वाह्निकदेव-वन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण्सकलकर्म क्षयार्थं भावपूजावन्दना स्तव-समेतं श्रीपंचगुरु-भक्ति-पुरस्सरं कायोत्सर्गं कुर्वेऽहम्।

(यह पढ़कर नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

याः कृत्रिमास् तदितराः प्रतिमा जिनस्य,
संस्नापयन्ति पुरुहूत-मुखा-दयस्ताः।
सद्भाव-लब्धि-समयादि-निमित्त योगात्,
तत्रैव-मुज्ज्वल-धिया कुसुमं क्षिपामि।।

इति अभिषेक प्रतिज्ञार्थं पुष्पांजलि क्षिपेत्

(यह पढ़कर थाली में पुष्पांजलि छोड़कर अभिषेक की प्रतिज्ञा करें।)

श्रीपीठक्लृप्ते विशदाक्ष तौघैः, श्रीप्रस्तरे पूर्ण शशांक-कल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्तां, सत्यापयन्तीं श्रियमालिखामि।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमि।

कनकादि - निभं कम्रं पावनं पुण्य-कारणम्।
स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः।।

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थापनं करोमि।

(यह पढ़कर अभिषेक की थाली में सिंहासन स्थापित करें)

भृंगार-चामर-सुदर्पण-पीठ-कुम्भ-
तालध्वजा-तप-निवारक-भूषिताग्रे।
वर्धस्व-नन्द जय - पाठ पदा - वलीभिः,
सिंहासने जिन भवन्त - महं श्रयामि।।

वृषभादि - सुवीरान्तान् जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय भक्त्या पीठे महोत्सवे।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्निह पाण्डुक-शिलापीठे सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ।

श्रीतीर्थकृत्स्नपन - वर्य विधौ सुरेन्द्रः
क्षीरब्धि - वारिभि - रपूरय - दुद्ध - कुम्भान्।
याँस्तादृशा - निव विभाव्य यथा - र्हणीयान्।
संस्थापये कुसुम - चन्दन - भूषि - ताग्रान।।

शातकुम्भीय कुम्भौघान् क्षीराब्धेस् तोय पूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान-चन्दनादि-सुचर्चितान्।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुः कलशस्थापनं करोमि।

(यह पढ़कर चार कोनों में चार कलश स्थापित करें)

आनन्द - निर्भर - सूर - प्रमदादि - गानै-
र्वादित्र - पूर - जय - शब्द - कलप्रशस्तैः।
उदगीय - मान - जगती - पति - कीर्ति - मेनां,
पीठस्थलीं वसु - विधार्चन - योल्लसामि।।

ॐ ह्रीं स्नपनपीठ स्थिताय जिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म - प्रबन्ध - निगडै - रपि हीन - ताप्तं,
ज्ञात्वापि भक्ति - वशतः परमादि - देवम्।
त्वां स्वीय - कल्मष - गणोन्मथ - नाय देव,
शुद्धोदकै - रभिनयामि महा - भिषेकम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वुं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर-जलेन जिनमभिषेचयामीति स्वाहा।

तीर्थोत्तम - भवै-र्नीरैः, क्षीर - वारिधि - रूपकैः।
स्नपयामि सुजन्माप्तान्, जिनान् सर्वार्थसिद्धिदान्।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

सकल भुवननाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै,
रभिषव - विधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदिभषव - वारां बिन्दुरकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विदधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं झं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं हः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति बृहच्छान्ति मन्त्रेणाभिषेकं करोमि।

(यह पढ़कर चारों कोनों में रखे हुए चार कलशों से अभिषेक करें)

पानीय - चन्दन - सदक्षत - पुष्प - पुञ्ज,
नैवेद्य - दीपक - सुधूप - फलव्रजेन।
कर्माष्टक - क्रथन - वीर - मनन्त शक्तिं,
सम्पूजयामि महसा महसां निधानम्।।

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हे तीर्थपा निज - यशो धवली - कृताशाः,
सिद्धौपधाश्च भव - दुःख महागदानाम्।
सद्भव्यहृज्जनित पंक - कबन्ध कल्पा,
यूयं जिनाः सतत् शान्तिकरा भवन्तु।।

(यह पढ़कर शांति के लिए पुष्पांजली छोड़ें)

नत्वा मुहु - र्निज-करै - रमृतोप - मेयैः।
स्वच्छै - र्जिनेन्द्र तव चन्द्र करावदातैः।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्तरम्ये,
देहे स्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि।।

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बपरिमार्जनं करोमि।

(यह पढ़कर शुद्ध और स्वच्छ वस्त्र से प्रतिमा जी को पोछें)

स्नानं विधाय भवतोऽष्ट सहस्रनाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम्।
जिघृक्षुरिष्टमिन तेऽष्ट - तयीं विधातुं,
सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि।।

श्री ह्रीं श्रीसिंहासनपीठे जिनबिम्बं स्थापयामि।

जल गन्धाक्षतैः पुष्पैश्चरुदीप सूधूपकैः।
फलैरर्घै - र्जिनमर्चे जन्म दुःखापहानये।।

ॐ ह्रीं श्री पीठस्थितजिनाय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नत्वा - परीत्य - निजनेत्र - ललाटयोश्च,
व्यातु - क्षणेन हरतादघ - संचयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते तव पादयोगाद्,
भूयाद् भवातपहरं घृतमादरेण।।
मुक्ति श्री वनिता करोदकमिदं पुण्यांकुरोत्पादकं,
नागेन्द्र त्रिदशेन्द्र चक्र पदवी राज्याभिषेकोद्कम्।
सम्यग्ज्ञान - चरित्र - दर्शनलता - संवृद्धि - सम्पादकं,
कीर्ति श्रीजयसाधकंतवजिनस्नानस्य गन्धोदकम्।।

ॐ ह्रीं श्रीजिन - गन्धोदकंस्वललाटेधारयामि।

इमे नेत्रे जाते सुकृतजलसिक्ते सफलिते।
ममेदं मानुष्यं कृतिजनगणादेयमभवत्।।
मयीयाद् - भल्लाटादशुभतर - कर्माटन मभूत्।
सदेदृक् पुण्याह र्मम भवतु ते पूजन विधौ।।

(यह पढ़कर पुष्पांजलि छोड़े)

सिद्धयन्त्रस्थापाना

मध्येतेजः ततः स्याद्, वलयमथधनुः संख्यकोष्ठेषु पञ्च,
पूज्यन्संस्थाप्य वृत्ते, तत उपरितने द्वादशाम्भोरुहाणि।

तत्रस्यु-मंगलान्युत्तमशरणपदान्, पञ्चपूज्या महर्षीन्,
धर्मपख्याति भाजः त्रिभुवनपतिना वेष्ठयेदं कुशाढ्यम्।।

इति पठित्वा उच्चचतुष्पादे अभिषेकस्थाल्यां सिंहासने सिद्धयन्त्रस्थापनं विदधीत्।

सिद्धयंत्राभिषेक

स्नात्वा शुभाम्बरधरः कृतस्वान्तगुप्तिः,
यन्त्रं निवेश्य शुचिपीठवरेऽभिषिञ्चेत्।
ॐ भू र्भुवः स्वरिह मंगलयन्त्रमेतत्,
विघ्नौघवारकमहं परिषेचयामि।।

ॐ भू र्भुवः स्वरिह विघ्नौघवारकं यन्त्रं वयं परिषिञ्चयामः।

(इस पद्य और मन्त्र को पढ़कर यंत्राभिषेक किया जावे)

श्री जी का अभिषेक पाठ

तर्ज - सुरपति ले अपने शीश..........

श्री जी का अभिषेक करें, हम नेक शुद्ध जल द्वारा
धुल जाये पाप हमारा........................
श्री जी अनन्त गुण वाले हैं, वे परम् शुद्ध तन वाले हैं
इनके चरणों में वंदन कर शत् वारा, फिर करें शुद्ध जल धारा
श्री जी का अभिषेक करें, हम नेक शुद्ध जल द्वारा
धुल जाये पाप हमारा....................
सुर इन्द्र लोक भी स्वर्गो में, अभिषेक करें जिन भवनों में
है पूज्य अकृत्रिम बिम्ब सकल सुर द्वारा, स्वर्गों में भी सुखकारा
श्री जी का अभिषेक करें, हम नके शुद्ध जल द्वारा
धुल जाये पाप हमारा....................

त्रय आष्टाह्निक के पर्वों में, श्री नंदीश्वर के भवनों में
सुरपति भी जाते लेकर सब परिवारा, अभिषेक करें हर–बारा
श्री जी का अभिषेक करें, हम नेक शुद्ध जल द्वारा
धुल जाये पाप हमारा..............
श्री जी पर जल जो ढारत है, वह गंधोदक सुख कारक है,
मैना सुन्दरी ने गंधोदक के द्वारा, किया क्षण में कोढ़ निवारा.......
श्री जी का अभिषेक करें, हम नेक शुद्ध जल द्वारा
धुल जाये पाप हमारा.................
गंगा की धारा पर्वत से, गिरती है श्री जी के सिर पे
इसीलिए तो जग में जन–जन द्वारा, पूजित है गंगा धारा
श्री जी का अभिषेक करें, हम नेक शुद्ध जल द्वारा
धुल जाये पाप हमारा...................
सुर गणधर जिन्हें न छू पाये, हम आज इन्हें है छू पाते
यह धन्य घड़ी मिल जाये बारंबारा, यह भाव–भक्ति कर धारा
श्री जी का अभिषेक करें, हम नेक शुद्ध जल द्वारा
धुल जाये पाप हमारा.................
सुख शांति अगर तुम चाहो तो, झट धोती पहिनकर आओ तो
कर एक बार तो प्रभु की शान्ति धारा, बने जीवन उत्तम सारा
श्री जी का अभिषेक करें, हम नेक शुद्ध जल द्वारा
धुल जाये पाप हमारा................

अभिषेक पाठ

(भजन)

धीरे-धीरे चलो जी मंदिर, भगवन के गुण गाने को।
बढ़ते चलो हजारों लोगो, वीतरागता पाने को।। टेक।।

घर से मेरे भाव बने, मैं मन्दिर जी में जाऊँगा-२
वीतराग के दर्शन करके, मन ही मन हर्षाऊँगा-२
शान्ति प्रभु का दर्शन करता-२, पाप अनन्त मिटाने को।। १।।
बढ़ते चलो........।

भक्ति भाव से दर्शन करके, कूप से जल भर लाऊँगा-२
दोनों हाथ में कलश को लेकर, भगवन को नहलाऊँगा-२
ऐसा भव्य जीव ही करते-करते, अपने दुःख मिटाने को।। २।।
बढ़ते चलो.......।

थाल में अष्टदरब को लेकर, पूजन विधि को रचाऊँगा-२
भगवन के गुण पाने को मैं, गुणाराधना गाऊँगा-२
देव, शास्त्र, गुरु पूजन करता-२, रत्नत्रय गुण पाने को।। ३।।
बढ़ते चलो......।

हे प्रभु ! आप तो केवलज्ञानी, तीनों लोक विजेता हो-२
हे प्रभु ! आप तो सिद्ध स्वरूपी, मुक्तिपथ के नेता हो-२
मेरा मुझसे मिलन करा दो-२, मंजिल अपनी पाने को।। ४।।
बढ़ते चलो........।

हे प्रभु ! चरण कमल द्वय तेरे, मेरे हृदय रहें पल-पल-२
मुक्ति न पा लूं तब तक भगवन, कर दूं नाश करम दल मल-२
सम्यक् बोध दिला दो उर में-२, मरण समाधि पाने को।। ५।।
बढ़ते चलो.......।

शान्तिधारा पाठ

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्रीवीतरागाय नमः ह्रीं णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं। चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहु

लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो चत्तारि सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः सर्व शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः

श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षाम-डामर-विघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ ह्रूं क्ष्रूं फट् किरिटं किरिटिं घातय घातय पर विघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्त्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द-छिन्द परमन्त्रान् भिन्द-भिन्द क्षांः क्षः वाः वाः ह्रूं फट् सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय अशोक तरुसत्प्रातिहार्य मण्डिताय अशोकतरु सत्प्रातिहार्यशोभन पदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय अशोक तरुसत्प्रातिहार्य मण्डिताय अशोकतरु सत्प्राहितहार्यशोभन पदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्यशोभन पदप्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्यमण्डिताय दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्यशोभनपद प्रदाय म्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय चामरोत्तोलन-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय चामरोत्तोलन-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय र्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय सिंहासनसत्प्रातिहार्य मण्डिताय सिंहासन सत्प्रातिहार्यशोभन पदप्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय भामण्डलसत्प्रातिहार्यमण्डिताय भामण्डलसत्प्रातिहार्यशोभन पदप्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दुन्दुभिसत्प्रातिहार्यमण्डिताय दुन्दुभिसत्प्रातिहार्य शोभन पदप्रदाय स्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय छत्रत्रय सत्प्रातिहार्यमण्डिताय छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य शोभन पदप्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय प्रातिहार्याष्ट सहिताय बीजाष्टमण्डन मण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं सर्वशान्तीर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्तवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणपरक्कमाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभयारिणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचबलीणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिइसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाण सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो लोए सव्वसिद्धायदणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि महावीरवड्ढमाणबुद्धिरिसिणो चेदि सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ णमो भयवदो वड्ढढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलं तं गच्छई आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जुए वा विवादे व रणांगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीव-सत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा।

तव भक्तिप्रसादात्-लक्ष्मी-पुर-राज्यगेहपद-भ्रष्टोपद्रव-दारिद्रोद्-भवोपद्रव-स्वचक्र-परचक्रोद् भवोपद्रव-प्रचण्ड-पवनानल-जलोद्-भवोपद्रव-शाकिनी-डाकिनी-भूत-पिशाच-कृतोपद्रव-दुर्भिक्षव्यापार-वृद्धि-रहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु।

श्रीशान्तिरस्तु शिवमस्तु जयोऽस्तु नित्यमारोग्यमस्तु अस्माकं तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु समृद्धिरस्तु कल्याणमस्तु सुखमस्तु अभिवृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रधनानि सदा सन्तु।

सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्ण-कल्याण-मंगलरूप-मोक्षपुरुषार्थश्च भवतु।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु-शान्तिं भगवान् जिनेन्द्र।।
प्रध्वस्त घाति कर्माणः, केवल - ज्ञान - भास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिं, वृषभाद्या जिनेश्वराः।।

।। इति शान्तिधारा।।

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ ।। १।।
अनंत चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति-वधु के कंत तुम, तीन भुवन के राज ।। २।।
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि-शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार ।। ३।।
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो धरता निज गुण रास ।। ४।।
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँजग भूप ।। ५।।
मैं वन्दौं जिनदेव को, करि अति निरमल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव।। ६।।
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथ-पति, आतम गुण भंडार ।। ७।।
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल ।। ८।।
तुम पद- पंकज पूजतैं, विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरौं, विष निरविषता थाय ।। ९।।
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आत तैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप ।। १०।।
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन।। ११।।
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव।। १२।।

थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव।। १३।।
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव।। १४।।
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ।। १५।।
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करने लग्यो तुम सेव ।। १६।।
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार ।। १७।।
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान ।। १८।।
तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ।। १९।।
जो मैं कह-हूँ और सौं, तो न मिटैं उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार ।। २०।।
वंदों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदन जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश ।। २१।।
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधुनमि, रच्यो पाठ सुखदाय ।। २२।।
मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान ।। २३।।
मंगल जिनवर पर नमों, मंगल अर्हंत देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दों स्वयमेव ।। २४।।
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय ।। २५।।

मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म ।। २६।।
या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल "नाथूराम" यह, भव सागर दृढ़ पोत ।। २७।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि

नित्य पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं अरिहंत मंगलं सिद्ध मंगलं
साहू मंगलं केवलिपण्णात्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंत लोगुत्तमा सिद्ध लोगुत्तमा
साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णात्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंत सरणं पव्वज्जामि
सिद्ध सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि
केवलिपण्णात्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते ।। १।।
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ।। २।।
अपराजितमंत्रोऽयं, सर्व-विघ्नविनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः ।। ३।।
एसो पंच-णमोयारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलं।। ४।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम् ।। ५।।
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ।। ६।।
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनीभूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे ।। ७।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।।

पंचकल्याणक का अर्घ

उदक चंदनतण्डुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ

उदकचंदनतण्डुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्त्रनाम का अर्घ

उदकचंदनतण्डुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसु-धूपकलार्घकैः।।
धवजमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे जिननाम यजामहे।।

ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ

उदक चंदनतण्डुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसु-धूपफलार्घकैः।
धवजमंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि तत्त्वार्थसूत्र दशाध्याय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वादनायक - मनंतचतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर,
जैनेन्द्रयज्ञविधि-रेष-मयाऽभ्यधायि ।। १।।
स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुंगवाय,
स्वस्ति स्वभावमहिमोदयसुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्ज्जितदृङ् मयाय,
स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुत-वैभवाय ।। २।।
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोधसुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय।। ३।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमि यज्ञम् ।। ४।।
अर्हन् पुराणपुरुषोत्तम पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिञ्ज्वलद्विमल-केवलबोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ।। ५।।

ॐ विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

स्वस्ति मंगलपाठ

श्रीवृषभो नः स्वस्ति स्वस्ति श्री अजितः।
श्रीसंभवः स्वस्ति स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।

श्रीसुमतिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति स्वस्ति श्रीवासु-पूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीनेमिनाथः ।
श्री पार्श्वः स्वस्ति स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

(प्रत्येक श्लोक के बाद पुष्प क्षेपण करें)

नित्याप्रकंपाद्भुतकेवलौघाः, स्फुरन्मनःपर्ययशुद्धबोधाः।
दिवयावधि-ज्ञानबलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। १।।
कोष्ठस्थ-धान्योपममेक-बीजं, संभिन्न-संश्रोतृपदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। २।।
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा-दास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान्मतिज्ञानबलाद्वहंतः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। ३।।
प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक-बुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टाङ्गनिमित्तविज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।४।।
जंघानलश्रेणि-फलांबु-तंतु-प्रसून-बीजाङ् कुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गणस्वैरविहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।५।।
अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। ६।।

सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुःपरमर्षयो नः।।७।।
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर-परा क्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणं चरंतः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।८।।
आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशीर्विषाविषा दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्लविड्जल्लमलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।९।।
क्षीरं स्त्रवंतोऽत्र घृतं स्त्रवंतो, मधुस्त्रवंतोऽप्यमृतं स्त्रवंतः।
अक्षीण-संवास-महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।१०।।

।।इति परमर्षिस्वस्तिमङ्गलविधानं परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपानि।।

देवशास्त्र गुरु समुच्च पूजन

(आर्यिका पूर्णमति जी)

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

देव जिनेन्द्र दिगम्बर गुरु को, जिनवाणी को वंदन है।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्धों को अभिनंदन है।।
जड़ रत्नों की रक्षा करते, काल अनंत गँवाया है।
तीन रत्न शाश्वत निधि पाने, अब दास शरण में आया है।। १।।
वीतरागता सार जगत में, जब से मैंने जाना है।
प्रभु पूजा से सिद्धालय को, पाना मैंने ठाना है।
हृदयांगन में करूँ प्रतीक्षा, नाथ बुलाने आया हूँ।
ज्ञान वेदी पर आन विराजो, यही भाव ले आया हूँ ।। २।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवाशास्त्रगुरु समूह ! विद्यमानविंशतितीर्थंकर समूह !
अनंतानंतसिद्धपरमेष्टि समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरु समूह ! विद्यमानविंशतितीर्थंकर समूह।
अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठि समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरू समूह ! विद्यमानविंशतितीर्थंकर समूह !
अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठि समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(ज्ञानोदय छंद)

ज्ञान सिंधु लहराता मुझमें, फिर भी राग में जलता हूँ।
जलन सही ना जाती मुझसे, प्रभु आश पर पलता हूँ।।
देव शास्त्र गुरू विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूं।
सिद्धप्रभु का ध्यान धँरू मैं, राग आग का शमन करूं।। १।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंत सिद्ध परमेष्टिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

चंदन का शीतल स्वभाव पा, द्वेष अनल में झुलस गया।
किन्तु सौम्य जिन मूरत लख कर, सारे जग को भूल गया।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूं।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, द्वेष दाह का शमन करूं ।। २।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं....।

अक्षयपुर का वासी होकर, खंडित सुख को चाह रहा।
नंत बार धिक्कार मुझे है, निज स्वभाव से दूर रहा।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूं।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, अक्षय पद का वरण करूँ ।। ३।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंत सिद्ध परेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्....।

कल्पतरु सम स्वभाव मेरा, ज्ञान पुष्प सुरभित होते।
काम भोग की आंधी में सब, फूल गिरे धूमिल होते।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, निज स्वरूप में रमण करूँ ।। ४।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं...।

समता रस का कूप भरा है, फिर भी तृष्णा प्यासी है।
स्वयं नाथ होकर इच्छा की, बनी चेतना दासी है।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, अध्यातम रस पान करूँ ।। ५।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं....।

ज्ञान सूर्य चेतन प्राची में, अनंत किरणों वाला है।
फिर भी मिथ्यातम ने घेरा, छाया घोर अंधेरा है।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, मोह तिमिर का नाश करूँ ।। ६।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

चेतन गृह में चिन्मय धूप, निरंतर जलती रहती है।
फिर भी भाव कर्म की शक्ति, मुझको छलती रहती है।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, अष्ट कर्म विध्वंस करूँ ।। ७।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं....।

रत्नत्रय तरुवर पर सुंदर शिवफल प्राप्त किया स्वामी।
पुण्य फलों में राग भाव कर, भटक रहा मैं भवगामी।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, मोक्ष महा पद प्राप्त करूँ ।। ८।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं....।

जल फलादि वसु द्रव्य मिलाकर, अर्घ्य चढ़ाऊँ मैं स्वामी।
दर्शन ज्ञान चरित गुण आदि, निज में प्रगट करूँ स्वामी।।

देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, अनर्घ्य पद को प्राप्त करूँ ।। ९ ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं....।

जयमाला

(चौबोला छंद)

चार घातिया सर्व नाश कर अर्हत पद को पाया है।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, प्रभु को शीश नवाया है।।
छियालीस गुण कहने को हैं, अनंत गुण के धारी हैं।
नंत चतुष्टय युक्त जिनेश्वर, तीन लोक हितकारी हैं ।। १।।
बिन इच्छा खिरती उपकारी, मेघ गर्जना समवाणी।
स्व-पर भेद विज्ञान कराती, तीन जगत की कल्याणी।।
तालु ओष्ठ कंठादि न हिलते, नहीं बदलती मुख कांती।
द्वादशांग ओंकारमयी हैं, सर्व अंग से है खिरती ।। २।।
वर्तमान के भरत क्षेत्र में, सिद्ध और अरहंत नहीं।
तीन परमपद धारी दिखते, सूरी पाठक और मुनी।।
सूरीश्वर पाठक साधू गण, रत्नत्रय के धारी हैं।
पथ भूलों को राह दिखाते, गुरुवर भव दुख हारी हैं ।। ३।।
मन वच तन से गुरु चरणों में, अपना शीश झुकाता हूँ।
जिनवर सी पावन मुद्रा लख, जीवन अर्पण करता हूँ।।
विदेह जाने की नहीं शक्ति, अतः यहीं से नमन करूँ।
सीमंधर से अजितवीर्य तक, बीस तीर्थंकर नमन करूँ ।। ४।।
एक साथ इक शत सत्तर भी, तीर्थंकर हो सकते हैं।
किंतु न्यूनतम बीस तीर्थंकर, विदेह में ही होते हैं।।
ढाई द्वीप के पन विदेह में, विद्यमान जिन को वंदन।
समवसरण के मध्य विराजे, श्रद्धा से कर लूँ अर्चन ।। ५।।

शीघ्र दर्श प्रत्यक्ष मुझे हो, यही भावना भाता हूँ।
भावों से जब वंदन करता, समीप ही मैं पाता हूँ।।
मुक्ति का ही लक्ष्य बनाकर, सिद्धप्रभु का ध्यान धरुँ।
अभेद रत्नत्रय को पाऊँ, सिद्धक्षेत्र में वास करुँ ।। ६।।
सम्यक् दर्शन देव, शास्त्र से ज्ञान, गुरु से चारित हो।
बीस तीर्थ दर्शन से शांति, सिद्ध दर्श से सिद्धि हो।।
देव शास्त्र गुरु पर श्रद्धा हो, बीस तीर्थंकर वंदन हो।
सिद्ध शुद्ध पावन परमेष्ठी अष्टकर्म मम खंडन हो ।। ७।।

दोहा

अनुपम जग में आप हो, इच्छित फल दातार।
शाश्वत शिव फल दीजिये, प्रभु पूजा आधार ।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं....।

घत्ता

प्रभुवर को पूज, शिव पथ सूझे, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

समुच्चय पूजन

देव-शास्त्र-गुरु नमन करि, बीस तीर्थंकर ध्याय।
सिद्ध शुद्ध राजत सदा, नमूँ चित्त हुलसाय।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुसमूह! विद्यमानविंशतितीर्थंकर समूह! अनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं परिपुष्पांजलिं क्षिपामि।

अनादिकाल से जग में स्वामिन्, जल से शुचिता को माना।
शुद्ध निजातम सम्यक् रत्नत्रय, निधि को नहीं पहिचाना।।

अब निर्मल रत्नत्रय-जल ले, श्रीदेव-शास्त्रगुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-आताप मिटावन की, निज में ही क्षमता समता है।
अनजाने अब तक मैंने, पर में की झूठी ममता है।
चन्दन सम शीतलता पाने, श्रीदेव-शास्त्रगुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद के बिन फिरा जगत की, लख चौरासी योनी में।
अष्ट कर्म के नाश करन को, अक्षत तुम ढिंग लाया मैं।।
अक्षय निधि निज की पाने अब श्रीदेव-शास्त्रगुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धी से आतम ने, शील स्वभाव नशाया है।
मन्मथ बाणों से बिन्ध करके,चहुँगति में दुःख उपजाया है।।
स्थिरता निज में पाने को, श्रीदेव-शास्त्रगुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस-मिश्रित भोजन से, ये भूख न मेरी शान्त हुई।
आतम रस अनुपम चखने से, इन्द्रिय-मन इच्छा शमन हुई।।
सर्वथा भूख के मेटन को, श्रीदेव-शास्त्रगुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़-दीप विनश्वर को अब तक, समझा था मैंने उजियारा।
निज-गुण दरशायक ज्ञानदीप से, मिटा मोह का अंधियारा।
ये दीप समर्पित करके मैं, श्रीदेव-शास्त्रगुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये धूप अनल में खेने से, कर्मों को नहीं जलायेगी।
निज में निज की शक्ति ज्वाला, जो राग द्वेष नशायेगी।।
उस शक्तिदहन प्रगटाने को, श्रीदेव-शास्त्रगुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता बदाम श्रीफल लवंग, चरणन तुम ढिग मैं ले आया।
आतमरस भीने निज गुण फल,मम मन अब उनमें ललचाया।।
अब मोक्षमहाफल पाने को, श्रीदेव-शास्त्रगुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता से, निज में निजगुण प्रकट किये।।
यह अर्घ समर्पण करके मैं, श्री देव-शास्त्रगुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

देव शास्त्र गुरु बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु भगवान।
अब वरणूँ जय मालिका, करूँ स्तवन गुणगान।।

नसे घातिया कर्म जु अर्हन्त देवा,
करे सुर-असुर-नर-मुनि नित्य सेवा।
दरश-ज्ञान-सुख-बल अनन्तों के स्वामी,
छियालीस गुण युत महा ईश नामी।।1।।

तोरी दिव्य-वाणी सदा भव्य मानी,
महा-मोह विध्वंसिनी मोक्ष-दानी।
अनेकान्तमय द्वादशांगी बखानी,
नमो लोक माता श्री जिनवाणी।।2।।

विरागी अचारज उवज्झाय साधू
दरस-ज्ञान भण्डार समता अराधू।
नगन वेशधारी सु एका विहारी,
निजानन्द मंडित मुकति पथ प्रचारी।।3।।

विदेहक्षेत्र में तीर्थंकर बीस राजें,
विहरमान बन्दूं सभी पाप भाजें।
नमूँ सिद्ध निर्भय निरामय सुधामी,
अनाकुल समाधान सहजाभिरामी।4।।

देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर, सिद्ध हृदय बिच धर ले रे।
पूजन ध्यान गान गुण करके, भव सागर जिय तर ले रे।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत भविष्यत वर्तमान की, तीस चौबीसी मैं ध्याऊँ।
चैत्य चैत्यालय कृत्रिमाकृत्रिम, तीन लोक के मन लाऊँ।।

ॐ ह्रीं त्रिकाल सम्बन्धी तीस चौबीसी के त्रिलोक सम्बन्धी कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालयेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्य भक्ति आलोचन चाहूँ, कायोत्सर्ग अघ नाशन हेतु।
कृत्रिमाकृत्रिम तीनलोक में, राजत हैं जिन बिम्ब अनेक।।
चतुर निकाय के देव जजे लें, अष्ट द्रव्य निज भक्ति समेत।
निज शक्ति अनुसार जजूँ मैं, कर समाधि पाऊँ शिवखेत।।

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसम्बन्धिजिनबिम्बेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व मध्य अपराह्न की बेला, पूर्वाचार्यों के अनुसार।
देव वन्दना करूँ भाव से सकल कर्म की नाशन हार।।
पंच महा गुरु सुमरन करके कायोत्सर्ग करूँ सुखकार।
सहज स्वभाव शुद्ध लख अपना जाऊँगा अब मैं भव पार।।

।। पुष्पाँजलिं क्षिपेत् ।।

(नौ बार णमोकार मंत्र जपें)

नवदेवता पूजन

स्थापना

(गीता छंद)

अरि चार घाति विनाश कर,अरहंत पद को पा लिया।
पुरुषार्थ प्रबल किया प्रभो, मुक्तीरमा को वर लिया।।
अरहंत पथ पर चल रहे, आचार्य पद वंदन करूँ।
उवज्झाय साधु श्रेष्ठ पद का, भक्ति से अर्चन करूँ।। १ ।।

जिन धर्म आगम चैत्य चैत्यालय शरण को पा लिया।
भव-सिंधु पार उतारने, नौका सहारा ले लिया।।
यह भावना मेरी प्रभो, मम ज्ञान महल पधारिये।
निज सम बना लीजे मुझे, जिनराज पदवी दीजिये।। २।।

दोहा

सुख दाता नव देवता, तिष्ठो हृदय मँझार।
भावों से आह्वान करूँ, करो भवोदधि पार।।३।।

ॐह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्यचैत्यालयसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्यचैत्यालयसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य चैत्यालयसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(तर्ज - माता तू दया करके....)

जिनको अपना माना, उनसे ही दुख पाया।
फिर भी क्यों राग किया, यह समझ नहीं आया।।
यह राग की आग मिटे, ऐसा जल दो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।। १।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यापयवर्ससाधुजिनधर्म जिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.......।

प्रभो ! काल अनादि से, भव का संताप सहा।
अब सहा नहीं जाता, यह मेटा द्वेष महा।।
इस द्वेष की ज्वाला को, अब शांत करो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी ।। २।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं...।

जिसको मैंने चाहा, सब नश्वर है माया।
जिस तन में हूँ रहता, क्षणभंगुर वह काया।।
क्षत-विक्षत जग सारा, अब जाऊँ कहाँ स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।३।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो अक्षयपद्रप्राप्तये अक्षतान्.....

इस काम लुटेरे ने, आतम धन लूट लिया।
मैं मौन खड़ा निर्बल, बस तेरा शरण लिया।।
विश्वास मुझे तुम पर, आतम बल दो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।४।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्य: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.... ।

इस क्षुधा रोग से मैं, प्रभुवर लाचार रहा।
व्यंजन की औषध खा, ना कुछ उपचार हुआ।।
प्रभु तू ही सहारा है, यह रोग नशे स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।५।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं..... ।

पर तत्त्व प्रशंसा में, महिमा पर की आयी।
नर तन में रहकर भी, निज की ना सुध आयी।।
अब ज्ञान ज्योति प्रगटे, आशीष मिले स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।६।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं.... ।

कर्मों की आँधी में, चेतन गृह बिखर गया।
आया अब दर तेरे, निज आतम निखर गया।।
शुभ ध्यान अनल में ही, वसु कर्म जले स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।७।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं.... ।

पापों का बीज बोया, कैसे शिव फल पाऊँ।
तप धारूँ कर्म नशे, तब सिद्धालय पाऊँ।।

मुझे पास बुला लेना, यह अरज सुनो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।८।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं.... ।

वसु कर्मों ने मिलकर, दिन-रात जलाया है।
गुरुदेव कृपा पाकर, यह अर्घ्य बनाया है।।
यह पद अनर्घ्य अनमोल, हो प्राप्त मुझे स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।९।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.... ।

जाप्य

(ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः)

जयमाला

दोहा

नव देवों की भक्ति से, सब अरिष्ट नश जाय।
आत्मसिद्धि को प्राप्त कर, अष्टम वसुधा पाया ।। १।।

(चौपाई)

जय अरहंत देव जिनराई, तीन लोक में महिमा छाई।
घाति कर्म चउ नाश किये हैं, भव्य जनों में वास किये हैं।। २।।
दोष अठारह दूर किये हैं, छयालीस गुण पूर्ण हुये हैं।
समवसरण के बीच विराजे, तीर्थंकर पद महिमा राजे ।। ३।।
क्षणभंगुर सारा जग जाना, जड़ चेतन को भिन्न पिछाना।
कल्याणक सब पंच मनाये, देव इन्द्र हर्षित गुण गाये ।। ४।।
प्रभो ! आपने प्रभुता पायी, दो हमको समता सुखदायी।
दुष्ट करम ने मुझको घेरा, निज स्वभाव से मुख को फेरा।। ५।।
प्रभो ! आप सिद्धालय वासी, दर-दर भटका मैं जगवासी।
अब निज भूल समझ में आई, सिद्धदशा ही मन में भाई ।। ६।।

करो नमन स्वीकार हमारा, भवसागर से करो किनारा।
कर्म भँवर में मेरी नैया, गुरुवर तुम बिन कौन खिवैया ।। ७।।
गुण छत्तीस मुनीश्वर धारे, इस कलयुग में आप सहारे।
दीक्षा देकर राह दिखाते, खुद चलते चलना सिखलाते ।। ८।।
उपाध्याय पद है तम नाशे, गुण पच्चीस ज्ञान परकासे।
अट्ठाईस गुणों के धारी, साधू पर की महिमा भारी ।। ९।।
श्री जिनधर्म अहिंसा प्यारा, गूँज उठा है जग में नारा।
आगम आतम बोध कराता, फिर चेतन का शोध कराता।। १०।।
जिनने आगम को अपनाया, अहो भाग्य तुम सा पद पाया।
अनेकांत मय धर्म सहारा, द्वादशांग को नमन हमारा ।। ११।।
कर्मनिकाचित् निधत्ति विनाशे, बिम्ब जिनेश्वर आत्म प्रकाशे।
निज स्वरूप को बोध कराती, जिन सम जिनमूरत कहलाती।। १२।।
जो जन नित जिन मंदिर जावें, पाप नशें औ पुण्य बढ़ावें।
परमातम का ध्यान लगावें, शुद्ध होय मुक्तीपुर जावें ।। १३।।
नव देवों को शीश झुकाऊँ, गुण गाऊँ और ध्यान लगाऊँ।
रहूँ सदा मैं प्रभुवर चरणा, भव-भव मिले आपकी शरणा।। १४।।

दोहा

पूर्व पुण्य से हो रहा, नव देवों का दर्श।
अल्प बुद्धि कैसे लहे, अनंत गुण का स्पर्श।। १५।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं..... ।

घत्ता

प्रभुवर को पूजे, शिवपथ सूझे, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री चौबीसी समुच्च जिन पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

जय-जय आदि जिनेश्वर अंतिम, महावीर प्रभु दया निधा।
आत्म शक्ति का आश्रय ले तीर्थंकर पद पाया अभिराम।।
भवसागर के तीर ले चलो, तीर्थंकर मेरे जिनराज।
भाव सहित वंदन करता हूँ, पावन हो मन मंदिर आज।।
जहाँ-जहाँ पर आप विराजे, नमन मेरा स्वीकार करो।
पास बुला लो या आ जाओ, पूजन को स्वीकार करो।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(ज्ञानोदय छंद)

अनगिन सागर का जल पीकर, तृषा नहीं बुझ पाई है।
अनुपम शीतल समता जल की, याद कभी ना आई है।।
हृदय कलश लेकर आया हूँ, श्रद्धा से करता वंदन।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन ।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.... ।

भव ज्वाला से झुलस गया हूँ, मुझे बचालो हे स्वामी।
पंचेन्द्रिय सुख नहीं चाहता, अनंत सुख चाहूँ स्वामी।।
पास नहीं कुछ मेरे जिनवर, भाव समर्पण है चंदन।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन ।। २ ।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं.... ।

आत्मज्ञान वैभव के अक्षत, से अब तक अनजान रहा।
अक्षय निधि दानी हे जिनवर ! तव दर्शन वरदान रहा।।
क्षणभगुर काया का मैंने, किया आज तक अभिनंदन।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन ।। ३।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

काम भयंकर अभिमानी जो, तीखे तीर चलाता है।
किंतु आपकी मुद्रा लख क्यों, अपनी नजर झुकाता है।।
परम ब्रह्म ज्ञानी जिनवर मैं, करता हूँ जीवन अर्पण।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन ।। ४।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं......।

क्षुधा रोग के कारण मैंने, बहु उपचार किये स्वामी।
भेद ज्ञान औषध नहीं पायी, अतः व्यथित हूँ मैं स्वामी।।
शरणागत पर करुणा कीजे, यही प्रार्थना है भगवन्।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन ।। ५।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं......।

मैंने अपने ज्ञान भानु को, मिथ्या घन में छिपा दिया।
इसीलिए निज घर ना सूझा, किंतु आपने दिखा दिया।।
हे जिनवर अज्ञान मिटा दो, ज्ञान दीप ले करूँ नमन।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन ।। ६।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं....।

अष्ट कर्म विध्वंस करूँ अब, चिन्मय धूप जलाऊँ मैं।
हे सर्वज्ञ जिनेश्वर मेरे, सिद्धालय कब पाऊँ मैं।
है अधीर यह भक्त तुम्हारा, कह दो कुछ आशीष वचन।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन ।। ७।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

मोक्ष महाफल अति दुर्लभ है, सुलभ करो मेरे जिनवर।
पुण्य फलों में अहं भाव से, रिक्त करो मेरे प्रभुवर।।

दिखला दो शिवपंथ मुझे भी, शीश झुका करता वंदन।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन ।। ८।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं..... ।

जड़ द्रव्यों का मूल्य किया पर, आत्म द्रव्य अनमोल रहा।
फिर भी निज को जड़ द्रव्यों से, मैं मूरख क्यों तोल रहा।।
शिवपथ की आशा ले आया, अर्घ्य चढ़ा करता वंदन।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन ।। ९।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.... ।

जयमाला

दोहा

श्री चौबीस जिनेश को, बारंबार प्रणाम।
एक यही बस कामना, पाऊँ शिवपुर धाम।। १।।

घत्ता

जय शिवसुख दायक, मुनिगण नायक, श्री चौबीस जिनंदा हैं।
भावों से पूजूँ, कर्म से छूटूँ, दिखलाते शिवपंथा हैं।। २।।

(पद्धरि छंद)

जय नाभिसुतं श्री आदिजिनं, बोलो आदिनाथ भगवान की जय।
जय अजित अष्ट अरि जीतजिनं, बोलो अजितनाथ भगवान की जय।।
जय संभव जिन भवदधि तारक, बोलो संभवनाथ भगवान की जय।
जय अभिनंदन सब दुख हारक, बोलो अभिनंदन भगवान की जय।। ३।।
जय सुमतिनाथ सन्मति दायक, बोलो सुमतिनाथ भगवान की जय।
जय पद्म पद्मप्रभु गुण नायक, बोलो पद्मप्रभ भगवान की जय।।
जय श्री सुपार्श्व भवपाश हरं, बोलो सुपार्श्वनाथ भगवान की जय।
जय चन्द्र अनुपम चन्द्र समं, बोलो चन्द्रप्रभ भगवान की जय ।। ४।।

जय पुष्पदंत शिवविधि दर्शक, बोलो पुष्पदंत भगवान की जय।
जय शीतलजिन तन आकर्षण, बोलो शीतलनाथ भगवान की जय।।
जय श्रेयंकर श्रेयांसनाथ, बोलो श्रेयनाथ भगवान की जय।
जय वासुपूज्य जगपूज्य नाथ, बोलो वासुपूज्य भगवान की जय।। ५।।
जय विमलनाथ सु-ज्ञान वंत, बोलो विमलनाथ भगवान की जय।
जय नंत गुणाम्बुधि जिन अनंत, बोलो अनंतनाथ भगवान की जय।।
जय धर्म धुरंधर धर्मनाथ, बोलो धर्मनाथ भगवान की जय।
जय शांति प्रदाता शांतिनाथ, बोलो शांतिनाथ भगवान की जय।।६।।
जय कुंथुनाथ करुणासागर, बोलो कुंथुनाथ भगवान की जय।
जय अर जिनवर गुण के आगर, बोलो अरनाथ भगवान की जय।।
जय मल्लिनाथ निर्मल नायक, बोलो मल्लिनाथ भगवान की जय।
जय मुनिसुव्रत व्रत के दायक, बोलो मुनिसुव्रत भगवान की जय ।। ७।।
जय नमि जिनवर को हो प्रणाम, बोलो नमिनाथ भगवान की जय।
जय नेमिनाथ दो मोक्ष धाम, बोलो नेमिनाथ भगवान की जय।।
जय सर्व प्रियंकर पार्श्वनाथ, बोलो पार्श्वनाथ भगवान की जय।
जय वीर चरण में नमूँ माथ, बोलो महावीर भगवान की जय ।। ८।।

घत्ता

वृषभादि जिनेश्वर, आनंदेश्वर, तीन जगत के हितकारी।
शिवपुर के नेता, कर्म विजेता, नाथ आप हो उपकारी।। ९।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं....।

घत्ता

प्रभुवर को पूजे, शिवपथ सूझे, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यागसार पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

अर्घावली

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय,
दीप धूप फल अर्घ सुलेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर बलि बलि जाऊँ मन वच काय,
हे करुणानिधि भव दुःख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का अर्घ

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों।
श्री चन्द्रनाथ दुति चन्द, चरनन चंद लगैं,
मन-वच-तन जजत अमंद, आतमज्योति जगै।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शान्तिनाथ भगवान का अर्घ

वसुद्रव्य सँवारी, तुम ढिंगधारी, आनन्दकारी दृगप्यारी।
तुम हो भवतारी, करुणाधारी, यातैं थारी शरनारी।।
श्री शान्ति-जिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं।
हनि अरि चक्रेशं हे गुनधेशं दयामृतेशं मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथ का अर्घ

जल गंध आदि मिलाय, आठों दरव अर्घ सजों वरों।
पूजों चरन रज भगत जुत, जाते जगत सागर तरों।।
शिवशाथ करत सनाथ, सुब्रतनाथ मुनिगुन मान है।
वसु चरण आनन्द भरन, तारण तरण विरद विशाल है।।

ॐ ह्रीं मुनिसुब्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान् का अर्घ

नीर गन्ध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिये।
दीप-धूप-श्रीफलादि अर्घ तें जजीजिये।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिये निवास मोक्ष, भूलिये नहीं कदा।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवान् का अर्घ

जलफल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों।
गुणगाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों।।
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मतिदायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीबाहुबलि स्वामी का अर्घ

हूँ शुद्ध निराकुल सिद्धों सम, भवलोक हमारा वासा ना।
रिपु रागरु द्वेष लगे पीछे, यातें शिवपद को पाया ना।।
निज के गुण निज में पाने को,प्रभु अर्घ संजोकर लाया हूँ।
हे बाहुबली तुम चरणों में, सुख सन्मति पाने आया हूं।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहाकरण का अर्घ

जल फल आठों दरब चढ़ाय 'द्यानत' वरत करों मनलाय।
परमगुरु हो, जय-जय नाथ परम गुरु हो।।
दरशविशुद्धि भावना भाय सोलह तीर्थंकर पददाय।
परमगुरु हो, जय-जय नाथ परमगुरु हो।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु का अर्घ

आठदरब मय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करों प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धि-अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वरद्वीप का अर्घ

यह अरघ कियो निजहेत, तुमको अरपतु हों।
'द्यानत' कीज्यों शिवखेत, भूमि समरपतु हों।।
नन्दीश्वर श्रीजिनधाम, बावन पुँज करों।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनन्द भाव धरों।।
नन्दीश्वरद्वीप महान चारों दिशि सोहें।
बावन जिन मन्दिर जान सुर-नर-मन-मोहें।।

ॐ ह्रीं श्रीन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्मिोत्तर-दक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण का अर्घ

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाह सों।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजों सदा।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ

आठदरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये।
जनम रोग निरवार सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ

जल गंध अक्षत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं।
'द्यानत' करो निरभय जगत सों, जोर कर विनती करौं।

सम्मेदगिरि गिरनार चंपा पावापुर कैलाश कों।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाण भूमि निवास कों।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती का अर्घ

जल चन्दन अक्षत फूल चरू, अरु दीप धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर 'द्यानत' सुख पावै।
तीर्थंकर की ध्वनि गणधर ने सुनी अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर वानी शिवसुखदानी, त्रिभुवनमानी पूज्य भई।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं-निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सम्मेदशिखरजी की कूट अर्घ

ज्ञानधर कूट

दोहा

कुन्थुनाथ जिनराज का, कूट ज्ञान धर जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 96 कोड़ा कोड़ी 96 करोड़ 32 लाख 96 हजार 742 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 1॥

24 तीर्थंकरों के गणधरों की कूट

दोहा

चौबीसों जिनराज के, गण नायक हैं जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी आदि गणधर देवा ग्राम के उद्यान आदि भिन्न-भिन्न स्थानों से निर्वाण पधारे हैं तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 2॥

मित्रधर कूट

दोहा

नमिनाथ जिनराज का, कुट मित्र धर जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 9 कोड़ा कोड़ी 1 अरब 45 लाख 7 हजार 942 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 3॥

नाटक कूट

दोहा

अरहनाथ जिनराज का, नाटक कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 99 करोड़ 99 लाख 99 हजार मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 4॥

संवल कूट

दोहा

मल्लिनाथ जिनराज का, संवल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 96 करोड़ मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 5॥

संकुल कूट

दोहा

श्रेयांसनाथ जिनराज का, संकुल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 96 कोड़ा कोड़ी 96 करोड़ 96 लाख 9 हजार 542 मुनि इस टोंक से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 6॥

सुप्रभ कूट

दोहा

पुष्पदंत जिनराज का, सुप्रभ कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्रादि मुनि 1 कोड़ा कोड़ी 99 लाख 7 हजार 780 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 7॥

मोहन कूट

दोहा

पदमप्रभु जिनराज का, मोहन कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री पदमप्रभु जिनेन्द्रादि मुनि 99 करोड़ 87 लाख 43 हजार 757 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 8॥

निरजर कूट

दोहा

मुनिसुब्रत जिनराज का, निरजर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुब्रतनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 99 कोड़ा कोड़ी 99 करोड़ 99 लाख 999 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 9॥

ललित कूट

दोहा

चन्द्रप्रभु जिनराज का, ललित कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्रादि मुनि 984 अरब 12 करोड़ 80 लाख 4 हजार 595 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 10॥

आदिनाथ भगवान की टोंक

दोहा

ऋषभदेव जिन सिद्ध भए, गिरि कैलाशसे जोय।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 10 हजार मुनि कैलाश पर्वत से मोक्ष गए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 11॥

विद्युत वर कूट

दोहा

शीतलनाथ जिनराज का, कूट विद्युत वर जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 18 कोड़ा कोड़ी 42 करोड़ 32 लाख 42 हजार 905 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 12॥

स्वयं प्रभु कूट

दोहा

अनन्तनाथ जिनराज का, कूट स्वयंभू वर जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 96 कोड़ा कोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 70 हजार 700 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 13॥

धवल कूट

दोहा

सम्भवनाथ जिनराज का, धवल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 9 कोड़ा कोड़ी 12 लाख 42 हजार 500 मुनि इस कूट से मोक्ष गए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 14॥

वासुपूज्य भगवान की टोंक नं.15

दोहा

वासुपूज्य जिन सिद्ध भए, चम्पापुर से जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि चम्पापुर मदारगिरि से एक हजार मुनि सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 15॥

आनन्द कूट

दोहा

अभिनन्दन जिनराज का, आनन्द कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्रादि मुनि 72 कोड़ा कोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 42 हजार 700 मुनि इस कूट से मोक्ष गए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 16॥

सुदत्तवर कूट

दोहा

धर्मनाथ जिनराज का, कूट सुदत्त वर जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 29 कोड़ा कोड़ी 19 करोड़ 9 लाख 9 हजार 765 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 17॥

अविचल कूट

दोहा

सुमतिनाथ जिनराज का, अविचल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि 1 मुनि कोड़ा कोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 81 हजार 781 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 18॥

कुन्दप्रभ कूट (शांतिनाथ कूट)

दोहा

शांतिनाथ जिनराज का, कुन्दप्रभ कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 9 कोड़ा कोड़ी 9 लाख 9 हजार 990 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 19॥

महावीर भगवान की टोंक नं.2

दोहा

महावीर जिन सिद्ध भए, पावापुर से जोय।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर नमूं पद दोय॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी पावापुर के पदम् सरोवर स्थान से 26 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 20॥

प्रभास कूट

दोहा

सुपार्श्वनाथ जिनराज का, प्रभास कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 49 कोड़ा कोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 7 हजार 742 मुनि इस टोंक से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 21॥

सुवीर कूट (संकुल कूट)

दोहा

विमल नाथ जिनराज का, कूट सूवीर है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 70 कोड़ा कोड़ी 60 लाख 6 हजार 742 मुनि इस कूट से सिद्ध शिवपुर पधारे तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 22॥

सिद्धवर कूट

दोहा

अजीतनाथ जिनराज का, सिद्धवर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री अजीतनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 1 अरब 80 करोड़ 54 लाख मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 23॥

नेमिनाथ भगवान की टोंक

दोहा

नेमिनाथ जिन सिद्ध भए, सिद्ध क्षेत्र गिरिनार।
मन वच तन कर पूजहूं, भवदधि पार उतार॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रादि शम्भू प्रद्युम्न अनिरुद्ध इत्यादि 72 करोड़ सात सौ मुनि गिरिनार पर्वत से मोक्ष भए सिद्ध क्षेत्रेभ्यो तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 24॥

स्वर्ण भद्र कूट

दोहा

पार्श्वनाथ जिनराज का, स्वर्ण भद्र है कूट।
मन वच तन कर पूजहूं, जाऊं करम से छूट॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 82 करोड़ 84 लाख 45 हजार 742 मुनि इस परमपुनीत कूट से मोक्ष पधारे हैं तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ 25॥

आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी का अर्घ

श्री विद्यासागर के चरणों में झुका रहा अपना माथा।
जिनके जीवन की हर चर्या बन पड़ी स्वयं ही नवगाथा।।
जैनागम का वह सुधा कलश जो बिखराते हैं गली गली।
जिनके दर्शन को पाकर के खिलती मुरझाई हृदय कली।।
भावों की निर्मल सरिता में, अवगाहन करने आया हूँ।
मेरा सारा दुख दर्द हरो, यह अर्घ भेंटने लाया हूँ।।
हे तपो मूर्ति ! हे आराधक ! हे योगीश्वर ! हे महासन्त !!
यह 'अरुण' कामना देख सके, युग-युग तक आगामी वसन्त।।

ॐ ह्री श्री आचार्यश्री १०८ विद्यासागरमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिश्री १०८ प्रमाणागर जी का अर्घ

जल फलादिक द्रव्य मिलायके, करत पूजन श्री गुण गायके।
चरण में मुनि अर्घ चढ़ायके, पद अनर्घ मिले निज आयके।।
प्रणत हों मुनिराज प्रमाण को, दरस ज्ञान चरित्र प्रधान को।
तरण तारण आप जहाज हो, पवन पावन श्री ऋषिराज हो।।

ॐ ह्रीं श्री १०८ मुनि प्रमाणसागर मुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाव पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों।।
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रचे गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम, अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पँचमेरु-नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुरपूजित भजूँ।।
कैलाश श्री सम्मेदश्री, गिरनारगिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ सर्वदा।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहसबसु जय होय पतिशिव गेह के।।

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूज हूँ, बहु विधि भक्ति बढ़ाय।।

ॐ ह्रीं भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकाल - वंदना करै करावै भावना भावै श्री अरिहन्तजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधु-जी पञ्चपरमेष्ठिभ्यो नमः, प्रथमानुयोगकरणानुयोगचरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः,

दर्शन विशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः, उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः, सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-नमः। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगरनगरी विषै, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, पाताललोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिनचैत्याचैत्यालयजिन-बिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमानबीसतीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत दशक्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी के साथ सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नमः।

नन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पञ्चमेरुसम्बन्धी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाश, चम्पापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिरि, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चन्देरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारंगा जी, चमत्कार जी, महावीर जी, पदमपुरी जी, तिजारा बंधाजी आदि अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः श्रीचारणऋद्धिधारी, सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवंतं कृपालसन्तं श्रीवृषभादि महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये मध्यलोके जम्बूद्वीपे भरत-क्षेत्रे आर्य-खण्डे..........देशे........प्रदेशे.......नाम्नि नगरे........ मासानामुत्तमे.........मासे...... शुभपक्षे..........तिथौ......... वासरे.........मुन्यार्यिकाणां श्रावक-श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं अनर्घपदप्राप्तये सम्पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ भाषा

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिये)

दोधक

शान्तिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं।।
पञ्चम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक, नमो शांतिहित शांतिविधायक।।
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तुव प्रतिहार्य मनहारी।।

शान्ति जिनेश शांति सुखदाई, जगत्पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शांति दीजै हम सबको, पढ़ै तिन्हें पुनि चार संघ को।।

वसन्ततिलका

पूजैं जिन्हें मुकुटहार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।।
सो शांतिनाथ वर वंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप।।

(निम्न श्लोक को पढ़कर जल छोड़ना चाहिए)

उपजाति

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन ! शान्ति को दे।।

स्त्रग्धरा

होवै सारी प्रजा को, सुख बलयुत हो, धर्म-धारी नरेशा।
होवै वर्षा समै पै, तिलभर न रहे, व्याधियों का अन्देशा।।
होवै चोरी न जारी, सुसमय वरतै, हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं, जिनवर-वृषको, जो सदा सौख्यकारी।।

(निम्न श्लोक पढ़कर चन्दन छोड़ना चाहिए)

दोहा

घातिकर्म जिन नाश कर, पायो केवलराज।
शान्ति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज।।

मन्द्राक्रान्ता

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का,
सद्वृत्तों का, सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का।
बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ,
तै लों सेऊँ, चरण जिनके, मोक्ष जो लों न पाऊँ।।

आर्या

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहौं प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति पद मैंने।।
अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाऊं भव दुख से।
हे जगबन्धु जिनेश्वर, पाऊँ तव चरण-शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि

(यहां पर नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ना चाहिए)

विसर्जन

दोहा

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो काये।
तुम प्रसाद तैं परमगुरु, सो सब पूरन होय।।
पूजनविधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान।।
मन्त्रही धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहू राखहु मुझे, देहु चरण की सेव।।
श्रद्धा से नवदेव पद, पूजे भक्ति प्रमान।
पूजा विसर्जन मैं करूँ, सदा करो कल्याण।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असिआउसा अर्घ्यदादि परमेष्ठिनः पूजा विधिं विसर्जनं करोमि, अपराध क्षमापणं भवतु यःयःय।

(निम्न श्लोक पढ़कर विसर्जन करना चाहिए)

श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय।।

जिन भाषा स्तुति पाठ

तुम तरणतारण भवनिवारण भविक मन आनन्दनो।
श्रीनाभिनन्दन जगतवंदन आदिनाथ निरंजनो।। १।।
तुम आदिनाथ अनादि सेऊँ सेय पदपूजा करूँ।
कैलाशगिरी पर रिषभ जिनवर पदकमल हिरदै धरूँ।। २।।
तुम अजितनाथ अजीत जीते अष्टकर्म महाबली।
यह विरद सुनकर सरन आयो कृपा कीज्यो नाथजी।। ३।।
तुम चन्द्रवदन सु चन्द्रलक्ष्छण चन्द्रपुरी परमेश्वरो।
महासेननन्दन जगतवंदन चन्द्रनाथ जिनेश्वरो।। ४।।
तुम शान्ति पांच कल्याण पूजूँ सुद्ध मन वच काय जु।
दुर्भिक्ष चौरी पापनाशन विघन जाय पलाय जू।। ५।।
तुम बालब्रह्म विवेकसागर भव्यकमल विकाशनो।
श्री नेमिनाथ पवित्र दिनकर पापतिमिर विनाशनो।। ६।।
जिन तजी राजुल राजकन्या कामसेन्या वश करी।
चारित्ररथ चढ़ भये दूलह जाय शिवरमणी वरी।। ७।।
कंदर्प दर्प सुसर्पलच्छन कमठ शठ निर्मद कियो।
अश्वसेननन्दन जगतवंदन सकलसंघ मंगल कियो।। ८।।
जिन धरी बालकपणे दीक्षा कमठ मान विदारकैं।
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र के पद मैं नमूं शिरधार कैं।। ९।।
तुम कर्मघाता मोखदाता दीन जान दया करो।
सिद्धार्थनन्दन जगतवंदन महावीर जिनेश्वरो।। १०।।
छत्र तीन सोहै सुरनर मोहै वीनती अवधारिये।
कर जोड़ि सेवक वीनवै प्रभु आवागमन निवारिये।। ११।।

अब होउ भव भव स्वामी मेरे मैं सदा सेवक रहों।
कर जोड़ यो वरदान मांगू मोक्षफल जावत लहों।।१२।।
जो एक माहीं एक राजत एक माहीं अनेकनो।
इक अनेक की नाहिं संख्या नमूं सिद्ध निरंजनों।।१३।।

चौपाई

मैं तुम चरण कमल गुणगाय। बहु विधि भक्ति करूँ मन लाय।।
जनम जनम प्रभु पाउं तोहि। यह सेवाफल दीजे मोहि।।१४।।
कृपा तिहारी ऐसी होय। जामन मरन मिटावो मोय।।
बार बार मैं विनती करूं। तुम सेवा भवसागर तरूं।।१५।।
नाम लेत सब दुख मिट जाय। तुम दर्शन देख्यां प्रभु आय।।
तुम ही प्रभु देवन के देव। मैं तो करूं चरण की सेव।।१६।।
जिन पूजा तैं सब सुख होय, जिन पूजा सम अवर न कोय।।
जिन पूजा तैं स्वर्ग विमान, अनुक्रम तैं पावै निर्वाण।।१७।।
मैं आयो पूजन के काज। मेरो जन्म सफल भयो आज।।
पूजा करकैं नवाऊँ शीस। मम अपराध क्षमहु जगदीस।।१८।।
सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान।
मो गरीब की वीनती, सुन लीज्यो भगवान।।१९।।
पूजन करते देव का, आद्य मध्य अवसान।
स्वर्गन के सुख भोगकर, पावै मोक्ष निदान।।२०।।
जैसी महिमा तुमविषैं, और धरै नहिं कोय।
जो सूरज में ज्योति है, नहिं तारागण होय।।२१।।
नाथ तिहारे नाम तैं, अघ छिन माहिं पलाय।
ज्यों दिनकर परकाश तैं, अंधकार विनशाय।।२२।।
बहुत प्रशंसा क्या करूं, मैं प्रभु बहुत अज्ञान।
पूजाविधि जानूं नहीं, सरन राखि भगवान।।२३।।

श्री आदिनाथ जिन पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

आदि जिनेश्वर आदिनाथ प्रभु के चरणों में करूँ नमन।
नाभिराय के राजदुलारे माँ मरुदेवी के नंदन।।
पतित जनों को नाथ आपने दिया मुक्ति का अवलंबन।
श्रद्धा भाव विनय से करता तव चरणों का आह्वानन।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर सवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यापर्ण

(ज्ञानोदय छंद)

क्षीरोदधि का क्षीर वर्ण सम, श्रद्धा जल लेकर आया।
श्री चरणों में भेंट चढ़ाने, और नहीं कुछ भी लाया।।
आदीश्वर जिनराज आपने, श्रद्धा जल यदि स्वीकारा।
पा जाऊँगा निश्चित ही मैं, जन्म-मृत्यु से छुटकारा।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

चंदन जलता स्वयं किंतु, अपनी सुगंध फैलाता है।
तव चरणों की पूजा का वह, द्रव्य स्वयं बन जाता है।।
आदीश्वर जिनराज हमारे, चंदन को यदि स्वीकारा।
पा जाऊँगा भवाताप से, निश्चित ही मैं छुटकारा।। २ ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं.......।

उज्जवल अक्षत तंदुल लेकर, द्वारा आपके आया हूँ।
दूर करोगे पाप बोझ से, आशा लेकर आया हूँ।।
आदीश्वर जिनराज अर्चना के अक्षत स्वीकार करो।
अखंड अक्षय सुख दो मुझको, नश्वरता से दूर करो।। ३ ।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

रोग भयंकर विषय भोग का, कहीं नहीं उपचार हुआ।
विवश हो गया मारा-मारा, हार गया लाचार हुआ।।
आदीश्वर जिनराज भक्ति के, सुमन यदि स्वीकारोगे।
है विश्वास अटल यह मेरा, निज सम आप बना लोगे।। ४।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं..... ।

सुमेरु पर्वत जितना खाया, क्षुधा रोग ना शांत हुआ।
कई समंदर रिक्त किये पर, तृषा रोग ना शमन हुआ।।
आदीश्वर जिनराज चरण में, चरु चढ़ाने आया हूँ।
पूर्ण भरोसा तुम पर स्वामी, क्षुधा मेटने आया हूँ।। ५।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं..... ।

छाया मिथ्या घोर अँधेरा, गिरा अँधेरे में हर बार।
श्रद्धा दीपक आप जला दो, निज दर्शन कर लूँ इस बार।।
आदीश्वर जिनराज आपका, यह उपकार न भूलूँगा।
जब तक श्वास रहेगी घट में, तेरी ही जय बोलूँगा।। ६।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं....... ।

किया बहुत पुरुषार्थ मगर, कर्मों का नाश न कर पाया।
अहंकार को तजकर प्रभु जी, आप शरण में हूँ आया।।
आदीश्वर जिनराज यदि मैं, एक नजर पा जाऊँगा।
संसारी फिर नहीं रहूँगा, मुक्तिनाथ कहलाऊँगा।। ७।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं..... ।

मोक्ष मिलेगा इस आशा में, काल अनंता बिता दिया।
दुष्कर्मों ने ऐसा लूटा, नाम धर्म का मिटा दिया।।
आदीश्वर जिनराज शीश अब, अपना आज नवाऊँगा।
पार किया ना तुमने जिनवर, और कहाँ मैं जाऊँगा।। ८।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं..... ।

मेरे पास नहीं कुछ स्वामी, कैसे अर्घ्य बनाऊँगा।
आतम धन से निर्धन हूँ मैं, अब तुम सम बन जाऊँगा।।

आदीश्वर जिनराज आज यदि, अपना भक्त बनाओगे।
सच कहता हूँ शीघ्र मुझे भी, सिद्धालय में पाओगे।। ९।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं..... ।

पंचकल्यणक

सर्वार्थसिद्धि को तजकर स्वामी, नगर अयोध्या में आये।
कर्मभूमि के आदि जिनेश्वर, मरुदेवी उर में आये।।
शुभ आषाढ़ कृष्ण द्वितीया को, धन्य हुई यह वसुंधरा।
शरद पूर्णिमा का चंदा ही, मानो धरती पर उतरा।। १।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

तीन लोक में सब जीवों को, कुछ पल सुख का भान हुआ।
जन्म हुआ है 'आदि' प्रभु का, देवों को यह ज्ञान हुआ।।
चैत वदी नवमीं का दिन था, नाभिराय गृह जन्म लिया।
गिरि सुमेरु पर पांडुक वन में,क्षीरोदधि से न्हवन किया।। २।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्मंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..... ।

जन्म कल्याणक की खुशियाँ थीं, तप संयम में बदल गईं।
नीलांजन का नृत्य देख, दृष्टि शिव पाने मचल गई।।
चैत कृष्ण की नवमीं शुभ थी, पंचमुष्टि कचलोंच किया।
जय-जय ऋषभनाथ जिनवर ने, उत्तम मुनि पद धार लिया।। ३।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

फाल्गुन वदी एकादशी को, प्रभु चार घातिया नाश किया।
कर पुरुषार्थ प्रबल जिनवर ने, केवलज्ञान प्रकाश लिया।।
समवसरण में सब जीवों के, मिथ्यातम का नाश हुआ।
हुई प्रफुल्लित धरती ही क्या, प्रमुदित सब आकाश हुआ।। ४।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

माघ कृष्ण चौदस के दिन, कैलाश गिरि ने यश पाया।
आठों कर्म विनाशे प्रभु ने, अष्टम वसुधा को पाया।।

तीर्थंकर से परिणय करके, मुक्तिरमा भी धन्य हुई।
जय-जय आदीश्वर नारों से, पावन धरा अनन्य हुई।। ५।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.... ।

जयमाला

दोहा

भक्ति भरी अराधना, कर लो प्रभु स्वीकार।
शरण आपकी पा गया, हो जाऊँगा पार।। १।।

(ज्ञानोदय छंद)

जय-जय आदिनाथ तीर्थंकर, धर्म सारथी तुम्हें प्रणाम।
निज स्वभाव साधन से तुमने, पाया शाश्वत मुक्तिधाम।।
पंद्रह मास रतन बरसे औ, माँ को सोलह स्वप्न दिये।
तीन ज्ञान के धारी जिनवर, भूतल पर विख्यात हुये।। २।।
जंबूद्वीप के भरतक्षेत्र में, नगर अध्योध्या महा विशाल।
नाभिराय अंतिम कुलकर से, जन्मे मरुदेवी के लाल।।
पाण्डु शिला पे अभिषेक कर, देवों ने जयकार किया।
बालपने में ही जिनवर ने, आत्म शक्ति को दिखा दिया।। ३।।
राज्य अवस्था में ही सारे, जग के कष्ट मिटाये थे।
मोक्ष पंथ के राही थे पर, शुभ षट् कर्म सिखाये थे।।
नीलांजन का नृत्य देखकर, वस्तु स्वरूप विचार किया।
लौकांतिक देवों ने आकर, हर्ष भाव से नमन किया।। ४।।
सिद्धारथ वन में जाकर प्रभु, निज आतम का किया मनन।
नमः सिद्धेभ्यः भावों से कह, सब सिद्धों को किया नमन।।
एक हजार वर्ष तप करके, शुक्लध्यान में हुए मगन।
चार घातिया कर्म नाशकर, पाया केवलज्ञान गगन।। ५।।

मैं संसारी कर्म जाल में, फँसा चतुर्गति किया भ्रमण।
रुचि न जागी सिद्ध स्व पद की, अतः कर रहा जन्म मरण।
समवसरण में नाथ आपने, सप्त तत्त्व उपदेश दिया।
वृषभसेन गणधर से श्रोता, भरतराज ब्राह्मी आर्या।। ६।।
धर्मचक्र का किया प्रवर्तन मंगलमय जब हुआ विहार।
धन्य हुआ कैलाशधाम जब, हुआ कर्म का उपसंहार।।
बिना आपकी शरण जिनेश्वर, अनंत भव में भ्रमण किया।
सिद्धालय को पा जाऊँ बस, इसी भाव से शरण लिया।। ७।।
आज आपकी पूजा करके, मेरे मन आनंद हुआ।।
पुण्य कर्म का उदय हुआ औ, पाप कर्म भी मंद हुआ।।
हे प्रभुवर तव पथ पर चलकर, शाश्वत सुख को पा जाऊँ।
घबराया हूँ इस भव वन में, कब शिवनगरी आ जाऊँ।। ८।।
आदि तीर्थ् करतार जिनेश्वर, मुक्ति के प्रभु हो आधार।
दुष्कर्मों का नाश कीजिये, शीघ्र करो मेरा उद्धार।।
ज्ञान नहीं है शब्द नहीं हैं, भावों की गूँथी यह माल।
नमन करूँ स्वीकारो जिनवर, श्रद्धा से अर्चित जयमाल।। ९।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्रायजयमाला पूर्णार्घ्यं......।

घत्ता

हे प्रथम जिनेश्वर, श्री आदीश्वर, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।

श्री आदिनाथ जिनपूजन

नाभिराय मरु देवि के नन्दन, आदिनाथ स्वामी महाराज।
सर्वार्थसिद्धितैं आप पधारे, मध्यलोक मांहिं जिनराज।।

इन्द्रदेव सब मिलकर आये, जन्म महोत्सव करने काज।
आह्वानन सब विधिमिल करके,अपने कर पूजें प्रभु पायं।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

क्षीरोदधि का उज्ज्वल जल ले, श्री जिनवर पद पूजन जाय।
जन्म जरा दुख मेटन कारन, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभु जी के पाय।।
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलिबलि जाऊँ मन वच काय।
हे करुणानिधि भव दुःख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चन्दन दाह निकन्दन, कंचन झारी में भर ल्याय।
श्रीजी के चरण चढ़ावो भविजन, भव आताप तुरत मिट जाय।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभशालि अखण्डित सौरभ मंडित, प्रासुक जलसों धोकर ल्याय।
श्रीजी के चरण चढ़ावों भविजन, अक्षय पद को तुरत उपाय।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतकी बेल चमेली, श्री गुलाब के पुष्प मंगाय।
श्री जी के चरण चढ़ावो भविजन, कामबाण तुरत नसि जाय।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज लीना षट् - रस भीना, श्री जिनवर आगे धरवाय।
थाल भराऊँ क्षुधा नसाऊँ, जिन गुण गावत मन हरषाय।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग-जगमग होत दशों दिश, ज्योति रही मन्दिर में छाय।
श्री जी के सन्मुख करत आरती, मोहतिमिर नासै दुखदाय।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर कपूर सुगन्ध मनोहर चन्दन कूट सुगन्ध मिलाय।
श्री जी के सन्मुख खेय धूपायन, कर्मजरे चहुँगति मिटि जाय।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल और बदाम सुपारी, केला आदि छुहारा ल्याय।
महा मोक्षफल पावन कारन, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभु जी के पाय।।

श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलिबलि जाऊँ मन वच काय।
हे करुणानिधि भव दुःख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि निरमल नीरं गन्ध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सुलेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

सर्वारथ सिद्धि तैं चये, मरुदेवी उर आय।
दोज असित आषाढ़ की, जजुँ तिहारे पाय।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतवदी नौमी दिना, जन्म्या श्री भगवान।
सुरपति उत्सव अति करा, मैं पूजौं धरि ध्यान।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तृणवत् ऋद्धि सब छांड़ि के, तप धार्‌यो वन जाय ।
नौमी चैत्र असेत की, जजुँ तिहारे पाय।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि एकादशी, उपज्यो केवलज्ञान ।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजो इह थान ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ चतुर्दशि कृष्ण की, मोक्ष गये भगवान ।
भवि जीवों को बोधिके,पहुँचे शिवपुर थान ।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

आदीश्वर महाराज मैं विनती तुमसे करूँ ।
चारों गति के माहिं मैं दुख पायो सो सुनो।।
अष्टकर्म मैं एकलो, यह दुष्ट महादुख देत हो।
कबहुँ इतर निगोद में मोकुँ,पटकत करत अचेत हो।।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती ।।टेक।।
प्रभु कबहूँक पटक्यो नरक में, जठै जीव महादुख पाय हो।
निष्ठुर निरदई नारकी, जठै करत परस्पर घात हो।।म्हारी.।।
प्रभु नरक तणा दुःख अब कहूँ, जठै करे परस्पर घात हो ।
कोइयक बांध्यो खंभसो, पापी दे मुद्गरकी मार हो ।।म्हारी।।
कोइयक काटें करोतसों, पापी अंगतणी दोयफाड़ हो।
प्रभु यह विधिदुःख भुगत्या घणा, फिर गति पाई तिरयंच हो।।म्हारी.।।
हिरण बकरा बाछला, पशु दीन गरीब अनाथ हो।
पकड़ कसाई जाल में, पापी काट काट तन खाय हो ।।म्हारी.।।
प्रभु मैं ऊंट बलद भैंसा भयो जापैं लादियों भार अपार हो।
नहीं चाल्यो जब गिर पर्यो, पापी दे सोटन की मार हो।।
प्रभु कोइयक पुण्य संजोग सूँ, मैं तो पायो स्वर्ग निवास हो।म्हारी.।
देवांगना संग रमि रह्यो जठै भोगनि को परकास हो।
प्रभु संग अप्सरा रमि रह्यो, कर कर अति अनुराग हो ।म्हारी.।।
कबहुँक नंदनवन विषैं प्रभु, कबहूँक वन गृह माहिं हो।
प्रभु यह विधिकाल गमायकैं, फिर माला गई मुरझाय हो ।म्हारी.।
देव थिति सब घट गई, फिर उपज्यो सोच अपार हो।
सोच करता तन खिर पड्यो, फिर उपज्यो गरभ मैं जाय हो।म्हारी.।
प्रभु गर्भतणा दुःख अब कहूँ, जठै सकुड़ाई की ठौर हो।
हलन चलन नहिं कर सक्यो, जठै सघन कीच घनघोर हो।म्हारी.।
माता खावै चरपरो, फिर लागे तन संताप हो।
प्रभु ज्यों जननी तातो भखै, फिर उपजै तन संताप हो।म्हारी.।

औंधे मुख झूल्यो रह्यो, फेर निकसन कौन उपाय हो।
कठिन-कठिन कर नीसरो, जैसे निसरै जन्त्री में तार हो ।।म्हारी.।।
प्रभु फिर निकसत ही धरत्यां पड्यो,फिर लागी भूख अपार हो।
रोय रोय बिलख्यो घणो, दुख वेदनको नहिं पार हो।।म्हारी.।।
प्रभु दुःख मेटन समरथ धनी यातैं लागूँ तिहारे पाय हो ।
सेवक अरज करै प्रभु मोकूँ, भवोदधि पार उतार हो।।म्हारी.।।
श्री जी की महिमा अगम है, कौई न पावै पार।
मैं मति अल्प अज्ञान हों, कौन करै विस्तार।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विनती ऋषभ जिनेश की, जो पढ़सी मन लाय।
सुरगों में संशय नहीं, निश्चय शिवपुर जाय ।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्रीपुष्पदन्त जिनपूजा

मदावलिप्त कपोल

पुष्पदन्त भगवन्त सन्त सु जपन्त तन्त गुन।
महिमावन्त महन्त कन्त शिवतिय रमन्त मुन।।
काकन्दीपुर जन्म पिता सुग्रीव रमासुत।
स्वेत वरन मनहरन तुम्हैं थापों त्रिवार नुत।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् अह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

होली

मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदन्त जिनराज जी मेरी।। टेक।।
हिम वन गिरि गत गंगाजल भर, कंचन भृंग भराय।
करम कलंक निवारन कारन, जजों तुम्हारे पाय।। मेरी।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.।

बावन चन्दन कदलीनन्दन, कुंकुम संग घसाय।
चरचों चरन हरन मिथ्यातप वीतराग गुण गाय।। मेरी।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्व.।

शालि अखंडित सौरी मंडित, शशि सम द्युति दमकाय।
ताको पुंज धरों चरनन ढिग, देहु अखय पदराय।। मेरी।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व.।

घेवर बावर फेनी गोजा, मोदन मोदक लाय।
छुधावेदनी रोगहरन को, भेंट धरों गुणगाय।। मेरी।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व.।

वाति कपूर दीप कंचनमय, उज्जवल ज्योति जगाय।
तिमिर मोह नाशक तुमको लखि, धरों निकट उमगाय।। मेरी।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व.।

दशवर गंध धनंजय के संग, खेवत हौं गुन गाय।
अष्टकर्म ये दुष्ट जरैं सो, धूम धूम सु उड़ाय।। मेरी।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व.।

श्रीफल पूगी और शुचिर भट, दाडिम आम मंगाय।
तासों तुम पदपद्म जजत हों, विघन सघन मिट जाय।। मेरी।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व.।

जल फल सकल मिलाय मनोहर, मन वच तन हुलसाय।
तुम पद पूजों प्रीति लायकै, जय जय त्रिभुवन राय ।। मेरी।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

पंचकल्याणक

स्वयम्भू

नवमी तिथिकारी फागुन धारी, गरभ माहिं थिति देवा जी।
तजि आरण थानं कृपानिधानं, करत सची तित सेवा जी।।
रतनन की धारा परम उदारा, परिमल व्योमत साराजी।
मैं पूजौं ध्यावौं भगति बढ़ावौं, करो मोहि भव पाराजी।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घं.

मगसिर सित पच्छं-तरिवा, स्वच्छं जनमें तीरथ नाथाजी।
तब ही चव भेवा निरजर येवा, आय नये निज माथा जी।।
सुरगिर नहवाये, मंगल गाये, पूजे प्रीति लगाई जी।
मैं पूजों ध्यावौं भगति बढ़ावौं, निज निधि हेतु सुहाई जी।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घं.

सित मगसिर मासा तिथि सुखरासा, एकम के दिन धाराजी।
तम आतमज्ञानी आकुल हानी, मौन सहित अविकाराजी।
सुर मित्र सुदानी के घर आनी, गो-पय पारन कीना है।
तिनको मैं वन्दौं पाप निकंदौं, जो समता रस भीमा है।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घं.

सित कार्तिक गाये दोइज धाये, घातिकरम परचंडा जी।
केवल परकाशे भ्रमतम नाशे, सकल सारसुख मंडा जी।।
गनराज अठासी आनन्द भासी, समवसरण वृषदाताजी।
हरि पूजन आयो शीश नमायो, हम पूजैं जगत्राताजी।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घं.

असित सित सारा आठैं धारा, गिरि समेद निरवानाजी।
गुन अष्टप्रकाराअनुपम धारा, जय जय कृपा निधाना जी।।
तित इन्द्र सु आयौ, पूज रचायौ, चिन्ह तहाँ करि दीना है।
मैं पूजत हों गुन धरत महीसौं, तुमरे रस में भीना है।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घं.

जयमाला

दोहा

लच्छन मगर सुश्वेत तन तुंग धनुष शत एक।
सुर नर वंदित मुकतपति, नमों तुम्हें शिर टेक।। १।।
पुहूप रदन गुनवदन है, सागर तोय समान।
क्यों कर कर अंजुलि कर, करिये तासु प्रमान।। २।।

तामरस

पुष्पदन्त जयवन्त नमस्ते, पुण्य तीर्थंकर सन्त नमस्ते।
ज्ञान ध्यान अमलीन नमस्ते, चिद्विलास सुख ज्ञान नमस्ते।। ३।।
भव भय भंजन देव नमस्ते, मुनिगन कृत पदसेव नमस्ते।
मिथ्या निशिदिन इन्द्र नमस्ते, ज्ञानपयोदधि चन्द्र नमस्ते।। ४।।
भवदुख तरु निङ्कन्द नमस्ते, राग दोष मद दहन नमस्ते।
विश्वेश्वर गुनभूर नमस्ते, धर्म सुधार संपूर नमस्ते।। ५।।
केवल ब्रहमप्रकाश नमस्ते, सकल चराचरभास नमस्ते।
विघ्नमहीधरविज्जु नमस्ते, जय ऊरधगति रिज्जू नमस्ते।। ६।।
जय मकरा कृत पाद नमस्ते, मकरध्वज मदवाद नमस्ते।
कर्म भर्म परिहार नमस्ते, जय जय अधम उधार नमस्ते।। ७।।
दयाधुरंधर धीर नमस्ते, जय जय गुन गम्भीर नमस्ते।
मुक्ति रमनि पतिवीर नमस्ते, हरता भवभय पीर नमस्ते।। ८।।
व्यय उत्पत्ति थिति धार नमस्ते, निज आधार अविकार नमस्ते।
भव्य भवोदधि तार नमस्ते, वृन्दावन निस्तार नमस्ते।। ९।।

घत्ता

जय जय जिनदेवं हरिकृत सेवं, परम धरम धन धारी जी।
मैं पूजों ध्यावौं गुन गन गावों, मेटो विथा हमारी जी।। १०।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मदावलिप्तकपोल

पुहुपदंतपद सन्त, जजै जो मन वच काई।
नाचै गावे भगति करैं, शुभ परनति लाई।।
सौ पावै सुख सर्व, इन्द्र अहमिन्द तनों वर।
अनुक्रम तैं निरवान, लहैं निहचै प्रमोद धर।। ११।।

इत्याशीर्वादः

श्री वासुपूज्य जिन पूजन

स्थापना

(गीता छंद)

जय वासुपूज्य जिनेश पद में, वंदना शत बार है।
जिसने लिया है नाम श्रद्धा, से हुआ भव पार है।।
जबसे प्रभु तव दर्श पाया, एक अतिशय हो गया।
कोई नहीं भाता मुझे अब, मन विरागी हो गया।।
भव से बचाकर नाथ अपने, सिद्धमहल बुलाइये।
या भक्त भव्यों के हृदय में, आइये प्रभु आइये।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(गीता छंद)

शुचि पद्मद्रह का नीर लेकर, आपको अर्पण करूँ।
मिथ्यात्व मल मेरा नशा दो, हे प्रभु अर्चन करूँ।।
श्री वासुपूज्य शतेन्द्र पूजित, मैं करूँ आराधना।
संसार से घबरा गया हूँ, बन सकूँ परमातमा।। १।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं....।

भव ताप को चंदन जिनेश्वर, मेट ना सकता कभी।
प्रभु आ गया हूँ मैं भटक कर, पद शरण देना अभी।। श्री...।। २।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं.....।

तंदुल धवल के पुंज पावन, शुभ्र चरणों में धरूँ।
मैं चार विध आराधना से, चार गति के दुख हरूँ।। श्री....।। ३।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्......।

शुभ पुष्प नंदन वन सुगंधित, चरण में अर्पण करूँ।
दुष्काम का संताप हरने, शीश चरणों में धरूँ।।श्री....।। ४।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं....।

यह सरस पावन सौम्य रस युत,चरु चरण युग में धरूँ।
जिनराज भव व्याधि मिटा दो, नमन तव पद में करूँ।। श्री...।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं....।

तव पद कमल की अरती कर, ज्ञान दीप जला सकूँ।
सब मोह पथ को त्याग कर मैं, मोक्ष पथ अपना सकूँ।। श्री...।। ६।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं...।

शुभ गंध लेकर आ गया हूँ, ध्यान निज का कर सकूँ।
ये कर्म अष्ट विनष्ट कर मैं, मोक्षगामी हो सकूँ।।श्री.....।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

प्रभु कर्म फल के राग की रुचि, अब नहीं किञ्चित् करूँ।
यह मोक्षफल परमात्म पद पा, शिवमहल में पग धरूँ।। श्री.....।। ८।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

हो आप सर्व समर्थ जिनवर, अर्घ्य क्या अर्पण करूँ।
प्रभु आप ही के नंत गुण का,रात-दिन सुमिरन करूँ।।श्री.....।। ९।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक

(तर्ज - जय[2] आदिनाथ भगवान[2], इक्षुरस का किया पारणा.....)

जय-जय वासुपूज्य भगवान, जय जय तीर्थंकर भगवान....
महाशुक्र वैभव तज आये, आषाढ़ कृष्ण षष्ठी दिन आये।
माँ विजया के गर्भ में आये, वसुपूज्य पितु हर्ष मनाये।।
वासुपूज्य गर्भोत्सव के दिन, देव करें जयगान।
जय-जय वासुपूज्य भगवान, जय-जय तीर्थंकर भगवान।। १।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

फाल्गुन कृष्णा का दिन आया, चौदस वारुण योग बताया।
मेरु पर अभिषेक कराया, इन्द्रों ने शुभ अवसर पाया।।
इन्द्राणी ने हर्ष-हर्षकर, नृत्य किया गुणगान।
जय-जय वासुपूज्य भगवान, जय-जय तीर्थंकर भगवान।। २।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी आई, पुष्पाभा पालकी भी आई।
मनुज देव ने उसे उठाई, उद्यान मनोहर तक पहुँचाई।।
जाति स्मरण हुआ प्रभुवर को, लीन हुए निज ध्यान।
जय-जय वासुपूज्य भगवान..........।। ३।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

माघ शुक्ल की दोज मनोरम, तेंदु तरु तल बाग मनोहर।
केवलज्ञान प्रकाशित जिनवर, जय हो जय जगपूज्य जिनेश्वर।।
समवसरण में राजे स्वामी, दे उपदेश महान।
जय-जय वासुपूज्जय भगवान.....।। ४।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

भादों शुक्ल चतुर्दशी आयी, उडु विशाख शिवलक्ष्मी पाई।
छह सौ एक साथ मुनिराई, कर्म नष्ट कर मुक्ति पाई।।
चंपापुर निर्वाण धाम जहाँ, हुए पाँच कल्याण।
जय-जय वासुपूज्य भगवान.........।। ५।।

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

(ज्ञानोदय छंद)

इन्द्र नरेन्द्र सुरों से पूजित, वासुपूज्य मेरे भगवान।
विश्व विजेता विश्व विभूति, जिनवर महिमा महा महान।।
महिष चिह्न युत पद कमलों को, जो मनमंदिर में धारें।
पूज्य पदों की परम कृपा से, भक्त स्वयं निज को तारें।। १।।
तीन ज्ञान के धारी स्वामी, जन्म समय से थे गुणवान।
वसुदेव पितु माँ विजया ने, दिया सभी को अनुपम दान।।

प्रभु आपका जन्म जानकर, आनंदित सुर नर सारे।
ऐरावत गज लेकर आये, लाए वाद्य यंत्र सारे।। २।।
तीन प्रदक्षिणा दे नगर की, इन्द्राणी जिनगृह आई।
निद्रालीन किया माता को, मन में हर्षित हो आई।।
प्रथम किये जिन शिशु के दर्शन, सूरज जैसा अतिशायी।
सौंप दिया कर में प्रभु जी को, इन्द्र अचंभित था भारी।। ३।।
सहस्त्र नयन से निरख-निरख कर, मेरु सुदर्शन न्हवन किया।
इन्द्राणी ने वस्त्राभूषण, पहनाकर श्रृंगार किया।।
चंपापुर में आकर सबने, मात-पिता को नमन किया।
तांडव नृत्य किया अति अद्भुत, जिन बालक को सौंप दिया।। ४।।
अष्ट वर्ष की आयु में ही, प्रभु ने अणुव्रत धार लिया।
ब्रह्मचर्य आजीवन रखकर, पंचमुष्टि कचलोंच किया।।
दीक्षा लेकर चार ज्ञान युत, मौन रहे एक वर्ष प्रमाण।
क्षपक श्रेणी चढ़ मोह नाशकर, पद पाया अरहंत महान।। ५।।
देश-देश में विहार करके, मुक्ति का उपदेश दिया।
धर्म्म-शुक्ल शुभ ध्यान के द्वारा, मोक्ष मिले संदेश दिया।।
श्रावक मुनिव्रत को दर्शाया, दीक्षा विधि भी बतला दी।
छ्यासठ गणधर थे जिनवर के, मुख्यार्या वरसेना थी।। ६।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष, कल्याण हुए चंपापुर में।
धन्य-धन्य चंपापुर नगरी, धन्य धरा इस भूतल में।।
हे जिनवर मैं शिवपद पाऊँ, यही भावना है स्वामी।
पूर्ण करो मेरी अभिलाषा, वासुपूज्य त्रिभुवननामी।। ७।।

दोहा

प्रभु कृपा से प्राप्त हो, परम आत्म कल्याण।
जयमाला चरणन धरूँ, हे जिन पूज्य महान।। ८।।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

घत्ता

श्री वासुपूज्य जी, लाया अरजी, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।
।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री शांतिनाथ जिन पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

ऊर्ध्व लोक के अग्रभाग पर, रहते हो त्रिभुवननामी।
सात राजू दूरी पर स्वामी, दूर रहूँ मैं भवगामी।।
प्रभु आप और बीच हमारे, आज बहुत ही दूरी है।
आप वीतरागी मैं रागी, श्रद्धा बंधन डोरी है।।
वचनों में नहीं शक्ति प्रभु जी कैसे आज बुलाऊँ मैं।
भाव भक्ति मेरी सुन लेना, शांति जिनेश पुकारूँ मैं।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(ज्ञानोदय छंद)

शुद्धातम का शुद्ध नीर श्रद्धा झारी में भर लाया।
प्रभु दर्श करते ही मिथ्यातम का अंतिम दिन आया।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ जिनवर चरणों में, स्वभाव जल पाने आया।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.......।

काल अनादि भवाताप से, दुःख अनंत सहा करता।
निज चैतन्य सदन में प्रभुवर, क्रोधानल धू-धू जलता।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ जिनवर चरणों में, शीतलता पाने आया।। २ ।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं.....।

हीरा मोती माणिक आदि, अक्षत लेकर आया हूँ।
राग-द्वेष बंधन मिट जाये, यही भावना लाया हूँ।।

सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ जिन चरणांबुज में, अक्षत पद पाने आया।। ३।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्....।

निजानंद पुष्पित बगिया में, प्रभु विहार नित करते हो।
अपनी ही फुलवारी में नित, ब्रह्म रूप रस पीते हो।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ प्रभु के चरणों में, कामजयी होने आया ।। ४।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं....।

श्रद्धा रस से भरा हुआ, नैवेद्य समर्पित करता हूँ।
निजानुभव से तृप्त प्रभु की, वीतरागता वरता हूँ।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ जिनवर चरणों में, शुचिमय चरु पाने आया।। ५।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

अति विरक्त होकर जिन मेरे, आप निरखते निज निधियाँ।
रत्नदीप से करूँ आरती, मेरी भी खोलो अँखियाँ।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ प्रभु के चरणों में, परम ज्योति पाने आया।। ६।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं....।

प्रभु आपके सिद्धमहल में, ज्ञान धूप घट जलते हैं।
अतः कर्म के कीट पतंगे, दूर-दूर ही रहते हैं।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ प्रभु के चरणों में, शुद्ध धूप पाने आया।। ७।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

मम श्रद्धा मंडप में आओ, मुक्ति का उत्सव कर दो।
फल लाया हूँ प्रभु चढ़ाने, एक नजर मुझ पर कर दो।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ प्रभु के चरणों में, मुक्तिरमा वरने आया।। ८।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

बिन श्रद्धा के नाथ हजारों मैंने अर्घ्य चढ़ाये हैं।
दिखा-दिखाकर इस दुनिया को, धर्मी भी कहलाये हैं।।
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शांतिनाथ प्रभु के चरणों में, पद अनर्घ्य पाने आया।। ९।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं..... ।

पंचकल्याणक

(सखी छंद)

भादों वदी सप्तमी आई, कुरुवंश में खुशियाँ छाई।
छप्पन दिक् देवी आई, माता ऐरा हर्षाई।।
नृप विश्वसेन अर्जित हैं, प्रभु के कारण चर्चित हैं।
सर्वार्थसिद्धि तज आये, इन्द्रों ने रत्न बरसाये।। १।।

ॐ ह्रीं भाद्रकृष्णसप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.... ।

वदी जेठ चतुर्दशी आई, जन्मे त्रिभुवन जिनराई।
सब जग में आनंद छाया, सुर गिरि अभिषेक कराया।।
हस्तिनापुर नगरी प्यारी, प्रभु तीन पदों के धारी।
अतिशय दश हैं सुखकारी, जय शांतिनाथ त्रिपुरारि।। २।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

प्रभु जाति स्मरण हो आया, वैराग्य सहज मन भाया।
छह खंड राज को छोड़ा, विष भोगों से मुख मोड़ा।।
सिद्धार्थ पालकी चढ़के, सु आम्रवनी में पहुँचे।
लौकांतिक शीश नवायें, मुनि शांतिनाथ गुण गायें।। ३।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...... ।

बैठे नंदी तरु नीचे, फिर ज्ञान गगन में पहुँचे।
सुदी पौष तिथि दशमीं को, उपदेश दिया भविजन को।।
खिरी समवसरण में वाणी, गणधर गूँथी कल्याणी।
दश केवलज्ञान के अतिशय, प्रभु शांतिनाथ की जय-जय।। ४।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.... ।

जब जेठ वदी चौदस थी, तब पाई शिवलक्ष्मी थी।
संग नौ सौ थे मुनिराया, गिरि कूट कुंदप्रभ भाया।।
प्रभु अष्टम वसुधा पाये, हम भी शिव आस लगाये।
सम्मेदशिखर की जय-जय, श्रीशांतिनाथ की जय-जय ।।५।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.... ।

जयमाला

दोहा

जिन शासन के दीप हो, प्रभो शांत अवधूत।
नाम मात्र से शांति हो, पाऊँ शांत स्वरूप।। १।।

(ज्ञानोदय छंद)

शांति विधायक शांति जिनेश्वर, नर सुरपति से वंदित हैं।
सोलहवें तीर्थंकर स्वामी, तीन लोक में पूजित हैं।।
द्वादश कामदेव चक्रीश्वर, पंचम पद के धारी हैं।
बालपने से अणुव्रत धारी, प्राणी मात्र हितकारी हैं।। २।।
छह खंडों के अधिपतियों को, शीघ्र आपने जीत लिया।
चक्र दिखाकर मात्र पुण्य से, चक्री का नहीं मान किया।।
नव निधि चौदह रत्न प्राप्त कर, धर्मादि पुरुषार्थ किया।
जाति स्मरण जब हुआ आपको, राज तजा वैराग्य लिया।। ३।।
रत्नत्रय साधन के द्वारा, तुमने जिनपद राज किया।
चक्रवर्ती की अतुल निधि का, सहज भाव से त्याग किया।
मंदरपुर के नृप सुमित्र ने, भक्ति से आहार दिया।
क्षीरधार मुनि कर में देकर, शिवपथ को पहचान लिया।। ४।।
क्षपक श्रेणी आरूढ़ हुये तब, केवलज्ञान प्रकाश हुआ।
विचरण करके देश-देश में, मोक्षमार्ग उपदेश दिया।।
राज्य दशा में चक्ररत्न के, भय से नृप ने नमन किया।
प्रगट हुई चिद्रूप दशा तो, श्रद्धा से तव शरण लिया।। ५।।

श्रीसम्मेदशिखर पर स्वामी, शुक्लध्यान आसीन हुये।
कूट कुंदप्रभ पुनीत धरा से, सिद्धक्षेत्र में पहुँच गये।।
अहो भाग्य है मेरा प्रभुवर, दर्श करूँ दो नयनों से।
शांति जिनेश्वर का गुण गाऊँ, तन से मन से वचनों से।। ६।।
शांतिनाथ जगदीश्वर स्वामी, मुझको भी ऐसा वर दो।
अनुकूल प्रतिकूल योग में, समता हो ऐसा कर दो।।
प्रभु आपके चरण पखारूँ, मिथ्या तिमिर विनाश करूँ।
तीर्थंकर पद वंदन करके, पंच पाप मल नाश करूँ।। ७।।
शांतिनाथ प्रभु का दर्शन कर, सम्यग्दर्शन प्राप्त करूँ।
शांति विधाता का सुमिरन कर, सम्यग्ज्ञान प्रकाश वरूँ।।
शांतिनाथ मूरत अर्चनकर, सम्यग्चारित हृदय धरूँ।
विध्न विनाशक चरण चित्त धर, बारंबार प्रणाम करूँ।। ८।।
श्री जिनवर का सुयश गानकर, शाश्वत मुक्तिधाम वरूँ।
शांति जिनेश मोक्ष पद दाता, परम शांत रसपान करूँ।।
करुणासागर चरणांबुज का, दर्शन कर भव भार हरूँ।
प्रभु आपके पथ पर चलकर, भवसमुद्र को पार करूँ।। ९।।

दोहा

शांतिप्रभु के चरण को, चित् सिंहासन धार।
श्रद्धा द्वीप उजाल कर, ध्याऊँ बारंबार।। १०।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं....।

घत्ता

श्री शांति जिनेशा, भविजन ईशा, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।

श्री शान्तिनाथ जिनपूजन

छन्द

या भवकानन में चतुरानन, पाप पनानन घेरी हमेरी।
आतम जानन मानन ठानन, वान न होन दई शठ मेरी।।
ता मद भानन आपहि हो, यह छान न आन न आनन टेरी।
आन गही शरनागत को अब श्रीपतजी पत राखहु मेरी।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं परिपुष्पांजलिं क्षिपामि।

हिमगिरि गतगंगा, धार अभंगा, प्रासुक संगा भरि भृंगा।
जर जनम मृतंगा, नाशि अघंगा, पूजि पदंगा मृदुहिंगा।।
श्री शान्तिजिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं, चक्रेशं।
हनि अरि चक्रेशं, हे गुणधेशं, दयामृतेशं मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

वर बावन चंदन, कदली नंदन, घन आनंदन सहित घसों।
भव ताप निकंदन, ऐरा नन्दन, वंदि अमंदन, चरन वसो।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

हिमकर करि लज्जत, मलय सुसज्जत, अच्छत जज्जत भरि थारी।
दुखदारिद गज्जत, सदपदसज्जत, भव भयभज्जत अतिभारी। श्री.।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दार सरोजं, कदली जोजं, पुंज भरोजं मलयभरं।
भरि कंचनथारी, तुम ढिग धारी, मदनविदारी, धीर धरं।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान नवीने पावन कीने, षटरस भीने सुखदाई।
मनमोदन हारे, छुधा विदारे, आगै धारे गुन गाई।। श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम ज्ञान प्रकाशे, भ्रम-तम नाशे, ज्ञेय विकाशे, सुखरासे।
दीपक उजियारा, यातैं धारा, मोह निवारा, निज भासे।।
श्री शान्तिजिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं, चक्रेशं।
हनि अरि चक्रेशं, हे गुणधेशं, दयामृतेशं मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन करपूरं करि वर चूरं, पावक भूरं, माँहि जुरं।
तसु धूम उड़ावे, नाचत आवै, अलि गुंजावै, मधुर-स्वरं।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम खजूरं दाडिम पूरं, निंबुक भूरं लै आयो।
तासो पद जज्जों, शिवफल सज्जों, निज रस रज्जों, उमगायो।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिग धारी, आनन्दकारी दृग-प्यारी।
तुम हो भवतारी, करुना धारी, यातैं थारी, शरनारी।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

असित सातय भादव जानिये, गरभ-मंगल ता दिन मानिये।
सचि कियो जननी पद चर्चनं, हम करैं इत ये पद अर्चनं।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम जेठ चतुर्दशी श्याम है, सकल इन्द्र सु आगत धाम है।
गजपुरै गज साजि सबै तबै, गिरि जजे इत मैं जजि हों अबै।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भव शरीर सुभोग असार हैं, इमि विचार तबै तप धार हैं।
भ्रमर चौदस जेठ सुहावनी, धरममेह जजों गुन पावनी।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शुकल पौष दशैं सुखरास है, परम केवलज्ञान प्रकाश है।
भवसमुद्र- उधारन देवकी, हम करैं नित मंगल सेवकी।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

असित चौदशि जेठ हने अरी, गिरी समेद थकी शिवतिय वरी।
सकल इन्द्र जजैं तित आइकैं, हम जजैं इत मस्तक नाइकैं।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

छन्द

शान्ति शान्ति-गुन मंडिते सदा, जाहि ध्यावत सुपंडिते सदा।
मैं तिन्हें भगत मंडिते सदा, पूजि हों कलुष हंडिते सदा।।
मोक्षहेत तुम ही दयाल हो, हे जिनेश गुन रत्नमाल हो।
मैं अबै सुगुन-दाम ही धरों, ध्यावते तुरित मुक्तितिय वरों।।
जय शान्तिनाथ चिद्रूपराज, भवसागर में अद्‌भुत जहाज।
तुम तजि सरवारथसिद्ध थान, सरवारथजुत गजपुर महान।।
तित जनम लियौ आनंद धार, हरि ततछिन आयो राजद्वार।
इन्द्रानी जाय प्रसूत-थान, तुमको कर में ले हरष मान।।
हरि गोद देय सो मोदधार, सिर चमर अमर ढारत अपार।
गिरिराज जाय तित शिला पाण्डु, तापै थाप्यो अभिषेक माण्डु।।

तित पंचम उदधितनों सु-वार, सुर कर-कर करि ल्याये उदार।
तब इन्द्र सहसकर करि अनन्द, तुम सिर धारा ढार्यो सुमन्द।।
अघ घघ घघ घघ धुनि होत घोर, भभभभ भभ धध धधकलश शोर।
दृम दृम दृमदृम बाजत मृदंग, झन नन नन नन नन नूपुरंग।।
तन नन नन नन नन तनन तान, घन नन नन घंटा करत ध्वान।
ताथेई थेई थेई थेई सुचाल, जुत नाचत गावत तुमहिं भाल।।
चट चट चट अटपट नटत नाट, झट झट झट हट नट शट विराट।
इमि नाचत राचत भगत रंग, सुर लेत तहाँ आनंद संग।।
इत्यादि अतुल मंगल सुठाट, तित बन्यो जहाँ सुरगिरि विराट।
पुनिकरि नियोग पितुसदन आय, हरि सौंप्यौ तुम तित वृद्ध थाय।।
पुनि राजमाहिं लहि चक्ररत्न, भोग्यौ छहखंड करि धरम जत्न।
पुनि तप धरि केवल-ऋिद्धि पाय, भविजीवन को शिव मग बताय।।
शिवपुर पहुँचे तुम हे जिनेश, गुनमण्डित अतुल अनंत भेष।
मैं ध्यावतु हौं नित शीश नाय, हमरी भवबाधा हरि जिनाय।।
सेवक अपनो निज जान जान, करुना करि भौभय भान भान।
यह विघनमूल तरुखण्ड खण्ड, चितचिन्तित आनन्दमण्ड मण्ड।।

छन्द

श्री शान्ति महंता शिवतियकंता, सुगुन अनन्ता भगवन्ता।
भवभ्रमन हनंता, सौख्य अनन्ता, दातारं तारनवन्ता।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिनाथ जिनके पद पंकज, जो भवि पूजै मनवचकाय।
जनम जनम के पातक ताके, ततछिन तजिकैं जाय पलाय।।
मन वाँछित सुख पावै सौ नर, बाँचै भगतिभाव अतिलाय।
तातैं 'वृन्दावन' नित बन्दै, जातैं शिवपुर-राज कराय।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजन

स्थापना

(नरेन्द्र छंद)

हे पार्श्वनाथ आनंदधाम प्रभु, आज वंदना करते।
बाल ब्रह्मचारी जगतारी, नाथ अर्चना करते।।
तीन लोक में ढोल बजाकर, देव दुंदुभी गाते।
मोही जन को जगा जगाकर, शुभ संदेशा लाते।।
आज मेरे उर आँगन में प्रभु, उत्सव जैसा लगता।
त्रिभुवन के स्वामी आयेंगे, निश्चित ही मन कहता।।
इसीलिए सम्यक् रत्नों के, मैंने चौक पुराये।
श्रद्धा गृह के प्रमुख द्वार पर, तोरण हार सजाये।।
प्रभु प्रतीक्षा में रत्नों के, जगमग दीप जलाये।
पद प्रक्षालन हेतु स्वर्ण के, थाल यहाँ ले आये।।
आओ पारसनाथ जी, आओ-आओ नाथ।
हृदयांगन सूना पड़ा, द्वार खड़ा नत माथ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(गीता छंद)

क्षीरोदधि सम क्षीर जल मैं, ला नहीं सकता प्रभो।
हे क्षीरसागर नाथ तुम हो, क्षारसागर मैं प्रभो।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे, जन्म रोग नशाइये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।। १।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...... ।

भवताप से मैं जल रहा हूँ, और जलता जा रहा।
क्या हो गया मुझको स्वयं को, और छलता जा रहा।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे, भवाताप नशाइये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।। २।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं....।

सब नाशवान पदार्थ को मैं, स्थिर बनाना चाहता।
शाश्वत अनुपम तत्त्व हूँ मैं, शब्द से ही जानता।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे, दान अक्षय दीजिये।
आवगमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।। ३।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्......।

भोगे अनेकों भोग फिर भी, चाह वह जाती नहीं।
यह वासना की आग जिनवर, अब सही जाती नहीं।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे, ब्रह्म पदवी दीजिये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।। ४।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

बीता अनंता काल फिर भी, कर्मधारा बह रही।
औ ज्ञानधारा को प्रभुवर, जानता ही मैं नहीं।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे, ज्ञान धार बहाइये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।। ५।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

दीपक जले सूरज उगे पर, मोह मम मिटता नहीं।
बाहर उजाला तेज भीतर में उजाला है नहीं।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मुझमें, ज्ञान दीप जलाइये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।। ६।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं....।

भव राग से रागी हुआ मैं, द्वेष से द्वेषी हुआ।
पर आप सा सान्निध्य पाकर, क्यों नहीं ज्ञानी हुआ।।

श्री पार्श्वनाथ जिनेश मेरे, अष्ट कर्म निवारिये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।। ७।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

प्रभु बीज कर्मों का जला दो, उग नहीं सकता कभी।
मेरा मिलन मुझसे करा दो, फिर न आना हो कभी।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मुझको,मिष्ट शिवफल दीजिये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरी कीजिये।। ८।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं....।

निज आत्म वैभव खो चुका हूँ,क्या चढ़ाऊँ अर्घ्य मैं।
प्रभु आपका ही हो चुका हूँ, आ गया हूँ शर्ण में।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मुझको, लीजिए अपनाइये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।। ९।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक

(सखी छंद)

वैशाख कृष्ण दिन पावन, द्वितीया तिथि है मन भावन।
गर्भस्थ बाल जिन आभा, से हुई नगर में शोभा।।
पितु अश्वसेन हर्षित हैं, सारा परिवार मुदित है।
प्रभु प्राणत स्वर्ग विहाये, छप्पन देवी गुण गायें।। १।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

वदी पौष ग्यारसी आई, शुभ जन्म लिया जिनराई।
ऐरावत गज ले आये, निज गोद इन्द्र बैठाये।।
प्रभु बनकर आये सूरज, जग तरसे पाने पद रज।
वाराणसी नगरी प्यारी, प्रभु जन-जन के मनहारी।। २।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जन्मोत्सव खुशियाँ छाईं, तब जाति स्मृति हो आई।
वैराग्य सहज मन भाया, लौकांतिक ने गुण गाया।।

विमलाभ पालकी चढ़के, अश्वत्थ वनी सुर पहुँचे।
जिन दीक्षा है सुखकारी, भवि जीवों को हितकारी।। ३।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

जब कमठ क्रोध बरसाये, प्रभु समता नीर बहाये।
सब विनश गई शठमाया, कर जोड़ शरण वह आया।।
प्रभु तन मन हुआ नगन है, शिववधू की लगी लगन है।
वदी चैत्र चतुर्थी आई, प्रभु ज्ञान ज्योति प्रगटाई।। ४।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

श्रावण शुक्ला दिन आया, शुभ मुकुट सप्तमी भाया।
स्वर्णभद्र कूट प्रभु आये, अष्टम वसुधा को पाये।।
छत्तीस संग मुनिराया, शिव गये सिद्ध पद पाया।
बोलो पार्श्वप्रभुकी जय-जय, सम्मेदशिखर की जय-जय।। ५।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

जयमाला

दोहा

कामधेनु चिंतामणी, हे पारस भगवान।
कल्पवृक्ष से भी अधिक, पारसनाथ महान।। १।।
पार्श्वनाथ वंदूँ सदा, चिदानंद छलकाय।
चरण शरण हूँ आपकी, सहज मुक्ति प्रगटाय।। २।।

(ज्ञानोदय छंद)

परम श्रेष्ठ पावन परमेष्ठी, पार्श्वनाथ को वंदन है।
माता वामा देवी के सुत, अश्वसेन के नंदन हैं।।
कर्मजयी हो कामजयी उपसर्ग विजेता कहलाये।
परम पूज्य परमेश्वर हो शिवमार्ग विधाता बन आये।। ३।।
नगर बनारस है अति सुंदर, ज्ञानवान नृप परम उदार।
तीर्थंकर बालक को पाकर, भू पर छाया हर्ष अपार।।

देव कल्याणक मना रहे पर, निज में आप समाये थे।
भोगों को स्वीकार किया ना, कामबली भी हारे थे।। ४।।
अल्प आयु में पंच महाव्रत, धरे स्वयंभू दीक्षा ली।
चार मास छद्मस्थ मौन रह, आतम निधि को प्रगटा ली।।
तभी कमठ ने पूर्व वैर वश, पूर्व भवों को स्मरण किया।
आँधी तूफाँ झंझाओं से, प्रभो आपको कष्ट दिया।। ५।।
घोर उपद्रव जल अग्नि से, महा विघ्न करने आया।
जल से भर आई धरती पर, किञ्चित् नहीं डिगा पाया।।
आत्म गुफा में लीन रहे प्रभु, तन उपसर्ग सहे भारी।
इसीलिए भू पर गूँजी जय, पारस प्रभु अतिशयकारी।। ६।।
वैर किया दश भव तक भारी, आखिर माया विनश गयी।
ध्यान सूर्य की किरणों से शठ, कमठ अमा भी हार गयी।।
प्रभो ! आपने तन चेतन का, भेदज्ञान जो पाया है।
इसीलिए शठ की माया को, पलभर में विनशाया है।। ७।।
पूर्व जन्म के उपकारी को, कृतज्ञ होकर जान लिया।
पद्मावती और धरण इन्द्र ने, आ विघ्नों को दूर किया।।
साम्य भाव धर प्रभु आपने, कर्मों पर जय पाई है।
इसीलिए श्री पार्श्वप्रभु की, अतिशय महिमा गाई है।। ८।।
क्रोध अग्नि में जलते हैं जो, भव-भव में दुख पाते हैं।
वैर निरंतर जो रखते हैं, निज को ही तड़पाते हैं।।
भेद ज्ञान कर निज आतम के, आश्रय में जो आते हैं।
सर्व कर्म का क्षय करके वे, शिवरमणी को पाते हैं।। ९।।
हे जिनवर उपदेश आपका, श्रवण करूँ आचरण करूँ।
क्षमा भाव की महाशक्ति से क्रोध शत्रु को नष्ट करूँ।।
मार्ग आपने जो बतलाया, मेरे मन को भाया है।
मुझको भव से पार करो प्रभु, भक्त शरण में आया है।। १०।।
श्री सम्मेदाचल से स्वामी, मोक्ष महापद है पाया।
चरण चिह्न का दर्शन करके, शिवपद पाने मैं आया।।

पार्श्व तीर्थंकर सर्व प्रियंकर, श्री चरणों में सिर नाया।
दिव्य शक्ति को संचित करने, आप शरण में हूँ आया।। ११।।

दोहा

परं ज्योति परमात्मा, पार्श्वनाथ जिनराज।
वंदौं परमानंद मय, आत्मशुद्धि के काज।। १२।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं....... ।

घत्ता

जय-जय तीर्थंकर, पार्श्व जिनेश्वर, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री पार्श्वनाथ जिनपूजन

वर स्वर्ग प्राणत को विहाय, सुमात वामा उर भये।
अश्वसेन के पारस जिनेश्वर, चरन जिनके सुर नये।।
नव हाथ उन्नत तन विराजै, उरग लच्छन पद लसैं।
थापूँ तुम्हें जिन आय तिष्ठो कर्म मेरे सब नसैं।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं परिपुष्पांजलिं क्षिपामि।

क्षीर सोम के समान अम्बुसार लाइये।
हेमपात्र धारिकैं सु आपको चढ़ाइये।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदनादि केशरादि स्वच्छ गंध लीजिये।
आप चरणचर्च मोहताप को हनीजिये।।पार्श्व.।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

फेन चंद के समान अक्षतान् लाइकैं।
चर्नके समीप सार पुंज को रचाइकै।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

केवड़ा गुलाब और केतकी चुनाइके।
धार चर्नके समीप काम को नसाइकै।।पार्श्व।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवरादि बावरादि मिष्ठ सर्पि में सनें।
आप चर्न चर्चते क्षुधादिरोग को हनें।।पार्श्व।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाय रत्न दीपको सनेहपूर के भरूँ।
वातिका कपूर बारि मोह ध्वांतको हरूँ।।पार्श्व।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप गंध लेयके सुअग्निसंग जारिये।
तास धूप के सुसंग अष्टकर्म बारिये।।पार्श्व।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

खारिकादि चिरभटादि रत्न थाल में भरूँ।
हर्ष धारिकैं जजूं सुमोक्ष सौख्य को वरूँ।।पार्श्व।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरगंध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिये।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घ तैं जजीजिए।।पार्श्व।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

शुभ प्राणत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये।
वैशाख तनी दुतिकारी, हम पूजें विघ्न निवारी।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जनमें त्रिभुवन सुखदाता, एकादशि पौष विख्याता।
श्यामा तन अद्भुत राजैं, रविकोटिक तेज सु लाजैं।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कलि पौष एकादशि आई, तब बारह भावन भाई।
अपने कर लौंच सु कीना, हम पूजैं चरन जजीना।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कलि चैत चतुर्थी आई, प्रभु केवल ज्ञान उपाई।
तब प्रभु उपदेश जु कीना, भविजीवन को सुखदीना।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सातैं सावन आई, शिवनारि वरी जिनराई।
सम्मेदाचल हरि माना, हम पूजैं मोक्ष कल्याना।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

पारसनाथ जिनेन्द्रतने वच, पौन भखी जरते सुन पाये।
कर्‌यो सरधान लह्यो पर आन, भये पद्मावति शेष कहाये।।
नाम प्रताप टरैं संताप सु, भव्यन को शिवशर्म दिखाये।
है अश्वसैन के नंद भले, गुण गावत हैं तुमरे हरषाये।।

दोहा

केकी-कंठ समान छवि, वपु उतंग नव हाथ।
लक्षण उरग निहार पग, वंदो पारसनाथ।।

पद्धरी छन्द

रची नगरी छह मास अगार, बने चहुँ गोपुर शोभ अपार।
सु कोट तनी रचना छवि देत, कंगूरन पै लहकै बहुकेत।।
बनारस की रचना जु अपार, करी बहु भाँति धनेश तैयार।
तहाँ अश्वसेन नरेन्द्र उदार, करैं सुख वाम सु दे पटनार।।
तज्यो तुम प्रानत नाम विमान, भये तिनके वर नंदन आन।
तबै सुर इंद्र नियोगनि आय, गिरिन्द करी विधि न्हौन सुजाय।।
पिता-घर सौंपि गये निज धाम, कुबेर करै बसु जाम सुकाम।
बढ़े जिन दोज मयंक समान, रमैं बहुबालक निर्जर आन।।
भए जब अष्टम वर्ष कुमार, धरे अणुव्रत महा सुखकार।
पिता जब आन करी अरदास, करो तुम ब्याह वरो ममआस।।
करी तब नाहिं रहे जग चंद, किये तुम काम कषाय जुमंद।
चढ़े गजराज कुमारन संग, सुदेखत गंगतनी सुतरंग।।
लख्यो इक रंक करै तप घोर, चहुँ दिशि अगनि बलै अति जोर।
कहै जिननाथ अरे सुन भ्रात, करै बहुजीवन की मत घात।।
भयो तब कोप कहै कित जीव, जले तब नाग दिखाय सजीव।
लख्यो यह कारण भावन भाय, नये दिव ब्रह्मरिषिसुर आय।।
तबहिं सुर चार प्रकार नियोग, धरी शिविका निज कंध मनोग।
कियो वन माहिं निवास जिनंद, धरे व्रत चारित आनंदकंद।।
गहें तहँ अष्टम के उपवास, गये धनदत्त तने जु अवास।
दियो पयदान महासुखकार, भई पन वृष्टि तहाँ तिहिं बार।।
गये तब कानन मांहि दयाल, धरयो तुम योग सबहिं अघ टाल।
तबै वह धूम सुकेतु अयान, भयो कमठाचर को सुर आन।।
करै नभ गौन लखे तुम धीर, जु पूरब बैर विचार गहीर।
कियो उपसर्ग भयानक घोर, चली बहुतीक्षण पवन झकोर।।
रह्यो दशहूँ दिश में तम छाय , लगी बहु अग्नि लखी नहिं जाय।
सुरुण्डन के बिन मुण्ड दिखाय, पड़ैं जल मूसलधार अथाय।।
तबै पद्मावति- कंत धनिंद, नये जुग आय जहाँ जिनचन्द।
भग्यो तब रंक सु देखत हाल, लह्यो तब केवलज्ञान विशाल।।

दियो उपदेश महाहितकार, सुभव्यन बोध सम्मेद पधार।
सुवर्णभद्र जहाँ कूट प्रसिद्ध, वरी शिवनारि लही वसुरिद्ध।।
जजूँ तुम चरन दोउ कर जोर, प्रभू लखिये अब ही मम ओर।
कहै 'बख्तावर रत्न' बनाय, जिनेश हमें भव पार लगाय।।

(घत्ता छन्द)

जय पारस देवं सुरकृत सेवं, वंदत चरण सुनागपती।
करुणा के धारी, पर उपकारी, शिवसुखकारी, कर्महती।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छन्द)

जो पूजै मन लाय भव्य पारस प्रभु नित ही।
ताके दुख सब जांय भीति व्यापै नहिं कित ही।।
सुख संपत्ति अधिकाय पुत्र मित्रादिक सारे।
अनुक्रमसों शिव लहै, 'रतन' इमि कहै पुकारे।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री महावीर जिन पूजन

स्थापना

(नरेन्द्र छंद)

महावीर प्रभु दर्श दिखाना, दर्शन करने आया।
हृदय विराजो अतिवीर प्रभो, पूजन करने आया।।
चरण शरण में अरजी लाया, निज सम मुझे बनाना।
प्रभु कृपा कर कष्ट मिटाकर, सारे बंध छुड़ाना।। १।।
शक्ति नहीं है मुझमें भगवन्, अनंत शक्ती देना।
तव गुणगण को जान सकूँ प्रभु, इतनी भक्ती देना।।
कर्म शत्रु के नाश हेतु प्रभु, नाम आपका ध्याऊँ।
ज्ञान वेदी पर वीर प्रभु को, सविनय आज बिठाऊँ।। २।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(तर्ज – माता तू दया करके......)

श्रद्धा की वापी से, भक्ति जल भर लाया।
समकित कलशा लेकर, प्रभु चरण शरण आया।।
आनंद रस छलका दो, जग दाह मिटे स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।। १।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

चंदन से अति शीतल, प्रभु की पद रज धूलि।
नहीं चरणन स्पर्श किये, यह भारी भूल हुई।।
प्रभु शांति जल देना, भवताप मिटे स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।। २।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं.....।

क्षणभंगुर वैभव है, भव का वर्द्धन करता।
मैं राग किया करता, प्रतिपल उलझा रहता।।
प्रभु अक्ष अगोचर हो, अक्षय पद दो स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।। ३।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्......।

जब मान सरोवर में, शत दल सुरभित होता।
रस में फँसकर मधुकर, निज प्राण गँवा देता।।
प्रभु पद पंकज अलि बन, गुणगान करूँ स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।। ४।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं...।

इस कर्म असाता ने, चिरकाल सताया है।
जितना उपचार किया, तृष्णा को बढ़ाया है।।
निज दोष समझ आया, यह व्याधि हरो स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।। ५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं....।

मेरे चेतन गृह में, घनघोर अँधेरा है।
नहीं सूझ रहा आतम, मिथ्यातम घेरा है।।
रत्नत्रय दीप जला, निज ज्ञान जगे स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।। ६।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं..... ।

उपयोग भटकता है, कैसे निज मे लाऊँ।
औरों को समझाऊँ, पर खुद न समझ पाऊँ।।
प्रभु ध्यान धूप पाकर, सब कर्म नशें स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।। ७।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं....... ।

कर्मों के फल खाकर, बेहोश हुआ जग में।
जब से प्रभु दर्श किया, निज दर्श हुआ निज में ।।
चउ गति के भ्रमण मिटा, शिवफल पाऊँ स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।। ८।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...... ।

पर को देखा मैंने, निज को ही ना परखा।
अब सुख अनंत पाने, संबंध तजूँ पर का।।
ज्ञायक पद पा जाऊँ, हो शक्ति प्रगट स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।। ९।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...... ।

पंचकल्याणक

(तर्ज – बाजे कुंडलपुर में बधाई.....)

आषाढ़ सुदी छठ आई, कि स्वर्ग से जिन आये महावीर जी।
माँ प्रियकारिणी हर्षाई, कि गर्भ में प्रभु आये महावीर जी।।

हैं चौबीसवें तीर्थंकर, कि सुर नर गुण गाये महावीर जी।
माँ ने सोलह सपने देखे, कि त्रिभुवन के नाथ पाये महावीर जी।।
बाजे कुंडलपुर में बधाई, कि गर्भ में वीर आये महावीर....।। १।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

धन्य घड़ी जन्म की आई, कि ज्ञान धन बरसाये महावीर जी।
तिहुँलोक में आनंद छाया, कि सुख की बहार लाये महावीर जी।।
अभिषेक करे मेरु पर, कि क्षीर जल भर लाये महावीर जी।
हम जन्म कल्याणक मनाये, कि चैत सुदी तेरस आये महावीर जी।।
बाजे कुंडलपुर में बधाई, कि अँगना में वीर आये महावीर.....।। २।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मगसिर वदी दशमीं आई, कि प्रभु वैराग्य हुआ महावीर जी।
चंद्राभा पालकी लेकर, कि सुरपति वन आ गये महावीर जी।।
प्रभु ! सिद्ध नमः कहते ही, कि जिन दीक्षा धारी महावीर जी।
हो गए स्वयंभू स्वामी, कि परम जग उपकारी महावीर जी।।
बाजे आतम में शहनाई, कि निज गृह वीर आये महावीर.....।। ३।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ऋजुकूल सरित् तट तिष्ठे, कि वैशाख सुदि दशमी है महावीर जी।
प्रभु शुक्लध्यान के धारी, कि घाति चउ नाश किये हैं महावीर जी।।
हुई समवसरण शुभ रचना, कि भविक जन हितकारी महावीर जी।
बिन इच्छा ध्वनि खिरी है, कि प्रभु की अमृतवाणी महावीर जी।।
बाजे समवसरण शहनाई, कि गगन में वीर आये महावीर....।। ४।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

जब कार्तिक अमावस आई, कि दीपावली आई महावीर जी।
घड़ी स्वाति नखत की आई, कि प्रभु मुक्ति पाई महावीर जी।।
प्रभु पूर्ण परम पद पाये, कि अष्टम भू पाये महावीर जी।
सब जय बोले धरती पर, कि कब निर्वाण पाये महावीर जी।।
बाजे आत्म नगर शहनाई,कि वीर प्रभु मोक्ष पाये महावीर.....।। ५।।

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णाअमावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

दोहा

बाल ब्रह्मचारी प्रभु, महावीर जिननाथ।
गुण वर्णन कैसे कहूँ, अतः धरूँ पद माथ।। १।।

(तर्ज – स्रग्विणी छंद)

जय महावीर अतिवीर पद को नमूँ।
सन्मति नाथ दाता सुवीर नमूँ।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।। २।।
वर्द्धमानेश सिद्धार्थ सुत को नमूँ।
मात त्रिशला के नंदन को मन से नमूँ।। ३।।
है पुरुरवा से जीवन कहानी शुरू।
भव धरे अनगिनत कैसे गिनती करूँ।। ४।।
पुण्योदय से भरत सुत मारीचि हुये।
भाव मिथ्यात्व के वश भटकते रहे।। ५।।
बन गये अर्ध चक्री त्रिपृष्ठ पती।
भव भ्रमण ही किया नहीं सुधरी मति।। ६।।
भाव अज्ञान में कर्म बंधन किया।
चार गति में रुला क्रूर सिंह बन गया।। ७।।
पुण्य से ऋद्धि चारण मुनी मिल गये।
देशना पाके अश्रु नयन भर गये।। ८।।
मिथ्यातम हट गया दीप सम्यक् जला।
श्री गुरु की शरण से ही बंधन टला।। ९।।
फिर प्रथम स्वर्ग में सिंहकेतु हुये।
देव फिर विद्याधर से मुनिव्रत लिये।। १०।।

स्वर्ग सप्तम से राजा हरिषेण हुये।
फिर महाशुक्र से राजपुत्र हुये।।११।।
स्वर्ग द्वादश गये नंद राजा हुये।
दीक्षा लेकर तीर्थंकर की सत्ता लिये।। १२।।
सोलवें स्वर्ग से मां को सपने दिये।
माता त्रिशला के नैन सितारे हुये।। १३।।
धन की वृद्धि से श्री वर्द्धमान हुये।
मेरु पर्वत दबाया तो वीर हुये।। १४।।
मुनि संजय विजय मन में शंकित हुये।
देखकर बाल जिन को निःशंकित हुये।। १५।।
सन्मति नाम तत्क्षण रखा मुनिवरा।
दृष्टि सम्यक् करो हे मेरे महावीरा।। १६।।
देव संगम परीक्षा को विषधर बना।
उसके फण पर चढ़े नाथ ताली बजा।। १७।।
धन्य हो वीर स्वामी चरण में नमा।
दास हूँ आपका मुझको कर दो क्षमा।। १८।।
एक हाथी मदोन्मत्त अवश हो रहा।
वीर को देखकर शांत ही हो गया।। १९।।
तब अतिवीर कहने लगे जन सभी।
पाँच ही नाम सार्थक किये नाथ जी।। २०।।
तीस ही वर्ष में तप धरा आपने।
रुद्र का विघ्न जिनवर सहा आपने।। २१।।
वर्ष बारह प्रभु मौन की साधना।
घातिया नष्ट हो ज्ञान केवल घना।। २२।।

दिन छ्यासठ हुए देशना-ना खिरे।
आये गौतम प्रभु पद में शीश धरे।। २३।।
प्रभु वाणी खिरी जैसे फुलवा झरें।
भव्य जीवों के जिनवाणी कल्मष हरे।। २४।।
तीस ही वर्ष प्रभु ने विहार किया।
आये पावापुरी योग रोध किया।। २५।।
कर्म संपूर्ण को नाश कर सुख लिया।
मुक्तिकांता वरी लक्ष्य को पा लिया।। २६।।
है परम पूज्य पावापुरी की धरा।
नाथ निर्वाण पाया है पुण्य धरा।। २७।।
दीप माला हुई ज्ञान ज्योति जली।
जैसे जन्मांध को रोशनी है मिली।। २८।।
सारे जग में दीवाली मनाई गई।
मोक्षलक्ष्मी मिले भावना की गई।। २९।।
आत्म गुण हेतु हे नाथ पूजा करूँ।
एक भव में ही मैं नाथ मुक्ति वरूँ।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।। ३०।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं......।

घत्ता

अंतिम तीर्थेशा, वीर जिनेशा, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।

श्री महावीर जिन - पूजा

कविवर वृन्दावनदास

मत्तगयन्द

श्रीमत वीर हरैं भव-पीर, भरें सुख-सीर अनाकुलताई,
केहरि-अंक अरीकरदंक, नये हरि-पंकति-मौलि सुआई।
मैं तुमको इत थापतु हौं प्रभु, भक्ति समेत हिये हरषाई,
हे करुणा-धन-धारक देव इहाँ अब तिष्ठहुँ शीघ्रहि आई।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

छन्द अष्टपदी

क्षीरोदधि सम सुचि नीर, कंचन-भृंग भरों,
प्रभु वेग हरो भव-पीर, यातैं धार करों।
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति नायक हो,
जय वर्द्धमान गुण-धीर सन्मति-दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर-चन्दन सार, केशर-संग घसौं।
प्रभु भव-आताप निवार, पूजत हिय हुलसौं।। श्रीवीर.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

तन्दुल सित शशि-सम शुद्ध, लीनों थार भरी।
तसु पुंज धरों अविरुद्ध, पावों शिव-नगरी।। श्रीवीर.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरतरु के सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे।
सो मन्मथ-भंजन हेत, पूजों पद थारे।। श्रीवीर.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

रस-रज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख-अरी।। श्रीवीर.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

तम-खण्डित मण्डित-नेह, दीपक जोवत हों।
तुम पदतर हे सुख-गेह, भ्रम-तम खोवत हों।। श्रीवीर.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

हरिचि चन्दन अगर कपूर, चूर सुगन्ध करा।
तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा।। श्रीवीर.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

ऋतुफल कलवर्जित लाय, कंचन-थार भरों।
शिव-फल-हित हे जिनराय, तुम ढिंग भेंट धरों।। श्रीवीर.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलफल वसु सजि हिमथार, तनमन मोद धरों।
गुण गाऊँ भव-दधि तार, पूजत पाप हरों।। श्रीवीर.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक

राग टप्पा चाल

मोहि राखो होसरना, श्रीमहावीर जिनरायजी।। मोहि.।।
गरभ साढ़ सित छट्ठ लियो थिति, त्रिशला उर अघ-हरना।
सुर सुरपति तित सेव करें नित, मैं पूजों भव-तरना।। मोहि.।।

ॐ ह्रीं आषाएशुक्लषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घं।

जनम चैत सित तेरस के दिन, कुण्डलपुर कन वरना।।
सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों भव-हरना।। मोहि.।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घं।

मगसिर असित मनोहर दशमी, ता-दिन तप आचरना।
नृप-कुमार घर पारन कीनों, मैं पूजों तुम चरना।। मोहि.।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घं।

शुकलदशैं वैशाख दिवस अरि, घातिचतुक छयकरना।
केवल लहि भवि भव-सर तारे, जजों चरन सुख भरना।। मोहि.।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घं।

कार्तिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुर तैं वरना।
गनफनिवृन्द जजैं तित बहुवधि, मैं पूजों भय हरना।। मोहि.।।

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घं।

जयमाला

छन्द हरिगीता

गनधर असनिधर, चक्रधर, हलधर गदाधर वरवदा,
अरु चापधर विद्यासुधर, तिरसूलधर सेवहिं सदा।
दुख हरन आनन्द-भरन तारन, तरन चरन रसाल हैं,
सुकुमाल गुन-मनिमाल उन्नत, भाल की जयमाल है।।

घत्तानन्द

जय त्रिशला नन्दन, हरिकृत वन्दन, जगदानन्दन चन्दवरं।
भवताप निकन्दन, तन मन कन्दन, रहित सपन्दन नयनधरं।।

छन्द तोटक

जय केवल-भानु कलासदनं, भवि-कोक-विकासनकंद-वनं।
जग-जीत-महारिपु-मोह-हरं, रज-ज्ञान-दृगांवर चूर-करं।। १।।
गर्भादिक-मंगल-मण्डित हो, दुःख-दारिद को नित खण्डित हो।
जग माहिं तुम्हीं सत-पण्डित हो,तुम ही भव-भाव विहण्डित हो।। २।।
हरिवंश-सरोजन को रवि हो, बलवन्त महन्त तुम्हीं कवि हो।
लहि केवल धर्म-प्रकाश कियो, अबलों सोइ मारग राजतियो।। ३।।
पुनि आप तने गुन माँहि सही, सुर मग्न रहैं जितने सब ही।
तिनकी वनिता गुन गावत हैं, लय माननि सौं मन-भावत हैं।। ४।।
पुनि नाचत रंग उमंग भरी, तुअ भक्ति विषैं पग एम धरी।
झननं झननं झननं झननं, सुर लेत तहाँ तननं तननं।। ५।।

घननं घननं घन घण्ट बजै, दृमदं दृमदं मिरदंग सजै।
गगनांगन-गर्भगता सुगता, ततता ततता अतता वितता।। ६।।
धृगतां धृगतां गति बाजत हैं, सुरताल रसाल जु छाजत हैं।
सननं सननं सननं नभ में, इक रूप अनेक जु धारि भ्रमें।। ७।।
कई नारि सुबीन बजावति हैं, तुमरो जस उज्जवल गावति हैं।
कर-ताल विषैं करताल धरैं, सुरताल विशाल जु नाद करें।। ८।।
इन आदि अनेक उछाह भरी, सुर भक्ति करें प्रभु जी तुमरी।
तुम ही जग-जीवन के पितु हो, तुम ही बिन कारन तैं हितु हो।। ९।।
तुम ही सब विघ्न-विनाशन हो, तुम ही निज आनन्द-भासन हो।
तुम ही चित चिन्तिन-दायक हो,जगमाँहिं तुम्हीं सब लायक हो।।१०।।
तुमरे पन मंगल माँहिं सही, जिय उत्तम पुन्य लियो सब ही।
हम तो तुमरी शरणागत हैं, तुमरे गुन में मन पागत है।। ११।।
प्रभु मो हिय आप सदा बसिये, जब लों वसु कर्म नहीं नसिये।
तब लों तुम ध्यान हिये वरतो, तब लों श्रुत चिन्तन चित्त रतों।। १२।।
तब लों व्रत चारित चाहतु हों, तब लों शुभ भाव सुगाहतु हों।
तब लों सत-संगति नित्त रहो, तब लों मम संजम चित्त गहो।। १३।।
जब लों नहिं नाश करौं अरि को, शिव-नारि वरौं समता धरि को।
यह द्यो तब लों हमको जिन जी, हम जाचतु हैं इतनी सुन जी।। १४।।

घत्तानन्द

श्रीवीर-जिनेशा नमित-सुरेशा, नाग-नरेशा भगति भरा।
'वृन्दावन' ध्यावै विघन नशावै, वांछित पौव शर्म-वरा।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

श्री सनमति के जुगल पद, जो पूजै धरि प्रीति।
'वृन्दावन' से चातुर नर, लहै मुक्ति नवनीत।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि

श्री सिद्ध पूजन

(संस्कृत)

ऊर्ध्वाधो-रयुतं सबिन्दुसपरं, ब्रह्मस्वरा-वेष्टितं,
वर्गापूरितदिग्गताम्बुज-दलं, तत्सन्धि-तत्त्वान्वितम्।
अन्तः पत्रतटेष्व- नाहतयुतं, ह्रींकार-संवेष्टितं,
देवं ध्यायति यः स मुक्ति सुभगो वैरीभ कण्ठीरवः ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिन्। अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्।

निरस्तकर्म सम्बन्धं, सूक्ष्मं नित्यं निरामयं।
वन्देऽहं परमात्मान-ममूर्त-मनुपद्रवम्।।
(यह पढ़कर थाल में पुष्प छोड़ना चाहिए)

सिद्धों निवासमनुगं परमात्म-गम्यं,
हीनादि-भाव-रहितं भव वीत कायं।
रेवा-पगा-वरसरोयमुनोद्भवानां,
नीरैर्यजे कलशगैर्वरसिद्धचक्रम।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने। जलं नि. स्वाहा।

आनंद-कंद - जनकं धन-कर्म-मुक्तं,
सम्यक्त्व - शर्म- गरिमं जननार्तिवीतम्।
सौरभ्य-वासित-भुवं हरि-चंदनानां,
गंधैर्यजे परिमलै र्वरसिद्धचक्रम्।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने। चंदनं नि. स्वाहा।

सर्वावगाहन - गुणं सुसमाधिनिष्ठं,
सिद्धं स्वरूपनिपुणं कमलं विशालं।
सौगन्ध्यशालि - वनशालि-वराक्षतानां,
पुञ्जैर्यजे शशिनिभै-र्वरसिद्धचक्रम्।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने। अक्षतं नि. स्वाहा।

नित्यं स्वदेह - परिमाण- मनादि - संज्ञं,
द्रव्या-नक्षेप-ममृतं मरणा-द्यतीतम्।
मन्दार-कुन्द-कमलादि-वनस्पतीनां,
पुष्पैर्यजे शुभतमै-र्वर-सिद्ध-चक्रम।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने। पुष्पं नि. स्वाहा।

उर्ध्व-स्वभाव-गमनं सुमनो-व्यपेतं,
ब्रह्मादि-बीज-सहितं गगनाव-भासम्।
क्षीरान्न-साज्य-वटकै रस-पूर्णगर्भै-
र्नित्यं यजे चरुवरैर्वर-सिद्धचक्रम्।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने। नैवेद्यं नि. स्वाहा।

आतंकशोक-भयरोगमद-प्रशांतं,
निर्द्वन्द्व-भाव-धरणं महिमा-निवेशम्।
कर्पूरवर्ति-बहुभिः कनका-वदातै,
र्दीपैर्यजे रुचिवरै र्वरसिद्ध-चक्रम्।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने। दीपं नि. स्वाहा।

पश्यन्समस्त-भुवनं युगपन् नितान्तं,
त्रैकाल्य-वस्तु-विषये-निविड-प्रदीपं।
सद्द्रव्य-गंधघन-सार-विमिश्रितानां,
धूपै-र्यजे-परिमलै-र्वरसिद्धचक्रम्।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने। धूपं नि. स्वाहा।

सिद्धा-सुराधिपति-यक्ष-नरेन्द्र-चक्रै,
र्ध्येयं शिवं सकल-भव्य-जनैः सुवंद्यम्।
नारंगि-पुंग-कदली-फल-नारि-केलैः,
सोऽहं यजे वरफलै-र्वरसिद्धचक्रम्।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने फलं नि. स्वाहा।

गन्धाढ्यं-सुपयो मधुव्रतगणैः संगं वरं चन्दनम्,
पुष्पौघं विमलं-सदक्षतचयं रम्यं चरुं दीपकम्।

धूपं गन्धयुतं-ददामि विविधं, श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युग-पत्क्रमाय विमलं, सेनोत्तरं वांछितम्।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने। अर्घं नि. स्वाहा।

ज्ञानोपयोग-विमलं विशदात्म-रूपं,
सूक्ष्मस्वभाव-परमं यदनंतवीर्यम्।
कर्मौघ कक्षदहनं सुख-सस्यबीजं,
वन्दे सदा निरुपमं वरसिद्धचक्रम्।
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं मोक्ष-लक्ष्मीनिके-तनम्,
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने। महार्घं नि. स्वाहा।

त्रैलोक्येश्वर-वन्दनीय-चरणाः, प्रापुः श्रियं शाश्वतीं।
यानाराध्य-निरुद्ध चण्डमनसः सन्तोऽपि तीर्थंकराः।
सत्सम्यक्त्व-विबोधवीर्य-विशदाऽव्याबाध-ताद्यै र्गुणैर,
युक्तांस्तानिह-तोष्टवीमि सततं, सिद्धान् विशुद्धोदयान्।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

जयमाला

विराग सनातन शान्तनिरंश, निरामय निर्भय निर्मल हंस।
सुधामविबोध निधानविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह।।
विदूरित संसृतिभाव निरंग, समामृतपूरित देव विसंग।
अबन्ध कषायविहीन विमोह, प्रसीद विशुद्ध सु सिद्ध समूह।।
निवारित दुष्कृत कर्म विपाश, सदामल केवल-केलि निवास।
भवोदधिपारग शान्तविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह।।
अनन्तसुखामृतसागर धीर, कलंक-रजो-मलभूरि-समीर।
विखण्डित कामविरामविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह।।
विकारविवर्जित तर्जितशोक, विबोधसुनेत्र-विलोकितलोक।
विहारविराव विरंगविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह।।
रजोमल खेदविमुक्त विगात्र, निरन्तर नित्यसुखामृत-पात्र।
सुदर्शनराजित-नाथ विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह।।

नरामर-वन्दित निर्मल-भाव, अनन्त मुनीश्वर पूज्यविहाव।
सदोदय विश्वमहेश विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह।।
विदम्भ वितृष्णविदोषविनिद्र, परापर शंकरसार वितन्द्र।
विकोपविरूप विशंकविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह।।
जरामरणोज्झित-वीतविहार, विचिन्तित निर्मलनिरहंकार।
अचिन्त्यचरित्र विदर्पविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह।
विवर्णविगंध विमान विलोभ, विमायविकायविशब्दविशोभ।
अनाकुल केवल सर्व विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह।।
असम-समय सारं, चारुचैतन्य-चिह्नं,
परपरिणति - मुक्तं, पद्मनन्दीन्द्रवन्द्यम्।
निखिलगुण-निकेतं, सिद्धचक्रं विशुद्धं,
स्मरति नमति यो वा, स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिम्।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने। अर्घं नि. स्वाहा।

(अडिल्ल छन्द)

अविनाशी अविकार परमरसधाम हो।
समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो।।
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि अनन्त हो।
जगत शिरोमणि सिद्ध सदा जयवन्त हो।।
ध्यान अगनिकर कर्म कलंक सबै दहे।
नित्य निरञ्जन देव स्वरूपी ह्वै रहे।।
ज्ञायक ज्ञेयाकार ममत्व निवार कें।
सो परमातम सिद्ध नमूं सिर नायकें।।

(दोहा)

अविचल ज्ञान प्रकाशतें, गुण अनन्त की खान।
ध्यान धरै सोई पाइये, परम सिद्ध भगवान्।।
अविनाशी अनन्दमय, गुण पूरण भगवान।
शक्ति हिये परमात्मा, सकल पदारथ जान।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर पूजन

दीप अढ़ाई मेरू पन सब तीर्थंकर बीस।
तिन सबकी पूजा करूँ मन वच तन धरि शीस।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरा: अत्र अवतर अवतर संवौषट् अह्वाननम्।
ॐ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

इन्द्र-फणीन्द्र-नरेन्द्र वंद्य पद निर्मल धारी।
शोभनीक संसार सार गुण हैं अविकारी।।
क्षीरोदधि सम नीर सों हो पूजों तृषा निवार।
सीमंधर जिन आदि दे बीस विदेह मँझार।।
श्री जिनराज हो भव-तारण तरण जिहाज।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर, युगमन्धर, बाहु, सुबाहु, सुजात, स्वयंप्रभ, ऋषभानन, अनन्तवीर्य, सूरप्रभ, विशालकीर्ति, वज्रधर, चन्द्रानन, भद्रबाहु, भुजंगम, ईश्वर, नेमिप्रभ, वीरसेन, महाभद्र, देवयश, अजितवीर्येति विद्यमानविंशति-तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के जीव पाप-आताप सताये।
तिनको साता दाता शीतल वचन सुहाये।
बावनचंदनसोंजजूँ हो भ्रमन-तपन निरवार। सी.।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो भवाताप विनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

यह संसार अपार महासागर जिनस्वामी,
तातैं तारे बड़ी, भक्ति-नौका जग नामी।
तन्दुल अमल सुगंधसों हो पूजों तुम गुणसार।। सी.।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा।

भविक-सरोज-विकाश निंद्य-तमहर रवि से हो।
जति-श्रावक आचार कथन को तुम्हीं बड़े हो।।
फूल सुवास अनेक सों हो पूजों मदन-प्रहार ।। सी.।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काम-नाग विषधाम नाश को गरुड कहे हो।
छुआ महादव-ज्वाल तास को मेघ लहे हो।।
नेवज बहुघृत मिष्ट सों हो पूजों भूखविडार।। सी.।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविशतितीर्थंकरेभ्य: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उद्यम होन न देत सर्व जगमाहिं भर्यो है।
मोह-महातम घोर नाश परकाश कर्यो है।।
पूजों दीप प्रकाश सों हो ज्ञान-ज्योति करतार।। सी.।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म आठ सब काठ भार विस्तार निहारा।
ध्यान अगनिकर प्रगट सरब कीनो निरवारा।।
धूप अनूपम खेवते हो दु:ख जलै निरधार ।। सी.।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविशतितीर्थंकरेभ्य: अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

मिथ्यावादी दुष्ट लोभऽहंकार भरे हैं।
सबको छिन में जीत जैन के मेरु खड़े हैं।।
फल अतिउत्तम सोंजजों हो वांछित फल-दातार।। सी.।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आठों दर्व अरघ कर प्रीति धरी है।
गणधर-इन्द्रनिहू तैं थुति पूरी न करी है।।
'द्यानत' सेवक जानके हो जग ते लेहु निकार।। सी.।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

ज्ञान-सुधाकर चन्द, भविक-खेतहित मेघ हो।
भ्रम-तम भान अमन्द तीर्थंकर बीसों नमों।।

(चौपाई)

सीमंधर सीमंधर स्वामी, जुगमन्धर जुगमन्धर नामी।
बाहु बाहु जिन जग-जन तारे, करम सुबाहु बाहुबल धारे।।
जात सुजातं केवलज्ञानं, स्वयं प्रभु स्वयं प्रधानं।
ऋषभानन ऋषि भानन दोषं, अनंतवीरज वीरज कोषं।।
सौरी प्रभ सौरीगुणमालं, सुगुण विशाल विशाल दयालं।
वज्रधार भवगिरि वज्जर हैं, चन्द्रानन चन्द्रानन वर हैं।।
भद्रबाहु भद्रनि के करता, श्रीभुजंग भुजंगम हरता।
ईश्वर सबके ईश्वर छाजै, नेमिप्रभु जस नेमि विराजैं।।
वीरसेन वीरं जग जानैं, महाभद्र महाभद्र बखानैं।
नमों जसोधर जसधरकारी, नमों अजित वीरज बलधारी।।
धनुष पाँचसौ काय विराजैं, आयु कोडि पूरब सब छाजैं।
समवशरण शोभित जिनराजा, भवजल-तारन तरन जिहाजा।।
सम्यक् रत्नत्रय-निधि दानी, लोकालोक-प्रकाशक ज्ञानी।
शत इन्द्रनि कर वंदित सो हैं, सुर-नर-पशु सबके मन मोहैं।।
तुमको पूजें बंदना, करैं धन्य नर सोय।
द्यानत सरधा मन धरैं, सो भी धर्मी होय।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीरविव्रत पूजन

अडिल्ल

यह भविजन हितकार, सु रविव्रत जिन कही।
करहु भव्यजन सर्व, सममन देकें सही।।
पूजों पार्श्व जिनेन्द्र, त्रियोग लगायके।
मिटैं सकल सन्ताप, मिलै निधि आयके।।
मतिसागर इक सेठ, सु ग्रन्थन में कहो।
उनने भी यह पूजा कर आनन्द लहो।।

तातें रविव्रत सार, सो भविजन कीजिये।
सुख सम्पति संतान, अतुल निधि लीलिये।।
प्रणमों पार्श्व जिनेश को, हाथजोड़ सिर नाय।।
परभव सुख के कारने, पूजा करूं बनाय।।
रविवार व्रत के दिना, ये ही पूजन ठान।
ताफल सम्पत्ति को लहैं, निश्चय लीजे मान।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं पार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं पार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

उज्जवल जल भरकें अतिलायो, रतन कटोरन माँहीं।
धार देत अति हर्ष बढ़ावत, जन्म जरा मिट जाहीं।।
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों, रविव्रत के दिन भाई।
सुख सम्पत्ति बहु होय तुरतही, आनन्द मंगल दाई।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर केशर अति सुन्दर, कुंकुम रंग बनाई।
धारदेत जिन चरनन आगे, भव आताप नशाई।। पारस.।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम अति उज्जवल तंदुल, लावो नीर पखारो।
अक्षयपदके हेतु भावसों, श्रीजिनवर ढिग धारो।। पारस.।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बेला अरु मचकुंद चमेली, पारिजात के ल्यावो।
चुनचुन श्रीजिन अग्र चढ़ाऊँ, मनवांछित फल पावो।। पारस.।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

बावर फैनी गुजिया आदिक, घृत में लेत पकाई।
कंचन थार मनोहर भरके, चरनन देत चढ़ाई।। पारस.।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय दीप रतनमय लेकर ,जगमग जोति जगाई।
जिनके आगे आरति करके, मोहतिमिर नशजाई।। पारस.।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चूरन कर मलयागिर चंदन, धूप दशांग बनाई।
तट पावक में खेय भाव सों, कर्मनाश हो जाई।। पारस.।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि बदाम सुपारी, भांति भांति के लावो।
श्रीजिनचरन चढ़ाय हरषकर, तातें शिवफल पावो।। पारस.।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, अर्घ बनावो भाई।
नाचत गावत हर्षभाव सों, कंचन थार भराई।। पारस.।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनायजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

गीतिका

मन वचन काय त्रिशुद्ध करके, पाार्श्वनाथ सु पूजिये,
जल आदि अर्घ बनाय भविजन, भक्तिवंत सु हूजिये।
पूज्य पारसनाथ जिनवर, सकल सुखदातार जी,
जे करत हैं नर नारि पूजा, लहत सौख्य अपार जी।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

यह जग में विख्यात है पारसनाथ महान।
तिन गुण की जयमालिका, भाषा करूं बखान।।

पद्धरि

जय जय प्रणमों श्री पार्श्व देव, इन्द्रादिक तिनकी करत सेव।
जय जय सु बनारस जन्म लीन, तिहुँ लोक विषैं उद्योत कीन।। १।।

जय जिनके पितु श्री विश्वसेन, तिनके घर भये सुखचैन देन।
जय वामा देवी मात जान, तिनके उपजे पारस महान।। २।।
जय तीन लोक आनन्द देन, भविजन के दाता भये ऐन।
जय जिनने प्रभु का शरण लीन, तिनकी सहाय प्रभुजी सो कीन ।। ३।।
जय नाग नागिनी भये अधीन, प्रभु चरणन लाग रहे प्रवीन।
तज देह देवगति गये जाय, धरणेन्द्र पद्मावति पद लहाय।। ४।।
जय अञ्जन चोर अधम अजान, चोरी तज, प्रभु को धरो ध्यान।
जय मृत्यु भये वह स्वर्ग जाय, ऋद्धी अनेक उनने सो पाय।। ५।।
जय मतिसागर इक सेठ जान, तिन अशुभ कर्म आयो महान।
तिनके सुत थे परदेश माँहिं, उनसे मिलने की आश नांहिं।। ६।।
जय रविव्रत पूजन करी सेठ, ता फल कर सबसे भई भेंट।
जिन-जिनने प्रभु का शरण लीन, तिन ऋद्धि सिद्धि पाई नवीन।। ७।।
जय रविव्रत पूजा करहिं जेय, ते सौख्य अनन्तानन्त लेय।
धरणेन्द्र पद्मावति हुय सहाय, प्रभुभक्त जान तत्काल आय।। ८।।
पूजा विधान इह विधि रचाय, मन वचन काय तीनों लगाय।
जो भक्ति भाव जयमाल गाय, सो ही सुख सम्पति अतुल पाय ।। ९।।
बाजत मृदंग बीनादि सार, गावत नाचत नाना प्रकार।
तन नन नन नन नन ताल देत, सन नन नन नन सुर भर सो लेत ।। १०।।
ताथेई थेई थेई पग धरत जाय, छम छम छम छम घुंघरू बजाय।
जे करहिं निरत इह भाँत भाँत, ते लहहिं सुक्ख शिवपुर सुजात।। ११।।

दोहा

रविव्रत पूजा पार्श्व की, करै भविक जन जोय।
सुख सम्पति इह भव लहै, आगे सुर पद होय।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल

रविव्रत पार्श्व जिनेन्द्र, पूज भवि मन धरें।
भव भव के आताप, सकल छिन में टरें।।
होय सुरेन्द्र नरेन्द्र, आदि पदवी लहे।
सुख सम्पति सन्तान, अटल लक्ष्मी रहे।।
फेर सर्व विधि पाय, भक्ति प्रभु अनुसरें।
नानाविध सुख भोग, बहुरि शिवतिय वरें।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

सोलहकारण-पूजा

कविवर द्यानतराय

अडिल्ल

सोलह कारण भाय तीर्थंकर जे भये।
हरषे इन्द्र अपार मेरु पै ले गये।।
पूजा करि निज धन्य लख्यो बहु चाव सौं।
हमहू षोडश कारन भावैं भाव सौं।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि। अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

चौपाई आचंलीबद्ध

कंचन-झारी निरमल नीर पूजों जिनवर गुन-गंभीर।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद दाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविना-शनायजलं निर्व.।

चंदन घसौं कपूर मिलाय, पूजौं श्रीजिनवर के पाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।। दरश.।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्व.।

तंदुल धवल सुगंध अनूप, पूजौं जिनवर तिहुँ जगभूप।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।। दरश.।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व.।

फूल सुगंध मधुप-गुंजार, पूजौं जिनवर जग-आधार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।। दरश.।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकरणेभ्य: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि निर्व.।

सद नेवज बहुविधि पकवान, पूजौं श्रीजिनवर गुणखान।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।। दरश.।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व.।

दीपक ज्योति तिमिर छयकार, पूजूं श्रीजिन केवलधार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।। दरश.।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो मोहान्धकारविनाशाय दीपं निर्व.।

अगर कपूर गंध शुभ खेय, श्रीजिनवर आगे महकेय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।। दरश.।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व.।

श्रीफल आदि बहुत फलसार, पूजौं जिन वांछित-दातार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।। दरश.।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व.।

जल फल आठों दरब चढ़ाय, 'द्यानत' वरत करों मन लाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद दाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धियादि षोडशकारणेभ्यो अर्घं निर्व.।

जयमाला

दोहा

षोडश कारण गुण करै, हरै चतुरगति-वास।
पाप पुण्य सब नाश के, ज्ञान-भानु परकाश।।

चौपाई

दरश-विशुद्धि धरे जो कोई, ताकौ आवागमन न होई।
विनय-महा धारै जो प्राणी, शिववनिता की सखी बखानी।।
शील सदा दृढ़ जो नर पालै, सो औरन की आपद टालै।
ज्ञानाभ्यास करै मन माँहीं, ताके मोह-महातम नाहीं।।
जो संवेग-भाव विस्तारै, सुरग-मुकति-पद आप निहारै।
दान देय मन हरष विशेखै, इह भव जस परभव सुख देखै।।
जो तप तपै खपै अभिलाषा, चूरे करम-शिखर गुरु भाषा।
साधु-समाधि सदा मन लावै, तिहुँ जग भोग भोगि शिव जावे।।
निश-दिन वैयावृत्य करैया, सो निहचै भव-नीर तिरैया।
जो अरहंत-भगति मन आनै, सो जन विषय-कषाय न जाने।।
जो आचारज-भगति करे है सो निर्मल आचार धरै हैं।
बहुश्रुतवंत भगति जो करई सो नर संपूरन श्रुत धरई।।
प्रवचन-भगति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमांद-दाता।
षट्-आवश्यक काल जो साधै, सो ही रत्नत्रय आराधै।।
धर्म-प्रभाव करें जे ज्ञानी, तिन शिव-मारग रीति पिछानी।
वत्सल अंग सदा जो ध्यावै, सो तीर्थंकर पदवी पावै।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि-विनयसंपन्नता-शीलव्रतेष्वनतिचाराभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोग-संवेग-शक्तितस्त्यागत-पःसाधुसमाधि-वैयावृत्य करणार्हद्भक्ति-आचार्यभक्ति-बहुश्रुतभक्ति-प्रवचनभक्ति-आवश्यकापरिहाणि-मार्ग प्रभावना-प्रवचनवात्सल्येति तीर्थंकरत्व-कारणेभ्योऽनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

एही सोलह भावना, सहित धरै व्रत जोय
देव इन्द्र-नर-वन्द्य-पद 'द्यानत' शिवपद होय।।

इत्याशीर्वादः

सोलह अंगों के सोलह अर्घ

सवैया तेईसा

दर्शन शुद्ध न होवत जो लग, तो लग जीव मिथ्याती कहावे।
काल अनंत फिरो भव में, महादुःखनको कहुँ पार न पावे।।
दोष पचीस रहित गुण-अम्बुधि, सम्यकदरशन शुद्ध ठरावै।
'ज्ञान' कहे नर सोहि बड़ो, मिथ्यात्व तजे जिनमारग ध्यावै।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव तथा गुरुराय तथा, तप संयम शील व्रतादिक-धारी।
पाप के हारक काम के छारक, शल्य-निवारक कर्म-निवारी।।
धर्म के धीर कषाय के भेदक, पंच प्रकार संसार के तारी।
'ज्ञान' कहे विनयो सुखकारक, भाव धरो मन राखो विचारी।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नता भावनायै नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शील सदा सुखकारक है, अतिचार-विवर्जित निर्मल कीजे।
दानव देव करें तसु सेव, विषानल भूत पिशाच पतीजे।।
शील बड़ो जगमें हथियार, जुशील को उपमा काहे की दीजे।।
'ज्ञान' कहे नहिं शील बराबर, तातें सदा दृढ़ शील धरीजे।।

ॐ ह्रीं निरतिचारशीव्रतभावनायै नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान सदा जिनराज को भाषित, आलस छोड़ पढ़े जो पढ़ावे।
द्वादस दोउ अनेकहुँ भेद, सुनाम मती श्रुति पंचम पावे।।
चारहुँ भेद निरन्तर भाषित, ज्ञान अभीक्षण शुद्ध कहावे।
'ज्ञान' कहे श्रुत भेद अनेक जु, लोकालोक हि प्रगट दिखावे।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भ्रात न तात न पुत्र कलत्र न, संयम सज्जन ए सब खोटो।
मन्दिर सुन्दर काय सखा, सबको इसको हम अंतर मोटो।।
भाउके भाव धरी मन भेदन, नाहिं संवेग पदारथ छोटो।
'ज्ञान' कहेशिवसाधनको जैसो,साह को काम करे जु बणोटो।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पात्र चतुर्विध देख अनूपम, दान चतुर्विध भावसुँ दीजे।
शक्तिसमान अभ्यागत को, अति आदर से प्रणिपत्य करीजे।।
देवत जे नर दान सुपात्रहिं, तास अनेकहिं कारण सीजे।
बोलत 'ज्ञान' देहि शुभ दान जु, भोग सुभूमि महासुख लीजे।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म कठोर गिरावन को निज, शक्तिसमान उपोषण कीजे।
बारह भेद तपे तप सुन्दर, पाप जलाञ्जलि काहे न दीजे।।
भाव धरी तप घोर करो, नर, जन्म सदा फल काहे न लीजे।
'ज्ञान' कहे तप जे नर भावत, ताके अनेकहिं पातक छीजे।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

साधुसमाधि करो नर भावक, पुण्य बड़ो उपजे अघ छीजे।
साधु की संगति धर्म को कारण, भक्ति करे परमारथ सीजे।
साधुसमाधि करे भव छूटत, कीर्ति-छटा त्रैलोक में गाजे।
'ज्ञान' कहेयहसाधु बड़ो गिरिशृंग गुफा बिच जाय विराजे।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधि भावनायै नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म के योग व्यथा उदई मुनि, पुंगव कुन्तसभेषज कीजे।
पीत कफान कसास भगन्दर, तापको सूल महागद छीजे।।
भोजन साथ बनायके औषध, पथ्य कुपथ्य विचार के दीजे।
'ज्ञान' केहे नित ऐसी वैय्यावृत करे तस देव पतीजे।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्यकरणभावनायै नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव सदा अरिहन्त भजो जई, दोष अठारा किये अति दूरा।
पाप पखाल भये अति निर्मल, कर्म कठोर किये चकचूरा।।
दिव्य अनन्त-चतुष्टयशोभित, घोर मिथ्यान्ध-निवारण सूरा।
'ज्ञान' कहे जिनराज अराधो, निरन्तर जे गुण-मन्दिर पूरा।।

ॐ ह्रीं अर्हद् भक्तिभावनायै नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देवत ही उपदेश अनेक सु, आप सदा परमारथ-धारी।
देश विदेश विहार करें, दश धर्म धरें भव-पार उतारी।।
ऐसे अचारच भाव धरी भज, सो शिव चाहत कर्म निवारी।
'ज्ञान' कहेगुरु-भक्ति करो नर, देखत ही मनमांहि विचारी।।

ॐ ह्रीं आचार्य भक्तिभावनायै नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आगम छन्द पुराण पढ़ावत, साहित्य तर्क वितर्क बखाने।
काव्य कथा नव नाठक पूजन, ज्योतिष वैद्यक शास्त्र प्रमाने।।
ऐसे बहुश्रुत साधु मुनीश्वर, जो मन में दोउ भाव न आने।
बोलत 'ज्ञान' धरी मनसान जु, भाग्य विशेषतें जानहिं जाने।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

द्वादस अंग उपांग सदागम, ताकी निरन्तर भक्ति करावे।
वेद अनूपम चार कहे तस, अर्थ भले मन मांहि ठरावे।।
पढ़ बहुभाव लिखो निजअक्षर, भक्तिकरी बड़िपूज रचावे।।
'ज्ञान'कहे जिन आगमभक्ति, करो सद्बुद्धि बहुश्रुत पावे।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै, नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव धरे समता सब जीवसु स्तोत्र पढ़े मुख से मनहारी।
कायोत्सर्ग करे मन प्रीतसुं, वंदन देव-तणो भव तारी।।
ध्यान धरी मद दूर करी, दोउ बेर करे पड़कम्मन भारी।।
'ज्ञान' कहे मुनि सो धनवन्त जु, दर्शन ज्ञान चरित्र उधारी।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनपूजा रचो परमारथसूं, जिन आगे नृत्य महोत्सव ठाणो।
गावत गीत बजावत ढोल, मृदंग के नाद सुधांग बखाणो।।
संग प्रतिष्ठा रचो जलजातरा, सद्गुरू को साहमो कर आणो।
'ज्ञान' कहे जिन मार्गप्रभावन, भाग्यविशेषसु जानहिं जाणो।।

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावनायै नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गौरव भाव धरो मन से मुनिपुङ्गव को नित वत्सल कीजे।
शील के धारक भव्य के तारक, तासु निरन्तर स्नेह धरीजे।।

धेनु यथा निजबालक के, अपने जिय छोड़ि न और पतीजे।
'ज्ञान' कहेभविलोक सुनो, जिन वत्सल भावधरे अघ छीजे।।

ॐ ह्रीं प्रवचनावात्सल्यभावनायै नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धियै नमः, ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नतायै नमः,
ॐ ह्रीं शीलव्रताय नमः, ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगाय नमः,
ॐ ह्रीं संवेगाय नमः, ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागाय नमः,
ॐ ह्रीं शक्तितस्तपसे नमः, ॐ ह्रीं साधुसमाध्यै नमः,
ॐ ह्रीं वैयावृत्यकरणाय नमः, ॐ ह्रीं अर्हद्भक्त्यै नमः,
ॐ ह्रीं आचार्यभक्त्यै नमः, ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्त्यै नमः,
ॐ ह्रीं प्रवचनीनमक्त नमः, ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाण्यै नमः,
ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनायै नमः, ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सलत्वाय नमः।।

पंचमेरु-पूजा

कविवर द्यानतराय

गीता छन्द

तीर्थंकरों के न्हवन जल-तैं भये तीरथ शर्मदा,
तातैं प्रदच्छन देत सुर-गन पंच मेरुन की सदा।
दो जलधि ढाई-द्वीप में सब गनत-मूल विराजहीं,
पूजौं असी जिनधान-प्रतिमा होहिं सुख, दुःख भाजहीं।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट्। ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमासमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं पञ्चमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमासमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

चौपाई आंचलीबद्ध

सीतल-मिष्टसुवास मिलाय, जल सौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करों प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं सुदर्शन-विजय-अचल-मन्दिर-विद्युन्मालि-पञ्चमेरु सम्बन्धि जिन-चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्व. स्वाहा।

जल केशर करपूर मिलाय, गंधसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों.।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्योश्चन्दनं निर्व.।

अमल अखंड सुगंध सुहाय, अच्छतसौं पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों.।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्योऽक्षतान् निर्व.।

वरन अनेक रहे महकाय, फूल श्री सौं पूजौं जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों.।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्य: पुष्पाणि निर्व.।

मनवांछित बहु तुरत बनाय, चरु सौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों.।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्व.।

तमहर उज्जवल ज्योति जगाय, दीप सौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों.।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्व.।

खेऊँ अगर अमल अधिकाय, धूप सौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों.।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो: धूपं निर्व.।

सुरस सुवर्ण सुगंध सुभाय, फलसों पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों.।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो: फलं निर्व.।

आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों.।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्व.।

जयमाला

सोरठा

प्रथम सुदर्शन स्वामी, विजय अचल मन्दर कहा।
विद्युन्माली नाम, पंच मेरु जग में प्रगट।।

बेसरी छन्ध

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल, वन भूपर छाजै।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी।।
ऊपर पंच-शतक पर सोहै, नन्दन-वन देखत मन मोहै।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी।।
साढ़े बासठ सहस ऊँचाई, वन सुमनस शोभै अधिकाई।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी।।
ऊँचा जोजन सहस-छत्तीसं, पाण्डुक-वन सोहै गिरि-सीसं।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी।।
चारों मेरु समान बखाने, भूपर भ्रदसाल चहुँ जाने।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी।।
ऊँचे पाँच शतक पर भाखे, चारों नन्दनवन अभिलाखे।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी।।
साढ़े पचपन सहस उतंगा, वन सौमनस चार बहुरंगा।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी।।

उच्च अठाइस सहस बताये, पांडुक चारों वन शुभ गाये।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी।।
सुर नर चारन वन्दन आवैं, सो शोभा हम किह मुख गावैं।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो महार्घं निर्व.।

दोहा

पंच मेरु की आरती, पढ़े सुनै जो काये।
'द्यानत' फल जानै प्रभु तुरत महासुख होय।।

पुष्पांजलि क्षिणामी

दशलक्षणधर्म-पूजा

कविवर द्यानतराय

अडिल्ल

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं,
शौच सत्य संयम तप त्याग उपाव हैं।
आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दर सार हैं,
चहुँगति-दुख तैं काढ़ि मुकति करतार हैं।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म। अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा

हेमाचल की धार, मुनि-चित सम शीतल सुरभि।
भव-आपात निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमामार्दवार्जव-शौच-सत्य-संयम-तपस्त्यागाकिञ्चन्य ब्रह्मचर्याणीति दशलक्षणधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर गार, होय सुवाय दशों दिशा। भव.।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय संसार तापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल अखण्डित सार, तन्दुल चन्द्र समान शुभ। भव.।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल अनेक प्रकार, महकें ऊरध-लोकलों। भव.।

ॐह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय कामबाणविनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध निहार, उत्तम षट्रस-संजुगत। भव.।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाति कपूर सुधार, दीपक-ज्योति सुहावनी। भव.।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता। भव.।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की जाति अपार, घ्रान-नयन-मनमोहने। भव.।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाह सौं। भव.।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगपूजा

सोरठा

पीड़ैं दुष्ट अनेक, बाँध मार बहुविधि करैं।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजै पीतमा।।

चौपाई

उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह भव जस पर-भव सुखदाई।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुन को औगुन कहै अयानो।।

गीता छन्द

कहि है अयानो वस्तु छीनैं, बाँध मार बहुविधि करै।
घर तैं निकारै तन विदारै, बैर जो न तहाँ धरै।।

तैं करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा।
अति क्रोध-अगनि बुझाय प्रानी, साम्यजल ले सीयरा ।। १ ।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान महाविष रूप, करहिं नीच-गति जगत में।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा।।
उत्तम मार्दव-गुन मन माना, मान करन को कौन ठिकाना।
वस्यो निगोद माहि तैं आया, दमरी रूकन भाग बिकाया।।
रूकन बिकाया भागवश तैं, देव इकइन्द्री भया।
उत्तम मुआ चाण्डाल हूवा, भूप कीड़ों में गया।।
जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करै जल-बुद्बुदा।
करि विनय बहु-गुन बड़े जन की, ज्ञान का पावै उदा ।। २ ।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपट न कीजे कोय, चोरन के पुर ना बसै।
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु सम्पदा।।
उत्तम-आर्जव रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी।
मन में हो सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सौं करिये।।
करिये सरल तिहुँ जोग अपने, देख निरमल आरसी।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट-प्रीति अंगार-सी।।
नहिं लहै लछमी अधिक छल करि, करमबन्ध-विशेषता।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता ।। ३ ।।

ॐ ह्रीं उत्तमार्जवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरि हिरदै सन्तोष, करहू तपस्या देह सौं।
शौच सदा निरदोष, धरम बड़ो संसार में।।
उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना।
आशा-पास महा दुखदानी, सुख पावै सन्तोषी प्रानी।।

प्रानी सदा शुचि शील जप-तप, ज्ञान-ध्यान प्रभाव तैं।
नित गंग जमुन समुद्र न्हाये, अशुचि-दोष सुभाव तैं।।
ऊपर अमल मल भरयो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहैं।
बहु देह मैली सुगुन थैली, शौच-गुन साधु लहैं ।। ४।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कठिन वचन मत बोल, परनिन्दा अरु झूठ तज।
साँच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी।।
उत्तम सत्य वरत पालीजै, पर विश्वासघात नहिं कीजै।
साँचे-झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो।।
पेखो तिहायत पुरुष साँचे को दरब सब दीजिये।
मुनिराज-श्रावक की प्रतिष्ठा साँच गुण लख लीजिये।।
ऊँचे सिंहासन बैठि वसुनृप, धरम का भूपति भया।
वच झुठ सेती नरक पहुँचा, सुरग में नारद गया ।। ५।।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्री मन वश करो।
संजमरतन सँभाल, विषय-चोर बहु फिरत हैं।।
उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव-भव के भाजें अघ तेरे।
सुरग नरक पशुगति में नाहीं आलस हरन करन सुख ठाहीं।।
ठाहीं पृथी जल आग मारुत, रूख त्रस करुना धरो।
सपरसन रसना धान नैना, कान मन सब वश करो।।
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुल्यो जग-कीच में।
इक घरी मत विसरो करो नित,आव जम-मुख बीच में ।। ६ ।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप चाहै सुरराय, करम-शिखर को वज्र है।
द्वादशविधि सुखदाय क्यों न करै जिन सकति सम।।
उत्तम तप सब माहिं बखाना, करम-शैल को वज्र समाना।
वस्यो अनादि निगोद-मँझारा, भूविकलत्रय पशुतन धारा।।

धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आव निरोगता।
श्री जैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषय-पयोगता।।
अति महा-दुर्लभ त्याग विषय-कषाय जो तप आदरैं।
नर-भव अनूपम कनक घर पर, मणिमयी कलसा धरैं ।।७।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दान चार परकार, चार-संघ को दीजिए।
धन बिजुली उनहार, नर-भव-लाहो लीजिए।।
उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषध शास्त्र अभय आहारा।
निहचै राग-द्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान संभारै।।
दोनों संभारे कूप-जलसम, दरब घर में परिनया।
निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाय खोया बह गया।।
धनि साध शास्त्र अभय-दिवैया, त्याग राग विरोध को।
बिन दान श्रावक साधु दोनों, लहैं नाहीं बोध को ।। ८।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह चौबीस भेद, त्याग करैं मुनिराज जी।
तिसना भाव उछेद, घटती जान घटाइए।।
उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह-चिंता दुख ही मानो।
फाँस तनक-सी तन में साले, चाह लँगोटी की दुख भालै।।
भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि मुद्रा धरैं।
धनि नगन पर तन-नगन ठाड़े, सुर असुर पायनि परैं।।
घर-माहिं तिसना जो घटावैं, रुचि नहीं संसार सौं।
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर-उपगार सौं।। ९।।

ॐ ह्रीं उत्तमाकिञ्चन्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शील-बाढ़ नौ राख, ब्रह्म-भाव अन्तर लखो।
करि दोनों अभिलाख करहु सफल नरभव सदा।।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता-बहिन-सुता पहिचानौ।
सहैं बान-वरषा बहु सूरे, टिकै न नैन-वान लखि कूरे।।

कूरे तिया के अशुचि तन में, काम-रोगी रति करैं।
बहु मृतक सड़हिं मसान माँहीं, काग ज्यों चोंचैं भरैं।।
संसार में विष-बेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा।।
'द्यानत' धरम दश पैंडि चढ़िकै, शिव-महल में पग धरा ।। १०।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दश लच्छन वन्दौं सदा, मन-वांजित फलदाय।
कहों आरती भारती, हम-पर होहु सहाय।।

बेसरी छन्द

उत्तम छिमा जहाँ मन होई, अन्तर बाहिर शत्रु न कोई।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नाना भेद ज्ञान सब भासै।।
उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्यागि सुगति उपजावै।
उत्तम शौच लोभ परिहारी, सन्तोषी गुण-रतन-भंडारी।।
उत्तम सत्य-वचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै।
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नर-भव सफल करै ले साता।।
उत्तम तप निरवांछित पालै, सो नर करम-शत्रु को टालै।
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोगभूमि-सुर-शिवसुख होई ।।
उत्तम आकिंचन व्रत धारै, परम-समाधि-दशा विस्तारै।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नर-सुर सहित मुकतिफल पावै।।

दोहा

करै करम की निरजरा, भव-पींजरा विनाश।
अजर-अमर पद को लहैं, 'द्यानत' सुख की राश।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा-मार्दवार्जव-शौच-सत्य-संयम-तपस्त्या-गाकिञ्चन्य-ब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्माय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

रत्नत्रय - पूजा

दोहा

चहूँ-गति फनि-विष-हरन मणि, दुखपावक-जलधार।
शिव-सुख-सुधा-सरोवरी, सम्यक्-त्रयी निहार।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-रत्नत्रय धर्म। अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं सम्यक्-रत्नत्रय धर्म। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं सम्यक्-रत्नत्रय धर्म। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा

क्षीरोदधि उनहार, उज्जवल जल अति सोहनो।
जनम-रोग निवार, सम्यक्-रत्नत्रय भजूं।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व.।

चन्दन-केसर-गारि, परिमल-महा-सुरंग-मय। जनम.।

ॐ ह्रीं सम्यकरत्नत्रयाय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्व.।

तन्दुल अमल चितार, वासमती-सुखदाय के। जनम.।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

महकैं फूल अपार अलि-गुंजैं ज्यों थुति करैं। जनम.।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगन्धयुत। जनम.।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप रतनमय सार, जोत प्रकाशै जगत में। जनम.।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय मोहान्धकारविनाशाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप सुवास विथार, चन्दन अगर कपूर की। जनम.।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल शोभा अधिकार, लोंग छुहारे जायफल। जनम.।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

आठ दरब निरधार, उत्तम सौं उत्तम लिये। जनम.।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घपद प्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सम्यक् दरशन ज्ञान, व्रत शिव-मग तीनों मयी।
पार उतारन यान, 'द्यानत' पूजों व्रत सहित।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शनपूजा

दोहा

सिद्ध-अष्ट-गुनमय प्रगट, मुक्त जीव सोपान।
ज्ञान चरित जिहँ बिन अफल, सम्यक्दर्श प्रधान।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन। अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं अष्टांगसमयग्दर्शन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा

नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरै मल छय करै।
सम्यग्दर्शनसार, आठ अंग पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाम जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केसर घनसार, ताप-हरै शीतल करै। सम्य.।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै। सम्य.।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै। सम्य.।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै। सम्य.।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाम नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपज्योति तमहार, घट-पट परकाशै महा। सम्य.।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घ्रान-सुखकार, रोगविघन जड़ता हरै। सम्य.।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सूर-शिवफल करै।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु। सम्य.।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

आप आप निहचै लखैं, तत्त्व-प्रीति व्योहार।
रहित दोष पच्चीस हैं, सहित अष्ट गुन सार।।

चौपाई

सम्यग् दरशन-रतन गहीजै, जिन-वच में संदेह न कीजै।
इह-भव विभव चाह दुखदानी, परभव-भोग चहै मत प्रानी।।

गीता

प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरम-गुरु प्रभु परखिये।
पर-दोष ढकिये धरम डिगते, को सुथिर कर हरखिये।।
चहुँ संघ को वात्सल्य कीजै, धरम की परभावना।
गुन आठ सों गुन आठ लहिकैं, इहाँ फेर न आवना।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसहितपञ्चविंशतिदोषरहितसम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सम्यग्ज्ञान पूजा

दोहा

पंच-भेद जाके प्रगट, ज्ञेय-प्रकाशन-भान।
मोह-तपन-हर-चंद्रमा, सोई सम्यग्ज्ञान।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान। अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा

नीर सुगंध अपार, तृषा हरै मल छय करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केसर घनसार, ताप हरै शीतल करै। सम्य.।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै। सम्य.।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै। सम्य.।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरैं थिरता करैं। सम्य.।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय नैवेद्यति।

दीप-ज्योति तमहार, घट-पर परकाशै महा। सम्य.।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घ्रान-सुखकार, रोगविघन जड़ता हरै। सम्य.।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर-शिवफल करै।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु। सम्य.।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

आप आप जानै नियत, ग्रन्थ पठन व्योहार।
संशय विभ्रम मोह बिन, अष्ट अंग गुनकार।।

चौपाई मिश्रित गीता छन्द

सम्यग्ज्ञान-रतन मन भाया, आगम तीजा नैन बताया।
अच्छर शुद्ध अर्थ पहिचानो, अच्छर अरथ उभय संग जोना।।
जानो सुकाल-पठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाइए।
तप रीति गहि बहुमान देकैं, विनय गुन चित लाइए।।
ये आठ भेद करम उछेदक, ज्ञान-दर्पन देखना।
इस ज्ञान ही सों भरत सीझा, और सब पट-पेखना।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्चारित्रपूजा

दोहा

विषयरोग औषध महा, दव-कषाय-जल-धार।
तीर्थंकर जाको धरै, सम्यक्चारित्र सार।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र। अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

नीर सुगन्ध अपार, तृषाहरै मलछयकरै।
सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केसर घनसार, ताप हरै शीतल करै। सम्य.

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै। सम्य.।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करैं। सम्य.।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै। सम्य.।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपज्योति तमहार, घट-पट परकाशैमहा। सम्य.।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घ्रान-सुखकार, रोगविघन जड़ता हरै। सम्य.।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर-शिवफल करै। सम्य.।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु। सम्य.।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

आप आप थिर नियत नय, तप संजम व्योहार।
स्व-पर दया दोनों लिये, तेरह-विध दुखःहार।।

चौचाई मिश्रित गीता छन्द

सम्यक्चारित रतन संभालो, पाँच पाप तजि के व्रत पालौ।
पंच समिति त्रय गुपति गहीजै, नरभव सफल करहु तन छीजै।।
छीजै सदा तन को जतन यह एक संजम पालिए।
बहु रुल्यो नरक-निगोद माहीं, विषय-कषायनि टालिए।।
शुभ करम-जोग सुघाट आयो, पार हो दिन जात है।
'द्यानत' धरम की नाव बैठो, शिव-पुरी कुशलात है।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा

सम्यदर्शन-ज्ञान-व्रत, इस बिन मुकति न होय।
अन्ध पंगु अरु आलसी, जुदे जलैं दव-लोय।।

चौपाई १६ मात्रा

जापै ध्यान सुथिर बन आवै, ताके करम-बन्ध कट जावै।
तासों शिव-तिय प्रीति बढ़ावै, जो सम्यक् रतनत्रय ध्यावै।।
ताको चहुँगति के दुःख नाहीं, सो न परै भव-सागर माँहीं।
जनम-जरा-मृत दोष मिटावै, जो सम्यक् रतनत्रय ध्यावै।।
सोई दशलच्छन को साधै, सो सोलह कारण आराधै।
सो परमातम पद उपजावै, जो सम्यक् रतनत्रय ध्यावै।।
सोई शक्रचक्रिपद लेई, तीन लोक के सुख विलसेई।
सो रागादिक भाव बहावै, जो सम्यक् रतनत्रय ध्यावै।।
सोई लोकालोक निहारै, परमानन्द दशा विस्तारै।
आप तिरैं औरन तिरवावै, जो सम्यक् रतनत्रय ध्यावै।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानसम्यक्यारित्रेभ्यो महार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

एक स्वरूप प्रकाश निज, वचन कह्यो नहिं जाय।
तीन भेद व्योहार सब, 'द्यानत' को सुखदाय।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

नन्दीश्वरद्वी - पूजा

कविवर द्यानतराय

अडिल्ल छन्द

सरब परब में बड़ो अठाई परव है,
नन्दीश्वर सुर जाँहिं लेय वसु दरव है।

हमैं सकति सो नाहिं इहां करि थापना,
पूजैं जिनगृह-प्रतिमा है हित आपना।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

कंचन-मणि-मय श्रृंगार, तीरथ-नीर भरा।
तिहुँ धार दयी निरवार, जामन मरन जरा।।
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम, बावन पूजन करो।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनन्दभाव धरों।।
नन्दीश्वर द्वीप महान-चारों दिश शोहे।
बावन जिन मंदिर जान सुरनर मनमोहे।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणादिक्षु द्विपञ्चाशज्जिनालय-स्थजिनप्रतिमाभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवतप-हर शीतल वास सो चन्दन नाहीं।
प्रभु यह गुन कीजै साँच, आयो तुम ठाहीं।। नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो भवाताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम अक्षत जिनराज, पुंज धरे सोहै।
सब जीते अक्ष समाज, तुम सम अरु को है।। नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

तुम काम विनाशक देव ध्याऊँ फूलन सो।
लहुँ शील-लच्छमी एव, छूटों सूलन सौं। नन्दी।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज इन्द्रिय बलकार, सो तुमने चूरा।
चरु तुम ढिग सोहै सार, अचरज है पूरा।। नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योतिप्रकाश, तुम तनमाँहि लसै।
टूटै करमन की राश, ज्ञान-कणी दरसै। नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो मोहान्धकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु-धूप सुवास दशदिशि नारि वरै।
अति हरष-भाव परकाश, मानो नृत्य करें। नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्जाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविधि फल ले तिहुँ काल, आनन्द राचत हैं।
तुम शिवफल देहु दयाल, तुहिं हम जाचत हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अरघ कियो निजहेत, तुमको अरपतु हों।
'द्यानत' कीज्यो शिवखेत, भूमि समरपतु हों।। नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो ऽनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

कार्तिक फाल्गुन साढ के अन्त आठ दिन माहिं।
नन्दीश्वर सुर जात हैं, हम पूजैं इह ठाहिं।।

छन्द

एक सौ त्रेसठ कोडि जोजन महा
लाख चौरासिया एक दिशि में लहा।।

आठमों द्वीप नन्दीश्वरं भास्वरं।
भौन बावत्र प्रतिमा नमों सुखकरं।। १।।
चार दिशि चार अंजनगिरी राजहीं।
सहस चौरासिया एक दिशि छाजहीं।।
ढोलसम गोल ऊपर तेल सुन्दरं।। भौन.।। २।।
एक इक चार दिशि चार शुभ बाबरी।
एक इक लाख जोजन अमल-जल भरी।।
चहुँ दिशा चार वन लाख जोजनवरं।। भौन.।। ३।।
सोल वापीन मधि सोल गिरि दधिमुखं।
सहस दश महाजोजन लखत ही सुखं।।
बावरी कोन दो माँहिं दो रतिकरं ।। भौन.।। ४।।
शैल बत्तीस इक सहस जोजन कहे।
चार सोलै मिलैं सर्व बावन लहे ।।
एक इक सीस पर एक जिनमन्दिरं।। भौन.।। ५।।
बिम्ब अठ एक सौ रतनमीय सोहहीं।
देव देवी सरब नयन मन मोहहीं।
पाँच सै धनुष तन पद्म-आसन परं।। भौन.।। ६।।
लाल नख-मुख नयन श्याम अरु स्वेत हैं।
स्याम-रंग भोंह सिर-केश छवि देत हैं।।
वचन बोलत मनों हँसत कालुष हरं।। भौन.।। ७।।
कोटिशशि-भानु-दुति-तेज छिप जात है।
महा-वैराग-परिणाम ठहरात है ।।
वयन नहिं कहैं लखि होत सम्यग्धरं।। भौन.।। ८।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्य: पूर्णार्घं निर्व.।

सोरठा

नन्दीश्वर-जिन-धाम, प्रतिमा-महिमा को कहै।
'द्यानत' लीनो नाम, यही भगति शिव-सुख करै।।

।। पुष्पांज्जलिं क्षिपामी।।

क्षमावाणी- पूजा

कवि मल्ल

छप्पय

अंग क्षमा जिन-धर्म तनो दृढ़-मूल बखानो।
सम्यक् रतन सँभाल हृदय में निश्चय जानो।।
तज मिथ्या विष मूल और चित निर्मल ठानो।
जिनधर्मी सों प्रीत करो सब पातक भानो।।
रत्नत्रय गह भविक जन, जिन आज्ञा सम चालिये।
निश्चय कर आराधना, कर्म-राशि को जालिये।।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय। अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

नीर सुगन्ध सुहावनो, पदम-द्रह को लाय।
जन्म-रोग निरवारिये, सम्यक् रतन लहाय।।
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर-वचन गहाय।।क्ष.।।

ॐ ह्रीं निःशङ्किताङ्गाय निःकांक्षिताङ्गाय निर्विचिकित्सिताङ्गाय निर्मूढताङ्गाय उपगूह-नाङ्गाय सुस्थितीकरणाङ्गाय वात्सल्याङ्गाय प्रभावनाङ्गाय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय सम्यग्दर्शनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं व्यञ्जनव्यञ्जिताय अर्थसमग्राय तदुभयसमग्राय कालाध्ययनाय उपधानोपहिताय विनयलब्धिप्रभावनाय गुर्वनिह्नवाय बहुमानोन्नानाय अष्टाङ्गसम्यग्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं अहिंसामहाव्रताय सत्यमहाव्रताय अचौर्यमहाव्रताय ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अपरिग्रहमहाव्रताय मनोगुप्तये वचनगुप्तये कायगुप्ते ईर्यासमितये भाषासमितये एषणासमितये अदाननिक्षेपणसमितये प्रतिष्ठापनसमितये त्रयोदशविध-सम्यक्चारित्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

केसर चन्दन लीजिये, संग कपूर घसाय।
अलि पंकति आवत घनी, वास सुगन्ध सुहाय।।
क्षमा गहो उर जीवड़ा जिनवर-वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविध-सम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

शालि अखण्डित लीजिये, कंचन थाल भराय।
जिनपद पूजों भाव सों, अक्षत पद को पाय।। क्षमा.।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पारिजात अरु केतकी, पुहुप सुगन्ध गुलाब।
श्रीजिनचरण-सरोज कूँ, पूज हर्ष चित चाव।। क्षमा.।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय कामाणविध्वंसनाय पुष्पाणि निर्व.।

शक्कर घृत सुरभी तनों, व्यंजन षट्रस स्वाद।
जिनके निकट चढ़ाय कर, हिरदे धरि आल्हाद। क्षमा.।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हाटकमय दीपक रचो, बाति कपूर सुधार।
शोधित घृत कर पूजिये, मोह-तिमिर निरवार।। क्षमा.।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कृष्णागर करपूर हो, अथवा दशविध जान।
जन-चरणन ढिग खेइये, अष्ट-कर्म की हान।। क्षमा.।।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अम्ब अनार फल, नारिकेल ले दाख।
अग्र धरो जिनपद तने, मोक्ष होय जिन भाख।क्षमा.।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदि मिलाय के, अरघ करो हरषाय।
दु:ख जलांजलि दीजिये, श्रीजिनहोय सहाय।।क्षमा.।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टांगसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय मोक्षपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

उनतीस अंग की आरती, सुनो भविक चित लाय।
मन वच तन सरधा करो, उत्तम नर-भव पाय।।

चौपाई

जैनधर्म में शंक न आनै, सो नि:शंकित गुण चित ठानै।
जप तप कर फल वांछे नाहीं, नि:कांक्षित गुण हो जिस माहीं।। १।।
पर को देखि गिलानि न आनै, सो तीजा सम्यक् गुण ठानै।
आन देव को रंच न मानै, सो निर्मूढता गुण पहिचानै।। २।।
पर को औगुण देख जु ढाकै, सो उपगूहन श्रीजिन भाखै।
जैनधर्म तैं डिगता देखै, थापै बहुरि स्थिति कर लेखै।। ३।।
जिन-धरमी सौं प्रीति निवहिये, गउ-बच्छवत वच्छल कहिये।
ज्यों त्यों करि उद्योत बढ़ावै, सो प्रभावना अंग कहावै।। ४।।
अष्ट अंग यह पाले जोई, सम्यग्दृष्टी कहिये सोई।
अब गुण आठ ज्ञान के कहिये, भाखे श्रीजिन मन में गहिये।। ५।।
व्यंजन अक्षर सहित पढ़ीजै, व्यंजन-व्यंजित अंग कहीजै।
अर्थ सहित शुध शब्द उचारै, दूजा अर्थ समग्रह धारै।। ६।।
तदुभय तीजा अंग लखीजै, अक्षर-अर्थ सहित जु पढीजै।
चौथा कालाध्ययन विचारै, काल समय लखि सुमरण धारै।। ७।।

पंचम अंग उपधान बतावै, पाठ सहित तब बहु फल पावेञ
षष्ठम विनय सुलब्धि सुनीजै, वाणी विनय युक्त पढ़ लीजे।। ८।।
जापै पढ़ै न लौपै जाई, अंग सप्तम गुरुवाद कहाई।
गुर की बहुत विनय जु करीजै, सो अष्टम अंग धर सुख लीजै।। ९।।
यह आठों अंग-ज्ञान बढ़ावै, ज्ञाता मन वच तन कर ध्यावै।
अब आगे चारित्र सुनीजै, तेरह-विध धर शिव-सुख लीजै।। १०।।
छहों काय की रक्षा कर है, सोई अहिंसा व्रत चित धर है।
हित मित सत्य वचन मुख कहिये, सो सतवादी केवल कहिये।। ११।।
मन वचकाय न चोरी करिये, सोई अचौर्य व्रत चित धरिये।
मनमथ-भय मन रंच न आनै, सो मुनि ब्रह्मचर्य व्रत ठानै।। १२।।
परिग्रह देख न मूर्छित होई, पंच महाव्रत-धारक सोई।
महाव्रत ये पाँचों सु खरे हैं, सब तीर्थंकर इनको करे हैं।। १३।।
मन में विकल्प रंच न होई, मनोगुप्ति मुनि कहिये सोई।
वचन अलीक रंच नहिं भाखैं, वचन गुप्ति सो मुनिवर राखैं।। १४।।
कायोत्सर्ग परीषह सहि हैं, ता मुनि काय-गुप्ति जिन कहि हैं।
पंच समति अब सुनिये भाई, अर्थ सहित भाषें जिनराई।। १५।।
हाथ चार जब भूमि निहारैं, तब मुनि ईर्यापथ पद धारैं।
मिष्ट वचन मुख बोलें सोई, भाषा-समिति तास मुनि होई।। १६।।
भोजन छयालिस दूषण टारैं, सो मुनि एषण शुद्धि विचारैं।
देखिके पोथी ले अरु धरि हैं, सो आदान-निक्षेपण वरि हैं।। १७।।
मल-मूत्र एकान्त जु डारे, परतिष्ठापन समिति सँभारें।
यह सब अंग उनतीस कहे हैं, श्री जिन भाखे गणधर ने गहे हैं।। १८।।
आठ-आठ तेरहविधि जानो, दर्शन-ज्ञान-चरित्र सु ठानो।
तातैं शिवपुर पहुँचो जाई, रत्नत्रय की यह विधि भाई।। १९।।
रत्नत्रय पूरण जब होई, क्षमा क्षमा करियो सब कोई।
चैत माघ भादों त्रय बारा, क्षमा क्षमा हम उर में धारा।। २०।।

दोहा

यह क्षमावणी आरती, पढ़ै सुनै जो कोय।
कहे 'मल्ल' सरधा करो, मुक्ति-श्री-फल होय।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टांगसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

दोष न गहियो कोय, गुण गण गहिये भाव सों।
भूल चूक हो होय, अर्थ विचारि जु शोधिये।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

रक्षाबन्धनपर्व पूजन

छन्द तोटक

जय अकम्पनाचार्य आदि सात सौ साधु मुनिव्रत धारी।
बलि ने कर नरमेध यज्ञ उपसर्ग किया भीषण भारी।।
जय जय विष्णुकुमार महामुनि ऋद्धि विक्रिया के धारी।
किया शीघ्र उपसर्ग निवारण वात्सल्य करुणा धारी।।
रक्षाबन्धन पर्व मना मुनियों का जय जयकार हुआ।
श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन घर घर मंगलाचार हुआ।।
श्री मुनि चरण कमल मैं वन्दूँ पाऊँ प्रभु सम्यग्दर्शन।
भक्ति भाव से पूजन करके जिन स्वरूप में रहूँ मगन।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनीन्द्राय! अत्र अवतरअवतर संवौषट्। ॐ ह्रीं विष्णुकुमार अकम्पनार्चादिसप्तशतक-मुनीन्द्राय! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अकम्पनार्चादिसप्तशतकमुनीन्द्राय! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

जन्म मरण के नाश हेतु प्रासुक जल करता हूँ अर्पण।
रागद्वेष परिणति अभावकर निज परिणति में करूँ रमण।

श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि सप्तशतक को करूँ नमन्।
मुनि उपसर्ग निवारक विष्णुकुमार महा मुनि को वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनीन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव सन्ताप मिटाने को मैं चन्दन करता हूँ अर्पण।
देह भोग भव से विरक्त हो निज परिणिति में करूँ रमण।। श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनीन्द्रेभ्यो भवातापविनाशाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपद अखंड पाने को अक्षत धवज करूँ अर्पण।
हिंसादिक पापों को क्षय कर निज परिणति में करूँ रमण।। श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनीन्द्रेभ्यो ऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कामबाण विध्वंस हेतु मैं सहज पुरुष करता अर्पण।
क्रोधादिक चारों कषाय हर निज परिणति में करूँ रमण।। श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनीन्द्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधारोग के नाश हेतु नैवेद्य सरस करता अर्पण।
विषयभोग की आकांक्षा हर निज परिणिति में करूँ रमण।। श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनीन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिर मिथ्यात्व तिमिर हरने को दीप ज्योति करता अर्पण।
सम्यग्दर्शन का प्रकाश पा निज परिणति में करूँ रमण।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनीन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म के नाश हेतु यह धूप सुगन्धित है अर्पण।
सम्यग्ज्ञान हृदय प्रगटाऊँ निज परिणति में करूँ रमण।। श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनीन्द्रेभ्योऽष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति प्राप्ति हेतु उत्तम फल चरणों में करता अर्पण।
मैं सम्यक् चारित्र फल प्राप्तकर निज परिणति में करूँ रमण।। श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनीन्द्रेभ्यो मोक्षपदप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत पद अनर्घ पाने को उत्तम अर्घ करूँ अर्पण।
रत्नत्रय की तरणी खेऊँ निज परिणति में करूँ रमण।। श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनीन्द्रेभ्योऽनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

वात्सल्य के अंग की महिमा अपरम्पार।
विष्णुकुमार मुनीन्द्र की गूंजी जय जयकार।।

तोटक

उज्जयनी नगरी के नृप श्रीवर्मा के मन्त्री थे चार।
बलि, प्रहलाद, नमुचि बृहस्पति चारों अभिमानी सविकार।। १।।
जब अकम्पनाचार्य संघ मुनियों का नगरी में आया।
सात शतक मुनि के दर्शन कर नृप श्री वर्मा हर्षाया।। २।।
सब मुनि मौन ध्यान में रत, लख बलि आदिक ने निंदा की।
कहा कि मुनि सब मूर्ख, इसी से नहीं तत्त्व की चर्चा की।। ३।।
किन्तु लौटते समय मार्ग में, श्रुतसागर मुनि दिखलाये।
वाद विवाद किया श्री मुनि से, हारे, जीत नहीं पाये।। ४।।
अपमानित होकर निशि में मुनि पर प्रहार करने आये।
खड्ग उठाते ही कीलित हो गये हृदय में पछताये।। ५।।
प्रातः होते ही राजा ने आकर मुनि को किया नमन।
देश निकाला दिया मन्त्रियों को तब राजा ने तत्क्षण।। ६।।

चारों मन्त्री अपमानित हो पहुँचे नगर हस्तिनापुर।
राजा पद्मराय को अपनी सेवाओं से प्रसन्न कर।। ७।।
मुंह मांगा वरदान नृपति ने बलि को दिया तभी तत्पर।
जब चाहूँगा तब ले लूंगा, बलि ने कहा नम्र होकर।। ८।।
फिर अकम्पनाचार्य सात सौ मुनियों सहित नगर आये।
बलि के मन में मुनियों की हत्या के भाव उदय आये।। ९।।
कुटिल चाल चल बलि के नृप से आठ दिवस का राज्य लिया।
भीषण अग्नि जलाई चारों ओर द्वेष से कार्य किया।। १०।।
हा हाकार मचा जगती में, मुनि स्व ध्यान में लीन हुए।
नश्वर देह भिन्न चेतन से, यह विचार निज लीन हुए।। ११।।
यह नरमेघ यज्ञ रच बलि ने, किया दान का ढोंग विचित्र।
दान किमिच्छक देता था, पर मन था अति हिंसक अपवित्र।। १२।।
पद्मराय नृप के लघु भाई, विष्णुकुमार महा मुनिवर।
वात्सल्य का भाव जगा, मुनियों पर संकट का सुनकर।। १३।।
किया गमन आकाश मार्ग से, शीघ्र हस्तिनापुर आये।।
ऋद्धि विक्रिया द्वारा याचक, वामन रूप बना लाये।। १४।।
बलि से मांगी तीन पांव भू, बलि राजा हंसकर बोला।
जितनी चाहों उतनी ले लो, वामन मूर्ख बड़ा भोला।। १५।।
हंसकर मुनि ने एक पाँव में ही सारी पृथ्वी नापी।
पग द्वितीय में मानुषोत्तर पर्वत की सीमा नापी।। १६।।
ठौर न मिला तीसरे पग को, बलि के मस्तक पर रक्खा।
क्षमा क्षमा कह कर बलि ने, मुनि चरणों में मस्तक रक्खा।। १७।।
शीतल ज्वाला हुई अग्नि की श्री मुनियों की रक्षा की।
जय जयकार धर्म का गूँजा, वात्सल्य की शिक्षा दी।। १८।।
नवधा भक्ति पूर्वक सबने, मुनियों को आहार दिया।
बलि आदिक का हुआ हृदय परिवर्तन जय जयकार किया।। १९।।
रक्षा सूत्र बांधकर तब जन-जन में मंगलाचार किये।
साधर्मी वात्सल्य भाव से, आपस में व्यवहार किये।। २०।।

समकित के वात्सल्य अंग की महिमा प्रगटी इस जग में।
रक्षा बन्धन पर्व इसी दिन से प्रारम्भ हुआ जग में।। २१।।
श्रावण शुक्ल पूर्णिमा का दिन रक्षासूत्र बंधा कर में।
वात्सल्य की प्रभावना का आया अवसर घर घर में।। २२।।
प्रायश्चित ले विष्णुकुमार ने पुनः व्रत ले तप ग्रहण किया।
अष्ट कर्म बन्धन को हरकर इस भव से ही मोक्ष लिया।। २३।।
सब मुनियों ने भी अपने अपने परिणामों के अनुसार।
स्वर्ग मोक्ष पद पाया जग में हुई धर्म की जय जयकार।। २४।।
धर्म भावना रहे हृदय में, पापों के प्रतिकूल चलूं।
रहे शुद्ध आचरण सदा ही, धर्म मार्ग अनुकूल चलूं।। २५।।
आत्म ज्ञान रुचि जगे हृदय में, निज पर को मैं पहिचानूँ।
समकित के आठों अंगों की, पावन महिमा को जानूँ।। २६।।
तभी सार्थक जीवन होगा सार्थक होगी यह नर देह।
अन्तर घट में जब बरसेगा पावन परम ज्ञान रस मेह।। २७।।
पर से मोह ममत्व न होगा, होगा निज आतम से नेह।
तब ही पायेंगे अखंड अविनाशी जिन सुखमय शिवगेह।। २८।।
रक्षा-बंधन पर्व धर्म का, रक्षा का त्यौहार महान।
रक्षा-बंधन पर्व ज्ञान का, रक्षा का त्यौहार प्रधान।। २९।।
रक्षा-बंधन पर्व चरित का, रक्षा का त्यौहार महान।
रक्षा-बंधन पर्व आत्म का, रक्षा का त्यौहार प्रधान।। ३०।।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि सात शतक को करूं नमन्।
मुनि उपसर्ग निवारक विष्णुकुमार महामुनि को वन्दन।। ३१।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार अकम्पनाचार्यादिसप्तशतकमुनीन्द्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व.।

दोहा

रक्षा बन्धन पर्व पर श्री मुनि पद उर धार।
मन वच तन जो पूजते, पाते सौख्य अपार।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

निर्वाणक्षेत्र-पूजा

कविवर द्यानतराय

सोरठा

परम पूज्य चौबीस, जिहँ जिहँ थानक शिव गये।
सिद्धभूमि निश-दीस, मन-वच-तन पूजा करौं।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि। अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

गीता

शुचि क्षीर-दधिसम नीर निरमल, कनक झारी में भरौं।
संसार पार उतार स्वामी, जोर कर विनती करौं।।
सम्मेदगिरि गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलाश कों।
पूजौं सदा चौबीस जिन, निर्वाण भूमि निवास कों।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

केसर कपूर सुगन्ध चन्दन, सलिल शीतल विस्तरौं।
भव-ताप क्रो सन्ताप मेटो, जोर कर विनती करों।सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती समान अखण्ड तन्दुल, अमल आनंद धरि तरौं।
औगुन-हरौ गुन करौ हमको, जोर कर विनती करौं।।सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

शुभ फूलरास सुवास-वासित, खेद सब मन की हरौं।
दुख-धाम-काम विनाश मेरो, जोर कर विनती करौं।। सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यः पुष्पाणि निर्व. स्वाहा।

नेवज अनेक प्रकार जोग मनोग धरि भय परिहरौं।
यह भूख-दूखन टार प्रभु जी, जोर कर विनती करौं।। सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक-प्रकाश उजास उज्जवल, तिमिरसेती नहिं डरौं।
संशय-विमोह-विभर्म-तमहर, जोर विनती करौं।। सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु फल मँगाय चढ़ाय उत्तम, चार गति सों निरवरौं।
निहचै मुकति फल देहु मोको, जोर कर विनती करौं। सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्य: फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गन्ध अच्छत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं।
'द्यानत' करो निरभय जगत सौं, जोर कर विनती करौं।। सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सोरठा

श्रीचौबीस जिनेश, गिरि कैलाशादिक नमों।
तीरथ-महाप्रदेश, महापुरुष निरवाण तैं।।

चौपाई (१६ मात्रा)

नमों ऋषभ कैलास पहारं, नेमिनाथ गिरनार निहारं।
वासुपूज्य चम्पापुर वन्दौं, सन्मति पावापुर अभिनन्दौं।। १ ।।
वन्दौं अजित अजित-पददाता, वन्दौं सम्भव भव-दुःखघाता।
वन्दौं अभिनन्दन गण-नायक, वन्दौं सुमति सुमति के दायक।। २ ।।
वन्दौं पद्म मुकति-पदमाकर, वन्दौं सुपास आश-पासाहर।
वन्दौं चन्द्रपभ प्रभु चन्दा, वन्दौं सुविधि सुविधि-निधि कन्दा।। ३ ।।
वन्दौं शीतल अघ-तप-शीतल, वन्दौं श्रियांस श्रियांस महीतल।
वन्दौं विमल विमल-उपयोगी, वन्दौं अनन्त अनन्त सुखभोगी।। ४ ।।
वन्दौं धर्म धर्म-विस्तारा, वन्दौं शान्ति शन्ति मन-धारा।
वन्दौं कुन्थु कुन्थु-रखवालं, वन्दौं अर अरि-हर गुणमालं।। ५ ।।
वन्दौं मल्लि काम-मल-चूरन, वन्दौं मुनिसुव्रत व्रत-पूरन।
वन्दौं नमि जिन नमित-सुरासुर, वन्दौं पास पास-भ्रमजग हर।। ६ ।।

बीसों सिद्धभूमि जा ऊपर, शिखरसम्मेद-महागिरि भूपर।
एक बार वन्दै जो कोई, ताहि नरक-पशु-गति नहिं होई।। ७।।
नरपति नृप सुर शक्र कहावै, तिहुँ जग-भोग भोगि शिव पावै।
विघन-विनाशन मंगलकारी, गुण-विलास वन्दौं भवतारी।। ८।।

घत्ता

जो तीरथ जावै पाप मिटावै, ध्यावै गावै भगति करै।
ताको जस कहिये सम्पत्ति लहिये, गिरि के गुण को बुध उचरै।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित्र शुद्धि व्रत पूजन

शुद्ध सुगुण छयालीसयुत, समवसरण के ईश।
निज आतम उद्धार हित, नमत रमण में शीश।। १।।
आत्म-शुद्धि के अर्थ हम, जिनवर-पूज रचाय।
रत्नत्रय के प्राप्ति हित, श्रीजिनेन्द्र गुण गाय।। २।।
करूँ त्रिविध शुधियोग से, आह्वानन विधि सार।
आवहु तिष्ठहु हृदय में, नाथ त्रिलोक अधार।। ३।।

सोरठा

व्रत चारित्र महान, इस बिन मुक्ति न पावही।
चारित शुद्धि विधान, इसी लिये अर्चन करूँ।। ४।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहिताय षट् चत्वारिशद् गुणसंहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र गुण मंडिताय श्री अर्हन्त परमेष्ठिने अत्र अवतर-अवतर संवोषट् आह्वानम्।। १।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहिताय षट् चत्वारिशद् गुणसंहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र गुण मंडिताय श्री अर्हन्त परमेष्ठिने अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।।२।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहिताय षट् चत्वारिंशद् गुणसहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र गुण मंडिताय श्री अर्हन्त परमेष्ठिने अत्र मम सन्निहतो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं। (पुष्पांजलि)

अष्टक

गंगादिक निर्मल नीर, कंचन कलश भरूँ,
प्रभु वेग हरो भवपीर, चरणन धार करूँ।
बारह सौ चौंतीस सार, प्रोषध सुखकारी,
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकारी।। १।।

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिशद्गुणसंहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र गुण मंडिताय श्री अर्हन्त-परमेष्ठिने जन्म, जरा, मृत्यु, विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।। १।।

मलयागिर चंदन सार, केसर रंग भरी,
प्रभु भव आताप निवार, यह विनती हमरी।
बारह सौ चौतिस सार, प्रोषध सुखकारी,
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकारी।। २।।

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र गुण मंडिताय श्री अर्हन्त-परमेष्ठिने भवाताप निवारणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।। २।।

ले चन्द्र किरण समशुद्ध, अक्षत शुचि सारे,
तसु पुञ्जधरूँ अवरुद्ध, तुम पग तल धारे।
बारह सौ चौंतिस सार, प्रोषध सुखकारी,
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकरी।। ३।।

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र गुण मंडिताय श्री अर्हन्त-परमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।। ३।।

सुरतरु के सुमन समेत, अलि गुञ्जार करें,
मैं जजूँ चरण निज हेतु, मद-गद व्याल हरैं।
बारह सौ चौंतिस सार, प्रोषध सुखकारी,
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकारी।। ४।।

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र गुण मंडिताय श्री अर्हन्त-परमेष्ठिने कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।। ४।।

नाना विधि के पकवान, कंचन थाल भरूँ,
मैं जजूँ चरण ढिंग आन, भूख व्यथा जु हरूँ।
बारह सौ चौंतिस सार, प्रोषध सुखकारी,
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकारी।। ५।।

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र गुण मंडिताय श्री अर्हन्त–परमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ५।।

तम खण्डन दीप अनूप, तुम पद निकट धरूँ,
मन मोह हरो शिवभूप, याते पूज करूँ।
बारह सौ चौंतिस सार, प्रोषध सुखकारी,
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकारी।। ६।।

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र गुण मंडिताय श्री अर्हन्त–परमेष्ठिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

दस विधि की धूप बनाय, पावक में खेऊँ,
मम दुष्ट करम जरजाँय, तुम पद नित सेऊँ।
बारह सौ चौंतिस सार, प्रोषध सुखकारी,
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकारी।। ७।।

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र गुण मंडिताय श्री अर्हन्त–परमेष्ठिने अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।। ७।।

बादाम सुपारी लाय, केला फल प्यारे,
तुम शिव फल देहु दयाल, तुम पद फल धारे।
बाहर सौ चौंतिस सार, प्रोषध सुखकारी,
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकारी।। ८।।

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र गुण मंडिताय श्री अर्हन्त–परमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

जल फल वसु कंचन थाल, आठों द्रव्य भरूँ,
छोटे नित नावत भाल, तुमपद अर्ध धरूँ।
बारह सौ चौंतिस सार, प्रोषध सुखकारी,
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकारी।। ९।।

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र गुण मंडिताय श्री अर्हन्त-परमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ९।।

मंगल अर्घ बनाय गाय गुण कंचन थाली भरिये,
अर्घ देत जिनराज चरण में महाहर्ष उर धरिये।
बारह सौ चौंतिस सार, प्रोषध सुखकारी,
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकारी।। १०।।

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र गुण मंडिताय श्री अर्हन्त-परमेष्ठिने महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १०।।

जयमाला

दोहा

जिसकी शुद्धी के बिना, जिनवर सीझे नाहिं।
उसकी शुद्धि के लिये, जिनवर पूज रचाहिं।। १।।
व्रत चारित को शुद्ध कर, पहुँचे अविचल थान।
उनही के पद कमल का, धरूँ हृदय में ध्यान।। २।।
जय जय जय जिनवर देवभूप, जय जय जय शिव-वल्लभ अनूप।
जय जगतपती जय जगन्नाथ, जय मंगल-मय हम नमत माथ।। ३।।
जय शिवशंकर विष्णु जिनेश, जय ब्रह्मा जय मंगल विशेष।
जय कमलासन कृतकर्म ईश, इन्द्रादि चरण नित नवत शीश।। ४।।
अष्टादश दोष विमुक्त धीर, जय मंगलमय भव हरत पीर।
जय अन्तरीक्ष राजत जिनेश, जय चतुर्गती काटत कलेश।। ५।।

जय इन्द्रिय जय जय धर्मवीर, जय कर्मदलन भट अति गंभीर।
जय जगतशिरोमणि गुणनिधान, जय शत्रुमित्र जानत समान।। ६ ।।
जय व्रतचारितधारी करण्ड, जय शुद्ध विहारी आत्मपिण्ड।
जय सत्-चिद् धन आनन्दरूप, जय शुद्ध चिदानन्द सतस्वरूप।। ७।।
जय पंच महाव्रत धरन धीर, जय पंच समिति पालक सुवीर।
जय तीन गुप्ति के रथ सवार, यह तेरह विधि चारित्र धार।। ८ ।।
जय चारित्र शुद्धधर व्रत दयाल, इकक्षण में तोड़ा कर्म जाल।
ऐसा विशुद्ध वर व्रतप्रधान, उस व्रत को हम पूजत सुआन।। ९ ।।
यह व्रत है सब जग में प्रसिद्ध, है नित्य अनादी स्वयंसिद्ध।
इसके बिन मुक्ति नहीं होय, यह व्रत है तारण सिन्धु तोय।। १०।।
हे व्रताधीश है व्रतदिनेश, है शिव-वल्लभ काटो क्लेश।
अब तेरा शरण गहा सुआन, छोटे चाहत नित आत्मज्ञान।। ११ ।।

सोरठा

व्रत चारित्र महान, जो पालै मन लायके।
ते पावें निर्वाण, आठों कर्म नशाय के।। १२ ।।

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहितायं बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र गुण मंडिताय श्री अर्हन्त-परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १२ ।।

जो विशुद्ध मनसे सदा, चारित पाले वीर।
ते वसु कर्म नशाय के, पहुँचे भवके तीर।।

इत्याशीर्वादः

जाप

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः (१०८ बार)

नोट : (विधि) यह व्रत भादो सुदी पड़वा से प्रारम्भ किये जाते हैं। व्रत संख्या १२३४ है। शक्ति अनुसार उपवास व एकासन से भी काम कर सकते हैं।

श्री चारित्र शुद्धि व्रत विधान का माहात्म्य

यह चारित शुद्धि विधान, करो रुचि ठान, ठाठ से प्राणी।
फल पायो राजा-रानी.......................................।। टेक।।
उज्जैन शहर इक भारी था, नृप हेम वरण सुखकारी था।
शिव सुन्दर ताकी नारि, परम शुभ स्यानी।। फल।। १।।
नृप एक दिवस पहुंचे वन में चारण ऋषि लख हरषे मन में।
थे ऋषि परम उदार, महामुनि ज्ञानी।। फल पायो.।। २।।
नृप नमस्कार कर बैठ गये, मन के समतामय भाव भये।
चरणों में शीश नवाय, कही इम वाणी।। फल पायो.।। ३।।
गुरुदेव कृपा मो पर कीजै, इक शुभ्र व्रत मुझको दीजै।
मैं तीर्थंकर पद पाय, वरूँ शिव रानी।। फल पायो.।। ४।।
हित-मित प्रिय मुनि बोल वैना, नृप चारित शुद्धि व्रत लेना।
बारह सौ चौंतीस प्रोषध, करो सु रुचि मन ठानी।। फल पायो.।।५।।
यह श्रेष्ठ सु व्रत सुखदाई है, शिव पथ में परम सहाई है।
अन्तिम तीर्थंकर होय, वरै शिव रानी।। फल पायो.।। ६।।
मुनि वचन सुनत नृप हर्षाये, मुनिराज वचन मनमें भाये।
लीना व्रत चारित शुद्धि, नृपति अरु रानी।। फल पायो.।। ७।।
दम्पति विविधत् व्रत नित्य करें, प्रोषध कर मनमें मोद धरें।
अर्हन्त अर्चना करें, पढें जिन वाणी।। फल पायो.।। ८।।
विधिवत् नृप ने व्रत पूर्ण कियो, अन्तिम समाधि लहि स्वर्ग लिया।
अच्युतेन्द्र महा पद पाय, निजातम ज्ञानी।। फल पायो.।। ९।।
तहँ ते चयकर सु विदेह गये, प्रभु चन्द्रभान तीर्थेश हुए।
पाकर के केवल ज्ञान लही, शिव रजधानी।। फल पायो.।। १०।।
शिव सुन्दर भी सुरलोक गई, दिव सोलह में सुर जाय भई।
फिर तीर्थंकर होय, लहै शिव रानी।। फल पायो.।। ११।।
जो कोई यह व्रत नित्य करै, यह कर्म रूप मल सर्व हरै।
छोटे तीर्थंकर होय, वरै शिव रानी।। फल पायो.।। १२।।

श्री दशलक्षण मण्डल विधान

जोगीरासा

नेमीनाथो, दे तो साथो[1], भव भव और न चाहूँ।
भक्ति तिहारी, निशिदिन मन वच काय लाय करि गाऊँ॥
धर्म कह्यो तुम, वानी दशविधि, सो मोहि होउ सहाई।
करुणासागर, समरस गर्भित, शीश नमों थुति गाई॥१॥

गीता छंद

धर्म के दश कहे लक्षण, तिन थकी जिय सुख लहै।
भवरोग को यह महा औषधि, मरण-जामन दुःख दहै॥
यह वरत नीका, मीत जी का[2], करो आदरतैं सही।
मैं जजों दशविधि धर्म के अंग, तासु फल ह्वै शिवमही॥२॥

पद्धरि छन्द

यह धर्म भवोदधि नाव जान, या सेयें भवदुख होय हान।
यह धर्म कल्पतरु सुक्ख पूर, मैं पूजों भवदुख करन दूर॥३॥

गीता छन्द

यह वरत मन-कपि गले माँही, सांकली सम जानिये।
गज-अक्ष[3] जीतन सिंह जैसो, मोहतम रवि मानिये॥
सुरथान[4] माहीं वरत नाहीं, मनुजहूँ शुभ कुल लहै।
तातैं सुअवसर है भलो, अब करौं पूजा धुनि कहै॥४॥

बेसरी छन्द

जाने दशलक्षण व्रत कीना, ते सत्पुरुषनि में परवीना।
भवसागर फिरनो मिट जावै, जो नर दशलक्षण वृष[5] भावै॥५॥

भुजंगप्रयात छन्द

यही धर्म सारं, करै पाप क्षारं, वही धर्म सारं, करै सुख अपारं।
यही धर्म धीरा, हरै लोकपीरा, यही धर्म मीरा[6] करै लोकतीरा॥६॥

1.तुम्हारा साथ। 2.जीव का मित्र। 3.इन्द्रियरूपी हाथी को। 4.स्वर्ग। 5.धर्म। 6.प्रधान।

त्रिभंगी छन्द

यह धर्म हमारा, सब जग प्यारा, जगत उधारा हितदानी।
यह दशविधि गाया, जन-मन भाया, उच्च बताय जिनवानी॥
यह शिव करतारा, अघतैं न्यारा, भवि उद्धारा मुनि धारा।
ताको मैं ध्याऊँ, शीश नवाऊँ, अर्घ चढ़ाऊँ सुखकारा॥७॥

चौपाई

या व्रत की महिमा कहि वीर, दशविधि धर्म हरैं भवपीर।
इसी धर्म बिन जग भरमाय, जजहुँ धर्म अति दुरलभ पाय॥८॥

दोहा

दश प्रकार को धर्म यह, दशविधि सुरतरु जान।
वांछित पद सेवक लहै, अधिक कहा सुखदान॥९॥

सोरठा

धर्म हमारा नाथ, धर्म जगत का सेहरा।
भव भव में हो साथ, और न वांछा मनविषै॥१०॥

मण्डलमध्ये पुष्पांजलिं क्षिपेत्

समुच्चय पूजा

त्रिभंगी छन्द

यह धर्म क्षमा वा, मान गुमावा, सरल सुभावा सतिवानी।
शुचि भाव करावा, संजम लावा, तप करवावा अधिकनी॥
शुचि त्याग बतावै, नगन पुजावै, शील बढ़ावै शिवदाई।
यह धर्म दशारा, थाप करारा, पूजन धारा शिरनाई॥१॥

ॐ ह्रीं दशलक्षणधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं दशलक्षणधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। स्थापनम्
ॐ ह्रीं दशलक्षणधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणम्।

मणुयणाणंद की चाल

क्षीरसागर तना नीर शुभ लाइये।
कनक झारी विषैं धार गुण गाइये।
मरण उत्पत्ति नहीं होय ता फल सही।
जानि इमिधर्म दशधा जजों शिवमही॥१॥

ॐ ह्रीं दशलक्षणधर्मेभ्यो जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्व० स्वाहा।

नीर संग अगर चन्दन घिस लायजी।
सुभग पातर विषैं धारि थुति गायजी॥
जगत ताप तासु फल तुरत नाशै सही।
जानि इमिधर्म दशधा जजों शिवमही॥२॥

ॐ ह्रीं दशलक्षणधर्मेभ्यो संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्व० स्वाहा।

लेय अक्षत भले मुक्तिफल से कहे।
ऊजले अखण्ड सुभग स्वर्ग पातर लहे॥
अक्षयपद पावनै ताप मनमें सही।
जानि इमिधर्म दशधा जजों शिवमही॥३॥

ॐ ह्रीं दशलक्षणधर्मेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० स्वाहा।

फूल कंचनवरन कल्पतरु के भले।
गंध जुत रंग शुभ लेइ निज कर चले॥
माल तिन गूँथ कामबाण नाशक सही।
जानि इमिधर्म दशधा जजों शिवमही॥४॥

ॐ ह्रीं दशलक्षणधर्मेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व० स्वाहा।

सुभग नैवेद्य मोदक घने लाइये।
विविध स्वादमय सु धरि भक्ति उर भाइये॥
भूख दुखहर्ण स्वर्णपात्र धरि के सही।
जानि इमिधर्म दशधा जजों शिवमही॥५॥

ॐ ह्रीं दशलक्षणधर्मेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्व० स्वाहा।

दीप मणि रतनमय और घृतमय लही।
धारि कनकथाल में सु आरति जु करि लही॥
धर्मज्योति मोह अन्धकार नाशिका सही।
जानि इमिधर्म दशधा जजों शिवमही॥६॥

ॐ ह्रीं दशलक्षणधर्मेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्व० स्वाहा।

धूप दश अंग मय लायकर सारजी।
अगनि संग खेवहूँ सुभक्ति उर धार जी॥
कर्म क्षयकार भव-वास नाशन सही।
जानि इमिधर्म दशधा जजों शिवमही॥७॥

ॐ ह्रीं दशलक्षणधर्मेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० स्वाहा।

लौंग खारिक सु नारिकेल सुक्खकारजी।
और बादाम पुंगी फलादि सारजी॥
लेइ निज हाथ में सुभक्ति धरि के सही॥
जानि इमिधर्म दशधा जजों शिवमही॥८॥

ॐ ह्रीं दशलक्षणधर्मेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।

नीर गन्ध अक्षत सुफूल चरु सोइ जी।
दीप अरु धूप फल अरघ संजोइजी॥
पुरट थाली विषैं भक्ति करके सही।
जानि इमिधर्म दशधा जजों शिवमही॥९॥

ॐ ह्रीं दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

धर्म भव कूपतैं काढ़ने को रसी।
भव उदधि पार करतार नवका इसी॥
धर्म सुख दैन जिमि तात माता सही।
जानि इमिधर्म दशधा जजों शिवमही॥१०॥

ॐ ह्रीं दशलक्षणधर्मेभ्यो महार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

जयमाला

दोहा

दश वृष रतन मिलाय के, माल करै भवि जोय।
धरै आपने उर विषैं, ता सम और न कोय॥१॥

बेसरी छन्द

दशलक्षण वृष शिवमग दीवा[१], धर्म थकी सुख पावैं जीवा।
मुकति दीप[२] पहुँचावन नावा[३], ये दश धर्म जजौं जुत भावा ॥२॥
दशविधि धरम धरै जो कोई, करम नाशि फिर दुख नहिं होई।
धरम जु साधन और न कोई, यो दश धर्म जजौं मद खोई ॥३॥
धरम जीव का पालनहारा, धरम मान का खण्डनवारा।
धरम थकी जावै कुटिलाई, इमि दश धर्म जजौं चितलाई ॥४॥
साँच वचन सम धरम न आनौ, धर्म भाव निर्मल पहचानौ।
धर्मजीव-रख[४] इन्द्रिय जीतं, इमि लखि धर्म जजौं कर प्रीतं ॥५॥
तप ही सर्व धर्म का मूला, त्याग धरमतैं क्षय अघ थूला।
धर्म नगन[५] सम और न कोई, इमि दशधर्म जजौं मद खोई ॥६॥
नारी त्याग धरम शिवदाई, ये दश धरम जगत में भाई।
जो दश लक्षण मनमें आनै, सो भव-तप-हर-शिवपद ठानै ॥७॥
दशलक्षण व्रत इह विधि कीजे, उत्कृष्टैं दश वास करीजे।
नातर[६] बेले[७] पारनभाई, तथा इकन्तर वास कराई ॥८॥
शक्तिहीन ह्वै तो सुन मीता, दश एकान्त करौ धरि प्रीता।
व्रत दश वर्ष करै मन लाई, करूँ उद्यापन मन वच काई ॥९॥
नहिं उद्यापन शक्ति तुम्हारी, तौ दूनो व्रत करूँ सुखकारी।
पीछे यथाशक्ति खरचावै, पूजन धरम उद्योत करावै ॥१०॥

दोहा

इत्यादिक विधि सहित जो, धर्म करै दश सार।
पावै सुख मन भावनो, अनुक्रम ले भव-पार॥

ॐ ह्रीं दशलक्षणधर्मेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

●●●

1.दीपक। 2.द्वीप। 3.नौका। 4.जीव की रक्षा। 5.आकिंचन्य धर्म। 6.नहीं तो। 7.दो दिन उपवास।

उत्तम क्षमा धर्म पूजा

अडिल्ल

जीव तिरस थावर जेते तग में सही।
देव नरक नर पशू चारि गति की मही॥
तिन सब ऊपर दयाभाव उर माँहि जी।
सो है उत्तम क्षमा थापि जजूँ याहिं जी॥१॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। स्थापनम्
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणम्।

अथ अष्टक

पद्धरि छन्द

जल गंग नदी को विमल सोइ, धरि रतन पियाले शुद्ध होइ।
यह धर्म क्षमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मन वच भक्ति आन ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमाधर्मांगाय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्व॰ स्वाहा।

बावन चन्दन घसि नीर लाय, धरि कनक रकेबी जिन चढ़ाय।
यह धर्म क्षमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मन वच भक्ति आन॥२॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्व॰ स्वाहा।

अक्षत मुक्ताफलसम जु लाय, अति उज्ज्वल नखशिख शुद्ध भाय।
यह धर्म क्षमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मन वच भक्ति आन॥३॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व॰ स्वाहा।

शुभ फूल कल्पतरु के अनूप, करि माला सुमन सुगन्ध रूप।
यह धर्म क्षमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मन वच भक्ति आन॥४॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व॰ स्वाहा।

नाना रस पूरित चरु सम्हाल, शुभ मोदक आदि अनेक धार।
यह धर्म क्षमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मन वच भक्ति आन॥५॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्व॰ स्वाहा।

मणि दीपक सार बनाय लाय, धरि कनकथाल भरि भक्ति भाय।
यह धर्म क्षमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मन वच भक्ति आन॥६॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्व॰ स्वाहा।

ले धूप अगुरुजा अन्धकार, दुर्भाव हुताशन माहिं जार।
यह धर्म क्षमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मन वच भक्ति आन॥७॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० स्वाहा।
फल नारिकेल बादाम सोई, पुंगीफल खारक भक्ति जोइ।
यह धर्म क्षमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मन वच भक्ति आन॥८॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।
जल चन्दन अक्षत फूल लाय, चरु दीप धूप फल अर्घ भाय।
यह धर्म क्षमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मन वच भक्ति आन॥९॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

अडिल्ल

पाप प्रकृति कर जीव अशुभ बंधन कर्‍यो।
थावर नामा कर्म उदय दुख को भर्‍यो॥
पृथ्वी माहिं सु जाय सहे बहु अघ फला।
तिनका रथण भाव क्षमा उत्तम भला॥१॥
ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिक-परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
जे जलकायिक जीव ज्ञान बिन दुख लहैं।
इक इन्द्रिय के द्वार अतुल विपदा सहैं॥
तिनको दुखमय जानि मुनी करुणा करैं।
तसु प्रसादतैं झटिति मोक्ष वनिता वरैं॥२॥
ॐ ह्रीं जलकायिक-परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
अगनिकाय धर जीव एक इन्द्रिय सही।
नाना दुःख तन सहैं जलै सब जग मही॥
इन पर करुणाभाव धरैं जे भवि सही।
सो ही उत्तम क्षमा मोक्षदाता कही॥३॥
ॐ ह्रीं अग्निकायिक-परिक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

पवनकाय के जीव महा संकट सहैं।
हाथ पाँव मुख वचन थकी बाधा लहैं॥
इन पर करुणाभाव जती धारै सही।
सो ही उत्तमक्षमा कही शिव की मही ॥४॥

ॐ ह्रीं वायुकायिक-परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

हरित काय में प्राणी अति वेदन लहै।
छेदन भेदन कष्ट महा अघ फल सहै॥
इन पर समता भाव सुखी इनको चहै।
सो ही उत्तम क्षमा धारि मुनि शिव लहै ॥५॥

ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिक-परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

थावर के पन भेद पाप फलतैं बने।
सूक्ष्म बादर भेद दोय यों जिन भने॥
इनको दुखमय जानि दया मन लाय है।
सो ही उत्तम क्षमा जजौं शिर नाय है ॥६॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मस्थूलपंचस्थावर-परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

लट अरु जोक गिडोला इल्ली जानिये।
कौड़ी शंख दुइन्द्रिय अति दुख थानिये।
इन पर करुणाभाव जती धारैं सही।
सो ही उत्तम क्षमा जजौं शिवकी मही ॥७॥

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियजीव-परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

चींटी कुंथा खटमल बीछू दुखमही।
ते इन्द्रिय परजाय पाय घुण आदि ही॥
इनको दुखमय जानि मुनी करुणा धरैं।
सो ही उत्तम क्षमा जजौं सब अघ जरैं ॥८॥

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजीव-परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

माखी मच्छर टीडी भँवरादिक सही।
बर्र ततइया मकड़ी चतुरिन्द्रिय कही॥
इनको दुखिया देखि मुनी करुणा धरैं।
सो ही उत्तम क्षमा जजौं वसुविधि जरैं ॥९॥

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजीव-परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

इन्द्रिय पाँचों होय, नहीं मन जो लहै।
ते जिय जानि असैनी अघफल अति दहै॥
इनको दुख भरपूर जानि करुणा धरै।
सो ही उत्तम क्षमा जजौं शिवथल धरै ॥१०॥

ॐ ह्रीं असंज्ञीपंचेन्द्रियजीव-परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

नरक जीव अति दुखी पापफलतैं सही।
छेदन भेदन पीर सहैं जात न कही॥
इन पर करुणाभाव जती अति लाय हैं।
सो ही उत्तम क्षमा जजौं सुखदाय हैं ॥११॥

ॐ ह्रीं नारकीजीव-परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

गीता छंद

मनुष क्रोध रु मान माया, लोभवश दुखिया घने।
बहुचाह पीड़त रागद्वेषी, अघ घनो उपजे तिने॥
तिन देख यतिवर दया लावे, महादीन दयाल जी।
सो धर्म उत्तम क्षमा निर्मल, जजौं भाग्य विशालजी॥१२॥

ॐ ह्रीं मनुष्यजीव-परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

परकार चारों देव गति में, जीव सुख राचै सही।
लछि देखि परकी झुरै नितही, मानतैं पीड़ा कही॥
तिन देखि मुनि उर दया लावै, महा कोमल भावजी।
सो धर्म उत्तम क्षमा पूजौं, अर्घतैं कर चावजी॥१३॥

ॐ ह्रीं चतुर्विधिदेवजीव-परिक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

बेसरी छन्द

थावर तिरस जीव जब जोई, चहुँगति करमनि केवशि होई।
तिनको देखि दया उर लाई, सो उत्तम खम धर्म जजाई॥१४॥

ॐ ह्रीं त्रसस्थावर-समस्तजीव-परिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

जयमाला

धर्म क्षमा उत्तम बड़ो, सब जीवन सुखदाय।
जजै जीव सो पुनि लहै, करै जु शिवपुर जाय॥१॥

बेसरी छन्द

सब जीवन में राग न दोषा, सो है क्षमा धरम निरदोषा।
दुर्जन कृत उपसर्ग लहावै, ताहू पै समभाव रहावै॥२॥
मुनि को वचन कहै दुखकारी, मरम छेद छेदै अघ धारी।
मान खंड किरिया करवावै, तब मुनि क्षमा धर्म मन लावै॥३॥
जे कोई दुष्ट मुनिन को मारै, तीक्ष्ण शस्त्रतैं करि परिहारै।
बाँधै तन को खेद न पावै, तिनपर क्षमा धर्म मन लावै॥४॥
अति दुखिया जियको ऋषि जानैं, तब मुनि अनुकंपा मन आनै।
आपा पर को हित उपजावै, तब मुनि क्षमा धरम मन लावै॥५॥
उत्तम क्षमा धरम सुखदाई, क्षमा धरम सब जियका भाई।
जब मुनिहू पै कष्ट जु आवै, तब मुनि क्षमा धरम मन लावै॥६॥
क्षमा धरमसी ढाल न होई, क्रोध समान प्रहार न कोई।
क्षमा समान न बल अति पावै, तातैं जती क्षमा वृष भावै॥७॥
क्षमा धरम शिव राह बताई, क्षमा तात मात अरु भाई।
जातैं सिद्ध सुखन को पावे, ऐसी क्षमा मुनी मन लावै॥८॥

सोरठा

क्षमा आभूषण सार, उर में जो परिहरे सही।
ते भवसागर पार, जजौं धर्म उत्तम क्षमा॥९॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

उत्तम मार्दव धर्म पूजा

पद्धरि छन्द

मार्दव वृष भाव विचार सोई, जहाँ मान भाव दीखे न कोई।
इह धारी मुनि शिवगामि जानि, मैं जजौं थापि मार्दव सुभानि॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। स्थापनम्
ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणम्।

अथ अष्टक

चाल मणुयणानन्द की

क्षीर सम नीर शुद्ध गाल कर लाइये।
पात्र सुवरण विषैं धारि गुण गाइये॥
जगत फिरनो मिटे तासु फलतैं सही।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ॥२॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्व॰ स्वाहा।

स्वच्छ नीर संग चंदनादि को मिलाय जी।
शुद्ध गंधयुक्त भक्तिभावतैं चढ़ायजी॥
जगत आताप-हर जानि ता फल सही।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ॥३॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्व॰ स्वाहा।

अक्षतं समुज्वलं खंड बिन जानिये।
सुभग मोती जिसे थाल भरि आनिये॥
ध्रौव्य फलदाय मनलाय ध्याऊँ सही।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही॥४॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व॰ स्वाहा।

फूल कल्पवृक्ष के गंध रंग सारजी।
माल गूंथि शुद्धभाव भक्ति कर धारजी॥

मदन मद हरन सुफल जानि यातैं सही॥
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही॥५॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व० स्वाहा।

सुभग रस शुद्ध नैवेद्य मन लाइये।
मोदकादि शुद्ध भक्तिभावतैं चढ़ाइये॥
धारि स्वर्णपात्र शुद्ध मन वचन तन सही।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही॥६॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्व० स्वाहा।

दीप रतनमयी नाश तमको करा।
कनक पातर विषैं भक्तिभावतैं धरा॥
नाश अज्ञान ह्वै तासु फलतैं सही।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही॥७॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्व० स्वाहा।

धूप दशगंध शुभ लेय मन मानिये।
अगर चंदन सबै मेलि शुभ ठानिये॥
अग्नि संग खेइये कर्म जालन सही।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही॥८॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० स्वाहा।

श्रीफलादि लौंग पुंगीफलादि जानिये।
शुद्ध बादाम खारक भले आनिये॥
सिद्ध थानक लहै तासु फलतैं सही॥
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही॥९॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।

नीर चंदन अखिल पुष्प चरु दीप जी।
धूप फल अर्घकर भाव शुद्ध टीपजी॥

लोक में फिरन, तन धरन मिटि है सही।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही॥१०॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

चाल मणुयणानन्द की

देव वीतराग सर्वज्ञ तारक सही।
दोष अष्टादशों तासु माहीं नहीं॥
नमन तिन पद करै धर्म मार्दव कह्या।
सो जजों चारि गति माँहि भरमत दह्या॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीवीतरागदेव-पद-नमन-मार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीतराग देव कही वानि सो धर्म है।
ता सुनै जीव निज हरै भाव भर्म है।
मन वचन काय श्रुतपाद सिर नाय हैं।
सो जजों चारि गति माँहि भरमत दह्या॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनधर्म-पद-नमन-मार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

धर्म को सेय तप लेय कर्म जार जी।
भय सिद्ध देव तन रहित सुखकारजी॥
लेय इन नाम मन वचन शिर नाय है।
सो जजों चारि गति माँहि भरमत दह्या॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्ध-पद-नमन-मार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

धारि छत्तीस गुण सूरि सुखदायजी।
धर्म तप भाव सों गुप्त धरि भायजी॥
मान तजि नमन इन पद विषैं लाइयो।
सो जजों चारि गति माँहि भरमत दह्या॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीआचार्य-पद-नमन-मार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

धारि गुण पाँच अरु बीस उवझायजी।
और भी अनेक गुण पास तिन थायजी॥
मान तजि इन चरण कायको नाइयो।
सो जजों चारि गति माँहि भरमत दह्या॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीउपाध्याय-पद-नमन-मार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

क्षेत्र अतिशय तहाँ धर्म को धाय है।
नमन बहु जिय करै देव गुण गाय हैं॥
मान तजि क्षेत्र शुभ जानि शिर नाइयो।
सो जजों चारि गति माँहि भरमत दह्या॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीअतिशयक्षेत्र-नमन-मार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

देव जिनकी सु प्रतिमा अकृत्रिम इसी।
रूप द्युति ध्यानमुद्रा कही जिन जिसी॥
मान तजि शीश इन चरण को सुनाइयो।
सो जजों चारि गति माँहि भरमत दह्या॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीअकृत्रिमजिनचैत्य-पद-नमन-मार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

सुरग थानक विषैं देव जिनके सही।
रतनमय जैन बिम्ब बिगर किये हैं मही॥
मान तजि शीश इन चरणको सुनाइयो॥
धर्म मार्दव सु तासु फल मोक्ष पाइयो॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीऊर्ध्वलोकसम्बन्धिजिनचैत्य-नमन-मार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

ज्योतिषी व्यन्तरा थान मध्यलोकजी।
बिन किये चैत्य जिन कहे अघ रोकजी॥
मान तजि शीश इन चरणको सुनाइयो।
सो जजों चारि गति माँहि भरमत दह्या॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीमध्यलोकसम्बन्धिजिनचैत्य-नमन-मार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

भवन देवनि विषैं बहुत जिनरायजी।
बिम्ब अकृत्रिम कहे सेय तसु पायजी॥
मान तजि शीश इन चरणको सुनाइयो।
सो जजों चारि गति माँहि भरमत दह्या॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीऊर्ध्वलोकसम्बन्धिजिनचैत्य-पद-नमन-मार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

आदि इन पूज्य थानक बहुत हैं सही।
सिद्ध क्षेत्र मोक्ष फलदाय तीरथ सही॥
मान तजि शीश इन चरणको सुनाइयो।
धर्म मार्दव सु तासु फल मोक्ष पाइयो॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धक्षेत्र-पद-नमन-मार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

जयमाला

बेसरी छन्द

मार्दव धर्म मान को खोवै, ताफल जगत पूज्य फल होवै।
मार्दव सकल दोष निरवारै, ताफल आप तिरै अनि तारै ॥१॥
मार्दव धरम इन्द्र सुर पूजैं, मार्दव धरम भजैं अघ धूजैं।
मार्दव मान हरै सुखकारै, ताफल आप तिरै अनि तारै ॥२॥
मार्दव धरम महा नर ध्यावै, मार्दव धरम हानि नहिं पावै।
यह मार्दव वृष शिवथल धारै, ताफल आप तिरै अनि तारै ॥३॥
मार्दव सबको राखै माना, मार्दव सब धरमनि में दाना।
मार्दव धरम जीव जे धारै, ताफल आप तिरै अनि तारै ॥४॥
मार्दव धरम सुरग सुख केरा, उपद्रव नाशि हरै भवफेरा।
मार्दव उत्तम पुरुष सु धारै, ताफल आप तिरै अनि तारै ॥५॥
मार्दव मोक्षमार्ग को दाता, मार्दव धर्म सकल जग त्राता।
मार्दव वृष गुणवन्ता धारै, ताफल आप तिरै अनि तारै ॥६॥
मार्दव धरम कल्पतरु भाई, मार्दव मनवांछित फलदाई।
मार्दव धरम मुकुट जो धारै, ताफल आप तिरै अनि तारै ॥७॥

मार्दव धरम कनक में मीना, मार्दव धारि सकै न कमीना।
मान मार मार्दव वृष धारै, ताफल आप तिरै अनि तारै ॥८॥
मार्दव वृष सब धर्म प्रमाना, मार्दव मोह मल्ल को हाना।
मार्दव-माल पुरुष उर धारै, ताफल आप तिरै अनि तारै ॥९॥

दोहा

मान मार मार्दव करै, हरै पाप मल सोय।
जगत छुड़ावै शिव करै, ते मो रक्षक होय ॥१०॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

उत्तम आर्जव धर्म पूजा

बेसरी छन्द

जग परपंच रहित जो भावा, सरल चित्त सबतै निरदावा।
तिनको आर्जव भाव सुकहिये, सो ह्यां थापि पूज फल लहिये॥१॥

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। स्थापनम्
ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणम्।

अष्टक

क्षीर समुद्र का उज्ज्वल नीरा, कनक पियाले धर अति धीरा।
जरा रोग नाशनको भाई, आर्जव भाव नमों शिरनाई॥२॥

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्व० स्वाहा।

चन्दन बावन जल घसि लाया, कनकपात्र में धरि उमगाया।
शोकानल तप नाशन भाई, आर्जव भाव नमों शिरनाई॥३॥

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्व० स्वाहा।

अक्षत मुक्ताफल से जानो, उज्ज्वल खण्ड विवर्जित आनो।
क्षय नहिं होय इसो पद दाई, आर्जव भाव नमों शिरनाई॥४॥

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० स्वाहा।

फूल सुगन्ध कल्पद्रुम लाया, तथा सुवर्ण रजतमय भाया।
तिनकी माल गूंथि कर लाई, आर्जव भाव नमों शिरनाई॥५॥

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व० स्वाहा।

नाना रस नैवेद्य करावै, मोदक आदि भक्ति तैं लावै।
भूख व्याधि नाशन को भाई, आर्जव भाव नमों शिरनाई॥६॥

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्व० स्वाहा।

दीपक रतन थालि धरि लीजै, मन वचकाय शुद्धि कर लीजै।
घाति अज्ञान ज्ञान दरशाई, आर्जव भाव नमों शिरनाई॥७॥

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्व० स्वाहा।

धूप अगरजा चन्दन भीनी, गंध सहित निज करमें लीनी।
कर्म दहनको अग्नि जराई, आर्जव भाव नमों शिरनाई॥८॥

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० स्वाहा।

ले नरियल बादाम सुपारी, खारिक लौंग आदि हितकारी।
सिद्धलोक वांछा मनमाहीं, आर्जव धरम जजौं शिरनाई॥९॥

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत कामारी, चरु दीपक फल धूप विथारी।
अर्घ लेय मनवचतन भाई, आर्जव धरम नमौं शिरनाई॥१०॥

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

बेसरी छन्द

गुण छ्यालीस जहाँ प्रभु तेरा, अष्टादश तहाँ दोष न हेरा।
तिनपद सरल भाव शिर नावै, सो आर्जव वृष जजि शिव पावै॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीषट्चत्वारिंशत्-गुणसहित-जिनचरणनमन-आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

मुक्त जीव अरहंत थुति कीजै, मन वच कुटिल भाव तजि दीजै।
तिनपद सरल भाव शिर नावै, सो आर्जव वृष जजि शिव पावै॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तजीव-अरहंतपदनमन-आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

कर्म काटि शिवलोक सिधारै, सिद्ध सुदेव हरो अघ सारै।
तिनपद सरल भाव शिर नावै, सो आर्जव वृष जजि शिव धावै॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्ध-पद-नमन-आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सिद्धशिला पैंतालिस लाखा, योजन विस्तृत जिन वच भाषा।
तत्रस्थित आतम शिर नावै, सो आर्जव वृष जजि शिव धावै॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धशिलास्थित-मुक्तात्मपदनमन-आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

गुण छत्तीस सुधारक सूरा, आचारज सब गुण भरपूरा।
तिनपद सरल भाव शिर नावै, सो आर्जव वृष जजि शिव धावै॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीआचार्य-पद-नमन-आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

आचारज सब गुण भरपूरा, आचारादि गुणन युत सूरा।
तिनपद सरल भाव शिर नावै, सो आर्जव वृष जजि शिव धावै॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीआचार्य-पद-परोक्षनमन-आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

गुण पचीस उवझाय सु माँही, ग्यारह अंग चौदह पूर्वाही।
तिनपद सरल भाव शिर नावै, सो आर्जव वृष जजि शिव धावै॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीउपाध्याय-पद-नमन-आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

बहु गुण धर उवझाय सु जानो, दूरहिं तैं तिनको चित आनो।
तिनपद सरल भाव शिर नावै, सो आर्जव वृष जजि शिव धावै॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीउपाध्याय-परोक्ष-नमन-आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

बीस आठ गुण साधन साधा, सो नहिं लहै जगत की बाधा।
तिनपद सरल भाव शिर नावै, सो आर्जव वृष जजि शिव धावै॥९॥
ॐ ह्रीं श्रीसाधु-पद-नमन-आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

दूरहितैं मुनि गुण जु चितारै, मनवचकाया निज वश धारै।
तिनपद सरल भाव शिर नावै, सो आर्जव वृष जजि शिव धावै॥१०॥
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुनिपरोक्ष-पद-नमन-आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

वरणविहीन सु जिनवर वानी, तिनको सुनि सुख पावै प्रानी।
तिनपद सरल भाव शिर नावै, सो आर्जव वृष जजि शिव धावै॥११॥
ॐ ह्रीं श्रीजिनवाणी-नमन-आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अतिशय क्षेत्र सु तीरथ ठामा, यात्री गण के पूरे कामा।
तिनपद सरल भाव शिर नावै, सो आर्जव वृष जजि शिव धावै॥१२॥
ॐ ह्रीं श्रीअतिशयक्षेत्र-नमन-आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

शिखर सम्मेद आदि सिद्धिथाना, तहँ मुनि लिय शिव कर्मनशाना।
तिनपद सरल भाव शिर नावै, सो आर्जव वृष जजि शिव धावै॥१३॥
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धक्षेत्र-नमन-आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

बिगर किये जिनबिंब अनूपा, लक्षण चिह्न जानि जिन रूपा।
तिनपद सरल भाव शिर नावै, सो आर्जव वृष जजि शिव धावै॥१४॥
ॐ ह्रीं श्रीअकृत्रिमजिनचैत्य-पद-नमन-आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
कृत्रिम जे जिनबिंब विराजैं, विनय सहित पुन दायक छाजैं।
तिनपद सरल भाव शिर नावै, सो आर्जव वृष जजि शिव धावै॥१५॥
ॐ ह्रीं श्रीकृत्रिमजिनचैत्य-पद-नमन-आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
इत्यादिक बहु क्षेत्र सुथाना, पूजनीक तीरथ अघ हाना।
तिनपद सरलभाव शिरनावै, सो आर्जव वृष जजि शिव धावै॥१६॥
ॐ ह्रीं श्रीसकलपूज्यस्थानक-पद-नमन-आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

जयमाला

सरल भाव सौरै सरस, सुरनर पूज्य महान।
तातैं तजनी कुटिलता, आरजव भाव लहान॥१॥

बेसरी छन्द

सरल भाव समता उर आनै, सरल भाव सब औगुन भानै।
आरजव भाव धरैं जो जीवा, तिनने जिनवानी रस पीवा॥२॥
आरजव भाव धरैं जे प्रानी, तिनके होनहार शिवरानी।
दोषभाव तिनतैं नहिं छीवा, आरजवभाव धरैं जे जीवा॥३॥
आरजव भाव अमर पद ध्यावे, आर्जव में औगुन नहिं पावे।
कुटिल भाव विष जिन नहिं पीवा,आरजवभाव धरैं जे जीवा॥४॥
आर्तभाव आरजव ही खोवै, आरजवभाव पापमल धोवै।
रोग-शोक ताको नहिं छीवा, आरजवभाव धरैं जो जीवा॥५॥
आरजव शुद्ध भाव जिन पाया, तिनने लहि पुन पाप गमाया।
अनुभव आनन्द तानै छीवा, आरजवभाव धरैं जे जीवा॥६॥
आरजवभाव दोष सब खोवै, आरजव कर्म कालिमा धोवै।
शुद्ध सुभाव सु तानै लीवा, आरजवभाव धरैं जे जीवा॥७॥
आरजवभाव सकल को प्यारा, आरजवभाव भ्रमणतैं न्यारा।
ताकों और रुचे न मतीवा, आरजवभाव धरैं जे जीवा॥८॥

आरजव सुर शिव के सुख ठाने, आरजवभाव पूर्व अघ भाने।
अद्‌भुत आपापर भिन कीवा, आरजवभाव धरैं जे जीवा॥९॥

दोहा

अन्तरंग निरदोष के, प्रगटें आरजभाव।
जाके फल मरनौ मिटै, छुटै कर्म को दाव ॥१०॥

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

उत्तम शौच धर्म पूजा

बेसरी छन्द

शौच धर्म पर-चाह निवारै, तनतै हूँ ममता निरवारै।
जग वांछा तजि निर्मल भावा, शौचधर्म पूजौं कर चावा॥१॥

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। स्थापनम्
ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणम्।

अष्टक

पद्धरि छन्द

जल क्षीरसमुद्र को सुभग लाय, धरि कनकपात्र में भक्ति भाय।
तन धरन मिटै बहुफल सुजान, मैं शौचधर्म जजि हर्ष आन॥२॥

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्व॰ स्वाहा।

घसि बावन चन्दन नीर आन, अलि गुंजन मानों करत गान।
धरि कनक पियाले भक्ति जान, मैं शौचधर्म जजि हर्ष आन॥३॥

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्व॰ स्वाहा।

उज्ज्वल अखंड शुभ गंधदाय, अक्षत अनूप लखि शशि लजाय।
कन-पात्र विषैं घरि भक्ति आन, मैं शौचधर्म जजि हर्ष आन॥४॥

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व॰ स्वाहा।

ले फूल कल्पद्रुम के मनोग, आसक्त भ्रमर थित करत भोग।
तिन गूँथि माल उर भक्ति ठान, मैं शौचधर्म जजि हर्ष आन॥५॥

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व॰ स्वाहा।

शुभ मोदक आदि अनेक भाय, रसनारंजन नैवेद्य लाय।
धरि पुरट थाल में भक्ति ठान, मैं शौचधर्म जजि हर्ष आन॥६॥
ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्व० स्वाहा।
मणि दीपक वा घृतमय सँजोय, मनुनिविड़ मोहतम नाश होय।
अरु ज्ञान प्रकाश करै महान, मैं शौचधर्म जजि हर्ष आन॥७॥
ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्व० स्वाहा।
शुभ धूप अगरजा गंध लाय, कन धूपायन ताकों खिवाय।
मिस धूम मनों वसुविधि उड़ान, मैं शौचधर्म जजि हर्ष आन॥८॥
ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० स्वाहा।
ले फल बिदाम खारक अनूप, अरु पुंगीफल आदिक स्वरूप।
धरि भक्तिभाव मनमाहिं सोय, मैं शौचधर्म जजौं हर्ष होय॥९॥
ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।
जल गंधाक्षत वर-कुसुम होय, चरु दीप धूप फल सुभग जोय।
कर अर्घ धरौं कनपात्र लाय, मैं जजौं शौच वर भक्ति भाय॥१०॥
ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य

चाल मणुयणानन्द की

देव के सकल सुख जानि चंचलमयी।
आयु पल्य सागर की तुरत ही क्षय गयी॥
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै।
पूजि शौचधर्म को जु शौच थानक धरै॥१॥
ॐ ह्रीं देवसुख-वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
चाह चक्री तने सुखन की उर नहीं।
सहस छिनवै तिया और षट्खंड मही॥
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै।
पूजि शौचधर्म को जु शौच थानक धरै॥२॥
ॐ ह्रीं चक्रिपदभोगवांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

खण्ड तीन को जु राज नारि बहु जानिये।
चारि विधि सैन सुर नर खगादि मानिये॥
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै।
पूजि शौचधर्म को जु शौच थानक धरै ॥३॥

ॐ ह्रीं नारायणपदभोग-वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

कामदेव को सुरूप देखि देव मन हरे।
भोग वांछित सकल देव सेवा करें॥
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै।
पूजि शौचधर्म को जु शौच थानक धरै ॥४॥

ॐ ह्रीं कामदेवपदभोग-वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

आठ परकार सपरस विषैं जानिये।
द्रव्य क्षेत्र काल अनुसार भाव मानिये॥
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै।
पूजि शौचधर्म को जु शौच थानक धरै ॥५॥

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियभोग-वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

पाँच परकार रस जानि शुभ सारजी।
भोग वांछा सभी जगत दुखकारजी॥
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै।
पूजि शौचधर्म को जु शौच थानक धरै ॥६॥

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रियभोग-वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

घ्राण इन्द्रियतने गंध दो हैं सही।
ताहि अनुकूल पाय जीव साता लही॥
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै।
पूजि शौचधर्म को जु शौच थानक धरै ॥७॥

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियभोग-वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

चक्षु इन्द्रियतने पाँच रूप भोग हैं।
ताहि चाहें अमर नाहिं तन रोग हैं॥
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै।
पूजि शौचधर्म को जु शौच थानक धरै॥८॥

ॐ ह्रीं चक्षुरेन्द्रियभोग-वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

राग संगीत इन आदि सुर साजिये।
सप्त स्वर भेद कर्ण भोग मन राचिये॥
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै।
पूजि शौचधर्म को जु शौच थानक धरै॥९॥

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रियभोग-वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

भोग वांछित घने चित्त आधारजी।
ताहि सेय जीव सुख लहै अपारजी॥
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै।
पूजि शौचधर्म को जु शौच थानक धरै॥१०॥

ॐ ह्रीं मनोवांछितभोग-वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

तन अशुचि आपको सु चाम मय जानिये।
सप्त मल धातु पूरित सु घिन आनिये॥
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै।
पूजि शौचधर्म को जु शौच थानक धरै॥११॥

ॐ ह्रीं तनसम्बन्धीभोग-वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

रतन नवधादि भरपूर घर में सही।
कोटि नित दान देते सु क्षय होवे नहीं॥
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै।
पूजि शौचधर्म को जु शौच थानक धरै॥१२॥

ॐ ह्रीं धन-वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

रूप में शची समान नारि घर में घनी।
शीश आज्ञा धरै प्रीति रस में सनी॥
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै।
पूजि शौचधर्म को जु शौच थानक धरै॥१३॥

ॐ ह्रीं वनिताभोग-वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

कामदेव के समान पुत्र रूप धारजी।
विनयवान सर्व बलवन्त तेज सारजी॥
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै।
पूजि शौचधर्म को जु शौच थानक धरै॥१४॥

ॐ ह्रीं पुत्रभोग-वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

भ्रात बहु विनयजुत आनि-पालक सही।
संग तिन भोग भोगि जीव साता लही॥
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै।
पूजि शौचधर्म को जु शौच थानक धरै॥१५॥

ॐ ह्रीं भ्रातृसुख-वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

मन्त्र दाता विपति माहिं मित्र सारजी।
प्रेम अन्तरंग धारि नित्य रहें लारजी॥
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै।
पूजि शौचधर्म को जु शौच थानक धरै॥१६॥

ॐ ह्रीं मित्रानुबन्ध-वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

मित्र तिय पुत्र सब घरतने दासिया।
आदि परिजन सकल और घरवासिया॥
जान सब अथिर उर भाव निर्मल करै।
पूजि शौच धर्मको जु शौच थानक करै॥१७॥

ॐ ह्रीं सकलपरिजनानुकारित्व-वांछाविहीन-शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

जयमाला

दोहा

शौच सकल उर सुख करै, हरे लोभ मद सोइ।
मोक्ष धरै मरनो टरै, ताहि जजैं शिव होइ ॥१॥

शौच भावतैं पुण्य बढ़ोई, कटे पाप जगमें जस होई।
शौच भाव संतन को प्यारा, जजौं शौच यह धर्म हमारा ॥२॥
शौच भाव पर-चाह निवारै, शौच भाव दुख शोक विडारै।
शौच सरब को बड़ा सहारा, जजौं शौच यह धर्म हमारा ॥३॥
शौच साँच के बड़ा सनेहा, शौच मुनिव्रत की इक देहा।
शौच भाव मंगल करतारा, जजौं शौच यह धर्म हमारा ॥४॥
शौच भाव में नाहिं कषाया, शौच भाव सब जग का भाया।
शौच धर्म का शरण गहारा, जजौं शौच यह धर्म हमारा ॥५॥
शौच धर्म को मुनिगण सेवें, ताफल स्वयं सिद्ध थल लेवें।
शौच धर्म समता रस धारा, जजौं शौच यह धर्म हमारा ॥६॥
शौच समान और नहिं मिन्ता, शौच भाव टारै सब चिन्ता।
शौच सदा सब जियका प्यारा, जजौं शौच यह धर्म हमारा ॥७॥

दोहा

शौच सार संसार मं, करै पवित्र जु भाव।
तातैं धारो शौच को, भलो मिलो यह दाव ॥८॥

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

उत्तम सत्य धर्म पूजा

अडिल्ल

सत्य सरीखो धर्म जगत में है नहीं।
सत्य धरम परभाव लहै शिव की मही॥
तातैं भव दुख हरण सत्य वृष भाइये।
यहाँ थापि मैं जजौं सत्य मन लाइये ॥१॥

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। स्थापनम्
ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणम्।

अष्टक

त्रिभंगी छन्द

जो झूठ विनाशै जग विसवासै, पुण्य प्रकाशै हितदानी।
सब दोष निवारै समता धारै, शिवपुर कारै गुण थानी॥
जग आदरकारी मोहनिवारी, आनदधारी जग मानो।
ऐसौ सत धर्मा काटत कर्मा, जल ले परमा जजि जानो ॥२॥

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्व॰ स्वाहा।

सत-सों वृष नाहीं या जग माहीं, पूज्य कहाहीं शिव थानी।
सब औगुण धोवै पाप बिलोवै, धर्म मिलावै दुख हानी॥
पावत शिवनारी मुनिजन प्यारी, सुख करतारी भवि मानी।
ऐसौ सत धर्मा काटत कर्मा, गंध ले परमा जजि जानो ॥३॥

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्व॰ स्वाहा।

या सत्य समानौ रतन न आनौ, सम्यक् दानौ शिवकारी।
भवदशि को नावा अशुभ गमावा, सरल स्वभावा दुखहारी॥
सिधलोक नसैनी शिवसुख बैनी, ध्यावत जैनी अमलानौ।
ऐसौ सत धर्मा काटत कर्मा, अक्षत परमा जजि जानौ ॥४॥

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व॰ स्वाहा।

सत सौं नहिं मिन्ता मेटत चिंता, अघ-अरि हन्ता जसदाई।
सत जगत पियारो भव उद्धारो, दुख-जम तारो थुति गाई॥
याकौ मुनि ध्यावैं शिवसुखपावैं, पाप गमावैं भव हानौ।
ऐसौ सत धर्मा काटत कर्मा, पुष्पं परमा जजि जानौ ॥५॥

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व॰ स्वाहा।

सत धर्म सु पूजै सब अघ धूजै, शिवमग सूझे अधिकाई।
यातैं वृष सारा काज सँवारा, अशुभ विहारा सिधिदाई॥

सत सारा नीका सुखदा जीका, शिवमग टीका शुभ आनौ।
ऐसौ सत धर्मा काटत कर्मा, ले चरु परमा जजि जानौ ॥६॥

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्व० स्वाहा।

सत धर्म उजाला जग का पाला, विभ्रम टाला धर्म करा।
यह ज्ञान उजालैं अशुभ सु टालैं, संजम पालैं झूठ हरा॥
सत प्रीति उपावै वैर गमावै, जो थुति लावै उर ज्ञानौ।
ऐसौ सत धर्मा काटत कर्मा, दीपक परमा जजि जानौ ॥७॥

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्व० स्वाहा।

सत धर्म प्रभावै मुनि शिव जावै, जगजस गावै थुति लाई।
सत धर्म जु मूला अघ-काय थूला, झूठ कुसूला दह भाई॥
सत धर्म अनूपा शुभ रस कूपा, पुष्प स्वरूपा मग मानौ।
ऐसौ सत धर्मा काटत कर्मा, धूप जु परमा जजि जानौ ॥८॥

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० स्वाहा।

सत धर्म अभ्यासौ शिवथल वासौ, पाप विनासौ हितकारी।
गुण ज्ञान बढ़ावै आदर ल्यावै, पुण्य उपावै सत भारी॥
जगमें अति नीका बन्धु जी का, शिवतिय पीका गुण थानौ।
ऐसौ सत धर्मा काटत कर्मा, ले फल परमा जजि जानौ ॥९॥

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।

जल चंदन नीका अक्षत ठीका, फूल चुनीका माल करौं।
चरु दीप सु लाया धूप बनाया, श्रीफल आया अर्घ्य धरौं॥
उर भक्ति बढ़ाई मुख थुति गाई, सत सब भाई पहचानौ।
ऐसौ सत धर्मा काटत कर्मा, अर्घ्यं परमा जजि जानौ ॥१०॥

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य

चौपाई

क्रोध सहित जिय सत नहिं कहैं, झूठ वचनतैं अघ शिर लहै।
क्रोधरहित जे वचन प्रमानि, सो सतधर्म चयो जिनवानि ॥१॥

ॐ ह्रीं क्रोधातिचाररहित-सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

लोभ सहित जिय झूठ बखानि, साँच धरम ताकौ नहिं मानि।
लोभरहित सतधरम सुभाय, सो सतधर्म जजौं थुति गाय ॥२॥
ॐ ह्रीं लोभातिचाररहित-सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

साँच न कहै भीतियुत जीव, बोले असत सु वचन सदीव।
भयतैं रहित सत्य वच भाख, सो सत धर्म करो थुति लाख ॥३॥
ॐ ह्रीं भयातिचाररहित-सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

हास्य सत्य को नाशनहार, तातैं सहै महादुख मार।
हास्यरहित सब धर्म कहाय, सो सतधर्म जजौं थुति गाय॥४॥
ॐ ह्रीं हास्यातिचाररहित-सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

जिन आज्ञा बिन भाखै बैन, पूर्वापर वच ठीक कहैन।
ऐसे दोषरहित यति भाय, सो सतधर्म जजौं थुति गाय॥५॥
ॐ ह्रीं जिनाज्ञोलंघनातिचाररहित-सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

गीता छन्द

जा देश में जिस वस्तु को तिस मानिये सो सति सही।
जिमि भात को गुजरात-मालवदेश में चोखा कही॥
करनाट में कूलू कहैं द्राविड़ में चौरु बखानिये।
इमि जानि जनपद सत्य को जजि हर्ष उर में आनिये ॥६॥
ॐ ह्रीं जनपद-सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अडिल्ल

बहु नर ताको कहैं तिसो ही मानिये।
रंक नाम लक्ष्मीधर जाहि बखानिये॥
तौ यह रूढ़ी नाम सत्य संवृत कही।
या नयतैं सत जानि जजौं सत वृष सही॥७॥
ॐ ह्रीं संवृत-सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

काहू पर आकार तथा पशु के सही।
चित्र काष्ठ में थापि नाथ नर पशु कही॥

यह थापन सत भेद शास्त्र में गाइयो।
ताकों सत वृष जानि जजौं मन लाइयो॥८॥

ॐ ह्रीं स्थापन-सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

जाकों जग में नाम प्रसिद्ध बखानिये।
सोई ताको नाम सत्य सो मानिये॥
नाम सत्य सो जानि वानि जिन इमि कही।
ताको मन वच काय जजौं शुभ सुखमही॥९॥

ॐ ह्रीं नाम-सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

पीत श्याम अरु रक्त श्वेत गोरा सही।
रूपवान इत्यादिक अंग बहुतैं कही॥
रूपसत्य सो जानि कह्यो जिनवानिजी।
ऐसो सत्य सुजानि जजौं सुखदानजी॥१०॥

ॐ ह्रीं रूप-सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

कही वस्तु यह यातैं छोटी है सही।
यातैं है यह बड़ी अपेक्षा इमि कही॥
याको नाम प्रतीति सत्य सो जानिये।
ताको भी है जजौं भक्ति उर आनिये ॥११॥

ॐ ह्रीं अपेक्षा-सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

जो नरपति को पुत्र ताहि राजा कहै।
सो नैगमनय जानि सत्य तातैं लहै॥
यही सत्य व्यौहार जिनेश्वर धुनि कही।
मैं जजिहौं कर भक्ति नाय मस्तक सही ॥१२॥

ॐ ह्रीं व्यवहार-सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

शक्ति इन्द्रमें यों हि लोक उलटा करै।
सो तो लोक अनादि उलटि कैसे धरै॥

पै यह शक्ति अपेक्षा वचन प्रमान है।
यह सम्भावन सत्य जजौं थिति आन है॥१३॥

ॐ ह्रीं संभावना-सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

जीव अनन्त अनादि नजर आवै नहीं।
द्रव्य अमूर्त्ती पाँच नरक सुर की मही॥
ये नहिं दीखैं नयन सूत्रसौं जानिये।
भावसत्य सो जानि जजौं मन आनिये॥१४॥

ॐ ह्रीं भाव-सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

किसी वस्तु की उपमा जाको लाइये।
ज्यों दानी नर देख कल्पद्रुम गाइये॥
याकों उपमा-सत्य नाम जानौ सही।
सो मैं पूजौं भक्ति नाय मस्तक मही॥१५॥

ॐ ह्रीं उपमा-सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

इत्यादिक बहु भेद सत्य के जानिये।
कहे देव जिनराय आपनी वानिये॥
सो मैं मन वच काय शुद्ध थुति गायजी।
पूजौं सत्य सुधर्म अरथ कर लायजी॥१६॥

ॐ ह्रीं सत्यधर्मांगाय महार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

जयमाला

बेसरी छन्द

सत्य धरम जग पूज्य बताया, सत्य श्रेष्ठव्रत जिनधुनि गाया।
सत्यधरम भवदधिको नावा, सो सत धर्म जजौं शुभ भावा ॥१॥
सत्य धरम वर अंग प्रवीना, सत्य धरम ज्यों कंचनमीना।
सत्य धर्म का सबको चावा, सो सत धर्म जजौं शुभ भावा ॥२॥
सत्य धरम का राखनहारा, सत्यधरम मुनिजन को प्यारा।
सत्य शिरोमणि धर्म कहाता, सो सतधर्म जजौं शुभ भावा ॥३॥

सत्य समान और नहिं मिन्ता, सत्य धर्म मेटे भवचिन्ता।
सत्य करै अघतैं निरदावा, सो सतधर्म जजौं शुभ भावा ॥४॥
सत्य धरम अपयश क्षयकारी, सत्य सुरक्षा करै हमारी।
सतही का सुरनर जस गावा, सो सतधर्म जजौं शुभ भावा ॥५॥
सत्य सहित सग सार्थक धर्मा, तासों कटै चिरन्तन कर्मा।
सत्य समान और नहिं ठावा, सो सतधर्म जजौं शुभ भावा ॥६॥
सत्य जगत में पूजा पावै, सत्य धरम शिव राह बतावै।
सत्य जजौं सतधर्म लहावा, सो सतधर्म जजौं शुभ भावा ॥७॥
धर्म सरोवर में सत नीरा, सत्यधर्म खोवै सब पीरा।
सत्य धर्मसों कुगति न पावा, सो सतधर्म जजौं शुध भावा ॥८॥

सतसागर में जे रमे, ते वृष नायक जोय।
जजैं धर्म सतको सही, मन वच काया सोय॥९॥

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

उत्तम संयम धर्म पूजा

अडिल्ल

संयमधर्म अनूप दोय विधि जानिये।
इक रक्षा षट्काय दया उर आनिये॥
मन इन्द्रिय वश करै दूसरो संयमा।
सो मैं पूजौं थापि लहौं उत्तम रमा॥१॥

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। स्थापनम्
ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणम्।

अष्टक

बेसरी छन्द

निर्मल नीर भाव कर भीजे, मन मनोज्ञ बासन धरि लीजे।
जिनको जन्म मरण गद जावै, सो संयमवृष जजि शिर नावै ॥२॥

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्व० स्वाहा।

चंदन शीतल भावन भाया, तापर मन भंवरा जु लुभाया।
जग आताप तासु नशि जावै, सो संयम वृष जजि शिर नावै ॥३॥

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्व॰ स्वाहा।

शालि अखंड अखत ले भाई, शुभपरणति भाजन भरवाई।
जो अखंड थानक ले धावै, सो संयम वृष जजि शिर नावै ॥४॥

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व॰ स्वाहा।

फूल प्रफुल्लित भाव सु लीजै, भक्ति-तार में माल करीजै।
मदन-बाण-हर सो बल पावै, सो संयम वृष जजि शिर नावै ॥५॥

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व॰ स्वाहा।

भाव अवांछित कर नैवेद्यं, नाना रस मय जे निरखेद्यं।
भूख नाशि चित साता पावै, सो संयम वृष जजि शिर नावै ॥६॥

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्व॰ स्वाहा।

सम्यग्ज्ञान दीप करि भाई, शुद्ध भाव भाजन धरवाई।
ताके फल अज्ञान मिटावै, सो संयम वृष जजि शिर नावै ॥७॥

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्व॰ स्वाहा।

कर्म आठ मय धूप करीजे, धरम सु ध्यान अगनि खेवीजे।
ताफल दुष्टकर्म नशि जावै, सो संयम वृष जजि शिर नावै ॥८॥

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व॰ स्वाहा।

उत्तम परिणति को फल कीजे, शुद्ध भाव कनथाल धरीजे।
तातैं मनवांछित फल पावै, सो संयम वृष जजि शिर नावै ॥९॥

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व॰ स्वाहा।

आठों द्रव्य अमोलिक जानी, प्रासुक भाव सहित हितदानी।
पद अनर्घ्य तासु फल पावै, सो संयम वृष जजि शिर नावै ॥१०॥

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य

ताल कूप खाई न खुदाय, भूमिकाय तब दया पलाय।
पृथिवीकाय की रक्षा होय, संयम धर्म जजौं मद खोय ॥१॥

ॐ ह्रीं पृथवीकायजीव-रक्षणरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

अनगालो जल वरतैं नाहिं, नदी तलाब फुड़ावै नाहिं।
जलकायिक जिय रक्षा करै, संयम वृष जजि शिवतिय वरै ॥२॥
ॐ ह्रीं जलकायिकजीव-रक्षणरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
अगनि जलावन काज न करै, नांहि बुझावै करुणा धरै।
अगनिकाय जिय रक्षा होय, संयम धर्म जजौं शुचि होय ॥३॥
ॐ ह्रीं अग्निकायिकजीव-रक्षणरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
पवनकाय की रक्षा सार, पंखा आदि काज नहिं धार।
पवनकाय जिय रक्षा होय, संयम धर्म जजौं मद खोय ॥४॥
ॐ ह्रीं वायुकायिकजीव-रक्षणरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
फूल पात तरु तोड़ै नाहिं, वन बागादि लगावै नाहिं।
हरितकाय जिय रक्षा होय, संयम धर्म जजौं मद खोय ॥५॥
ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिकजीव-रक्षणरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
इल्ली जोंक गिंडोला जान, बाला आदि जीव पहचान।
बे-इन्द्रिय जिय रक्षा होय, संयम धर्म जजौं मद खोय ॥६॥
ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियजीव-रक्षणरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
चींटी कुंथु वा खटमल लीक, जुँआ तिरूला जिय करि ठीक।
ते-इन्द्रिय जिय रक्षा होय, संयम धर्म जजौं मद खोय ॥७॥
ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजीव-रक्षणरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
माखी भँवरा टीडी जान, मच्छर आदि जीव पहचान।
चउ-इन्द्रिय जिय रक्षा होय, संयम धर्म जजौं मद खोय ॥८॥
ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजीव-रक्षणरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
जीव असैनी बहुत प्रकार, जलचर सर्प आदि निरधार।
पंचेन्द्रिय जिय रक्षा होय, संयम धर्म जजौं शुचि होय ॥९॥
ॐ ह्रीं असंज्ञीपंचेन्द्रियजीव-रक्षणरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
नर सुर नारकि सब जिय संज्ञि, तिर्यक्‌गति में संज्ञि असंज्ञि।
संज्ञी जिय की रक्षा होय, संयम धर्म जजौं मद खोय ॥१०॥
ॐ ह्रीं संज्ञीपंचेन्द्रियजीव-रक्षणरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सपरस इन्द्रिय विषय निरवार, वीतरागता वरतै सार।
शीत उष्ण उर चाह न होय, संयम धर्म जजौं शुचि होय ॥११॥
ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रिय-विषयवर्जनरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

रसनेन्द्रिय पाँच भट जान, तिनवश भये सकल गुणखान।
रसनेन्द्रिय के वश नहिं होय, संयम धर्म जजौं मद खोय ॥१२॥
ॐ ह्रीं रसनेन्द्रिय-विषयवर्जनरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

घ्राणेन्द्रिय के भट दुइ जान, तिन प्रसाद जिय दुःख लहान।
घ्राणेन्द्रिय के वश नहिं होय, संयम धर्म जजौं मद खोय ॥१३॥
ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय-विषयवर्जनरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

चक्षु विषय भट जानों पाँच, ते दुख देय सकल जिय साँच।
चक्षु अक्ष के वश नहिं होय, संयमधर्म जजौं मद खोय ॥१४॥
ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रिय-विषयवर्जनरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

कर्णेन्द्रिय शुभाशुभ बैन, ता वश होय सुरासुर ऐन।
शब्द शुभाशुभवश नहिं होय, संयम धर्म जजौं मद खोय ॥१५॥
ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय-विषयवर्जनरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

मन चंचल कपि की गति जिसौ, ताकेवश जगजिय दुख फसौ।
मन के वश कबहूँ नहिं होय, संयम धर्म जजौं मद खोय ॥१६॥
ॐ ह्रीं मन-विषयवर्जनरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सब जियमें धरि समता भाव, तप संयम करिबे को चाव।
आरत रौद्र भाव नहिं होय, संयम धर्म जजौं शुचि होय ॥१७॥
ॐ ह्रीं सामायिकरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

जो प्रमादवश संयम जाय, प्रायश्चित ले पुनि थिर थाय।
छेदोपस्थापन है सोय, संयम धर्म जजौं मद खोय ॥१८॥
ॐ ह्रीं छेदोपस्थापनारूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

दोय कोष नित गमन कराय, तन निहार नहिं बहु रिध पाय।
सो परिहार-विशुद्धी जोय, संयम धर्म जजौं शुचि होय ॥१९॥
ॐ ह्रीं परिहारविशुद्धिरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सकल कषाय नाश ह्वै जाय, नाम मात्र कछु लोभ रहाय।
सूक्ष्म-सांपराय है सोय, संयम धर्म जजौं शुचि होय ॥२०॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मसाम्परायरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सकल मोह नाशै जिसकाल, या उपशमैं मोह जंजाल।
यथाख्यात में रहे न मोह, संयम धर्म जजौं शुचि होय ॥२१॥

ॐ ह्रीं यथाख्यातरूप-संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अडिल्ल

इस प्रकार बहु विधि को संयम जानिये।
शिव सुखदायक होय दया की खानि ये॥
पूरण मुनि के होय धर्म हितदाय जी।
ताहि जजौं मैं अर्घ थकी यश गायजी॥२२॥

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय महार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

जयमाला

बेसरी छन्द

संयम सार जगत में भाई, संयम तैं जिय शिव सुख पाई।
संयम सबका राखनहारा, संयम है शिरताज हमारा ॥१॥
संयम सकल जीव सुखदाई, संयम जगत जीव बड़ भाई।
संयम जगत गुरुनिका प्यारा, संयम है शिरताज हमारा ॥२॥
पूरण संयम मुनिजन पावैं, संयम तैं ही शिवमग धावैं।
संयम अघनाशन असिधारा, संयम है शिरताज हमारा ॥३॥
संयम सर्व मुकुट धर धारैं, संयम तैं विषधर डर हारै।
संयम जामन मरण हमारा, संयम है शिरताज हमारा ॥४॥
संयम के सब दास बताये, संयम बिना जगत भरमाये।
संयम मोह सुभट को मारा, संयम है शिरताज हमारा ॥५॥
संयम मन का जीतनहारा, संयम इन्द्रिय रोग निवारा।
पाप-बेलि को नाशनहारा, संयम है शिरताज हमारा ॥६॥
संयम जग-विरक्त जिय भावै, संयम को मुनिजन जस गावै।

संयम धर्म बहू अघजारा, संयम है शिरताज हमारा ॥७॥
संयम भवसागर नवका-सी, संयम धरि जिय शिवपुर जासी।
संयम कर्म कलंक निवारा, संयम है शिरताज हमारा ॥८॥
संयम जग का बन्धु है, संयम मातरु तात।
संयम भव भव शरण है, नमों टेक अघ जात ॥९॥

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

उत्तम तपो धर्म पूजा

अडिल्ल

अन्तर बाहर भेद कहे तप सारजी।
दुविध भाव परकार करन भव-पारजी॥
तप बारह परकार कर्म-गज केहरी।
मैं पूजौं इस थान जानि नित शुभ घरी॥१॥

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। स्थापनम्
ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणम्।

अष्टक

चौपाई

भवजलतरण नाव तप भाव, करि अघ नाश जु देव उछाव।
ऐसो तप निर्मल जल लाय, पूजौं जामन मरण नशाय ॥२॥

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्व० स्वाहा।

त्रिभुवन में तप तिलक समान, याको मुनि धारैं हित ठान।
तपहर चन्दन सुभग मंगाय, मैं पूजौं भव तप नशि जाय ॥३॥

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्व० स्वाहा।

बेसरी

तपतैं निरत लखे बहुतेरे, तपको जपें जु साहब मेरे।
ऐसो तप अक्षत शुभ आनो, पूजौं फल अक्षय उपजानो ॥४॥

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० स्वाहा।

पद्धरी

यह तप त्रिभुवन में पूज्य सार, यह तप नाना मंगल सु धार।
ऐसो तप बहु शुभ फूल लाय, मैं पूजौं तसु फल मदन जाय ॥५॥
ॐ ह्रीं उत्तमतपोमधर्मांगाय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व० स्वाहा।
तप सुर वांछै पै नाहिं पाय, तातैं सुर पूजैं तप सुभाय।
ऐसो तप चरु ले भक्ति लाय, मैं पूजौं तसु फल क्षुधा जाय ॥६॥
ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्व० स्वाहा।
तप कल्पवृक्ष वांछित सुदेइ, तप दीप अनूपम तम हरेइ।
ता तप को दीपक रतनलाय, मैं पूजौं तसु फल ज्ञान पाय ॥७॥
ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्व० स्वाहा।
तपही तैं तीर्थंकर जु होय, तपही तैं शिव लहि कर्म खोय।
ऐसे तप को शुभ धूप लाय, मैं पूजौं विधि ईंधन जराय ॥८॥
ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० स्वाहा।
तप पूजत जग करि पूज्य होय, तप औषधि दुखगद हरन जोय।
ता तपको बहुविधि फल मंगाय, मैं पूजौं तसु फल शिव लहाय॥९॥
ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।
तपतैं उर करुणाभाव होय, तप तपैं जगत में पूज्य सोय।
ता तप को उत्तम अर्घ लाय, मैं पूजौं पद अनरघ लहाय ॥१०॥
ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य

गीता

तप सार जग में भेद बारह भव उदधि को नाव है।
पाप दाहक तप करन हित साधु मन उच्छाव है ॥
तप देय सुख दुख, दूरि करि है, और कहूँ लग गाइये।
इमि जानि पूजौं अर्घ लेकर, तासु फल शिव जाइये ॥१॥
ॐ ह्रीं द्वादशविध-उत्तमतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

बेसरी छन्द

जिन-गुण-सम्पति है तप मीता, त्रेसठ वास होय जिन गीता।
भिन-भिन तिथियन में सुखदाई, यह तप अनशन जजि गुणगाई॥२॥
ॐ ह्रीं जिनगुणसंपत्ति-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

कर्म क्षपण तप के उपवासा, इकसौ अड़तालिस जिन भाषा।
भिन-भिन तिथियन में सुखदाई, यह तप अनशन जजि गुणगाई॥३॥
ॐ ह्रीं कर्मक्षपण-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

चाल जोगीरासा

सिंह निःक्रीड़ित तप दिन सौ, अरु जान सतत्तरि भाई।
तिनमें इकसौ जानि पैंतालिस वास कहै सुखदाई॥
बाकी बत्तिस जानि पारणा, यह विधिजिन धुनि माँहि।
यह अनशन तप जानि जजौं, मैं अर्घ लेय हित ठाहीं ॥४॥
ॐ ह्रीं सिंहनिष्क्रीड़ित-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सर्वतोभद्र तपस्या के दिन एक सैकड़ा जानों।
हैं उपवास पचत्तर अद्भुत पारण पचविस मानों॥
इसकी विधि भिन-भिन जिन भासी सो तप अनशन गाया।
अर्घ लेय मैं पूजों मन वच काय भक्ति जुत भाया ॥५॥
ॐ ह्रीं सर्वतोभद्र-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

महा सर्वतोभद्र बड़ो तप दिन दोसै पैताली।
इकसौ छिनवे वास कहे जिन पारण गिन नव चाली॥
ताकी विधि जिनशासन में लखि विधिजुत करता भाई।
यह अनशन तप जानि जजौं मैं अर्घ लेय हितदाई ॥६॥
ॐ ह्रीं महासर्वतोभद्र-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

लघु निष्क्रीड़ित के दिन जिन धुनि बीसी चार कहे हैं।
तिनमें बीस जु कहे पारणा साठि उपास लहे हैं ॥
करने की विधि जिन धुनि में लखि ताको करिये भाई।
यह तप अनशन जानि जजौं मैं अर्घ आनि सुखदाई ॥७॥
ॐ ह्रीं लघुनिष्क्रीड़ित-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

बेसरी छन्द

नव पारण उपवास पचीसा, दिन चौतीस कहे जगदीशा।
मुक्तावलि तप विधि जिन गाई, यह अनशन तप जजि सुखदाई॥८॥
ॐ ह्रीं मुक्तावलि-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

मास मास के छह उपवासा, एक वरष दुइ सत्तरि खासा।
यह कनकावलि विधिश्रुतगाई, यह तप अनशन जजि सुखदाई॥९॥
ॐ ह्रीं कनकावलि-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सो अनशन पारन उनईसा, इकसौ उनइस दिन शुभ दीसा।
जिनभाषित आचामल भाई, यह अनशन तप जजि सुखदाई॥१०॥
ॐ ह्रीं आचाम्ल-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

चौबिस वास पारना चौई, सब दिन अड़तालीस गिनोई।
तपजु सुदर्शन विधि श्रुत जानो, यह अनशन तप जजि सुखदानो॥११॥
ॐ ह्रीं सुदर्शन-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

एक वरष तक वास करंता, उत्तम तप जिनवाणि भणंता।
ताके भेद बहुत हैं भाई, यह अनशन तप जजि सुखदाई ॥१२॥
ॐ ह्रीं अनशन-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

भूख प्रमाण थकी लघु खइये, सो अवमौदर तप बरनइये।
यह तप विधि भूधर[1] पवि[2] माना, सो मैं जजौं अर्घकर आना॥१३॥
ॐ ह्रीं अवमौदर्य-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

आज इसी विधि भोजन पइये, तो हम लेय नतर थिर रहिये।
ऐसी विधि परतिज्ञा ठानै, सो तप जजौं कर्म गिरि भानै॥१४॥
ॐ ह्रीं व्रतपरिसंख्यान-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

त्यागै इक दुइ त्रय रस भाई, चार पाँच षट् तजि करि खाई।
ऐसो रस परित्याग सु ठानै, सो तप जजौं कर्म गिरि भानै॥१५॥
ॐ ह्रीं रसपरित्याग-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

1.भूधर-पर्वत। 2.पवि-वज्र।

आसन दिढ़ भू सोधि करावै, थिरता भजै सु तन न हिलावै।
शय्यासन तप या विधि ठानै, सो तप जजौं कर्म गिरि भानै॥१६॥

ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासन-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

काय कसै मन आनंद पावै, सो तप काय-कलेश कहावै।
शोक हरै सुख करै महानो, सो तप जजौं कर्मगिरि भानो॥१७॥

ॐ ह्रीं कायक्लेश-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अडिल्ल छन्द

मुनि को जो परमादवशी दूषण लगै।
तत्क्षण गुरुपै जाय जु प्रायश्चित मंगै॥
जो आचारज दण्ड देय सो लेय ही।
तप प्रायश्चित जजौं अर्घ शुभ देय ही॥१८॥

ॐ ह्रीं प्रायश्चित-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

देव धर्म गुरु और थान जो पूज हैं।
तीरथ अतिशय सिद्धक्षेत्र अघधूज हैं॥
तिनकी विनय अनूप करे तजि मानजी।
सो तप विनय विचार जजौं शिवदानजी॥१९॥

ॐ ह्रीं विनय-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

जो मुनि को मन चलत तथा तप करत ही।
उपजै तन में खेद कर्मबलतैं सही॥
तो मुनि के करि पांव चम्पिये जो सुधी।
सो तप वैय्यावृत्य जजौं नाशक कुधी॥२०॥

ॐ ह्रीं वैयावृत्य-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

जिन धुनि बांचै सुनै हरष करि चिंतवै।
धरि जिनकी आम्नाय पाप मलको चवै॥
सो तप है स्वाध्याय ज्ञान उर लावनो।
सो यह तप मैं जजौं स्वर्गसुख पावनो॥२१॥

ॐ ह्रीं स्वाध्याय-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

काय ममत को त्याग यतीश्वर थिति करै।
काय त्याग तप धार कर्म अरि मद हरै॥
तप व्युत्सर्ग महान जान मनभानो।
सो मैं पूजों अर्घ धारि कर पावनो॥२२॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

मन वच काया एक थान थिरि लाइये।
आरत रौद्र कुभाव सबै ही ढाइये॥
या वपुतैं जिय भिन्न शुद्ध जानै सही।
सो तप ध्यान अनूप पूजि लूँ शिवमही॥२३॥

ॐ ह्रीं ध्यान-तपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

इमि धारि तप के भेद बारह सकल कर्म विनाशियो।
यह कर्म भूधर नाश कारण वज्रसम जिन भाषियो॥
जे जीव चाहें तरन भवदधि, ते लहैं तप सारजी।
हम शक्तिहीन न कर सकत, तातैं जजैं उर धारजी॥२४॥

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय महार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अथ जयमाला

दोहा

तप तारै भव उदधिसौं, टारै पाप असाधि।
धरै महासुख थल विषैं, देहै ध्यान समाधि॥१॥

बेसरी छन्द

तप ही सार धरम है भाई, तप ही तैं मुनिवर शिव पाई।
सिद्धक्षेत्र जे सिद्ध सधे हैं, ते सब पहले तपहि भजे हैं॥२॥
तप भव उदधि धरण नवकाया, तप को जस गणधर ने गाया।
ये तपही जगजिन सुखदाई, तात मात स्वामी तप भाई॥३॥
तप को तो तीर्थंकर ध्यावैं, तप बिन मोक्ष कभी नहिं पावैं।
तप शिव महल तनों मगजानो, तप ही तैं सब कर्म हरानो॥४॥

तप-सा तीर्थ और नहिं कोई, तपही तारन सब विधि होई।
तप शिव वाट दिखावन दीवा, तपही तैं सुख होय अतीवा ॥५॥
तपतैं इन्द्री मन-भट हारै, तप निज बलतैं मोह निवारै।
तप को कायर जिय नहिं पावै, तप को महत पुरुष उमगावै ॥६॥
अविचल तपतैं सुख बहु होई, तपतैं लच्छि अखैं पुनि जोई।
तपतैं खानपान परमाना, तपही तैं रस बिन सब खाना ॥७॥
दिढ़ आसन तन तपतैं जानों, काय कष्टतैं जिय सुख जानों।
तप ही लगे पाप को धोवै, तपतैं विनय भाव उर होवै॥८॥
धरमी काय तनी सुश्रूषा, तप ही करवावे अघ-लूसा।
शास्त्र पठन है तप सुखकारा, यातैं होवै वपुतैं न्यारा॥९॥
तप ही मन इन्द्रिय वश आनै, ध्यान धरत वसु कर्म हरानै।
यातैं तप लागत हैं प्यारा, शुद्ध भावतैं ह्वै अघ छारा॥१०॥

तप मेटत भव ताप को, शान्त भाव दिढ़ होय।
हरै भरम देवै धरम, सो तप पूजौं लोय ॥११॥

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

उत्तम त्याग धर्म पूजा

चौपाई

त्याग धरम में ममत न कोई, त्याग धरम सुरतरु अवलोई।
वांछा, त्याग धरम में नाहीं, सो वृष थापि जजौं इस ठाहीं ॥१॥

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। स्थापनम्
ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणम्।

नीर शुभ क्षीरदधि सार सो लायजी।
साधु चित तुल्य निर्मल सुमन भायजी॥
कनक झारी भरी भक्ति मन लाइयो।
त्याग धर्म जजौं स्वर्ग-शिव-सुख दाइयो॥२॥

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्व० स्वाहा।

चन्दनादि गन्ध सार नीर में रलाइयो।
अमर सौरभ थकी भक्ति भरमाइये ॥
कनक झारी भरी भक्ति मन लाइयो।
त्याग धर्म जजौं स्वर्ग-शिव-सुख दाइयो॥३॥

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्व० स्वाहा।

तन्दुलं समुज्वलं जु अक्षतं सुहायजी।
खण्ड बिन सोहने विलोकि हरषायजी॥
थाल कंचन भरौं भाव शुभ लाइये।
त्याग धर्म जजौं स्वर्ग-शिव-सुख दाइयो॥४॥

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० स्वाहा।

पुष्प नाना प्रकार गन्धजुत सारजी।
कल्पवृक्षादि के हेम थाल धारजी॥
माल करि सोहनी भक्ति उर लाइयो।
त्याग धर्म जजौं स्वर्ग-शिव-सुख दाइयो॥५॥

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागमधर्मांगाय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व० स्वाहा।

लाय नैवेद्य बिन खेद अति सोहना।
मोदकादि सरल सार धार मन मोहना॥
स्वर्ण भाजन विषैं भक्ति भर लाइयो।
त्याग धर्म जजौं स्वर्ग-शिव-सुख दाइयो॥६॥

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्व० स्वाहा।

रत्नमय दीप कर ज्योति परकाशिया।
मोह अन्धकार तासु तेजतैं विनाशिया॥
हेमथाल धारि भक्तिभाव चित्त लाइया।
त्याग धर्म जजौं स्वर्ग-शिव-सुख दाइयो॥७॥

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्व० स्वाहा।

धूप दश गन्ध की सार सौरभ भरी।
चन्दनादि ले कनक धूप-आयन धरी॥
अग्नि संग खेय मिस धूप विधि जाइयो।
त्याग धर्म जजौं स्वर्ग-शिव-सुख दाइयो॥८॥

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

श्रीफलं सु लौंग पुंगीफल जु सारजी।
खारका बदाम नारियल सु मनहारजी॥
धारि स्वर्णपात्र में सु भक्ति उर लाइयो।
त्याग धर्म जजौं स्वर्ग-शिव-सुख दाइयो॥९॥

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

नीर गन्धाक्षतं पुष्प चरु सारजी।
दीप अरु धूप फल अर्घ मनहारजी॥
भक्ति भाजन विषैं धारि चढ़वाइयो।
त्याग धर्म जजौं स्वर्ग-शिव-सुख दाइयो॥१०॥

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य

चाल मणुयणानन्द की

कामदेव के समान काय सुन्दर घनी।
सुभग आकार मनुदेव तनसी बनी॥
जानि पुद्‌गलीक जिमि चपल चंचल सही॥
मोह तजि तासुको सु पूजि त्याग शिव लही॥१॥

ॐ ह्रीं तनममत्व-त्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मात रज मेल मिलि कर्मवश थायजी।
गर्भ से रह्यो सु मास नव दुःख पायजी॥
दूध मांगे बिना न देइ निज मातही।
मोह तजि तासुको सु पूजि त्याग शिव लही॥२॥

ॐ ह्रीं जननीममत्व-त्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जनक वीरज थकी आप मैलो भयो।
कालपाय ह्वै जुदा न संग ताको रह्यो॥
कौन काको भयो सर्व स्वारथ सही।
मोह तजि तासुको सु पूजि त्याग शिव लही॥३॥

ॐ ह्रीं पितृममत्व-त्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

पुत्र रूपवन्त पूर्व पुण्यतैं लहाइये।
पाप के विपाक से सुशील नशि जाइये॥
मोहवश होय जिय लहै दुःख धाम ही।
मोह तजि तासुको सु पूजि त्याग शिव लही॥४॥

ॐ ह्रीं पुत्रममत्व-त्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

पाप साजि राज काज भाग्यतैं लहाइये।
तासु रक्षोपहार में स्व-तन गमाइये॥
भोग परिजन करैं आप शुभ्र धाम ही॥
मोह तजि तासुको सु पूजि त्याग शिव लही॥५॥

ॐ ह्रीं राज्यममत्व-त्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

रत्न सुवरण रजत आदि धन पाइये।
घोटका विमान वाहनादि हू लहाइये॥
जानि चपला समान अथिर दुःख धाम ही।
मोह तजि तासुको सु पूजि त्याग शिव लही॥६॥

ॐ ह्रीं धनवाहनादिममत्व-त्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सहस छिनवै तिया जानि अपछर जिसी।
विनय भरपूर रूपरंग रंभा जिसी॥
जानि सम्पति सकल पाप विपदा मही।
मोह तजि तासुको सु पूजि त्याग शिव लही॥७॥

ॐ ह्रीं स्त्रीममत्व-त्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

संग परिजन मनो हाट मेलो बनो।
धर्मशाला विसैं तीर्थयात्री मनो॥

जानि गृह मोह की सांकली है सही।
मोह तजि तासुको सु पूजि त्याग शिव लही॥८॥

ॐ ह्रीं गृहकुटुम्बममत्व–त्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

मूल वसु कर्म को कषाय भाव मानिये।
तास के प्रसंग चार योनि में भ्रमाइये॥
सकल संसार का भार यह ही सही।
मोह तजि तासुको सु पूजि त्याग शिव लही॥९॥

ॐ ह्रीं कषायभाव–त्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

राग अरु द्वेष दोय मोह विधितैं बने।
तासु वश जीव जगमें लहै दुख घने॥
पाप पुण्य को प्रसार तासुतैं ही सही।
मोह तजि तासुको सु पूजि त्याग शिव लही॥१०॥

ॐ ह्रीं रागद्वेष–त्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

मात सुत नारि धन राज तन सारजी।
राग अरु द्वेष सर्व दुःख कर्त्तारजी॥
पाप पुण्य धारि संसार दुःख धाम ही॥
मोह तजि तासुको सु पूजि त्याग शिव लही॥११॥

ॐ ह्रीं सर्वममत्व–त्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

जयमाला

त्याग तरण तारण सही, भवसागर में नाव।
त्याग बने नहिं देवपै, मनुज लह्यो यह दाव॥१॥

बेसरी छन्द

त्याग जोग सबही संसारा, पुद्‌गल द्रव्य त्याग निरवारा।
त्याग रतन कंचन भण्डारा, जो त्यागै सो गुरु हमारा ॥२॥
हाथी घोटक रथ सब त्यागा, साधु आप आतम रस लागा।
माम ताततैं नेह निवारा, जो त्यागै सो गुरु हमारा ॥३॥

त्याग राज बन्धन दुखदाई, नारि पुत्रतैं नेह तुड़ाई।
अनुभव रा मारग विस्तारा, जो त्यागै सो गुरु हमारा ॥४॥
आरत ध्यान त्यागि दुखदाई, त्याग योग्य सब मान बड़ाई।
रौद्र ध्यान त्यागै अधिकारा, जो त्यागै सो गुरु हमारा ॥५॥
क्रोध मान छल लोभ गमावै, सो उत्कृष्ट त्याग कहावै।
हास्य शोक भय भाव निवारा, जो त्यागै सो गुरु हमारा ॥६॥
मद मत्सर को त्याग कराया, त्याग अरति रति विसन बताया।
राग द्वेष का तजै प्रसारा, जो त्यागै सो गुरु हमारा ॥७॥
परमें ममत त्यागिकै भाई, निज परिणति में प्रीति लगाई।
त्याग पाप परिणति की धारा, जो त्यागै सो गुरु हमारा ॥८॥
जगतैं विरति आप रस भीना, तिनने शिवमग नीकेचीना।
त्याग जगत दुःखतैं निरभारा, जो त्यागै सो गुरु हमारा ॥९॥

सोरठा

त्याग धरम तप सार, भव भव शरणो मैं गहो।
जजौं त्याग भवतार, ता प्रसादतैं शिव लहो॥१०॥

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

उत्तम आकिंचन्य धर्म पूजा

अडिल्ल

आकिंचन वृष नगन अवस्था है सही।
तामें दुविध परिग्रह त्याग सु धुनि कही॥
धन धान्यादिक बाह्य राग अन्तर गिनो।
इनतैं रहित सु नगन धरम जजि अघ हनो॥१॥

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। स्थापनम्
ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणम्।

अष्टक

त्रिभंगी

**जल लाया नीका सुरतरणी का, उज्ज्वल ठीका धार करी।
अति गंध सुहाई निर्मल भाई, हर्ष बढ़ाई पाप हरी॥
ले कनक सुझारी भक्ति उचारी, भव दुखहारी हाथ लई।
आकिंचन धर्मा जजि शुभ कर्मा, दे फल परमा थान सही ॥२॥**

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्व० स्वाहा।

**शुभ चन्दन आनी घसि संगपानी, गन्ध सुहानी हाथ धरी।
अलि ऊपर आवै बासु लुभावै, शुद्ध करावै नेह भरी॥
ऐसी गन्ध लाओ हरष बढ़ाओ, ज्ञान जगाओ मोक्ष मही।
आकिंचन धर्मा जजि शुभ कर्मा, दे फल परमा थान सही॥३॥**

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्व० स्वाहा।

**शुभ अक्षत लाया विमल सुहाया, खंड बिन भाया सुखदाई।
मुक्ताफल जानौ अधिक सुहानौ, गंध सु थानौ गह भाई॥
ऐसो ले अक्षत जनमन हर्षत, भक्ति करन्ते शिर नाई।
आकिंचन धर्मा जजि शुभ कर्मा, दे फल परमा थान सही॥४॥**

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० स्वाहा।

**ले फूल सु प्यारा गन्ध भरारा, वर्ण अपारा शोभ घने।
नाना आकारा अलिगण धारा, सुरद्रुम सारा जेम ठने॥
ले कुसुम जु आया माल बनाया, नेह लगाया भक्तिमयी॥
आकिंचन धर्मा जजि शुभ कर्मा, दे फल परमा थान सही॥५॥**

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यमधर्मांगाय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व० स्वाहा।

**नाना रस आने अधिक सुहाने, षट्विधि जानै सुखदाई।
शुभ मोदक कीने हाथ सु लीने, मधु रस भीने चरु लाई॥
धरि कंचन थाला भक्ति विशाला, कह गुणमाला ज्ञानमई॥
आकिंचन धर्मा जजि शुभ कर्मा, दे फल परमा थान सही॥६॥**

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्व० स्वाहा।

मणि दीपक नाना तेज महाना, मोह नशाना ज्ञानकरा।
धरि कंचन थारी भक्ति उचारी, अर्थ अपारी पाप हरा॥
मिथ्या-तम धोवै गुणमणि पोवै, शिवमगजोवै ज्योतिमयी॥
आकिंचन धर्मा जजि शुभ कर्मा, दे फल परमा थान सही॥७॥
ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्व० स्वाहा।

दश गंध मिलाई धूप बनाई, अधिक सुहाई सुखकारी।
मलयागिरि डारा अगर सुधारा, अलि गुंजारा मदधारी॥
ऐसी करि लीनी धूप नवीनी, भक्ति सुभीनी भावमयी॥
आकिंचन धर्मा जजि शुभ कर्मा, दे फल परमा थान सही॥८॥
ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० स्वाहा।

फल लौंग सुपारी श्रीफल भारी, भक्ति भरारी गह आनौ।
फिर लाय बदामा खारिक ठामा, वांछित कामा फल जानौं॥
ऐसो फल लायो अति हरषायो, मुख गुन गायो पुण्य लही॥
आकिंचन धर्मा जजि शुभ कर्मा, दे फल परमा थान सही॥९॥
ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।

जल चंदन लाया अक्षत भाया, फूल मंगाया चरु जु धरी।
ले दीपक थारा धूप अपारा, श्रीफल धारा अर्घ करी॥
बहु द्रव्य जु लाये भक्ति बढ़ाये, ज्ञान सु पाये ध्यान लही॥
आकिंचन धर्मा जजि शुभ कर्मा, दे फल परमा थान सही ॥१०॥
ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य

चाल मणुयणाणंद की

सर्व जग है अथिर, ध्रौव्य नहिं मानिये।
तात माता तिया भ्रात सुत जानिये॥
चक्रवर्ती तने भोग क्षय जायजी।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी॥१॥
ॐ ह्रीं अनित्यरूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

आयु पूरन भये शर्ण नहिं कोयजी।
औषधी मन्त्र बल तन्त्र बहु होयजी॥
देव खग शर्ण नहिं मर्ण दिन आयजी।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी॥२॥

ॐ ह्रीं अशरणरूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अन्यतैं प्रीति संसार सो है सही।
या थकी राग अरु द्वेष उपजै मही॥
राग रुच चारि गति माँहि दुखदायजी।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी॥३॥

ॐ ह्रीं संसाररूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

जीव एकहि फिरै चार गति आपही।
एक भोगै सदा पुण्य या पापही॥
कोउ नहिं दूसरो आप दुःख पायजी।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी॥४॥

ॐ ह्रीं एकत्वरूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सर्व द्रव्य भिन्न कोई मिले न जानिये।
नीर क्षीर के समान जीव देह मानिये॥
जानि इमि साधु निर्ग्रन्थ सुख पायजी।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी॥५॥

ॐ ह्रीं अन्यत्वरूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

देह में पवित्र वस्तु एक नहिं पाय है।
सप्त धातू भरी द्वार नौ बहाय है॥
जीव निर्मल महा शुद्ध चेतनायजी।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी॥६॥

ॐ ह्रीं अशुचिरूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

जोग मिथ्यात्व अव्रत कषाय जानिये।
और परमाद भाव कर्म आठ मानिये॥

त्यागि दुर्भाव साधु शुद्ध रूप ध्यायजी।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी॥७॥

ॐ ह्रीं आस्रवरूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अन्यतैं विरक्त ह्वै जु आपरूप ध्यावही।
राग द्वेष को विहाय शुद्ध तत्त्व पावही॥
भाव संवर यही जानि सुखदाय जी।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी॥८॥

ॐ ह्रीं संवररूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

पाप पुण्य भावतैं जु कर्म बन्ध ह्वै सही।
शुद्धता प्रभाव कर्म जाय निर्जरा लही॥
जानि इस भाँति बिनराग पद ध्यायजी।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी॥९॥

ॐ ह्रीं निर्जरारूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

तीन लोक नित्यरूप जानि नराकारजी।
चार गति घूमि जीव दु:ख ले अपारजी॥
लोक को स्वरूप जानि आत्मतत्त्व ध्यायजी॥
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी॥१०॥

ॐ ह्रीं लोकरूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

वस्तु को स्वभाव धर्म जीव रक्षा कही।
दर्श बोध आचरण जु रत्न तीनों सही॥
चारि विधि दान अरु धर्म दश ध्यायजी।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी॥११॥

ॐ ह्रीं धर्मरूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

गैर वस्तु को जु है सुलभ अपनावना।
ज्ञान निधि आपनी न सहज ही लहावना॥
ताहि पाय साधु शुद्ध आत्मरूप ध्यायजी।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी ॥१२॥

ॐ ह्रीं बोधिदुर्लभ-रूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

भ्रात सुत नारि गज घोटकादि भाइ है।
दास दासी पिता सुतादि परिजनाइ हैं ॥
संग चेतन तजो जानि दुःखदायजी।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी ॥१३॥

ॐ ह्रीं चेतनरूप-बाह्यपरिग्रहत्यागाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

रत्न कंचन रजत ठाम वस्तर सही।
महल वन बाग बहुग्राम युत शुभ सही॥
संग निर्जीव छांड़ि शुद्ध रूप ध्यायजी।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी॥१४॥

ॐ ह्रीं अचेतनरूपबाह्यपरिग्रहत्यागाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

अन्तरंग संग राग आदि अरु द्वेष है।
या थकी जीव लहै चार गति क्लेश है ॥
जानि यह अन्तरंग संग छुड़वायजी।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी॥१५॥

ॐ ह्रीं अन्तरंगपरिग्रहत्यागाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

नग्न रूप धारिकेजु संग दुविधा तजै।
नेह देह को जु छोड़ि आन थिरता भजै॥
ता प्रसाद भक्ति माहिं ही रहै न आयजी।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी॥१६॥

ॐ ह्रीं विविधपरिग्रहत्यागाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व॰ स्वाहा।

जयमाला

आकिंचन इस जीव को, मिल्यो न शिवमग पाय।
अब मैं पूजौं नग्न पद, फल यह मोह मिटाय॥१॥

बेसरी छन्द

आकिंचन वृष दुर्धर जानो, याकों धारि सकै न अयानो।
ज्ञानी तो यामें रुक जावै, वीतराग ह्वै धरम निभावै ॥२॥

वांछा रोग जासु उर नाहीं, सो आकिंचन धरम धराहीं।
विषय भिखारी जीव न पावै, वीतराग ह्वै धरम निभावै ॥३॥
आकिंचन्य जगत जिय प्यारा, जो धारै सो गुरु हमारा।
परिग्रहधारी ताहि न वापै, वीतराग ह्वै धरम निभावै ॥४॥
आकिंचन्य इन्द्र सुर सेवैं, ता प्रसाद निज आतम बेबैं।
लोभी जन यातैं डर जावै, वीतराग ह्वै धरम निभावै ॥५॥
आकिंचन वृष मोह निधाना, याहीतैं ह्वै केवलज्ञाना।
तन धन रंचक याहि न पावै, वीतराग ह्वै धरम निभावै ॥६॥
आकिंचन हाथी का मारा, विषयी जीव सुसा किम धारा।
रागी नाम सुनत मुरझावै, वीतराग ह्वै धरम निभावै ॥७॥
आकिंचन धरम गढ़ नीका, ता बल ध्रौव्यराज ह्वै जीका।
हम या व्रत को शीश नवावैं, साधूजन गहि शिवपुर जावैं ॥८॥

आकिंचन जो आदरै, शिव पहुँचावै सार।
और सकल कर्मनि छुटै, इमि लखि गहु वृष सार॥९॥
आकिंचन को सेवतैं, नशै करम बटमार।
पूजौं मैं आकिंचना, ज्यौं पाऊँ भव पार ॥१०॥

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

ब्रह्मचर्य धर्म पूजा

अडिल्ल

नारि देव नर पशू काष्ठ चित्रामकी।
ब्रह्मचर्य-व्रतधारिन के नहिं कामकी॥
मन वच काया मात सुता भगिनी गिनैं।
ऐसो व्रत ब्रह्मचर्य पूजि हम अघ हनैं॥१॥

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। स्थापनम्
ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणम्।

त्रिभंगी छंद

ले निर्मल पानी अति सुखदानी, उज्ज्वल आनी गंग तनो।
धरि कनक सु झारी मन-हरकारी, निज करधारी हरष ठनौं॥
करि भक्ति सु लाऊँ अति गुण गाऊँ, पुण्य बढ़ाऊँ सुखदाई।
जजि ब्रह्म सु चारी वर शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ॥२॥

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्व० स्वाहा।

ले बावन चन्दन दाह निकंदन, अगर घिसन्दन नीर करी।
तिस गंध लुभाया षट्पद आया, गुंज कराया हर्ष धरी॥
शुभ गन्ध मंगायो पात्र धरायो, बहु महकायो सुखदाई॥
जजि ब्रह्म सु चारी वर शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ॥३॥

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्व० स्वाहा।

ले अक्षत चोखे लखि निरदोषे, उज्ज्वल धोके हित धारी।
मुक्ताफल जैसे गन्धित तैसे, दीरघ जैसे जो भारी।
निर्मल जु अखंडित सौरभ मंडित, शशिमद खंडित सुखदाई॥
जजि ब्रह्म सु चारी वर शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ॥४॥

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० स्वाहा।

बहु फूल जु लाया गंध लुभाया, रंग सुहाया सुखखानी।
तसु माल बनाई सुभग सुहाई, अलिगण भाई मनमानी॥
मैं निज कर लायो हरष बढ़ायो, जिन गुण गायो सुखदाई।
जजि ब्रह्म जु चारी वरि शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई॥५॥

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यमधर्मांगाय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व० स्वाहा।

नैवेद्य सु नीका रसजुत ठीका, सुखदा जीका गुण थानो।
करि मोदक लाया मधुर सुहाया, थाल भराया थुति गानो॥
जिन अग्र चढ़ाऊँ मुख गुण गाऊँ, अनि हरषाऊँ सुख पाई॥
जजि ब्रह्म सु चारी वर शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ॥६॥

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्व० स्वाहा।

मणि दीपक करिया तिमिर सुहरिया, ज्योति सुधरिया तेजखरा।
धरि थाल सु लाया हरष बढ़ाया, अति गुण गाया नेह धरा॥
मैं करौं आरती गाय भारती, धर्म सारथी शिवदाई॥
जजि ब्रह्म सु चारी वर शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ॥७॥

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्व० स्वाहा।

करि धूप पिपारी दशविधि धारी, गंध अपारी मनमानी।
शुभ चन्दन डारा अगर अपारा, द्रव्य सु प्यारा बहु आनी।
अपने कर लाया नेह लगाया, अगनि जराया जस गाई॥
जजि ब्रह्म सु चारी वर शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ॥८॥

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० स्वाहा।

ले लौंग बिदामा श्रीफल कामा, खारिक ठामा हम लाये।
पुंगीफल आदी बहुफल स्वादी, भक्ति अपारी सुख पाये॥
भरि थाल अपारा शिवफलकारा, पाप विडारा सुखदाई॥
जजि ब्रह्म सु चारी वर शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ॥९॥

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।

जल चन्दन लाया अखिल सु भाया, फूल मिलाया गंध भारी।
चरु दीपक आनों धूप दहानों, फल अधिकानों शिवकारी॥
वसु द्रव्य मंगाई अर्घ बनाई, भक्ति बढ़ाई शिवदाई।
जजि ब्रह्म सु चारी वर शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ॥१०॥

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य

तिया वास तहँ वास न कीजै, अपना शील भाव रख लीजै।
सकल नारि जननी सम जोवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥१॥

ॐ ह्रीं स्त्रीसहवास-वर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

नारी तन रतिभाव न देखै, हाव-भाव बिभ्रम नहिं पेखै।
शील धर्मतैं निज सुख जोवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥२॥

ॐ ह्रीं स्त्रीमनोहरांगनिरीक्षण-वर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

राग वचन कबहूँ नहिं बोलै, निज वच जिनवाणी सम तोलै।
राग वचन सूं प्रीति न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥३॥

ॐ ह्रीं रागवचन-वर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

पूरव भोग किये न चितारै, सो ही शील भाव उर धारै।
रागभाव तजि निज रस जोवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥४॥

ॐ ह्रीं पूर्वभोगानुस्मरण-वर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

काम उदीपक अशन न खावै, षट्रस माँहिं न जिय ललचावै।
निशदिन शील भावना होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥५॥

ॐ ह्रीं वृष्येष्टरस-वर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

तन श्रृंगार नहीं मन भावै, भूषित देखि नहीं हरषावै।
शीलभरण विभूषित होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै॥६॥

ॐ ह्रीं स्वशरीरश्रृंगार-वर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

नारी की शैय्या नहिं पोढ़ै, कपड़ा नारि तनो नहिं ओढ़ै।
शील विरत जाके दिढ़ होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥७॥

ॐ ह्रीं शय्यासन-वर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

कबहूँ न काम कथा मन आई, विकथा काननतैं न सुनाई।
ताके मदन चाह नहिं होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥८॥

ॐ ह्रीं कामकथा-वर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

पूरण उदर अशन नहिं खावै, ऊनोदर में चित्त रमावै।
शील पालना ताकै होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥९॥

ॐ ह्रीं उदरपूर्णाशन-वर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

नवधा शील धरै जो कोई, ताके ब्रह्मचर्य व्रत होई।
इस व्रततैं भव तरनों होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥१०॥

ॐ ह्रीं नवधाशीलपालनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

कामदेव वश तन तप होई, जिमि तरु होय तुषार दसोई।
यह शोषण शर काम न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥११॥

ॐ ह्रीं शोषणकामबाण-वर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

कामबाण जाके मन माहीं, मन संताप रहै अधिकाहीं।
कामबाण संताप न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥१२॥
ॐ ह्रीं सन्ताप-कामबाण-वर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
कामबाण उच्चाट करावै, रहै उदास कछु न सुहावै।
उच्चाटन शर काम न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥१३॥
ॐ ह्रीं उच्चाटन-कामबाण-वर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
कामीजन को काम सतावै, ता वश ताहि न कछु सुहावै।
वशीकरण शर बाण न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥१४॥
ॐ ह्रीं वशीकरण-कामबाण-वर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
कामदेवतैं गहल जु होई, सुधि बुधि ताहि रहै नहिं कोई।
सो मोहन शर काम न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥१५॥
ॐ ह्रीं मोहन-कामबाण-वर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
ये शर काम कहे लौकीका, सबतै बड़ो मोह रिपु जी का।
जहँ ये पाँच बाण नहिं होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥१६॥
ॐ ह्रीं पंचप्रकार-कामबाण-वर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
रूप तिया को लखि मुलकावै, वृथा पाप शिर माहिं चढ़ावै।
ये शर ताके माँहि न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥१७॥
ॐ ह्रीं मुलकन-कामबाण-वर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
बार-बार तिय देखन चाहै, जाके उर अवलोकन दाहै।
जाके उर यह शर नहिं होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥१८॥
ॐ ह्रीं अवलोकन-कामबाण-वर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
ये चाहै पै ताहि न भावै, हास्य वचन कहि ताहि रिझावै।
यह शर काम तहाँ नहिं होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥१९॥
ॐ ह्रीं हास्य-कामवाण-वर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
परगट वचन कहन नहिं पावै, सैन करै तिय जिय ललचावै।
जाके यह शर काम न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ॥२०॥
ॐ ह्रीं इंगितचेष्टावर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

काम कुटिल जब अधिक सतावै, मिलै तिया नहिं प्राण गमावै।
ये शर काम जहाँ नहिं होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै॥२१॥

ॐ ह्रीं मारण-कामवाण-वर्जनोत्तम-ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

दशविधि कामबाण नशि जाई, शील बाड़ि पाले नवधाई।
जो जिय शिवसुन्दरि को जोवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै॥२२॥

ॐ ह्रीं शुद्धब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

जयमाला

शील शिरोमणि जगत में, सकल धरम शिरमौर।
शिवकर अघहर पुण्यभर, जजौं शील गुण ठौर॥१॥

बेसरी छन्द

शील सिद्ध थल का मग जानो, शील सुरग सरिता मन आनो।
शील भावतैं अघ नशि जाई, साँचा धरम शील है भाई ॥२॥
शील मनुज भव में ही गाया, नहिं निज जन्म सफल करि पाया।
शील समुद्र संसार तराई, साँचा धरम शील है भाई ॥३॥
शील सहाय करे जग जाकी, सुरनर सेव करत हैं ताकी।
ताको नाम लेत दुख जाई, साँचा धरम शील है भाई ॥४॥
शील सती सीता ने धारो, अग्निकुण्ड शीतल करि डारो।
शील प्रभाव जगत पुजवाई, साँचा धरम शील है भाई ॥५॥
शील सती द्रोपदि ने धारौ, ताफल कीचक भीम विदारौ।
भूप हरी पीछे फिर आई, साँचा धरम शील है भाई ॥६॥
शील सती नीली मन आनौ, सुरनर पूज भई जग जानौ।
दोष सकल जातैं नशि जाई, साँचा धरम शील है भाई ॥७॥
शील गुणवती कन्या लीनों, ताको देव सहाय जु कीनों।
शील विरततैं सुरगति पाई, साँचा धरम शील है भाई ॥८॥
शील सती सोमा ने धारा, ताफल सर्प भयो मणिहारा।
जग जस ले सुरलोक सिधाई, साँचा धरम शील है भाई ॥९॥

सेठ सुदर्शन यह व्रत कीनो, पुण्य प्रताप सुयश जग लीनो।
शील सुरेन्द्र सिद्ध पददाई, साँचा धरम शील है भाई ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

सोरठा

धरम जगत में सार, उत्तम क्षमा जु आदि दे।
भवदधि तारनहार, नमों धरम दशलक्षणी ॥१॥

बेसरी छन्द

क्षमा धरम सब जग में आला, निज परिणति को है रखवाला।
क्षमा रतन गुण रतन भंडारो, मोकूँ भवसागरतैं तारो ॥२॥
मार्दव धरम सकल गुण वृन्दा, मान विहंडन शिवसुख कंदा।
मार्दव गुणतैं विनय प्रसारो, मोकूँ भवसागरतैं तारो ॥३॥
आर्जव रीति सकल सुखदानी, सरम स्वभाव कुटिलता हानी।
आर्जव शिवपुर पन्थ सहारो, मोकूँ भवसागरतैं तारो ॥४॥
शौच धरम निर्मलता होई, शौच धरम सब विधि मल खोई।
शौच धरम शिवमन्दिर द्वारो, मोकूँ भवसागरतैं तारो ॥५॥
सत्य धरम सम सार न कोई, सत्य धरम जिनभाषित होई।
सत्य सकल सन्तनिकूँ प्यारो, मोकूँ भवसागरतैं तारो ॥६॥
संयम मन इन्द्रियवश लावै, त्रस थावर के प्राण रखावै।
संयम भाव सदा उर धारो, मोकूँ भवसागरतैं तारो ॥७॥
तप सब आशा-पाशी तोरै, कर्म अनादि बन्धकौ छोरै।
तप जलतैं ह्वै अघ मल न्यारो, मोकूँ भवसागरतैं तारो ॥८॥
त्याग पाप-मल धोवनहारा, त्याग धरम उर करै उजारा।
त्याग भावतैं कर्म निवारो, मोकूँ भवसागरतैं तारो ॥९॥
नगन मोक्ष का बड़ा निशाना, नगन बिना नाहीं शिवथाना।
आकिंचन वृष नगन विचारो, मोकूँ भवसागरतैं तारो ॥१०॥

ब्रह्मचर्य शिवनारि मिलावै, ता बिन जीव जगत भरमावै।
ब्रह्मचर्य ह्वै थिर मन धारो, मोकूँ भवसागरतैं तारो ॥११॥
ऐसे दश विधि धरम पियारा, जन्म-रोग-हर औषधिसारा।
'टेक' धरम निजपर निरवारो, मोकूँ भवसागरतैं तारो ॥१२॥

दोहा

आतम अवलोकन धरम, दशविध धरि मन लाय।
जल फलादि वसु द्रव्यतैं, धरम जजौं हरषाय॥१४॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा-मार्दवार्जव-सत्य-शौच-संयम-तप-त्यागाकिंचन-ब्रह्मचर्य-दशलक्षणधर्मेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

दशविधि धरम उपायकै, भवसागर तिरि जाय।
मनवांछा मेरी यही, भव भव होय सहाय॥१५॥

इत्याशीर्वादः

(108 जाप्य देकर आरती करके शान्ति विसर्जन करें।)

दशलक्षण के भिन्न-भिन्न जाप्य

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय नमः
ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय नमः
ॐ ह्रीं उत्तमार्जव धर्मांगाय नमः
ॐ ह्रीं उत्तमशौच धर्मांगाय नमः
ॐ ह्रीं उत्तमसत्य धर्मांगाय नमः
ॐ ह्रीं उत्तमसंयम धर्मांगाय नमः
ॐ ह्रीं उत्तमतपो धर्मांगाय नमः
ॐ ह्रीं उत्तमत्याग धर्मांगाय नमः
ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्य धर्मांगाय नमः
ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय नमः

समुच्चय जाप्य

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा-मार्दवार्जव-शौच-सत्य-संयम-तप-त्यागाकिंचन्य-ब्रह्मचर्य-धर्मांगाय नमः

आचार्य श्रीविद्यासागर पूजन

रमेशचन्द्र 'अरुण'

श्री विद्यासागर के चरणों में झुका रहा अपना माथा।
जिनके जीवन की हर चर्या बन पड़ी स्वयं ही नवगाथा।।
जैनागम का वह सुधा कलश जो बिखराते हैं गली गली।
जिनके दर्शन को पाकर के खिलती मुरझाई हृदय कली।।

ॐ ह्रीं शताष्ट आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्र। अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् परिपुष्पांजलिं क्षिपामि।

सांसारिक विषयों में पड़कर, मैंने अपने को भरमाया।
इस रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार नहीं पाया।।
तब विद्या-सिन्धु के जल-कण से, भव-कालुष धोने आया हूँ।
आना-जाना मिट जाय मेरा, यह बन्ध काटने आया हूँ।।

ॐह्रीं शताष्ट आचार्य श्री विद्यासागरमुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.।

क्रोध अनल में जल-जल कर, अपना सर्वस्व लुटाया है।
निज शान्त स्वरूप न जान सका, जीवन भर इसे भुलाया है।।
चन्दन-सम शीतलता पाने अब, शरण तुम्हारी आया हूँ।
संसार-ताप मिट जाय मेरा, चन्दन वन्दन को लाया हूँ।।

ॐह्रीं शताष्ट आचार्य श्री विद्यासागरमुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व.।

जड़ को न मैंने जड़ समझा, नहिं अक्षय निधि को पहचाना।
अपने तो केवल सपने थे, भ्रम और जगत का भटकाना।।
चरणों में अर्पित अक्षत हैं, अक्षय पद मुझको मिल जावे।
तव ज्ञान 'अरुण' की किरणों से,यह हृदय-कमल भी खिल जावे।।

ॐह्रीं शताष्ट आचार्य श्री विद्यासागरमुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व.।

इन विषय भोग की मदिरा पी, मैं बना सदा से मतवाला।
तृष्णा को तृप्त करें जितनी, उतनी बढ़ती इच्छा-ज्वाला।।

मैं काम-भाव विध्वंस करूँ, मन-सुमन चढ़ाने आया हूँ।
यह मदन विजेता बन न सके, यह भाव हृदय में लाया हूँ।।

ॐ ह्रीं शताष्ट आचार्य श्री विद्यासागरमुनीन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्व.।

इस क्षुधा-रोग की व्यथा-कथा,भव-भव में कहता आया हूँ।
अति भक्ष-अभक्ष्य भखे फिर भी, मन तृप्त नहीं कर पाया हूँ।
नैवेद्य समर्पित करके मैं, तृष्णा की भूख मिटाऊँगा।
अब और अधिक न भटक सकूँ, यह अन्तः बोध जगाऊँगा।।

ॐ ह्रीं शताष्ट आचार्य श्री विद्यासागरमुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व.।

मोहान्धकार से व्याकुल हो, निज को नहीं मैंने पहचाना।
मैं रागद्वेष में लिप्त रहा, इस हाथ रहा बस पछताना।।
यह दीप समर्पित है मुनिवर, मेरा तम दूर भगा देना।
तुम ज्ञान-दीप की बाती से, मम अन्तर दीप जला देना।।

ॐ ह्रीं शताष्ट आचार्य श्री विद्यासागरमुनीन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व.।

इन अशुभ कर्म ने घेरा है, मैंने अब तक यह था माना।
बस पाप-कर्म तज पुण्य-कर्म को,चाह रहा था अपनाना।।
शुभ-अशुभ कर्म सब पुद्गल हैं, मैं इन्हें जलाने आया हूँ।
इसलिये आपके चरणों में, धूप चढ़ाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं शताष्ट आचार्य श्री विद्यासागरमुनीन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्व.।

भोगों को इतना भोगा कि, खुद को ही भोग बना डाला।
साध्य और साधक का अंतर, मैंने आज मिटा डाला।।
मैं चिदानन्द में लीन रहूँ, पूजा का यह फल पाना है।
पाना था जिसके द्वारा वह, मिल बैठा मुझे ठिकाना है।।

ॐ ह्रीं शताष्ट आचार्य श्री विद्यासागरमुनीन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्व.।

जग के वैभव को पाकर मैं, निश दिन कैसा अलमस्त रहा
चारों गतियों की ठोकर को, खाने में ही अभ्यस्त रहा।।

मैं हूँ स्वतंत्र ज्ञाता दृष्टा, मेरा पर से क्या नाता है।
कैसे अनर्घ पद पा जाऊँ, यह 'अरुण' भावना भाता है।।

ॐ ह्रीं शताष्ट आचार्य श्री विद्यासागरमुनीन्द्राय अनर्घप्रदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

हे गुरुवर तेरे गुण गाने, अर्पित हैं जीवन के क्षण-क्षण।
अर्चन के सुमन समर्पित हैं, हरषाये जगती के कण कण।।
कर्नाटक के सदलगा ग्राम में, मुनिवर तुमने जन्म लिया।
मल्लप्पा पूज्य पिताश्री को, अरु समयमति कृत-कृत्य किया।।
बचपन के इस विद्याधर में, विद्या के सागर उमड़ पड़े।
मुनिराज देशभूषण से तुम, व्रत ब्रह्मचर्य ले निकल पड़े।।
आचार्य ज्ञानसागर ने सन्, अड़सठ में मुनिपद दे डाला।
अजमेर नगर में हुआ उदित, मानों रवि तम हरने वाला।।
परिवार तुम्हारा सबका सब, जिन पथ पर चलने वाला है।
वह भेद-ज्ञान की छैनी से, गिरि-कर्म काटने वाला है।।
तुम स्वयं तीर्थ से पावन हो, तुम हो अपने में समयसार।
तुम स्याद्वाद के प्रस्तोता, वाणी-वीणा के मधुर तार।।
तुम कुन्दकुन्द के कुन्दन से, कुन्दन-सा जग को कर देने।
तुम निकल पड़े बस इसलिए, भटके अटकों को पथ देने।।
वह मन्द मधुर मुस्कान सदा, चेहरे पर विखरी रहती है।
वाणी कल्याणी है अनुपम, करुणा के झरने झरती हैं।।
तुममें कैसा सम्मोहन है, या है कोई जादू टोना।
जो दर्श तुम्हारे कर जाता, नहिं चाहे कभी विलग होना।।
इस अल्प उम्र में भी तुमने, साहित्य सृजन अति कर डाला।
जैन गीत गागर में तुमने, मानो सागर भर डाला।।

हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अनजाना।
स्वर ताल छन्द मैं क्या जानूँ, केवल भक्ति में रम जाना।।
भावों की निर्मल सरिता में, अवगाहन करने आया हूँ।
मेरा सारा दुख दर्द हरो, यह अर्घ्य भेंटने लाया हूँ।।
हे तपोमूर्ति ! हे आराधक! हे योगीश्वर! हे महासन्त।
है 'अरुण' कामना देख सके, युग-युग तक आगामी बसन्त।।

ॐह्रीं शताष्ट आचार्य श्री विद्यासागरमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्व. स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

मुनिश्री १०८ प्रमाणसागरजी महाराज

पूजन

श्री प्रमाणसागर की-२, बोलो जय-जयकार।
धन्य करो पूजन से जीवन सम्हार।।
मुनिराज मम हृदय विराजो।
उर सिंहासन पर आ जाओ।।
आह्वानन मैं करूँ बार-बार।
धन्य करो पूजन से जीवन सम्हार।।

ॐ ह्रीं श्री प्रमाणसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् !
ॐ ह्रीं श्री प्रमाणसागर मुनीन्द्र अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् !
ॐ ह्रीं श्री प्रमाणसागर मुनीन्द्र अत्र मम सन्निहतो भव भव वषट् !

जलम्

नयना घट में जल भर लाये,
छलक-छलक मुनि-चरण धुलाये।
आज खुल गये, पुण्योदय किवार,
धन्य करो पूजन से जीवन सम्हार।।

ॐ ह्रीं श्री प्रमाणसागर मुनीन्द्राय.... जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दम्

भव-भव की ये भटकन छूटे,
जग-संताप हमारा टूटे।
शीतल चंदन ये करो स्वीकार,
धन्य करो पूजन से जीवन सम्हार।।

ॐ ह्रीं श्री प्रमाणसागर मुनीन्द्राय.... चन्दनम् निर्व. स्वाहा।

अक्षतम्

जग-खण्डहर से दिल घबराये,
अखण्ड तंदुल चुग-चुग लाये।
अक्षय पद को मैं पाऊँ इस बार,
धन्य करो पूजन से जीवन सम्हार।।

ॐ ह्रीं श्री प्रमाणसागर मुनीन्द्राय....अक्षतन् निर्व. स्वाहा।

पुष्पं

शील स्वभाव में मन को बढ़ाये,
पुष्पांजलि मुनि चरण चढ़ाये।
श्रद्धा सुमनों से गूंथ लाये हार,
धन्य करो पूजन से जीवन सम्हार।।

ॐ ह्रीं श्री प्रमाणसागर मुनीन्द्राय.... पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्यं

इष्ट मिष्ट स्वादिष्ट बनाये,
भक्ष्य अभक्ष्य रात दिन खाये।
क्षुधा मेटन को आये तेरे द्वार,
धन्य करो पूजन से जीवन सम्हार।।

ॐ ह्रीं श्री प्रमाणसागर मुनीन्द्राय....नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीपं

मोह-मिमिर का घोर अंधेरा,
ज्ञान-सूर्य से करो सबेरा।
रत्न-दीपक से सजा लाये थाल,
धन्य करो पूजन से जीवन सम्हार।।

ॐ ह्रीं श्री प्रमाणसागर मुनीन्द्राय....दीपं निर्व. स्वाहा।

धूपम्

अष्ट कर्म की होली बनाई,
सब दुख दहन करन यहाँ आये।
इनकी भक्ति से छूटे संसार,
धन्य करो पूजन से जीवन सम्हार।।

ॐ ह्रीं श्री प्रमाणसागर मुनीन्द्राय....धूपम् निर्व. स्वाहा।

फलम्

पिस्ता, बदाम, श्रीफल लाये,
मोक्ष महाफल हेतु चढ़ाये।
टूटे दिल की ये सुन लो पुकार,
धन्य करो पूजन से जीवन सम्हार।।

ॐ ह्रीं श्री प्रमाणसागर मुनीन्द्राय....फलम् निर्व. स्वाहा।

अर्घ्यम्

अष्ट द्रव्य की थाली सजाई,
मुनीराज की पूजा रचाई।
श्रद्धा भक्ति से आओ एक बार,
धन्य करो पूजन से जीवन सम्हार।।

ॐ ह्रीं श्री प्रमाणसागर मुनीन्द्राय....अर्घ्यम् निर्व. स्वाहा।

जयमाला

मुनिराज श्री प्रमाणसागर, रत्नत्रय की भरके गागर,
विद्या-सिन्धु के शिष्य कहाये, जन-जन के मन को हर्षाये।
सिद्ध क्षेत्र सोनागिर तीरथ, देव-देवियाँ करते कीरत,
उसी क्षेत्र पर दीक्षा धारे, धन्य धन्य सब भाग्य सम्हारे।
सुरेन्द्र-सोहनी माँ के लाड़ले, विद्यासागर गुरु की छांव ले,
वीर जयंती पर्व मनाया, बेमिसाल बनकर आया।
नाम नवीन कुमार था प्यारा, अन्तर्तम का हुआ उजारा,
गुरुमुख से तुम नाम जो पाये, मुनि प्रमाणसागर कहलाये।
तव प्रवचन में शिक्षा मिलती, हारे को भी हिम्मत मिलती,
आहत भी राहत पा जाता, जो तेरी संगति में आता।
चार कषायों जैसे अवगुण, पाँचों इंद्रिय हैं दुख-दारुन,
महाव्रतों को तुमने धारा, भवोदधि को करने पारा।
नमन करूँ तेरी गरिमा को, गुरुभक्ति की गुरुमहिमा को,
मुनि कल्याण करो हम सबका, आवागमन मिटे चहुँ गति का।
जहान आपके गुण को गाये, आसमान तक खुद झुक जाये,
कट जायें कर्मों के बंधन, मुनिराज का करके वंदन।

दोहा

मुनि गुण गण गणना कठिन, मम घट छुद्र प्रमाण।
करूँ पूर्ण जयमाल अब, बनके आप समान।।

ॐ ह्रीं श्री प्रमाणसागर मुनीन्द्राय....अर्घ्यम् निर्व. स्वाहा।

मुनिश्री १०८ विराटसागरजी महाराज

पूजन

अल्पाऊ में, दीक्षा लेकर, निज कल्याण सजाया है।
मुक्ति पथ को देने वाले, अंतर मन में ध्याया है।।
मुनिवर विराट सागर पद में, पूजन करने आया हूँ।
अष्ट-द्रव्य मय, थाल सजाकर, तब चरणों में आया हूँ।।

ॐ ह्रीं मुनि श्री विराटसागर मुनीन्द्र अत्र-अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्!
ॐ ह्रीं मुनि श्री विराटसागर मुनीन्द्र अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् !
ॐ ह्रीं मुनि श्री विराटसागर मुनीन्द्र अत्र मम सन्निहतो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम् !

जल

उच्च कोटि का जल मैं लाया, पाप करम ही धोने को,
भक्ति उर में, तेरी करता, निज कर्तव्य ही बोने को।
पावन विराटसागर मुनिवर, उत्तम जल को लाया हूँ,
भक्ति त्रय से नमन करूँ मैं, तव गुण पाने लाया हूँ।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य मुनि श्री विराटसागर मुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.।

चन्दन

यह संसार, महा दुखदायी, जिसमें कर्म अनादि हैं,
राग द्वेष से, जुड़े हुए हैं बुद्धि हममें नाहिं हैं।
शीतलता का, दान करो तुम, चंदन शीतल लाया हूँ,
विराट सागर, पार करो तुम, भव विनाश को आया हूँ ।

ॐ ह्रीं परम पूज्य मुनि श्री विराटसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व.।

अक्षत

जिस पद को भी, पाया मैंने, केवल दुःख उठाया है,
कई जन्मों को यूं ही खोया, निज कल्याण गवाया है।
जिस पद को तुम पा गए मुनिवर,उस पद को मैं पा जाऊँ,
विराट सागर, पार करो तुम, रत्नत्रय को पा जाऊँ।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य मुनि श्री विराटसागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्व.।

पुष्प

यह संसार सदा दुखदायी, नाना पाप बताये हैं,
पुष्प चरण में, लाये गुरुवर, निज कल्याण जताये हैं।
शिव स्वरूप के दाता मुनिवर, पुष्प चढ़ाने आया हूँ,
विराट सागर, मिल गए गुरुवर, चरणों शीश झुकाता हूँ ।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य मुनि श्री विराटसागर मुनीन्द्राय काम-वाण विध्वंशनाय निर्व. ।

नैवेद्य

क्षुधा मिटाने आये मुनिवर, मेरी नैय्या पार करो,
भव सागर में भटक गए हैं, मेरा भी कल्याण करो।
नाना विधि, पकवान मैं लाया, चरणों अर्पित करता हूँ,
विराट सागर, निर्णय कर दो, चरणों पूजन करता हूँ।।

ॐह्रीं परम पूज्य मुनि श्री विराटसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. ।

दीप

मोह नींद से हमें जगा दो, रत्नत्रय का दान करो,
दीप चरण में अर्पित करता सच्चे सुख का भान वरो।
उत्तम दीप, जलाकर लाया, आप गुणों भंडार कहे,
विराट सागर, के ही पद में, हम सबने विश्राम सुने।।

ॐह्रीं परम पूज्य मुनि श्री विराटसागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. ।

धूप

धूप चरण में, लाया मुनिवर, अष्ट कर्म में दुख देते,
इतनी शक्ति दे दो मुनिवर, अष्ट कर्म हम, दह लेते।
गुरु के पद में, धूप चढ़ाता, अष्ट कर्म को हनन करूँ,
विराट सागर, के चरणों में, गुण की महिमा गान करूँ।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य मुनि श्री विराटसागर मुनीन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व. ।

फल

नाना फल को, लाया चरणों, उत्तम फल को दे देना,
मुक्ति फल के, दाता गुरुवर, मेरी नैय्या खे देना।
चरणों आया, मुक्ति पाने, रत्नत्रय का दान करो,
विराट सागर जी, आया चरणों, मेरा बेड़ा पार करो।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य मुनि श्री विराटसागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. ।

अर्घ्य

रत्नत्रय, की मूरत हो तुम, मोक्षपुरी, श्रद्धानी हो,
ज्ञान अखण्ड की, धारा हो तुम, सच्चे सुख विश्रामी हो।
अष्ट द्रव्य का, थाल सजाकर, अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ,
विराट सागर, मुनिवर मेरे, मैं पूजन करने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य मुनि श्री विराटसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व.।

जयमाला

तर्ज – चऊ कर्म की त्रेसठ प्रकृति नाश,
जीते अष्टादश दोष नाश

जय विराट सागर, ज्ञानवान, गुरु की महिमा है जग महान।
तुम वीतराग, उपदेश दिया, हमने अन्तर में, धार लिया॥
मुनिवर की महिमा न्यारी है, हमको प्राणों से, प्यारी है।
तुम हित-मित वाणी, कहते हो, तुम सरल स्वभावी, रहते हो॥
तुम पंच महाव्रत, उर धारे, तुम पांच समीति, निज लाते।
तुम चलती फिरती मूरत हो, तुम चलते सिद्ध की, सूरत हो॥
तुम ज्ञान ध्यान, निज आराधे, तुम-अन्तर में ही, गुण धारे।
तुम मुक्ति महल के, दाता हो, तुम मोक्ष महल सुखदाता हो॥
हाल पिपल्या में जन्म लिया, तुम अल्पाऊगृह, त्याग दिया।
तुम ज्ञान अखण्ड की, धारा हो, तुम सच्चे सुख के, तारा हो॥
तुमने गुरुवर को ध्याया है, अन्तर का ज्ञान, जगाया है।
तुम ज्ञान गुणों की खान बने, तुम चारित्र महान बने॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य मुनि श्री विराटसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्व.।

दोहा

विराट सागर, नव नमों, नमन करूँ मैं शीश।
ऐसे गुरु, हैं मिले, दे दो मम आशीष।।

महावीराष्टक-स्तात्रेम्

कविवर भागचन्द्र

शिखरिणी छन्द

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तोऽन्तरहिताः।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन-परो भानुरिव यो,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।। १।।
अताम्रं यच्चक्षुः कमल-युगलं स्पन्द-रहितं,
जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।। २।।
नमन्नाकेन्द्राली-मुकुट-मणि-भा-जाल-जटिलं,
लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्ज्वाला-शान्तमें प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।। ३।।
यदर्चा-भावेन प्रमुदित-मना दर्दुर इह,
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गण-समृद्धः सुख-निधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः शिव-सुख-समाजं किमु तदा,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।। ४।।
कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत - तनुर्ज्ञान-निवहो,
विचित्रात्माप्येको नृपति-वर-सिद्धार्थ-तनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगत-भव-रागोऽद्भुत-गतिर-
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।। ५।।
यदीया वाग्गंगा विविध-नय-कल्लोल-विमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनतां या स्नपयति।

इदानीमप्येषा बुध-जन-मरालैः परिचिता,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।। ६।।
अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवन-जयी काम-सुभटः,
कुमारावस्थायामपि निज-बलाद्येन विजितः।
स्फुरन्नित्यानन्द-प्रशम-पद-राज्याय स निजः,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः) ।। ७।।
महामोहातंक-प्रशमन-पराकस्मिक-भिषङ्
निरापेक्षो बन्धुर्विदित-महिमा-मङ्गलकरः।
शरण्यः साधूनां भव-भव-भृता-मुत्तमगुणो,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।। ८।।
महावीराष्टकं स्तोत्र भक्त्या 'भागेन्दुना' कृतम्।
यः पठेच्छृणुयाच्चापि स याति परमां गतिम्।। ९।।

भक्तामरस्तोत्र

श्रीमन्मानतुंगाचार्य-विरचित

वसन्ततिलका छन्द

भक्तामर-प्रणत मौलि-मणिप्रभाणा-
मुद्योतकं दलित-पाप तमो-वितानम्।
सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम्।। १।।
यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा-
दुद्भुत-बुद्धि-पटुभिः सुरलोकनाथैः।
स्तोत्रै-र्जगत्त्रितय चित्त-हरैरुदारैः।
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्।। २।।
बुद्धया विनापि विबुधार्चितपादपीठ।
स्तोतुं समुद्यतमति-विगत-त्रपोऽहम्।

बालं विहाय जलसंस्थित-मिन्दुबिम्ब-
मन्यःक इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्।। ३।।
वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशाङ्ककान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्धया।
कल्पान्त-कालपवनोद्धत-नक्र-चक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्।। ४।।
सोऽहं तथापित तव भक्तिवशन्मुनीश।
कर्तुं स्त्वं विगतशक्तिरपि प्रवृतः।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगी मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्।। ५।।
अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास-धाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुत बलान्माम्।
यत्कोकिलः किम मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्रचारुकलिका - निकरैकहेतुः।। ६।।
त्वत्संस्तवेन भव-सन्तति-सन्निबद्धं,
पापं क्षणात् क्षय-मुपैति शरीरभाजाम्।
आक्रान्त-लोक- मलिनीलमशेषमाशु,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वर-मन्धकारम्।। ७।।
मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूद-बिन्दुः।। ८।।
आस्तां तव-स्तवनमस्त समस्त-दोषं,
त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्त्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि।। ९।।

नात्यद्भुतं भुवन-भूषण। भूतनाथ।
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति।। १०।।
दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकरद्युति-दुग्धसिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधे-रसितुं क इच्छेत्।। ११।।
यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैक- ललामभूत।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानपमरं न हि रूपमस्ति।। १२।।
वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्रहारि,
निःशेष-निर्जित-जगत्त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलङ्क-मलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डु-पलाश-कल्पम्।। १३।।
सम्पूर्ण-मण्डल-शशांक-कलाकलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर! नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम्।। १४।।
चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि-
र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम्।
कल्पान्त-काल-मरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित।। १५।।
निर्धूम वर्तिरपवर्जित - तैलपुरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि।

गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ! जगत्प्रकाशः।। १६।।
नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदर - निरूद्ध - महाप्रभावः,
स्पष्टीकरोषि सहया युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदर - निरुद्ध - महाप्रभावः,
सूर्यातिशायि-महिमाऽसि मुनीन्द्र। लोके।।१७।।
नित्योदयं दलित-मोह महान्धकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प-कान्ति,
विद्योतयज्जगदपूर्व-शशांक - बिम्बम्।। १८।।
किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा।
युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमः सु नाथ।
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभार-नम्रैः।। १९।।
ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि।। २०।।
मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दुष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि।। २१।।
स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।

सर्वा दिशो दधति भानि सहस्त्ररश्मिम्,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम्।। २२।।
त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः।। २३।।
त्वामव्ययं विभु-मचिन्त्य-मसंख्यमाद्यं,
ब्रह्मणमीश्वर मनन्त - मनंगकेतुम्।
योगीश्वरं विदित-योग-मनेक-मेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः।। २४।।
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्-
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय-शंकरत्वात्।
धातासि धीर ! शिवमार्गविधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि।। २५।।
तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्ति-हराय नाथ।
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन। भवोदधि-शोषणाय।। २६।।
को विस्मयोऽत्र यदि नामगुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश।
दोषैरुपात्त - विविधाश्रय - जात - गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि।। २७।।
उच्चैरशोकतरुसंश्रित - मुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त - तमो- वितानं,
बिम्बं रवे रिव पयोधर-पार्श्ववर्ति।। २८।।

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुःकनकावदातम्।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्त्ररश्मेः।। २९।।
कुन्दावदात-चलचामर-चारु-शोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम्।
उद्यच्छशांक -शुचिनिर्झर - वारिधार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्।। ३०।।
छत्रत्रयं तव विभाति शशांककान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम्।
मुक्ताफल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्।। ३१।।
गम्भीतार - रव - पूरित-दिग्विभाग-
स्त्रैलोक्यलोक- शुभसंगम-भूतिदक्षः।
सद्धर्मराजजय-घोषण-घोतकः सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी।। ३२।।
मन्दार-सुन्दर-नमेरू - सुपारिजात-
सन्तानकादि-कुसुमोत्कर-वृष्टिरुद्धा।
गन्धोबिन्दुशुभ- मन्दमरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा।। ३३।।
शुम्भत्प्रभा-वलय-भूरि-विभा विभोस्ते,
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्दिवाकर - निरन्तर-भूरि-संख्या
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम्।। ३४।।
स्वर्गापवर्ग-निरन्तर-भूरि-संख्या
सद्धर्म-तत्त्व-कथनैक - पटुस्त्रिलोक्याः।

दिव्यध्वनि-र्भवति ते विशदार्थसर्व-
भाषा-स्वभाव - परिणाम - गुणैः प्रयोज्यः ।। ३५ ।।
उन्निद्रहेमनवपंकज - पुञ्जकान्ति,
पर्युल्लसन्नखमयूख - शिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्रधतः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति।। ३६ ।।
इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र।
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक कुतो ग्रहगणस्य विकासिनोऽपि।। ३७ ।।
श्च्योतन्मदाविल - विलोल - कपोलमूल -
मत्तभ्रमद्भ्रमर - नाद - विवृद्ध-कोपम्।
ऐरावताभ - मिभ - मुद्धत - मापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्।। ३८ ।।
भिन्नेभकुम्भ - गलदुज्जवल - शोणिताक्त-
मुक्ताफल - प्रकर - भूषित - भूमिभागः।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते।। ३९ ।।
कल्पान्तकाल - पवनोद्धत - वह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुस्फुलिंगम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं,
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम्।। ४० ।।
रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्।
आक्रामति क्रययुगेण निरस्तशंक-
स्त्वन्नाम-नागदमनी हृदि यस्य पुंसः।। ४१ ।।

वल्गत्तुरंग - गजगर्जित - भीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्।
उद्यद्दिवाकर - मयूख - शिखा - पविद्धं,
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति।। ४२।।
कुन्ताग्रभिन्न - गजशोणित - वारिवाह-
वेगावतार - तरणातुर - योधभीमे।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा-
स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभन्ते।। ४३।।
अम्भोनिधौ क्षुभितभीषण-नक्र-चक्र-
पाठीनपीठ - भयदोल्वण - वाडवाग्नौ।
रंगत्तरंग - शिखरस्थित-यानपात्रा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति।। ४४।।
उद्भूतभीषण-जलोदर-भारभुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः।
त्वपादपंकज रजोऽमृत - दिग्धदेहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः।। ४५।।
आपादकण्ठ - मुरुश्रृङ्खल - वेष्टितांगा,
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घाः।
त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति।। ४६।।
मत्तद्विपेन्द्र - मृगराज-दवानलाहि-
संग्राम - वारिधि - महोदर - बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते।। ४७।।
स्तोत्रस्त्रजं तव जिनेन्द्र। गुणै-र्निबद्धां,
भक्त्या मया विविधवर्ण- विचित्रपुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्त्रं,
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः।। ४८।।

तत्त्वार्थसूत्र

आचार्य गृद्धपिच्छ

मोक्ष-मार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्म-भूभृताम्।
ज्ञातारं विश्व-तत्त्वानां वन्दे तद्गुण-लब्धये।।

स्रग्धरा

त्रैकाल्यं द्रव्य-षट्कं नवपदसहितं जीव-षट्काय-लेश्याः,
पञ्चान्ये चास्तिकाया व्रतसमितिगति-ज्ञानचारित्र भेदाः।
इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवनमहितैः प्रोक्तमर्हद्-भिरीशैः,
प्रत्येति श्रद्धधाति स्पृशति च मतिमान् यः स वै शुद्धदृष्टिः।। १।।
सिद्धे जयप्प-सिद्धे चउव्विहाराहणाफलं पत्ते।
वंदित्ता अरहंते वोच्छं आराहणा कमसो ।। २।।
उज्जोवणमुज्जवणं णिव्वहणं साहणं च णिच्छरणं।
दंसण-णाण-चरित्तं तवाण-माराहणा भणिया ।। ३।।

प्रथमोऽध्यायः

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः।। १।। तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्।। २।। तन्निसर्गादधिगमाद् वा।। ३।। जीवाजीवास्रवबन्ध-संवर-निर्जरा-मोक्षास्तत्त्वम्।। ४।। नाम-स्थापना-द्रव्य-भावतस्तन्न्यासः।। ५।। प्रमाण-नयैरधिगमः ।। ६।। निर्देशस्वामित्व-साधनाधिकरण-स्थिति-विधानतः।।७।। सत्संख्या-क्षेत्र-स्पर्शन-कालान्तर-भावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। मति-श्रुतावधि-मनःपर्यय केवलानि ज्ञानम्।। ९।। तत्प्रमाणे।। १०।। आद्ये परोक्षम्।। ११।। प्रत्यक्षमन्यत्।। १२।। मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम्।। १३।। तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम्।। १४।। अवग्रहेहावायधारणाः।। १५।। बहु-बहुविध-क्षिप्रानिः सृतानुक्त-ध्रुवाणां सेतराणाम्।। १६।। अर्थस्य।। १७।। व्यञ्जनस्यावग्रहः।। १८।। न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम्।। १९।। श्रुतं मतिपूर्वं द्वयनेकद्वादशभेदम्।। २०।। भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम्।। २१।। क्षयोपशमनिमित्तः षड् विकल्पः शेषाणाम्।।

२२।। ऋजुविपुलमती मनः पर्ययः।। २३।। विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः।। २४।। विशुद्धि-क्षेत्र-स्वामि-विषयेभ्योऽवधिमनः पर्यययोः।। २५।। मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु।। २६।। रूपिष्ववधेः।। २७।। तदनन्तभागे मनः पर्ययस्य।। २८।। सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य।। २९।। एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्ना चतुर्भ्यः।। ३०।। मति-श्रुतावधयो विपर्ययश्च।। ३१।। सदसतोरविशेषाद् - यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत्।। ३२।। नैगम-संग्रह-व्यवहारर्जुसूत्र-शब्द-समभिरुढैवंभूता नयाः।। ३३।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे प्रथमोऽध्यायः।। १।।

द्वितीयोऽध्यायः

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व-मौदयिक- पारिणामिकौ च।। १।। द्वि-नवाष्टादशैकविंशति-त्रिभेदा यथाक्रमम्।। २।। सम्यक्त्व-चारित्रे।। ३।। ज्ञान-दर्शन-दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणि च।। ४।। ज्ञानाज्ञानदर्शन-लब्धयश्चतुस्त्रि-त्रि-पंचभेदाः सम्यक्त्व-चारित्र- संयमासंयमाश्च।। ५।। गति-कषाय-लिङ्ग-मिथ्यादर्शनाज्ञाना-संयतासिद्ध- लेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड् भेदाः।। ६।। जीवभव्याभव्यत्वानि च।। ७।। उपयोगो लक्षणम्।। ८।। स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः।। ९।। संसारिणो मुक्ताश्च।। १०।। समनस्कामनस्काः।। ११।। संसारिणस्त्रस-स्थावराः।। १२।। पृथिव्यपतेजोवायु- वनस्पतयः स्थावराः।। १३।। द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः।। १४।। पञ्चेन्द्रियाणि।। १५।। द्विविधानि।। १६।। निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम्।। १७।। लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम्।। १८।। स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षुः - श्रोत्राणि।। १९।। स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण-शब्दास्तदर्थाः।। २०।। श्रुत-मनिन्द्रियस्य।। २१।। वनस्पत्यन्तानामेकम्।। २२।। कृमि-पिपीलिका-भ्रमर-मनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि।। २३।। संज्ञिनः समनस्काः।। २४।। विग्रहगतौ कर्मयोगः।। २५।। अनुश्रेणि गतिः।। २६।। अविग्रहा जीवस्य।। २७।। विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः।। २८।। एकसमयाविग्रहा।। २९।। एकं द्वौ त्रीन् वानाहारकः।। ३०।। सम्मूर्च्छन-गर्भोपपादा जन्म।। ३१।। सचित्त-शीत-संवृत्ताः सेतरा मिश्राश्चैकश-स्तद्योनयः।। ३२।। जरायुजाण्डजपोतानां गर्भः।। ३३।।

देवनारकाणामुपपादः ।। ३४।। शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ।। ३५।। औदारिक-वैक्रियिकाहारक-तैजस-कार्मणानि शरीराणि ।। ३६ ।। परं परं सूक्ष्मम् ।। ३७ ।। प्रदेशतोऽसंख्येय-गुणं प्राक् तैजसात् ।। ३८ ।। अनन्तगुणे परे ।। ३९ ।। अप्रतीघाते ।। ४० ।। अनादिसम्बन्धे च ।। ४१ ।। सर्वस्य ।। ४२ ।। तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्ना चतुर्भ्यः ।। ४३ ।। तिरुपभोगमन्त्यम् ।। ४४ ।। गर्भ-सम्मूर्च्छनजमाद्यम् ।। ४५ ।। औपपादिकं वैक्रियिकम् ।। ४६ ।। लब्धिप्रत्ययं च ।। ४७ ।। तैजसमपि ।। ४८ ।। शुभं विशुद्ध-मव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ।। ४९ ।। नारकसम्मूर्च्छिनो नपुंसकानि ।। ५० ।। न देवाः ।। ५१ ।। शेषास्त्रिवेदाः ।। ५२ ।। औपपादिकचरमोत्तमदेहासंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ।। ५३ ।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे द्वितीयोऽध्यायः ।। २ ।।

तृतीयोऽध्यायः

रत्न-शर्करा-बालुका-पङ्क-धूम-तमो-महातमः प्रभा भूमयो घनाम्बुवाताकाश-प्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः ।। १ ।। तासु त्रिंशत्पंचविंशति-पंचदश-दश-त्रि-पंचोनैक-नरक-शतसहस्राणि पञ्च चैव यथाक्रमम् ।। २ ।। नारका नित्याशुभतर-लेश्या-परिणाम-देह-वेदना-विक्रियाः ।। ३ ।। परस्परोदीरितदुः खाः ।। ४ ।। संक्लिष्टासुरोदीरित-दुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ।। ५ ।। तेष्वेक-त्रि-सप्त-दश-सप्तदश-द्वाविंशति-त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः ।। ६ ।। जम्बूद्वीप-लवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ।। ७ ।। द्वि-र्द्वि-र्विष्कम्भाः पूर्व-पूर्व परिक्षेपिणो वलयाकृतयः ।। ८ ।। तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजन-शतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ।। ९ ।। भरत- हैमवत-हरि-विदेह-रम्यक-हैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ।। १० ।। तद्-विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्-महाहिमवन्-निषध-नील-रुक्मि-शिखरिणो वर्षधरपर्वताः ।। ११ ।। हेमार्जुन-तपनीय-वैडूर्य-रजत-हेममयाः ।। १२ ।। मणि-विचित्र-पार्श्वा उपरि मूले च तुल्य-विस्ताराः ।। १३ ।। पद्म-महापद्म-तिगिंछ-केशरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीका ह्रदास्तेषामुपरि ।। १४ ।। प्रथमो योजन-सहस्रायामस्तदर्द्ध-विष्कम्भो ह्रदः ।। १५ ।। दशयोजनावगाहः ।। १६ ।। तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ।। १७ ।। तद्-द्विगुण-द्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ।। १८ ।। तन्निवासिन्यो

देव्यः श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिकपरिषत्काः।। १९।। गङ्गासिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता- सीतासीतोदा-नारीनरकान्ता-सुवर्णरूप्यकूला-रक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः।।२०।।द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः।। २१।। शेषास्त्वपरगाः।। २२।। चतुर्दशनदी-सहस्र-परिवृता गङ्गा-सिन्ध्वादयो नद्यः।।२३।।भरतः षड्विंशति-पञ्चयोजन-शत-विस्तारः षट्- चैकोनविंशतिभागा योजनस्य।।२४।।तद्द्विगुण-द्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहान्ताः।।२५।।उत्तरा दक्षिण-तुल्याः।। २६।। भरतैरावतयोर्वृद्धि-ह्रासौ षट्-समयाभ्या-मुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम्।। २७।। ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः।। २८।। एक-द्वि-त्रि-पल्योपम-स्थितयो हैमवतक-हारिवर्षकदैवकुरवकाः।।२९।।तथोत्तराः।। ३०।। विदेहेषु संख्येयकालाः।। ३१।। भरतस्य विष्कम्भो जम्बू द्वीपस्य नवति शतभागः।। ३२।। द्विधार्तकी खण्डे।। ३३।। पुष्करार्द्धे च।। ३४।। प्राङ् मानुषोत्तरान्मनुष्याः।। ३५।। आर्या म्लेच्छाश्च।। ३६।। भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः।।३७।।नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते।। ३८।। तिर्यग्योनिजानां च।। ३९।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे तृतीयोऽध्यायः।। ३।।

चतुर्थोऽध्यायः

देवाश्चतुर्णिकायाः।। १।। आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्याः।। २।। दशाष्ट-पञ्च-द्वादश-विकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः।। ३।। इन्द्र-सामानिक-त्रायस्त्रिंश-पारिषदात्मरक्ष-लोकपालानीक-प्रकीर्णकाभियोग्य- किल्विषिकाश्चैकशः।।४।। त्रायस्त्रिंश-लोकपालवर्ज्या-व्यन्तर-ज्योतिष्काः।। ५।। पूर्वयोर्द्वीन्द्राः।। ६।। कायप्रवीचारा आ ऐशानात्।। ७।। शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवीचाराः।। ८।। परेऽप्रवीचाराः।।९।।भवनवासिनोऽसुरनाग- विद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक् कुमाराः।। १०।। व्यन्तराः किन्नर-किंपुरुष-महोरग-गन्धर्व-यक्ष-राक्षस-भूत-पिशाचाः।।११।।ज्योतिष्काः सूर्या-चन्द्रमसौ ग्रह-नक्षत्र-प्रकीर्णक-तारकाश्च।। १२।। मेरु- प्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके।।१३।।तत्कृतः कालविभागः।।१४।। बहिरवस्थिताः।।१५।।वैमानिकाः।।१६।।कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च।।१७।।

उपर्युपरि।। १८।। सौधर्मैशान-सानत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर-लान्तव-कापिष्ट-शुक्र-महाशुक्र-शतार-सहस्रारेष्वानत-प्राणतयो-रारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्त-जयन्ता-पराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च।। १९।। स्थिति-प्रभाव-सुख-द्युति-लेश्या-विशुद्धी-न्द्रियावधि-विषयतोऽधिकाः।। २०।। गति-शरीर-परिग्रहाऽभिमानतो हीनाः।। २१।। पीत-पद्म-शुक्ल-लेश्या द्वि-त्रि-शेषेषु।। २२।। प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः।। २३।। ब्रह्मलोकालया लौकान्तिकाः।। २४।। सारस्वतादित्यवह्न्यरुण-गर्दतोय-तुषिताव्याबाधारिष्टाश्च।। २५।। विजयादिषु द्विचरमाः।। २६।। औपपादिक-मनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः।। २७।। स्थितिरसुर-नाग-सुपर्ण-द्वीप-शेषाणां सागरोपम-त्रिपल्योपमार्द्ध-हीन-मिताः।। २८।। सौधर्मैशानयोः सागरोपमेअधिके।। २९।। सानत्कुमार-माहेन्द्रयोः सप्त।। ३०।। त्रि-सप्त-नवैकादश-त्रयोदश-पञ्चदशभि-रधिकानि तु।। ३१।। आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ।। ३२।। अपरा पल्योपममधिकम्।। ३३।। परतः परतः पूर्वा पूर्वानन्तरा।। ३४।। नारकाणां च द्वितीयादिषु।। ३५।। दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम्।। ३६।। भवनेषु च।। ३७।। व्यन्तराणां च।।। ३८।। परा पल्योपममधिकम्।। ३९।। ज्योतिष्काणां च।। ४०।। तदष्टभागोऽपरा।। ४१।। लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम्।। ४२।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे चतुर्थोऽध्यायः।। ४।।

पंचमोऽध्यायः

अजीवकाया धर्माधर्माकाश-पुद्गलाः।। १।। द्रव्याणि।। २।। जीवाश्च।। ३।। नित्याऽवस्थितान्यरूपाणि।। ४।। रूपिणः पुद्गलाः।। ५।। आ आकाशादेकद्रव्याणि।। ६।। निष्क्रियाणि च।। ७।। असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानाम्।। ८।। आकाशस्यानन्ताः।। ९।। संख्येया-संख्येयाश्च पुद्गलानाम्।। १०।। नाणोः।। ११।। लोकाकाशेऽवगाहः।। १२।। धर्माऽधर्मयोः कृत्स्ने।। १३।। एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम्।। १४।। असंख्येयभागादिषु जीवानाम्।। १५।। प्रदेश-संहार-विसर्पाभ्यां प्रदीपवत्।। १६।। गति-स्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकारः।। १७।। आकाशस्यावगाहः।। १८।। शरीर-वाङ्-मनः

प्राणापाना: पुद्गलानाम्।। १९।। सुख-दु:ख जीवित-मरणोपग्रहाश्च।। २०।। परस्परोपग्रहो जीवानाम्।। २१।।वर्तना-परिणाम-क्रिया: परत्वाऽपरत्वे च कालस्य।। २२।। स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णवन्त: पुद्गला:।। २३।। शब्द-बन्ध-सौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायातऽपोद्योत-वन्तश्च।। २४।। अणव: स्कन्धाश्च।। २५।। भेद-संघातेभ्य उत्पद्यन्ते।। २६।। भेदादणु:।। २७।। भेदसंघाताभ्यां चाक्षुष:।।२८।।सद् द्रव्यलक्षणम्।। २९।।उत्पाद-व्यय-ध्रौव्ययुक्तं सत्।। ३०।।तद्भावाऽव्ययं नित्यम्।। ३१।।अर्पिताऽनर्पितसिद्धे:।।३२।।स्निग्ध-रूक्षत्वाद् बन्ध:।। ३३।। न जघन्यगुणनाम्।। ३४।। गुण-साम्ये सदृशानाम्।। ३५।। द्वयधिकादि-गुणानां तु।। ३६।। बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च।। ३७।। गुण-पर्ययवद् द्रव्यम्।। ३८।। कालश्च।। ३९।। सोऽनन्तसमय:।। ४०।। द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणा:।। ४१।। तद्भाव: परिणाम:।। ४२।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे पञ्चमोऽध्याय:।।

षष्ठोऽध्याय:

कायवाङ्मन: कर्म योग:।। १।।स आस्रव:।। २।।शुभ: पुण्यस्याशुभ: पापस्य।। ३।।सकषायाऽकषाययो: साम्परायिकेर्या-पथयो:।।४।।इन्द्रिय-कषायाव्रत-क्रिया: पञ्च-चतु: पञ्च-पञ्चविंशतिसंख्या: पूर्वस्य भेदा:।।५।।तीव्र-मन्द-ज्ञाताज्ञात-भावाऽधिकरण-वीर्य-विशेषेभ्यस्तद्-विशेष:।।६।।अधिकरणं जीवाजीवा:।।७।। आद्यं संरम्भ-समारम्भारम्भ-योग-कृत-कारितानुमत-कषायविशेषैस्त्रिश्चतुश्चैकश:।। ८।।निर्वर्तना-निक्षेप- संयोग-निसर्गा द्विचतुर्द्वि-त्रि-भेदा: परम्।।९।।तत्प्रदोष-निन्हव - मात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयो:।। १०।। दु:खशोकतापाक्रन्द्रनवधपरिदेवनान्यात्मपरोभय स्थान्यसद्वेद्यस्य।। ११।। भूतव्रत्यनुकम्पादानसरागसंयमादियोग: क्षन्ति: शौचमिति सद्वेद्यस्य।।१२।।केवलि-श्रुत-संघ-धर्म-देवावर्णवादो दर्शनमोहस्य।। १३।। कषायोदयात्तीव्र-परिणामश्चारित्रमोहस्य।। १४।। बव्हारम्भ-परिग्रहत्वं नारकस्याऽयुष:।। १५।। माया तैर्यग्योनस्य।। १६।। अल्पारम्भ-परिग्रहत्वं मानुषस्य।। १७।। स्वभाव-मार्दवं च।। १८।। नि:शीलव्रतत्वं च सर्वेषाम्।। १९।। सरागसंयम-

संयमासंयमाकामनिर्जरा-बालतपांसि दैवस्य।। २०।। सम्यक्त्वं च।। २१।। योगवक्रता विसंवादनं चाऽशुभस्य नाम्नः।। २२।। तद्विपरीतं शुभस्य।। २३।। दर्शन-विशुद्धिर्विनयसंपन्नता शील- व्रतेष्वनतीचारोऽभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोग-संवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधुसमाधि- वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्य-बहुश्रुत-प्रवचन-भक्ति-रावश्यका- परिहाणिर्मार्गप्रभावना-प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकरत्वस्य।। २४।। परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्-भावने च नीचैर्गोत्रस्य।। २५।। तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चौत्तरस्य।। २६।। विघ्नकरणमन्तरायस्य।। २७।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे षष्ठोऽध्यायः।। ६।।

सप्तमोऽध्यायः

हिंसाऽनृत-स्तेयाब्रह्म-परिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम्।। १।। देश-सर्वतोऽणु-महती।। २।। तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च।। ३।। वाङ्मनो- गुप्तीर्यादान-निक्षेपण-समित्यालोकितपानभोजनानि पञ्च।। ४।। क्रोध-लोभ- भीरुत्व-हास्य-प्रत्याख्यानान्यनुवीचिभाषणं च पञ्च।। ५।। शून्यागार-विमोचितावास-परोपरोधाकरण-भैक्ष्यशुद्धि-सधर्माविसंवादाः पञ्च।। ६।। स्त्रीरागकथाश्रवण-तन्मनोहरांग-निरीक्षण-पूर्वरतानुस्मरण-वृष्येष्ट-रस-स्वशरीरसंस्कार-त्यागाः पञ्च।।७।। मनोज्ञाऽमनोज्ञेन्द्रिय- विषय-राग-द्वेष-वर्जनानि पञ्च।।८।।हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनम्।। ९।।दुःखमेव वा।। १०।। मैत्री-प्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थानि च सत्त्व-गुणाधिक-क्लिश्य- मानाविनयेषु।। ११।। जगत्काय-स्वभावौ वा संवेग-वैराग्यार्थम्।। १२।। प्रमत्तयोगात्प्राण-व्यपरोपणं हिंसा।। १३।। असदभिघानमनृतम।। १४।। अदत्तादानं स्तेयम्।। १५।। मैथुनमब्रह्म।। १६।। मूर्छा परिग्रहः।। १७।। निःशल्यो व्रती।। १८।। अगार्यनगारश्च।। १९।। अणुव्रतोऽगारी।। २०।। दिग्देशानर्थदण्ड-विरति-सामायिक-प्रोषधोपवासोपभोग-परिभोग-परिमाणाऽतिथि- संविभागव्रत-सम्पन्नश्च।। २१।। मारणान्तिकीं सल्लेखां जोषिता।। २२।। शंका-कांक्षा-विचिकित्सान्यदृष्टि-प्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टेतीचाराः।। २३।। व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम्।। २४।। बन्ध-वध-च्छेदातिभारारोपणान्नपाननिरोधाः।। २५।। मिथ्योपदेश-रहोभ्याख्यान-कूटलेखक्रियान्यासापहार-साकारमन्त्र-भेदाः।। २६।।

स्तेनप्रयोग-तदाहृतादान-विरुद्धराज्यातिक्रम-हीनाधिक-मानोन्मान-प्रतिरूपकव्यवहाराः।। २७।। परविवाह-करणेत्वरिका-परिगृहीताऽपरिगृहीता-गमनाऽनंगक्रीडा-काम-तीव्राभिनिवेशाः।। २८।। क्षेत्रवास्तु-हिरण्य सुवर्ण-धनधान्य-दासीदास कुप्य प्रमाणातिक्रमाः।। २९।। ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्वयतिक्रम-क्षेत्रवृद्धि-स्मृत्यन्तराधानानि।। ३०।। आनयन- प्रेष्यप्रयोग-शब्द-रूपानुपात-पुद्गलक्षेपाः।। ३१।। कन्दर्प-कौत्कुच्य-मौखर्या-सभीक्ष्याधिकरणोपभोग-परिभोगाऽ-नर्थक्यानि।। ३२।। योग-दुःष्प्रणिधानाऽनादर-स्मृत्यनु-पस्थानानि।। ३३।। अप्रत्यवेक्षिता-प्रमार्जितोत्सर्गादान- संस्तरोपक्रमणा-नादर-स्मृत्यनुपस्थानानि।।३४।।सचित्तसम्बन्ध-सम्मिश्राभिषव-दुःष्पक्वाहाराः।।३५।। सचित्त-निक्षेपापिधान-परव्यपदेश-मात्सर्य-कालातिक्रमाः ।। ३६।। जीवित-मरणाशंसा-मित्रानुराग-सुखानुबन्ध-निदानानि।। ३७।। अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम्।। ३८।। विधि-द्रव्य-दातृ-पात्र-विशेषात्तद्विशेषः।। ३९।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे सप्तमोऽध्यायः।। ७।।

अष्टमोऽध्यायः

मिथ्यादर्शनाविरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्धहेतवः।। १।। सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलानादत्ते स बन्धः।। २।। प्रकृति-स्थित्यनुभव-प्रदेशास्तद्विधयः।। ३।। आद्यो ज्ञान-दर्शनावरण-वेदनीय-मोहनीयायुर्नाम-गोत्रान्तरायाः।। ४।। पञ्च-नव-द्व्यष्टाविंशति-चतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपञ्चभेदा यथाक्रमम् ।। ५।। मति-श्रुतावधि-मनः पर्यय-केवलानाम्।। ६।। चक्षुरचक्षु-रवधि-केवलानां निद्रा-निद्रानिद्रा-प्रचला-प्रचलाप्रचला-स्त्यान- गुद्धयश्च।।७।। सदसद्वेद्ये।।८।। दर्शन-चारित्र-मोहनीयाकषाय-कषाय-वेदनीयाख्यास्त्रि-द्वि-नव-षोडशभेदाः सम्यक्त्व-मिथ्यात्व-तदुभयान्यकषाय-कषायौ हास्य-रत्यरति-शोक-भय- जुगुप्सा-स्त्री-पुन्नपुंसकवेदा अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान-संज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोध-मान-माया-लोभाः।। ९।। नारक-तैर्यग्योन-मानुष-दैवानि।।१०।।गति-जाति-शरीरांगोपांग-निर्माण-बन्धन-संघात-संस्थान-संहनन-स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णानुपूर्व्यागुरुलघूपघात-परघाता तपो द्योतोच्छ्वास-

विहायोगतयः प्रत्येक-शरीर-त्रस-सुभग-सुस्वर-शुभ-सूक्ष्म-पर्याप्ति-स्थिरादेय-यशः कीर्ति-सेतराणि तीर्थकरत्वं च।। ११।। उच्चैर्नीचैश्च।। १२।। दान-लाभ भोगोपभोग-वीर्याणाम्।। १३।। आदित-स्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपम-कोटी-कोट्यः परा स्थितिः।। १४।। सप्ततिर्मोहनीयस्य।। १५।। विंशतिर्नाम-गोत्रयोः।। १६।। त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः।। १७।। अपरा द्वादशमुहूर्ता वेदनीयस्य।। १८।। नामगोत्रयोरष्टौ।। १९।। शेषाणामन्तर्मुहूर्ताः।। २०।। विपाकोऽनुभवः।। २१।। स यथानाम।। २२।। ततश्च निर्जरा।। २३।। नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात् सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाह- स्थिताः सर्वात्म-प्रदेशेष्वनन्तानन्त- प्रदेशाः।। २४।। सद्वेद्य - शुभायुर्नाम-गोत्राणि पुण्यम्।। २५।। अतोऽन्यत्पापम्।। २६।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे अष्टमोऽध्यायः।। ८।।

नवमोऽध्यायः

आस्रवनिरोधः संवरः।। १।। स गुप्ति-समिति-धर्मानुप्रेक्षा-परीषह जय-चारित्रैः।। २।। तपसा निर्जरा च।। ३।। सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः।। ४।। ईर्या-भाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः।। ५।। उत्तम-क्षमा-मार्दवार्जव-शौच-सत्य-संयम-तपस्त्यागाकिञ्चन्य-ब्रह्मचर्याणि धर्मः।। ६।। अनित्याशरण-संसारैकत्वा-न्यत्वाशुच्या स्रव-संवर-निर्जरा-लोक-बोधिदुर्लभ-धर्मस्वाख्याततत्त्वानुचिन्तन-मनुप्रेक्षाः।। ७।। मार्गाच्यवन-निर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः।। ८।। क्षुत्पिपासा-शीतोष्ण- दंशमशक-नाग्न्यारति-स्त्री-चर्या-निषद्या-शय्याक्रोश-वध-याचनालाभ-रोग-तृणस्पर्श-मल-सत्कार-पुरस्कार-प्रज्ञाज्ञानादर्शनानि।। ९।। सूक्ष्म-साम्पराय-छद्मस्थ-वीतरागयोश्चतुर्दश।। १०।। एकादश जिने।। ११।। बादर-साम्पराये सर्वे।। १२।। ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने।। १३।। दर्शन- मोहान्तराययोरदर्शनालाभौ।। १४।। चारित्र-मोहे नाग्न्यारति-स्त्री-निषद्या-क्रोश-याचना-सत्कार-पुरस्काराः।। १५।। वेदनीये शेषाः।। १६।। एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकोनविंशतेः।। १७।। सामायिकच्छेदोपस्थापना-परिहारविशुद्धि-सूक्ष्मसाम्पराय-यथाख्यातमिति चारित्रम्।। १८।। अनशनावमौदर्य-वृत्तिपरिसंख्यान-रसपरित्याग-विविक्तशय्यासन-कायक्लेशा बाह्यं तपः।। १९।। प्रायश्चित्त-विनय-वैयावृत्त्य-स्वाध्याय-व्युत्सर्ग- ध्यानान्युत्तरम्।।

२०।। नव चतुर्दश पञ्चद्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ।। २१।। आलोचन-प्रतिक्रमण-तदुभय-विवेक-व्युत्सर्ग-तपश्छेद-परिहारोपस्थापना: ।।२२।।ज्ञान-दर्शन-चारित्रोपचारा: ।। २३।।आचार्योपाध्याय-तपस्वि-शैक्ष्य-ग्लान-गण-कुल-संघ-साधु-मनोज्ञानाम्।।२४।। वाचना-पृच्छनानुप्रेक्षाम्नाय-धर्मोपदेशा:। २५।। बाह्याभ्यन्तरोपध्यो:।। २६।। उत्तम-संहननस्यैकाग्र-चिन्तानिरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्तात्।। २७।। आर्तरौद्रधर्म्य-शुक्लानि।। २८।। परे मोक्षहेतू।।२९।।आर्तममनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहार: ।।३०।। विपरीतं मनोज्ञस्य।। ३१।। वेदनायाश्च।। ३२।। निदानं च।। ३३।। तदविरत-देशविरत-प्रमत्तसंयतानाम्।।३४।।हिंसानृत-स्तेय-विषय-संरक्षणेभ्यो रौद्रमविरत-देशविरतयो: ।।३५।। आज्ञापाय-विपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यम्।। ३६।। शुक्ले चाद्ये पूर्वविद:।। ३७।। परे केवलिन: ।।३८।।पृथक्त्वैकत्व-वितर्क-सूक्ष्मक्रिया-प्रतिपाति- व्युपरत-क्रिया-निवर्तीनि।। ३९।। त्र्येकयोग-काययोगायोगानाम्।। ४०।। एकाश्रये सवितर्क-वीचारे पूर्वे।। ४१।। अवीचारं द्वितीयम्।।४२।।वितर्क: श्रुतम्।।४३।।वीचारोऽर्थ-व्यञ्जन-योगसंक्रान्ति: ।। ४४।। सम्यग्दृष्टि-श्रावक-विरतानन्त-वियोजक-दर्शनमोह-क्षपकोप-शमकोपशान्त-मोहक्षपक-क्षीणमोह-जिना: क्रमशोऽसंख्येय-गुणनिर्जरा: ।।४५।।पुलाक-वकुश-कुशील-निर्ग्रन्थ-स्नातक्रा: निर्ग्रन्था: ।।४३।।संयम-श्रुत-प्रतिसेवना-तीर्थ-लिंग-लेश्योपपाद-स्थान-विकल्पत: साध्या: ।।४७।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे नवमोऽध्याय: ।।

दशमोऽध्याय:

मोहक्षयाज्ज्ञान-दर्शनावरणान्तराय-क्षयाच्च केवलम्।।१।।बन्धहेत्वभाव-निर्जराभ्यां कृत्स्नकर्म-विप्रमोक्षो मोक्ष: ।।२।। औपशमिकादि- भव्यत्वानां च।।३।।अन्यत्र केवल-सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-सिद्धत्वेभ्य: ।। ४।। तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्या लोकान्तात्।।५।। पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्-बन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च।।६।। आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगतलेपाऽलांबुवदेरण्डवीजवदग्निशिखावच्च।। ७।। धर्मास्तिकायाभावात्।।८।।क्षेत्र-काल-गति-लिंग-तीर्थ-चारित्र-प्रत्येक-बुद्ध-बोधित- ज्ञानावगाहनान्तर-संख्याल्प-बहुत्वत: साध्या: ।।९।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रे दशमोऽध्याय: ।। १०।।

अक्षर-मात्र-पद-स्वरहीनं, व्यञ्जन-संधि-विवर्जित-रेफम्।
साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं, को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे।।१।।
दशाध्याये परिच्छिन्ने, तत्त्वार्थे पठिते सति।
फलं स्यादुपवासस्य, भाषितं मुनिपुंगवैः।।२।।
तत्त्वार्थ - सूत्रकर्तारं, गृद्ध - पिच्छोप - लक्षितम्।
वन्दे गणीन्द्रसंजात, मुमास्वामीमुनीश्वरम्।।३।।
पढम चउक्के पढमं, पंचमे जाणि पुग्गलं तच्च।
छहसत्तमे हि आसव, अट्ठमे बंध णायव्वो।।४।।
णवमे संवर णिज्जर, दहमे मोक्खं वियाणे हि।
इह सत्त तच्च भणियं, दह सुत्ते मुणिवरिं देहिं।।५।।
जं सक्कइ तं कीरइ, जं च ण सक्कइ तहेव सद्दहणं।
सद्दहमाणो जीवो, पावई अजरामरं ठाणं।।६।।
तवयरणं वयधरणं, संजमसरणं च जीवदयाकरणं।
अन्ते समाहिमरणं, चउगइ दुक्खं णिवारेई।।७।।
कोटिशतं द्वादशचैव कोट्यो, लक्षाण्यशीतिस् त्र्यधिकानि चैव।
पंचाशदष्टौ च सहस्रसंख्य,- मेतच्छ्रुतं पंचपदं नमामि।।८।।
अरहंत-भासियत्थं, गणहरदेवेहिं गंथियं सव्वं।
पणमामि भत्तिजुत्तो, सुदणाणमहोवयं सिरसा।।९।।
गुरवः पांतु नो नित्यं, ज्ञानदर्शननायकाः।
चारित्रार्णवगम्भीरा, मोक्षमार्गोपदेशकाः।।१०।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रम्।।

श्रीजिनहसस्त्रनाम-स्तोत्रम्

भगवज्जिनसेनाचार्य

जिनस्तोत्रम् (प्रस्तावना)

स्वयंभुवे नमस्तुभ्य, मुत्पाद्यात्मानमात्मनि।
स्वात्मनैव तथोद्भूत-वृत्तयेऽचिन्त्य-वृत्तये।।१।।
नमस्ते जगतां पत्ये लक्ष्मी-भर्त्रे नमोऽस्तु ते।
विदांवर नमस्तुभ्यं नमस्ते वदतांवर।।२।।
कर्म-शत्रुहणं देवमानमन्ति मनीषिणः।
त्वामानमत्सुरेण्मौलि-भा-मालाऽभ्यर्चित-क्रमम्।।३।।
ध्यान-दुघण-निर्भिन्न - घन-घाति-महातरुः।
अनन्त-भव-सन्तान-जयादासीदनन्तजित्।।४।।
त्रैलोक्य - निर्जयावाप्त - दुर्दर्पमतिदुर्जयम्।
मृत्युराजं विजित्यासीज्जिन ! मृत्युञ्जयो भवान्।।५।।
विधूताशेष-संसार बन्धनो भव्य-बान्धवः।
त्रि-पुराऽरिस्त्व मेवासि, जन्म-मृत्यु-जरान्तकृत।।६।।
त्रिकाल-विषयाऽशेष - तत्त्वभेदात्त्रिधोत्थितम्।
केवलाख्यं दधच्चक्षुस्त्रि-नेत्रोऽसि त्वमीशितः।।७।।
त्वामन्धकान्तकं प्राहुर्मोहान्धाऽसुर-मर्दनात्।
अर्द्धं ते नारयो यस्मादर्ध-नारीश्वरोऽस्यतः।।८।।
शिवः शिव-पदाध्यासाद् दुरिताऽरि-हरो हरः।
शङ्करः कृतशं लोके शंभवस्त्वं भवन्सुखे।।९।।
वृषभोऽसि जगज्ज्येष्ठः पुरुः पुरु-गुणोदयैः।
नाभेयो नाभिसंभूते, रिक्ष्वाकु-कुल-नन्दनः।।१०।।
त्वमेकः पुरुष-स्कन्धस्त्वं द्वे लोकस्य लोचने।
त्वं त्रिधा बुद्ध-सम्मार्गस्त्रिज्ञस्त्रि-ज्ञानधारकः।।११।।

चतुःशरण-माङ्गल्य, मूर्तिस्त्वं चतुरस्त्र-धीः।
पञ्च-ब्रह्ममयो देव पावनस्त्वं पुनीहि माम्।।१२।।
स्वर्गावतरणे तुभ्यं सद्योजातात्मने नमः।
जन्माभिषेक-वामाय वाम-देव ! नमोऽस्तु ते।।१३।।
सन्निष्क्रान्तावघोराय परं प्रशममीयुषे।
केवल-ज्ञान-संसिद्धा वीशानाय नमोऽस्तु ते।।१४।।
पुरस्तत्पुरुषत्वेन विमुक्ति-पद-भाजिने।
नमस्तत्पुरुषावस्थां भाविनीं तेऽद्य बिभ्रते।।१५।।
ज्ञानावरण - निर्ह्रासान्नमस्तेऽनन्त-चक्षुपे।
दर्शनावरणोच्छेदान्नमस्ते - विश्व दृश्वने।।१६।।
नमो दर्शन - मोहघ्ने क्षायिकामल - दृष्टये।
नमश्चात्रित - मोहघ्ने विरागाय महौजसे।।१७।।
नमस्तेऽनन्त-वीर्याय नमोऽनन्त-सुखात्मने।
नमस्तेऽनन्त-लोकाय लोकालोकावलोकिने।।१८।।
नमस्तेऽनन्त-दानाय नमस्तेऽनन्त-लब्धये।
नमस्तेऽनन्त-भोगाय नमोऽनन्तोपभोगिने।।१९।।
नमः परम-योगाय नमस्तुभ्यमयोनमे।
नमः परम-पूताय नमस्ते परमर्षये।।२०।।
नमः परम-विद्याय नमः पर-मतच्छिदे।
नमः परम-तत्त्वाय नमस्ते परमात्मने।।२१।।
नमः परम-रूपाय नमः परम-तेजसे।
नमः परम-मार्गाय नमस्ते परमेष्ठिने।।२२।।
परमर्द्धिजुषे धाम्ने परम-ज्योतिषे नमः।
नमः पारेतमः प्राप्त, धाम्ने परतरात्मने।।२३।।
नमः क्षीणकलङ्काय क्षीणबन्ध ! नमोऽतु ते।
नमस्ते क्षीण-मोहाय क्षीण-दोषाय ते नमः ।।२४।।

नमः सुगतये तुभ्यं शोभनां गतिमीयुषे।
नमस्तेऽतीन्द्रिय-ज्ञानसुखायानिऽन्द्रियात्मने।।२५।।
काय-बन्धन-निर्मोक्षादकायाय नमोऽस्तु ते।
नमस्तुभ्यमयोगाय योगिनामधियोगिने।।२६।।
अवेदाय नमस्तुभ्यमकषायाय ते नमः।
नमः परम-योगीन्द्र-वन्दिताङ्घ्रि-द्वयाय ते।।२७।।
नमः परम-विज्ञान! नमः परम-संयम।।
नमः परम-दृग्दृष्ट-परमार्थाय तायिने।।२८।।
नमस्तुभ्यमलेश्याय शुक्ललेश्यांशक-स्पृशे।
नमो भव्येतरावस्था-व्यतीताय विमोक्षिणे।।२९।।
संज्ञ्यसंज्ञि - द्वयावस्था-व्यतिरिक्तामलात्मने।
नमस्ते वीत-संज्ञाय नमः क्षायिक-दृष्टये।।३०।।
अनाहाराय तृप्ताय नमः परम-भाजुषे।
व्यतीताशेष-दोषाय भवाब्धेः पारमीयुषे।।३१।।
अजराय नमस्तुभ्यम् नमस्तेस्तादजन्मने।
अमृत्यवे नमस्तुभ्यम चलायाऽक्षरात्मने।।३२।।
अलमास्तां गुण-स्तोत्र मनन्तास्तावका गुणाः।
त्वां नाम-स्मृतिमात्रेण पर्युपासि सिषामहे।।३३।।
एवं स्तुत्वा जिनं देवं भक्त्या परमया सुधीः।
पठेदष्टोत्तरं नाम्नां सहस्त्रं पाप-शान्तये।।३४।।

इति जिनसहस्त्रनामस्तोत्रप्रस्तावना

प्रथमशतकम्

प्रसिद्धाष्ट-सहस्त्रेद्ध-लक्षणं त्वां गिरां पतिम्।
नाम्नामष्ट - सहस्त्रेण तोष्टुमोऽभीष्ट-सिद्धये।।१।।
श्रीमान् स्वयंभूर्वृषभः शंभवः शंभुरात्मभूः।
स्वयंप्रभः प्रभुर्भोक्ता विश्वभू रपुनर्भवः।।२।।

विश्वात्मा विश्वलोकेशो विश्वतश्चक्षुरक्षरः।
विश्वविद्विश्व विद्येशो विश्व-योनिरनश्वरः।।३।।
विश्वदृश्वा विभुर्धाता विश्वेशो विश्वलोचनः।
विश्वव्यापी विधिर्वेधाः शाश्वतो विश्वतोमुखः।।४।।
विश्वकर्मा जगज्ज्येष्ठो विश्वमूर्तिर्जिनेश्वरः।
विश्वदृग्विश्व-भूतेशो विश्व-ज्योतिरनीश्वरः।।५।।
जिनो जिष्णुरमेयात्मा विश्वरीशो जगत्पतिः।
अनन्तजिदचिन्त्यात्मा भव्य-बन्धुरऽबन्धनः।।६।।
युगादि-पुरुषो ब्रह्मा पञ्च-ब्रह्ममयः शिवः।
परः परतरः सूक्ष्मः परमेष्ठी सनातनः।।७।।
स्वयंज्योति रजोऽजन्मा ब्रह्म-योनिरयोनिजः।
मोहारिविजयी जेता धर्म-चक्री दयाध्वजः।।८।।
प्रशान्तारि रनन्तात्मा योगी योगीश्वरार्चितः।
ब्रह्मविद्ब्रह्म-तत्त्वज्ञो, ब्रह्मोद्याविद्यतीश्वरः।।९।।
सिद्धो बुद्धः प्रबुद्धात्मा सिद्धार्थः सिद्धशासनः।
सिद्धःसिद्धान्तविद् ध्येयः सिद्ध-साध्यो जगद्धितः।।१०।।
सहिष्णु रच्युतोऽनन्तः प्रभविष्णु र्भवोद्भवः।
प्रभूष्णुरजरोऽजर्यो भ्राजिष्णुर्धीश्वरोऽव्ययः।।११।।
विभावसुरसंभूष्णुः स्वयंभूष्णुः पुरातनः।
परमात्मा परं ज्योति स्त्रिजगत्परमेश्वरः।।१२।।

इति श्रीमदादिशतम्

द्वितीयशतकम्

दिव्यभाषा-पतिर्दिव्यः, पूतवाक्पूत-शासनः।
पूतात्मा परम-ज्योति, धर्माध्यक्षो दमीश्वरः।।१।।
श्रीपतिर्भगवानर्हन्नरजा, विरजाः शुचिः।
तीर्थकृत्केवलीशानः, पूजार्हः स्नातकोऽमलः।।२।।

अनन्त - दीप्तिर्ज्ञानात्मा, स्वयंबुद्धः प्रजापतिः।
मुक्तः शक्तो निराबाधो निष्कलो भुवनेश्वरः।।३।।
निरञ्जनो जगज्जयोतिर्निरुक्तोक्तिर्निरामयः।।
अचल-स्थितिरक्षोभ्यः कूटस्थः स्थाणुरक्षयः।।४।।
अग्रणीर्ग्रामणीर्नेता प्रणेता न्याय-शास्त्रकृत्।
शास्ता धर्मपति-र्धर्म्यो धर्मात्मा धर्म-तीर्थकृत्।।५।।
वृषध्वजो वृषाधीशो वृषकेतु-र्वृषायुधः।
वृषो वृषपति-र्भर्ता वृषभाङ्को वृषोद्भवः।।६।।
हिरण्य-नाभिर्भूतात्मा भूतभृद् भूत-भावनः।
प्रभवो विभवो भास्वान् भवो भावो भवान्तकः।।७।।
हिरण्य-गर्भः श्रीगर्भः, प्रभूत-विभवोऽभवः।
स्वयंप्रभुः प्रभुतात्मा, भूतनाथो जगत्प्रभुः।।८।।
सर्वादिः सर्वदिक्सार्वः, सर्वज्ञः सर्व-दर्शनः।
सर्वात्मा सर्वलोकेशः सर्ववित् सर्व-लोकजित्।।९।।
सुगतिः सुश्रुतः सुश्रुत सुवाक् सूरि-र्बहुश्रुतः।
विश्रुतो विश्वतः पादो विश्वशीर्षः शुचि-श्रवाः।।१०।।
सहस्त्रशीर्षः क्षेत्रज्ञः, सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
भूत-भव्य-भवद्भर्ता विश्व-विद्या-महेश्वरः।।११।।

इति दिव्यादिशतम्

तृतीयशतकम्

स्थविष्ठः स्थविरो ज्येष्ठः पृष्ठः प्रेष्ठो वरिष्ठधीः।
स्थेष्ठो गरिष्ठो बंहिष्ठः श्रेष्ठोऽणिष्ठो गरिष्ठगीः।।१।।
विश्वभृद् विश्वसृड्विश्वेड् विश्वभुग्विश्वनायकः।
विश्वासीर्विवरूपात्मा विश्वजिद्विजितान्तकः।।२।।

विभवो विभयो वीरो विशोको विजरो जरन्।
विरागो विरतोऽसङ्गो विविक्तो वीत-मत्सरः।।३।।
विनेय - जनता - बन्धुर्विलीनाशेष - कल्मषः।
वियोगो योगविद्विद्वान् विधाता सुविधिः सुधीः।।४।।
क्षान्तिभाक् पृथिवीमूर्तिः शान्तिभाक्सलिलात्मकः।
वायु-मूर्तिरसङ्गात्मा वह्निमूर्तिरधर्मधृक्।।५।।
सुयज्वा यजमानात्मा सुत्वा सुत्राम-पूजितः।
ऋत्विग्यज्ञ-पतिर्यज्ञो यज्ञाङ्गममृतं हविः।।६।।
व्योम-मूर्तिरमूर्तात्मा निर्लेपो निर्मलोऽचलः।
सोम-मूर्तिः सुसौम्यात्मा सूर्य-मूर्तिर्महाप्रभः।।७।।
मन्त्रविन्मन्त्रकृन्मन्त्री मन्त्र-मूर्तिरनन्तगः।
स्वतन्त्रस्तन्त्रकृत्स्वन्तः कृतान्तान्तः कृतान्तकृत्।।८।।
कृती कृतार्थः सत्कृत्यः कृतकृत्यः कृतक्रतुः।
नित्यो मृत्युञ्जयोऽमृत्यु रमृतात्माऽमृतोद्भवः।।९।।
ब्रह्मनिष्ठः परंब्रह्म ब्रह्मात्मा ब्रह्म-संभवः।
महाब्रह्म-पतिर्ब्रह्मेड् महाब्रह्म-पदेश्वरः।।१०।।
सुप्रसन्नः प्रसन्नात्मा ज्ञान-धर्म-दम-प्रभुः।
प्रशमात्मा प्रशान्तात्मा पुराण-पुरुषोत्तमः।।११।।

इति स्थविष्ठादिशतम्

चतुर्थ - शतकम्

महाऽशोकध्वजोऽशोकः कः स्त्रष्टा पद्म-विष्टरः।
पद्मेशः पद्म-संभूतिः पद्म-नाभिरनुत्तरः।।१।।
पद्मयोनिर्जगद्योनि रित्यः स्तुत्यः स्तुतीश्वरः।
स्तवनार्हो हृषीकेशो जित-जेयः कृत-क्रियः।।२।।

गणाधिपो गण-ज्येष्ठो गण्यः पुण्यो गणाग्रणीः।
गुणाकरो गुणाम्भोधिर्गुणज्ञो गुणनायकः।।३।।
गुणादरी गुणोच्छेदी निर्गुणः पुण्य-गीर्गुणः।
शरण्यः पुण्य-वाक्पूतो वरेण्यः पुण्य-नायकः।।४।।
अगण्यः पुण्य-धीर्गुण्यः पुण्यकृत्पुण्यशासनः।
धर्मारामो गुण-ग्रामः पुण्यापुण्य-निरोधकः।।५।।
पापापेतो विपापात्मा विपाप्मा वीतकल्मषः।
निर्द्वन्द्वो निर्मदः शान्तो निर्मोहो निरुपद्रवः।।६।।
निर्निमेषो निराहारो निष्क्रियो निरुपप्लवः।
निष्कलङ्को निरस्तैना निर्धूतागा निरास्त्रवः।।७।।
विशालो विपुल-ज्योति रतुलोऽचिन्त्यवैभवः।
सुसंवृतः सुगुप्तात्मा सुभृत्सुनय-तत्त्ववित्।।८।।
एक-विद्यो महाविद्यो मुनिः परिवृढः पतिः।
धीशो विद्यानिधिः साक्षी विनेता विहतान्तकः।।९।।
पिता पितामहः पाता पवित्रः पावनो गतिः।
त्राता भिषग्वरो वर्यो वरदः परमः पुमान्।।१०।।
कविः पुराण-पुरुषो वर्षीयान् वृषभः पुरुः।
प्रतिष्ठा-प्रसवो हेतु र्भुवनैक-पितामहः।।११।।

इति महाशोकध्वजादि शतम्

पञ्चमशतकम्

श्रीवृक्षलक्षणः श्लक्ष्णो लक्ष्ण्यः शुभलक्षणः।
निरक्षः पुण्डरीकाक्षः पुष्कलः पुष्करेक्षणः।।१।।
सिद्धिदः सिद्धसंकल्पः सिद्धात्मा सिद्धसाधनः।
बुद्ध-बोध्यो महाबोधिर्वर्धमानो महर्द्धिकः।।२।।
वेदाङ्गो वेदविद्वेद्यो जात-रूपो विदांवरः।
वेद-वेद्यः स्व-संवेद्यो विवेदो वदतांवरः।।३।।

अनादिनिधनोऽव्यक्तो व्यक्तवाग् व्यक्त-शासनः।
युगादिकृद युगाधारो युगादिर्जगदादिजः।।४।।
अतीन्द्रोऽतीन्द्रियो धीन्द्रो महेन्द्रोऽतीन्द्रियार्थदृक्।
अनिन्द्रियोऽहमिन्द्राच्यों महेन्द्र-महितो महान्।।५।।
उद्भवः कारणं कर्ता पारगो भव-तारकः।
अगाह्यो गहनं गुह्यं परार्घ्यः परमेश्वरः।।६।।
अनन्तर्द्धि-रमेयर्द्धि-रचिन्त्यर्द्धिः समग्रधीः।
प्राग्रयः प्राग्रहरोऽभ्यग्रः प्रत्यग्रोऽग्रयोऽग्रिमोऽग्रजः।।७।।
महातपा महातेजा महोदर्को महोदयः।
महायशा महाधामा महासत्त्वो महाधृतिः।।८।।
महाधैर्यो महावीर्यो महासंपन्महाबलः।
महाशक्तिर्महाज्योति र्महा - भूतिर्महाद्युतिः।।९।।
महामतिर्महानीति र्महा - क्षान्तिर्महादयः।
महाप्राज्ञो महाभागो महानन्दो महाकविः।।१०।।
महामहा महाकीति र्महाकान्तिर्महावपुः।
महादानो महाज्ञानो महायोगो महागुणः।।११।।
महामहपतिः प्राप्त-महाकल्याण-पञ्चकः।
महाप्रभुर्महाप्रातिहार्याधीशो महेश्वरः।।१२।।

इति श्रीवृक्षादिशतम्

षष्ठशतकम्

महामुनिर्महामौनी महाध्यानो महादमः।
महाक्षमो महाशीलो महायज्ञो महामखः।।१।।
महाव्रत-पतिर्मह्यो महाकान्ति-धरोऽधिपः।
महामैत्री-महामेयो महोपायो महोमयः।।२।।

महाकारुणिको मन्ता महामन्त्रो महायतिः।
महानादो महोघोषो महेज्यो महसांपतिः।।३।।
महाध्वर-धरो धुर्य्यो महौदार्यो महिष्ठ-वाक्।
महात्मा महसांधाम महर्षिर्महितोदयः।।४।।
महाक्लेशाङ्कुशः शूरो महाभूतपतिर्गुरुः।
महापराक्रमोऽनन्तो महाक्रोध-रिपुर्वशी।।५।।
महाभवाब्धि-संतारी महामोहाद्रि-सूदनः।
महागुणाकरः क्षान्तो महायोगीश्वरः शमी।।६।।
महाध्यान-पतिर्ध्याता-महाधर्मा-महाव्रतः।
महाकर्मारिहात्मज्ञो महोदेवो महेशिता।।७।।
सर्वक्लेशापहः साधुः सर्व-दोष-हरो हरः।
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा शमात्मा प्रशमाकरः।।८।।
सर्वयोगीश्वरोऽचिन्त्यः श्रुतात्मा विष्टर-श्रवाः।
दान्तात्मा दम-तीर्थेशो योगात्मा ज्ञान-सर्वगः।।९।।
प्रधानमात्मा प्रकृतिः परमः परमोदयः।
प्रक्षीण-बन्धः कामारिः क्षेमकृत् क्षेमशासनः।।१०।।
प्रणवः प्रणयः प्राणः प्राणदः प्रणतेश्वरः।
प्रमाणं प्रणिधिर्दक्षो दक्षिणोऽध्वर्युरध्वरः।।११।।
आनन्दो नन्दनो नन्दो वन्द्योऽनिन्द्योऽभिनन्दनः।
कामहा कामदः काम्यः काम-धेनुररिञ्जयः।।१२।।

इति महामुन्यादिशतम्

सप्तमशतकम्

असंस्कृत-सुसंस्कारः प्राकृतो वैकृतान्तकृत्।
अन्तकृत्कान्तगुः कान्तश्चिन्तामणिरभीष्टदः।।१।।
अजितो जितकामारि-रमितोऽमितशासनः।
जितक्रोधो जितामित्रो जितक्लेशो जितान्तकः।।२।।

जिनेन्द्रः परमानन्दो मुनीन्द्रो दुन्दुभि-स्वनः।
महेन्द्र-वन्द्यो योगीन्द्रो यतीन्द्रो नाभिनन्दनः।।३।।
नाभेयो नाभिजोऽजातः सुव्रतो मनुरुत्तमः।
अभेद्योऽनत्ययोऽनाश्वा नधिकोऽधिगुरुः सुगीः।।४।।
सुमेधा विक्रमी स्वामी दुराधर्षो निरुत्सुकः।
विशिष्टः शिष्टभुक् शिष्टः प्रत्ययः कामनोऽनघः।।५।।
क्षेमी क्षेमङ्करोऽक्षय्यः क्षेम-धर्मपतिः क्षमी।
अग्राह्यो ज्ञान-निग्राह्यो ध्यान-गम्यो निरुत्तरः।।६।।
सुकृती धातुरिज्यार्हः सुनयश्चतुराननः।
श्रीनिवासश्चतुर्वक्त्रश्चतुरास्यश्चतुर्मुखः।।७।।
सत्यात्मा सत्यविज्ञानः सत्य-वाक्सत्य-शासनः।
सत्याशीः सत्य-सन्धानः सत्यः सत्य-परायणः।।८।।
स्थेयान्स्थवीयान्नेदीयान्दवीयान्दूरदर्शनः।
अणोरणीयाननणुर्गुरुराद्यो गरीयसाम्।।९।।
सदायोगः सदाभोगः सदातृप्तः सदाशिवः।
सदागतिः सदासौख्यः सदाविद्यः सदोदयः।।१०।।
सुघोषः सुमुखः सौम्यः सुखदः सुहितः सुहृत्।
सुगुप्तो गुप्तिभृद् गोप्ता लोकाध्यक्षो दमेश्वरः।।११।।

इति असंस्कृतदिशतम्

अष्टमशतक्

वृहद्बृहस्पतिर्वाग्मी वास्पतिरुदार-धीः।
मनीषी धिषणो धीमान् छेमुषीशो गिरांपतिः।।१।।
नैक-रूपो नयोत्तुङ्गो नैकात्मा नैक-धर्मकृत्।
अविज्ञेयोऽप्रतर्क्यात्मा कृतज्ञः कृत-लक्षणः।।२।।
ज्ञानगर्भो दयागर्भो रत्नगर्भः प्रभास्वरः।
पद्मगर्भो जगद्गर्भो हेम-गर्भः सुदर्शनः।।३।।

लक्ष्मीवांस्त्रिदशाध्यक्षो दृढ़ीयानिन ईशिता।
मनोहरो मनोज्ञाङ्गो धीरो गम्भीर-शासनः।।४।।
धर्म-यूपो दया-यागो धर्म-नेमिर्मुनीश्वरः।
धर्म-चक्रायुधो देवः कर्महा धर्म-घोषणः।।५।।
अमोघवागमोघाज्ञो निर्मलोऽमोघ-शासनः।
सुरूपः सुभगस्त्यागी समयज्ञः समाहितः।।६।।
सुस्थितः स्वास्थ्यभाक्स्वस्थो नीरजस्को निरुद्धवः।
अलेपो निष्कलङ्कात्मा वीतरागो गत-स्पृहः।।७।।
वश्येन्द्रियो विमुक्तात्मा निःसपत्नो जितेन्द्रियः।
प्रशान्तोऽनन्त-धामर्षिर्मङ्गलं मलहानघः।।८।।
अनीदृगुपमाभूतो दृष्टिर्दैवमगोचरः।
अमूर्तो मूर्तमानेको नैको नानैक-तत्त्वदृक।।९।।
अध्यात्मगम्योऽगम्यात्मा योगविद्योगिवन्दितः।
सर्वत्रगः सदाभावी त्रिकाल-विषयार्थदृक्।।१०।।
शङ्करः शंवदो दान्तो दमी क्षान्ति-परायणः।
अधिपः परमानन्दः परात्मज्ञः परात्परः।।११।।
त्रिजगद् वल्लभोऽभ्यर्च्यस्त्रि जगन्मङ्गलोदयः।
त्रिजगत्पति पूज्यांघ्रिस्त्रिलोकाग्रशिखामणिः।।१२।।

इति बृहदादिशतम्

नवमशतकम्

त्रिकालदर्शी लोकेशो लोक-धाता दृढ़-व्रतः।
सर्वलोकातिगः पूज्यः सर्व-लोकैक-सारथिः।।१।।
पुराणः पुरुषः पूर्वः कृत-पूर्वाङ्ग -विस्तरः।
आदि-देवः पुराणाद्यः पुरु-देवोऽधिदेवता।।२।।
युगमुख्यो युगज्येष्ठो युगादि-स्थिति-देशकः।
कल्याणवर्णः कल्याणः कल्यः कल्याणलक्षणः।।३।।

कल्याणप्रकृतिर्दीप्त-कल्याणात्मा विकल्मषः।
विकलङ्कः कलातीतः कलिलघ्नः कलाधरः।।४।।
देव-देवो जगन्नाथो जगद्बन्धुर्जगद्विभुः।
जगद्धितैषी लोकज्ञः सर्वगो जगदग्रजः।।५।।
चराचर-गुरुर्गोप्यो गूढात्मा गूढ-गोचरः।
सद्योजातः प्रकाशात्मा ज्वलज्ज्वलनसप्रभः।।६।।
आदित्यवर्णो भर्माभः सुप्रभः कनकप्रभः।
सुवर्णवर्णो रुक्माभः सूर्य-कोटि-समप्रभः।।७।।
तपनीय-निभस्तुङ्गो बालार्काभोऽनल-प्रभः।
संध्याभ्र-बभ्रुर्हेमा भस्तप्त-चामीकरच्छविः।।८।।
निष्टप्त-कनकच्छायः कनत्काञ्चन-सन्निभः।
हिरण्यवर्णः स्वर्णाभः शातकुम्भ-निभ-प्रभः।।९।।
द्युम्नाभो जात रूपाभस् तप्त-जाम्बूनद-द्युतिः।
सुधौत-कलधौत-श्रीः प्रदीप्तो हाटक-द्युतिः।।१०।।
शिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्टः स्पष्टः स्पष्टाक्षरः क्षमः।
शत्रुघ्नोऽप्रतिघोऽमोघः प्रशास्ता शासिता स्वभूः।।११।।
शान्तिनिष्ठो मुनि-ज्येष्ठः शिवतातिः शिव-प्रदः।
शान्तिदः शान्तिकृच्छान्तिः कान्तिमान् कामित-प्रदः।।१२।।
श्रेयोनिधिरधिष्ठान मप्रतिष्ठः प्रतिष्ठितः।
सुस्थिरः स्थावरः स्थाणुः प्रथीयान्प्रथितः पृथुः।।१३।।

इति त्रिकालदर्श्यादिशतम्

दशमाष्टोत्तरशतम्

दिग्वासा वातरसनो निर्ग्रन्थेशो निरम्बरः।
निष्किञ्चनो निराशंसो ज्ञान-चक्षुरमोमुहः।।१।।
तेजोराशिरनन्तौजा ज्ञानाब्धिः शील-सागरः।
तेजोमयोऽमित-ज्योति-र्ज्योर्मूर्तिस्तमोऽपहः।।२।।

जगच्चूडामणिर्दीप्तः शंवान्विघ्न-विनायकः।
कलिघ्नः कर्मशत्रुघ्नो लोकालोक-प्रकाशकः।।३।।
अनिद्रालुरतन्द्रालुर्जागरुकः प्रमामयः।
लक्ष्मी-पतिर्जगज्ज्योति-र्धर्मराजः प्रजाहितः।।४।।
मुमुक्षुर्बन्ध-मोक्षज्ञो जिताक्षो जित-मन्मथः।
प्रशान्त-रस-शैलूषो भव्य पेटक-नायकः।।५।।
मूलकर्त्ताऽखिल-ज्योति र्मलघ्नो मूल-कारणम्।
आप्तो वागीश्वरः श्रेयान् छ्रायसोक्तिर्निरुक्तवाक्।।६।।
प्रवक्ता वचसामीशो मारजिद्विश्व-भाववित्।
सुतनुस्तनु-निर्मुक्तः सुगतो हत-दुर्नयः।।७।।
श्रीशः श्री-श्रितपादाब्जो वीत-भीरभयङ्करः।
उत्सन्नदोषो निर्विघ्नो निश्चलो लोकवत्सलः।।८।।
लोकोत्तरो लोक-पति-र्लोक-चक्षुरपारधीः।
धीर-धीर्बुद्ध-सन्मार्गः शुद्धः सुनृत-पूतवाक्।।९।।
प्रज्ञा-पारमितः प्राज्ञो यतिर्नियमितेन्द्रियः।
भदन्तो भद्रकृद्भद्रः कल्प-वृक्षो वर-प्रदः।।१०।।
समुन्मूलित-कर्मारिः कर्म-काष्ठाऽऽशुशुक्षणिः।
कर्मण्यः कर्मठः प्रांशुर्हेयादेय-विचक्षणः।।११।।
अनन्त-शक्तिरच्छेद्य - स्त्रिपुरारि-स्त्रिलोचनः।
त्रि-नेत्रस्त्र्यम्बकस्त्र्यक्षः केवलज्ञान-वीक्षणः।।१२।।
समन्त-भद्रः शान्तारि र्धर्माचार्यो दयानिधिः।
सूक्ष्मदर्शी जितानङ्गः कृपालुर्धर्म-देशकः।।१३।।
शुभंयुः सुखसाद्भूतः पुण्य-राशिरनामयः।
धर्मपालो जगत्पालो धर्म-साम्राज्य-नायकः।।१४।।

इति दिग्वासाद्यष्टोत्तरशतम्

उपसंहार

धाम्नांपते। तवामूनि नामान्यागम-कोविदैः।
समुच्चितान्यनुध्यायन्पुमान्पूतस्मृतिर्भवेत्।।१।।
गोचरोऽपि गिरामासां त्वमवाग्गोचरो मतः।
स्तोता तथाप्यसंदिग्धं त्वत्तोऽभीष्टफलं भजेत्।।२।।
त्वमतोऽसि जगद्बन्धुस्त्वमतोऽसि जगद्भिषक्।
त्वमतोऽसि जगद्धाता त्वमतोऽसि जगद्धितः।।३।।
त्वमेकं जगतां ज्योतिस्त्वं द्विरूपोपयोगभाक्।
त्वं त्रिरूपैक-मुक्त्यंगः स्वोत्थानन्त-चतुष्टयः।।४।।
त्वं पञ्चब्रह्म-तत्त्वात्मा पञ्चकल्याण-नायकः।
षड्भेद-भाव-तत्त्वज्ञस्त्वं सप्त-नय-सङ्ग्रहः।।५।।
दिव्याष्टगुण-मूर्तिस्त्वं नव-केवल-लब्धिकः।
दशावतार-निर्धार्यो मां पाहि परमेश्वर।।६।।
युष्मन्नमावली-दृब्ध-विलसत्स्तोत्र-मालया।
भवन्तं परिवस्यामः प्रसीदानु गृहाण नः।।७।।
इदं स्तोत्रमनुस्मृत्य पूतो भवति भाक्तिकः।
यः संपाठं पठत्येनं स स्यात्कल्याण-भाजनम्।।८।।
ततः सदेदं पुण्यार्थी पुमान् पठतु पुण्यधीः।
पौरुहूतीं श्रियं प्राप्तुं परमामभिलाषुकः।।९।।
स्तुत्वेति मघवा देवं चराचर-जगद्गुरुम्।
ततस्तीर्थविहारस्य व्यधात्प्रस्तावनामिमाम्।।१०।।
स्तुतिः पुण्यगुणोत्कीर्तिः स्तोतो भव्यः प्रसन्नधीः।
निष्ठितार्थो भवान् स्तुत्यः फलं नैश्रेयसं सुखम्।।११।।

शार्दूलविक्रीडित

यः स्तुत्यो जगतां त्रयस्य न पुनः स्तोता स्वयं कस्यचित्,
ध्येयो योगिजनस्य यश्च नतरां ध्याता स्वयं कस्यचित्।
यो नेन्तॄन् नयते नमस्कृतिमलं नन्तव्य-पक्षेक्षणः,
स श्रीमान् जगतां त्रयस्य च गुरुर्देवः पुरुः पावनः।। १२।।
तं देवं त्रिदशाधिपार्चित-पदं घाति-क्षयानन्तरं,
प्रोत्थानन्त-चतुष्टयं जिनमिमं भव्याब्जिनीनामिनम्।
मान-स्तम्भ-विलोकनानत-जगन्मान्यं त्रिलोकी-पतिं,
प्राप्ताचिन्त्य-बहिर्विभूतिमनघं भक्त्या प्रवन्दामहे।। १३।।

इति श्रीमज्जिनसहस्रनामस्तोत्रम्

छहढाला

(कविवर दौलतराम जी कृत)

पहली ढाल

मंगलाचरण (सोरठा)

तीन भुवन में सार, वीतराग विज्ञानता।
शिवस्वरूप शिवकार, नमहुँ त्रियोग सम्हारिकैं।।

चौपाई

जे त्रिभुवन में जीव अनन्त, सुख चाहैं दुःख तैं भयवन्त।
तातैं दुःखहारी सुखकार, कहैं सीख गुरु करुणा धार।।१।।
ताहि सुनो भवि मन थिर आन, जो चाहो अपनो कल्याण।
मोह महामद पियो अनादि, भूल आप को भरमत वादि।।२।।
तास भ्रमण की है बहु कथा, पै कछु कहूँ कही मुनि यथा।
काल अनन्त निगोद मँझार, बीत्यो एकेन्द्री तन धार।।३।।

एक स्वास में अठ-दश बार, जन्म्यो-मर्‌यो भर्‌यो दुखभार
निकसि भूमि जल पावक भयो, पवन प्रत्येक वनस्पति थयो।।४।।
दुर्लभ लहि ज्यों चिन्तामणी, त्यों पर्याय लही त्रसतणी।
लट पिपील अलि आदि शरीर, धर-धर मर्‌यो सही बहु पीर।।५।।
कबहूँ पंचेन्द्रिय पशु भयो, मन विन निपट अज्ञानी थयो।
सिंहादिक सैनी ह्वै क्रूर, निबल पशु हति खाये भूर।।६।।
कबहूँ आप भयो बलहीन, सबलनि करि खायो अति दीन।
छेदन-भेदन भूख-पियास, भार-वहन हिम-आतप त्रास।।७।।
वध-बन्धन आदिक दुःख घने, कोटि जीभ तैं जात न भने।
अति संक्लेश भाव तैं मर्‌यो, घोर श्वभ्रसागर में पर्‌यो।।८।।
तहाँ भूमि परसत दुःख इसो, बिच्छू सहस डसैं नहि तिसो।
तहाँ राध-श्रोणित वाहिनी, कृमि-कुल कलित-देह-दाहिनी।।९।।
सेमर तरु दल जुत असिपत्र, असि ज्यौं देह विदारैं तत्र।
मेरु-समान लोह गलि जाय, ऐसी शीत उष्णता थाय।।१०।।
तिल-तिल करैं देह के खण्ड, असुर भिड़ावैं दुष्ट प्रचण्ड।
सिंधु-नीरतैं प्यास न जाय, तो पण एक न बूँद लहाय।।११।।
तीन लोक को नाज जु खाय, मिटै न भूख कणा न लहाय।
ये दुःख बहु सागर लौं सहै, करम-जोग तैं नरगति लहै।।१२।।
जननी उदर वस्यौ नव मास, अंग-सकुचतैं पाई त्रास।
निकसत जे दुःख पाये घोर, तिनको कहत न आवे ओर।।१३।।
बालपने में ज्ञान न लह्यो, तरुण समय तरुणी रत-रह्यौ।
अर्धमृतक सम बूढ़ापनो, कैसे रूप लखै आपनो।।१४।।
कभी अकाम-निर्जरा करै, भवनत्रिक में सुरतन धरै।
विषयचाह-दावानल दह्यो, मरत विलाप करत दुःख सह्यो।।१५।।
जो विमानवासी हूँ थाय, सम्यग्दर्शन बिन दुःख पाय।
तहँतैं चय थावर-तन धरै, यों परिवर्तन पूरे करै।।१६।।

दूसरी ढाल
(पद्धरि छन्द)

ऐसे मिथ्यादृग-ज्ञान-चरण, वश भ्रमत भरत दुःख जन्म-मरण।
तातैं इनको तजिये सुजान, सुन तिन संक्षेप कहुँ बखान।।१।।
जीवादि प्रयोजनभूत तत्व, सरधैं तिनमाहिं विपर्ययत्व।
चेतन को है उपयोग रूप, बिनमूरत चिन्मूरत अनूप।।२।।
पुद्गल नभ धर्म-अधर्म काल, इनतैं न्यारी है जीव चाल।
ताकों न जान विपरीत मान, करि करै देह में निज पिछान।।३।।
मैं सुखी दुःखी मैं रंक राव, मेरे धन गृह गोधन प्रभाव।
मेरे सुत तिय मैं सबल दीन, बेरूप सुभग मूरख प्रवीन।।४।।
तन उपजत अपनी उपज जान, तन नशत आपको नाश मान।
रागादि प्रगट ये दुःख दैन, तिन ही को सेवत गिनत चैन।।५।।
शुभ-अशुभ बंध के फल मंझार,रति-अरति करै निजपदविसार।
आतमहित हेतु विराग-ज्ञान, ते लखै आपको कष्टदान।।६।।
रोके न चाह निज शक्ति खोय, शिवरूप निराकुलता न जोय।
याही प्रतीतिजुत कछुक ज्ञान, सो दुःखदायक अज्ञान जान।।७।।
इन जुत विषयनि में जो प्रवृत्त, ताको जानों मिथ्याचरित्त।
यों मिथ्यात्वादि निसर्ग जेह, अब जे गृहीत सुनिये सुतेह।।८।।
जो कुगुरु कुदेव कुधर्म सेव, पोषै चिर दर्शनमोह एव।
अन्तर रागादिक धरैं जेह, बाहर धन अम्बर-तै सनेह।।९।।
धारैं कुलिंग लहि महत भाव, ते कुगुरु जन्म-जल उपल नाव।
जे राग-द्वेष मल करि मलीन, वनिता गदादिजुत चिह्न चीन।।१०।।
ते हैं कुदेव तिनकी जु सेव, शठ करत न तिन भव-भ्रमण छेव।
रागादि भावहिंसा समेत, दर्वित त्रस थावर मरण खेत।।११।।
जे क्रिया तिन्हैं जानहु कुधर्म, तिन सरधै जीवलहै अशर्म।
याकूँ गृहीत मिथ्यात्व जान, अब सुन गृहीत जो है अज्ञान।।१२।।

एकान्तवाद-दूषित समस्त, विषयादिक पोषक अप्रशस्त।
कपिलादि-रचित श्रुत को अभ्यास, सो है कुबोध बहु देन त्रास।।१३।।
जो ख्याति लाभ पूजादि चाह, धरिकरन विविध-विध देह-दाह।
आतम-अनात्म के ज्ञानहीन, जे जे करनी तन करन छीन।।१४।।
ते सब मिथ्याचरित्र त्याग, अब आतम के हित पन्थ लाग।
जगजाल-भ्रमण को देहु त्याग, अब 'दौलत' निज आतम सुपाग।। १५।।

तीसरी ढाल

(नरेन्द्र/जोगीरासा छन्द)

आतम को हित है सुख सो सुख, आकुलता बिन कहिये।
आकुलता शिव माहिं न तातैं, शिव-मग लाग्यौ चहिये।।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन शिव-मग सो दुविध विचारो।
जो सत्यारथ-रूप सो निश्चय, कारण सो व्यवहारो।।१।।
परद्रव्यन तैं भिन्न आप में, रुचि सम्यक्त्व भला है।
आपरूप को जानपनो सो, सम्यग्ज्ञान कला है।।
आपरूप में लीन रहे थिर, सम्यक् चारित सोई।
अब व्यवहार मोक्ष-मग सुनिये, हेतु नियत को होई।।२।।
जीव अजीव तत्त्व अरु आस्रव, बन्ध रु संवर जानो।
निर्जर मोक्ष कहे जिन तिन को, ज्यों का त्यों सरधानो।।
है सोई समकित व्यवहारी, अब इन रूप बखानो।
तिनको सुन सामान्य-विशेषैं, दृढ़ प्रतीति उर आनो।।३।।
बहिरातम अन्तर-आतम, परमातम जीव त्रिधा है।
देह-जीव को एक गिनै, बहिरातम तत्त्व मुधा है।।
उत्तम मध्यम जघन त्रिविध के, अन्तर आतम ज्ञानी।
द्विविध संग बिन शुद्ध-उपयोगी, मुनि उत्तम निजध्यानी।।४।।
मध्यम अन्तर आतम हैं जे, देशव्रती अनगारी।
जघन कहे अविरत समदृष्टि, तीनों शिव-मगचारी।।

सकल-निकल परमातम द्वैविध, तिन में घाति निवारी।
श्री अरहंत सकल परमातम, लोकालोक निहारी।।५।।
ज्ञानशरीरी त्रिविध कर्म-मल वर्जित सिद्ध महन्ता।
ते हैं निकल अमल परमातम, भोगें शर्म अनन्ता।।
बहिरातमता हेय जानि तजि, अन्तर-आतम हूजैं।
परमातम को ध्याय निरन्तर, जो नित आनन्द पूजैं।।६।।
चेतनता बिन सो अजीव है, पंच भेद ताके हैं।
पुद्गल पंच वरन रस गन्ध दो, फरस वसू जाके हैं।।
जिय पुद्गल को चलन सहाई, धर्मद्रव्य अनरूपी।
तिष्ठत होय अधर्म सहाई, जिन बिन मूर्ति निरूपी।।७।।
सकल द्रव्य को वास जास में, सो आकाश पिछानो।
नियत वर्तना निशि-दिन सो, व्यवहारकाल परिमानो।।
यों अजीव अब आस्रव सुनिये, मन-वच-काय त्रियोगा ।
मिथ्या अविरति अरु कषाय, परमाद सहित उपयोगा।।८।।
ये ही आतम को दुःख कारण, तातैं इनको तजिये।
जीव प्रदेश बँधे-विधि सौं, सो बन्धन कबहुँ न सजिये।।
शम-दम तैं जो कर्म न आवै, सो संवर आदरिये।
तप-बल तै विधि-झरन निर्जरा, ताहि सदा आचरिये।।९।।
सकल कर्म तैं रहित अवस्था, सो शिव थिर सुखकारी।
इहि विधि जो सरधा तत्वन की, सो समकित व्यवहारी।।
देव जिनेन्द्र, गुरु परिग्रह बिन, धर्म दयाजुत सारो।
ये हु मान समकित को कारण, अष्ट अंगजुत धारो ।।१०।।
वसु मद टारि निवारि त्रिशठता, षट् अनायतन त्यागो ।
शंकादिक वसु दोष बिना, संवेगादिक चित पागो ।।
अष्ट अंग अरु दोष पच्चीसों, तिन संक्षेप हु कहिये ।
बिन जाने तैं दोष-गुनन को, कैसे तजिये गहिये ।।११।।
जिन-वच में शंका न धार वृष, भव-सुख-वांछा भानै।
मुनि-तन मलिन न देख घिनावैं, तत्त्व कुतत्त्व पिछानै।।

निज-गुण अरु पर-औगुण ढांकै, वा निज धर्म बढ़ावैं।
कामादिक कर वृषतैं चिगते, निज-पर को सु दिढ़ावैं।।१२।।
धर्मी सों गौ-बच्छ प्रीति सम, कर जिन-धर्म दिपावैं।
इन गुन तैं विपरीत दोष वसु, तिनको सतत खिपावैं।।
पिता भूप वा मातुल नृप जो, होय न तो मद ठानै।
मद न रूप को, मद न ज्ञान को, धन-बल को मद भानै।।१३।।
तप को मद न मद जु प्रभुता को, करै न सो निज जानै।
मद धारै तो येहि दोष वसु, समकित को मल ठानै।।
कुगुरु कुदेव कुवृष सेवक की, नहि प्रशंस उचरै है।
जिन-मुनि जिन-श्रुत बिन कुगुरादिक तिन्है न नमन करै हैं।१४।।
दोष-रहित गुण-सहित सुधी जे, सम्यग्दर्श सजै हैं।
चरितमोहवश लेश न संजम, पै सुरनाथ जजै हैं।।
गेही पै, गृह में न रचे ज्यों, जल तैं भिन्न कमल है।
नगर-नारि को प्यार यथा, कादे में हेम अमल है।।१५।।
प्रथम नरक बिन षट् भू ज्योतिष, वान भवन षँड़ नारी।
थावर विकल त्रय पशु में नहिं, उपजत सम्यक् धारी।।
तीन लोक तिहुँ काल माहिं नहिं, दर्शन सो सुखकारी।
सकल धरम को मूल यही, इस बिन करनी दुःखकारी।।१६।।
मोक्षमहल की परथम सीढ़ी, या बिन ज्ञान-चरित्रा।
सम्यक्त्वा न लहै सो दर्शन, धारौ भव्य पवित्रा।।
'दौल' समझ सुन चेत सयाने, काल वृथा मत खोवै ।
यह नरभव फिर मिलन कठिन है, जो सम्यक् नहिं होवै।।१७।।

चौथी ढाल

(दोहा)

सम्यक् श्रद्धा धारि पुनि, सेवहु सम्यग्ज्ञान।
स्व-पर अर्थ बहु धर्मजुत, जो प्रगटावन भान।।१।।
सम्यक् साथै ज्ञान होय, पै भिन्न अराधौ।
लक्षण श्रद्धा जान, दुहू में भेद अबाधौ।।

सम्यक् कारण जान, ज्ञान कारज है सोई।
युगपत् होते हू, प्रकाश दीपक तैं होई।।२।।
तास भेद दो हैं परोक्ष, परतछि तिन माँही।
मति श्रुत दोय परोक्ष, अक्ष मन तैं उपजाहीं।।
अवधिज्ञान मनपर्जय, दो है देश प्रतच्छा।
द्रव्य क्षेत्र परिमाण लिये, जानैं जिय स्वच्छा।।३।।
सकल द्रव्य के गुन अनन्त, परजाय अनन्ता।
जानै एकै काल प्रगट, केवलि भगवन्ता।।
ज्ञान समान न आन, जगत में सुख को कारण ।
इह परमामृत जन्म-जरा-मृतु रोग निवारण।।४।।
कोटि जन्म तप तपैं, ज्ञान बिन कर्म झरैं जे।
ज्ञानि के छिन माहिं, त्रिगुप्ति तै सहज टरैं ते।।
मुनिव्रत धार अनन्त बार, ग्रीवक उपजायौ।
पै निज आतम ज्ञान बिना, सुख लेश न पायौ।।५।।
तातैं जिनवर कथित, तत्त्व अभ्यास करीजै।
संशय विभ्रम मोह त्याग, आपौ लख लीजै।।
यह मानुष पर्याय, सुकुल सुनिवौ जिनवानी।
इह विधि गयें न मिलैं, सुमणि ज्यों उदधि समानी।।६।।
धन समाज गज बाज, राज तो काज न आवै।
ज्ञान आपको रूप भये, फिर अचल रहावै।।
तास ज्ञान को कारण, स्व-पर विवेक बखानो।
कोटि उपाय बनाय, भव्य ताको उर आनो।।७।।
जे पूरब शिव गये, जाहिं अरु आगे जै हैं।
सो सब महिमा ज्ञानतनी, मुनिनाथ कहै हैं।।
विषय चाह दव दाह, जगत जन अरनि दझावै।
तास उपाय न आन, ज्ञान घनघान बुझावै।।८।।
पुण्य-पाप फल मांहि, हरख बिलखौ मत भाई ।
यह पुद्गल परजाय, उपजि विनसै फिर थाई।।

लाख बात की बात, यहै निश्चय उर लाओ।
तोरि सकल जग दन्द-फन्द, निज आतम ध्याओ।।९।।
सम्यग्ज्ञानी होय बहुरि, दृढ़ चारित लीजै।
एकदेश अरु सकलदेश, तसु भेद कहीजै।।
त्रसहिंसा को त्याग, वृथा थावर न संहारै।
पर-वधकार कठोर निंद्य, नहिं वयन उचारै।।१०।।
जल मृत्तिका बिन और, नाहिं कछु गहै अदत्ता।
निज वनिता बिन सकल, नारि सौ रहै विरत्ता।।
अपनी शक्ति विचार, परिग्रह थोरो राखै।
दश दिशि गमन प्रमान, ठान, तसु सीम न नाखै।।११।।
ताहू में फिर ग्राम, गली गृह बाग बजारा।
गमना गमन प्रमान, ठान अन सकल निवारा।।
काहू की धन-हानि, किसी जय-हार न चिन्तैं।
देय न सो उपदेश होय, अघ बनज कृषी तें।।१२।।
कर प्रमाद जल भूमि, वृक्ष पावक न विराधै।
असि धनु हल हिंसोपकरन, नहिं दे जस लाधै।।
राग-द्वेष करतार कथा, कबहूँ न सुनीजै।
औरहूँ अनरथदण्ड, हेतु अघ तिन्हैं न कीजैं।।१३।।
धरि उर समता भाव, सदा सामायिक करिये।
परव चतुष्टय मांहि, पाप तजि प्रोषध धरिये।।
भोग और उपभोग, नियम करि ममत निवारै।
मुनि को भोजन देय, फिर निज करहिं अहारै।।१४।।
बारह व्रत के अतिचार, पन पन न लगावै।
मरण समय संन्यास धारि, तसु दोष नशावैं।।
यों श्रावक व्रत पाल, स्वर्ग सोलम उपजावै।
तहँतैं चय नर जन्म पाय, मुनि ह्वै शिव जावैं।।१५।।

पाँचवीं ढाल

मुनि सकलव्रती बड़भागी, भव-भोगन तैं वैरागी।
वैराग्य उपावन माई, चिन्तैं अनुप्रेक्षा भाई।।१।।
इन चिन्तत समसुख जागै, जिमि ज्वलन पवन के लागै।
जब ही जिय आतम जानै, तब ही जिय शिवसुखठानै।।२।।
जोवन गृह गो धन नारी, हय गय जन आज्ञाकारी।
इन्द्रिय-भोग छिन थाई, सुरधनु चपला चपलाई।।३।।
सुर असुर खगाधिप जेते, मृग ज्यों हरि काल दले ते।
मणि मन्त्र तन्त्र बहु होई, मरते न बचावै कोई।।४।।
चहुँ गति दुःख जीव भरे हैं, परिवर्तन पंच करे हैं।
सब विधि संसार असारा, यामें सुख नाहिं लगारा।।५।।
शुभ-अशुभ करम फल जेते, भोगे जिय एक हि तेते।
सुत दारा होय न सीरी, सब स्वारथ के हैं भीरी।।६।।
जल-पय ज्यौं जिय तन मेला, पै भिन्न-भिन्न नहिं भेला।
तो प्रगट जुदे धन धामा, क्यों ह्वै इक मिलि सुतरामा।।७।।
पल रुधिर राध मल थैली, कीकस वसादि तैं मैली।
नव द्वार बहै घिनकारी, अस देह करै किम यारी।।८।।
जो योगन की चपलाई, तातैं ह्वै आस्रव भाई।
आस्रव दुःखकार घनेरे, बुधिवन्त तिन्है निरवेरे।।९।।
जिन पुण्य-पाप नहिं कीना, आतम अनुभव चित दीना।
तिन ही विधि आवत रोके, संवर लहि सुख अवलोके।।१०।।
निज काल पाय विधि झरना, तासों निज काज न सरना।
तप करि जो कर्म खिपावै, सोई शिवसुख दरसावै।।११।।
किन हूँ न कर्‍यो न धरैं को, षट्द्रव्यमयी न हरै को।
सो लोक माहि बिन समता, दुःख सहै जीव नित भ्रमता।।१२।।
अन्तिम ग्रीवक लौं की हद-पायो अनन्त बिरियाँ पद।
पर सम्यग्ज्ञान न लाधौ, दुर्लभ निज में मुनि साधौ।।१३।।

जो भावमोह तैं न्यारे, दृग ज्ञान व्रतादिक सारे।
सो धर्म जबै जिय धारैं, तब ही सुख अचल निहारै।।१४।।
सो धर्म मुनिन करि धरिये, तिनकी करतूति उचरिये।
ताको सुनिये भवि प्रानी, अपनी अनुभूति पिछानी।।१५।।

छठीं ढाल

(हरिगीतिका)

षट्काय जीव न हनन तैं, सब विधि दरब हिंसा टरी।
रागादि भाव निवार तैं, हिंसा न भावित अवतरी।।
जिनके न लेश मृषा न जल, तृण हू बिना दीयौ गहै।
अठ-दश सहस विधि शीलधर, चिद्ब्रह्म में नित रमि रहै।।१।।
अन्तर चतुर्दश भेद बाहिर, संग दशधा तैं टलै।
परमाद तजि चौकर मही लखि, समिति ईर्य्या तैं चलैं।।
जग सुहितकर सब अहितहर, श्रुति सुखद सब संशय हरैं।
भ्रम-रोग हर जिनके वचन, मुख-चन्द्र तैं अमृत झरैं।।२।।
छ्यालीस दोष बिना सुकुल, श्रावक तनैं घर अशन को।
लैं तप बढ़ावन हेत नहिं तन, पोषते तजि रसन को।।
शुचि ज्ञान संयम उपकरण, लखि कै गहैं लखि कै धरैं।
निर्जन्तु थान विलोक तन मल, मूत्र श्लेषम परिहरैं।।३।।
सम्यक् प्रकार निरोध मन-वच-काय आतम ध्यावते।
तिन सुथिर-मुद्रा देखि मृगगण, उपल खाज खुजावते।।
रस रूप गन्ध तथा फरस अरु, शब्द शुभ असुहावने।
तिनमें न राग विरोध, पंचेन्द्रिय जयन पद पावने।।४।।
समता सम्हारैं थुति उचारैं, वन्दना जिनदेव को।
नित करैं, श्रुति-रति करैं प्रतिक्रम, तजैं तन अहमेव को।।
जिनके न न्हौन न दन्तधोवन, लेश अम्बर आवरन।
भू माहिं पिछली रयनि में, कछु शयन एकाशन करन।।५।।
इक बार दिन में लैं अहार, खड़े अलप निज-पान में।
कचलौंच करत न डरत परीषह, सों लगे निज-ध्यान में।।

अरि-मित्र महल-मसान कंचन,-काँच निन्दन-थुतिकरण।
अर्घावतारन असि-प्रहारन में, सदा समता धरन।।६।।
तप तपैं द्वादश, धरैं वृष दश, रत्नत्रय सेवैं सदा।
मुनि साथ में वा एक विचरैं, चहैं नहिं भव-सुख कदा।।
यों है सकल संयम चरित, सुनिये स्वरूपाचरन अब।
जिस होत प्रगटै आपनी निधि, मिटै पर की प्रवृत्ति सब।।७।।
जिन परम पैनी सुबुधि छैनी, डारि अन्तर भेदिया।
वरणादि अरु रागादितैं, निज भाव को न्यारा किया।।
निजमाहिं निज के हेतु निज कर, आपको आपै गह्यो।
गुण-गुणी ज्ञाता-ज्ञान-ज्ञेय, मँझार कछु भेद न रह्यो।।८।।
जहाँ ध्यान-ध्याता-ध्येय को, न विकल्प वच-भेद न जहाँ।
चिद्भाव कर्म चिदेश कर्ता, चेतना किरिया तहाँ।।
तीनों अभिन्न अखिन्न शुध, उपयोग की निश्चल दसा।
प्रगटी जहाँ दृग ज्ञान-व्रत, ये तीनधा एकै लसा।।९।।
परमाण-नय-निक्षेप को, न उद्योत अनुभव में दिखै।
दृग-ज्ञान-सुख बलमय सदा, नहिं आन भाव जु मो विखै।।
मैं साध्य-साधक मैं अबाधक, कर्म अरु तसु फल नितैं।
चित् पिण्ड चण्ड अखण्ड सुगुण करण्ड च्युति पुनि कलनितै।।१०।।
यों चिन्त्य निज में थिर भये, तिन अकथ जो आनन्द लह्यो।
सो इन्द्र नाग नरेन्द्र वा, अहमिन्द्र के नाहीं कहयो।।
तब ही शुक्ल ध्यानाग्नि करि, चउघाति विधि कानन दह्यो।
सब लख्यौ केवलज्ञान करि, भविलोक कों शिवमग कह्यो।।११।।
पुनि घाति शेष अघाति विधि छिन माहिं अष्टम भू बसैं।
वसु कर्म विनसैं सुगुण वसु, सम्यक्त्व आदिक सब लसैं।।
संसार खार अपार पारा-,वार तरि तिरहिं गये।
अविकार अकल अरूप शुचि, चिद्रूप अविनाशी भये।।१२।।

निज माहिं लोक अलोक, गुण-परजाय प्रतिबिम्बित भये।
रहि हैं अनन्तानन्त काल, यथा तथा शिव परिणये।।
धनि धन्य हैं जे जीव नरभव, पाय यह कारज किया।
तिन ही अनादि भ्रमण पंच प्रकार, तजि वर सुख लिया।।१३।।
मुख्योपचार दुभेद यों, बड़भागि रत्नत्रय धरैं।
अरु धरैंगे ते शिव लहैं, तिन सुयश-जल जग-मल हरैं।।
इमि जानि आलस हानि, साहस ठानि यह सिख आदरौ।
जबलौं न रोग जरा गहै, तबलौं झटिति निज हित करौ।।१४।।
यह राग-आग दहै सदा, तातैं समामृत सेइये।
चिर भजे विषय-कषाय अब तो, त्याग निज-पद बेइये।।
कहा रच्यो पर-पद में न तेरो पद यहै क्यों दुःख सहै।
अब 'दौल' होउ सुखी स्व-पद रचि, दाव मत चूको यहै।।१५।।
इक नव वसु इक वर्ष की, तीज शुकल वैशाख।
कर्‌यो तत्त्व उपदेश यह, लखि 'बुधजन' की भाख।।
लघु-धी तथा प्रमादतैं, शब्द-अर्थ की भूल।
सुधी सुधार पढ़ो सदा जो पावो भव-कूल।।१६।।

मेरी भावना

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते सब जग जान लिया,
सब जीवों को मोक्षमार्ग का निस्पृह हो उपदेश दिया।
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो,
भक्तिभाव से प्रेरित हो यह चित्त उसी में लीन रहो।। १।।
विषयों की आशा नहिं जिनके साम्यभाव धन रखते हैं,
निजपरके हित-साधन में जो निश-दिन तत्पर रहते हैं।
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या बिना खेद जो कहते हैं,
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के दुःख समूह को हरते हैं।। २।।

रहे सदा सत्संग उन्हीं का ध्यान उन्हीं का नित्य रहे,
उन ही जैसी चर्या में यह चित्त सदा अनुरक्त रहे,
नहीं सताऊँ किसी जीव को झूँठ कभी नहिं कहा करूँ,
परधन वनिता पर न लुभाऊँ संतोषमृत पिया करूँ।। ३।।
अहंकार का भाव न रक्खूँ नहीं किसी पर क्रोध करूँ,
देख दूसरों की बढ़ती को कभी न ईर्ष्या-भाव धरूँ।
रहे भावना ऐसी मेरी सरल सत्य व्यवहार करूँ,
बने जहाँ तक इस जीवन में औरों का उपकार करूँ।। ४।।
मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे,
दीन-दुःखी जीवों पर मेरे उर से करुणा-स्त्रोत बहे।
दुर्जन-क्रूर-कुमार्गरतों पर क्षोभ नहीं मुझको आवे,
साम्य भाव रक्खूँ मैं उन पर ऐसी परिणति हो जावे।। ५।।
गुणी जनों को देख हृदय में मेरे प्रेम उमड़ आवे,
बने जहाँ तक उनकी सेवा करके यह मन सुख पावे।
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं द्रोह न मेरे उर आवे,
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित दृष्टि न दोषों पर जावे।। ६।।
कोई बुरा कहो या अच्छा लक्ष्मी आवे या जावे,
लाखों वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जावे।
अथवा कोई कैसा ही भय या लालच देने आवे,
तो भी न्याय मार्ग से मेरा कभी न पग डिगने पावे।। ७।।
होकर सुख में मग्न न फूले दुःख में कभी न घबराये,
पर्वत-नदी श्मशान भयानक अटवी से नहिं भय खावे।
रहे अडोल अकम्प निरन्तर यह मन दृढ़तर बन जावे,
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में सहनशीलता दिखलावे।। ८।।
सुखी रहें सब जीव जगत के कोई कभी न घबरावे,
बैर-पाप अभिमान छोड़ जग नित्य नये मंगल गावे।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की दुष्कृत दुष्कर हो जावें,
ज्ञानचरित उन्नतकर अपना मनुजजन्म फलसब पावें।। ९।।

ईति भीति व्यापे नहिं जग में वृष्टि समय पर हुआ करे,
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी न्याय प्रजा का किया करे।
रोग, मरी, दुर्भिक्ष न फैले प्रजा शान्ति से जिया करे,
परम अहिंसा धर्म जगत में फैल सर्वहित किया करे।। १०।।
फैले प्रेम परस्पर जग में मोह दूर ही रहा करे,
अप्रिय-कटुक कठोर शब्द नहिं कोई मुख से कहा करे।
बन कर सब 'युग-वीर' हृदय से देशोन्नति रत रहा करें,
वस्तुस्वरूप विचार खुशी से सब दुःख संकट सहा करें।। ११।।

बारह भावना

बंदूँ श्री अरहंत-पद, वीतराग विज्ञान।
वरणूँ बारह भावना, जग जीवन हित जान।। १ ।।

(विष्णुपद छन्द)

कहाँ गये चक्री जिन जीता, भरत खण्ड सारा।
कहाँ गये वह राम-रु-लक्ष्मण, जिन रावण मारा।।
कहाँ कृष्ण रुक्मणि सतभामा, अरु संपति सगरी।
कहाँ गये वह रंगमहल अरु, सुवरन की नगरी।। २।।
नहीं रहे वह लोभी कौरव जूझ मरे रन में।
गये राज तज पांडव वन को, अगनि लगी तन में।।
मोह-नींद से उठ रे चेतन, तुझे जगावन को।
हो दयाल उपदेश करैं, गुरु बारह भावन को।। ३।।

१. अथिर भावना

सूरज चाँद छिपै निकलै ऋतु, फिर फिर कर आवै।
प्यारी आयू ऐसी बीतै, पता नहीं पावै।।
पर्वत-पतित-नदी-सरिता-जल बहकर नहिं हटता।
स्वाँस चलत यों घटै काठ ज्यों, आरे सों कटता।। ४।।

ओस-बूंद ज्यों गलै धूप में, वा अंजुलि पानी।
छिन छिन यौवन छीन होत है क्या समझै प्रानी।।
इंद्रजाल आकाश नगर सम जग-संपति सारी।
अथिर रूप संसार विचारो सब नर नारी।। ५।।

२. अशरण भावना

काल-सिंह ने मृग-चेतन को घेरा भव वन मैं।
नहीं बचावन-हारा कोई यों समझो मन मैं।।
मंत्र यंत्र सेना धन संपति, राज पाट छूटै।
वश नहिं चलता काल लुटेरा, काय नगरि लूटै।। ६।।
चक्ररत्न हलधर सा भाई, काम नहीं आया।
एक तीर के लगत कृष्ण की विनश गई काया।।
देव धर्म गुरु शरण जगत में , और नहीं कोई।
भ्रम से फिरै भटकता चेतन, युँ ही उमर खोई।। ७।।

३. संसार भावना

जनम-मरन अरु जरा-रोग से, सदा दुखी रहता।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव भव-परिवर्तन सहता।।
छेदन भेदन नरक पशू गति, वध बंधन सहना।
राग-उदय से दुख सुर गति में, कहाँ सुखी रहना।। ८।।
भोगि पुण्य फल हो इक इंद्री, क्या इसमें लाली।
कुतवाली दिनचार वही फिर, खुरपा अरु जाली।।
मानुष-जन्म अनेक विपतिमय, कहीं न सुख देखा।
पंचम गति सुख मिलै शुभाशुभ को मेटो लेखा।। ९।।

४. एकत्व भावना

जन्मै मरै अकेला चेतन, सुख-दुख का भोगी।
और किसी का क्या इक दिन, यह देह जुदी होगी।।
कमला चलत न पैंड जाय, मरघट तक परिवारा।
अपने अपने सुख को रोवैं, पिता पुत्र दारा।। १०।।

ज्यों मेले में पंथी जन मिल नेह फिरैं धरते।
ज्यों तरुवर पै रैन बसेरा पंछी आ करते।।
कोस कोई दो कोस कोई उड़ फिर थक-थक हारै।
जाय अकेला हंस संग में, कोई न पर मारै।। ११।।

५. भिन्न भावना

मोह-रूप मृग-तृष्णा जग में, मिथ्या जल चमकै।
मृग चेतन नित भ्रम में उठ उठ, दौड़ैं थक थककै।।
जल नहिं पावै प्राण गमावै, भटक भटक मरता।
वस्तु पराई मानै अपनी, भेद नहीं करता।। १२।।
तू चेतन अरु देह अचेतन, यह जड़ तू ज्ञानी।
मिले-अनादि यतनतैं बिछुडै, ज्यों पय अरु पानी।।
रूप तुम्हारा सबसों न्यारा, भेद ज्ञान करना।
जौलों पौरुष थकै न तौलों उद्यम सों चरना।। १३।।

६. अशुचि भावना

तू नित पोखै यह सूखे ज्यों, धोवै त्यों मैली।
निश दिन करै उपाय देह का, रोग-दशा फैली।।
मात-पिता-रज-वीरज मिलकर, बनी देह तेरी।
मांस हाड नश लहू राध की, प्रगट व्याधि घेरी।। १४।।
काना पौंडा पड़ा हाथ यह चूसै तो रोवै।
फलै अनंत जु धर्म ध्यान की, भूमि-विषै-बोवै।।
केसर चंदन पुष्प सुगंधित, वस्तु देख सारी।
देह परसते होय अपावन, निशदिन मल जारी।। १५।।

७. आस्त्रव भावना

ज्यों सर-जल आवत मोरी त्यों, आस्त्रव कर्मन को।
दर्वित जीव प्रदेश गहै जब पुद्गल भरमन को।।

भावित आस्त्रव भाव शुभाशुभ, निशदिन चेतन को।
पाप पुण्य के दोनों करता, कारण बंधन को।। १६।।
पन-मिथ्यात योग-पंद्रह द्वादश-अविरत जानो।
पंचरु बीस कषाय मिले सब, सत्तावन मानो।।
मोह-भाव की ममता टारै, पर परणत खोते।
करै मोख का यतन निरास्त्रव, ज्ञानी जन होते।।१७।।

८. संवर भावना

ज्यों मोरी में डाट लगावै, तब जल रुक जाता।
त्यों आस्त्रव को रोकै संवर, क्यों नहिं मन लाता।।
पंच महाव्रत समिति गुप्तिकर वचन काय मन को।
दशविध-धर्म परीषह-बाईस, बारह भावनको।। १८।।
यह सब भाव सत्तावन मिलकर, आस्त्रव को खोते।
सुपन दशा से जागो चेतन, कहाँ पड़े सोते।।
भाव शुभाशुभ रहित शुद्ध-भावन-संवर भावै।
डाँट लगत यह नाव पडी मझधार पार जावै।। १९।।

९. निर्जरा भावना

ज्यों सरवर जल रुका सूखता, तपन पडै भारी।
संवर रोकै कर्म निर्जरा, ह्वै सोखन हारी।।
उदय-भोग सविपाक-समय, पक जाय आम डाली।
दूजी है अविपाक पकावै, पालविषै माली।। २०।।
पहल सबके होय नहीं, कुछ सरै काम तेरा।
दूजी करै जु उद्यम करकै, मिटै जगत फेरा।।
संवर सहित करो तप प्रानी, मिलै मुकत रानी।
इस दुलहिन की यही सहेली, जानै सब ज्ञानी।। २१।।

१०. लोक भावना

लोक अलोक आकाश माहिं थिर, निराधार जानो।
पुरुषरूप कर-कटी भये षट्, द्रव्यनसो मानो।।

इसका कोई न करता हरता, अमिट अनादी है।
जीवरु पुद्‌गल नाचै यामैं, कर्म उपाधी है।। २२।।
पाप पुण्यसों जीव जगत में, नित सुख दुख भरता।
अपनी करनी आप भरै शिर, औरन के धरता।।
मोह कर्म को नाश, मेटकर सब जग की आसा।
निज पद में थिर होय लोक के, शीश करो बासा।। २३।।

११. बोधि-दुर्लभ भावना

दुर्लभ है निगोद से थावर, अरु त्रस गति पानी।
नरकाया को सुरपति तरसै सो दुर्लभ प्रानी।।
उत्तम देश सुसंगति दुर्लभ, श्रावक कुल पाना।
दुर्लभ सम्यक दुर्लभ संयम, पंचम गुणठाना।। २४।।
दुर्लभ रत्नत्रय आराधन दीक्षा का धरना।
दुर्लभ मुनिवर के व्रत पालन, शुद्ध भाव करना।।
दुर्लभ तैं दुर्लभ है चेतन, बोधि ज्ञान पावै।
पाकर केवलज्ञान नहीं फिर, इस भव में आवै।। २५।।

१२. धर्म भावना

धर्म 'अहिंसा परमो धर्मः' ही सच्चा जानो।
जो पर को दुख दे, सुख माने, उसे पतित मानो।।
राग द्वेष मद मोह घटा आतम रुचि प्रकटावे।
धर्म-पोत पर चढ़ प्राणी भव-सिन्धु पार जावे।। २६।।
वीतराग सर्वज्ञ दोष बिन, श्रीजिन की वानी।
सप्त तत्त्व का वर्णन जा में, सबको सुखदानी।।
इनका चिंतवन बार-बार कर, श्रद्धा उर धरना।
'मंगत' इसी जतनतैं इकदिन, भव-सागर-तरना।। २७।।

।।इति सुल्तानपुर निवासी मंगतराय जी कृत बारह भावना।।

निर्वाण काण्ड (भाषा)

(दोहा)

वीतराग वन्दौं सदा, भाव सहित सिर नाय।
कहूँ काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय।। १।।
अष्टापद आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य चम्पापुरि नामि।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वन्दौं भाव - भगति उर धार।। २।।
चरम तीर्थंकर चरम - शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर।
शिखरसमेद जिनेसुर बीस, भावसहित वन्दौं निश-दीस।। ३।।
वरदत्तराय रु इन्द्र मुनिन्द्र, सायरदत्त आदि गुणवृन्द।
नगर तारवर मुनि उठकोडि, वन्दौं भावसहित कर जोड़ि।। ४।।
श्रीगिरनार शिखर विख्यात, कोडि बहत्तर अरु सौ सात।
सम्बु प्रद्युम्न कुमर द्वैभाय, अनिरुद्ध आदि नमूँ तसु पाय।। ५।।
रामचन्द्र के सुत द्वै वीर, लाडनरिन्द आदि गुणधीर।
पाँच कोडि मुनि मुक्ति मँझार, पावागिरी वन्दौं निरधार।। ६।।
पाण्डव तीन द्रविड-राजान, आठ कोडि मुनि मुकति पयान।
श्री शत्रुंजयगिरि के सीस, भावसहित वन्दौं निश-दीस।। ७।।
जे बलभ्रद मुकति में गये, आठ कोडि मुनि औरहु भये।
श्रीगजपन्थ शिखरसुविशाल, तिनकेचरण नमूँ तिहूँकाल।। ८।।
राम हणू सुग्रीव सुडील, गव गवाख्य नील महानील।
कोडि निन्याणवै मुक्तिपयान, तुङ्गीगिरिवन्दौं धरि ध्यान।। ९।।
नंग अनंग कुमार सुजान, पाँच कोडि अरु अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये सोनागिरि शीश, ते वन्दौं त्रिभुवनपति ईस।। १०।।
रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवा-तट सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वन्दौं धरि परम हुलास।। ११।।

रेवानदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहँ छूट।
द्वै चक्री दश कामकुमार, ऊठकोडि वन्दौं भव पार।। १२।।
बडवानी बडनयन सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग।
इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते वन्दौं भव-सागर-तर्ण।। १३।।
सुवरण भद्र आदि मुनि चार, पावागिरि-वर शिखर मँझार।
चेलना नदी-तीर के पास, मुक्ति गये वन्दौं नित तास।। १४।।
फलहोड़ी वड़गाम अनूप, पच्छिम दिशा द्रोणगिरि रूप।
गुरुत्तादि-मुनीसुर जहाँ, मुक्ति गये वन्दौ नित जहाँ।। १५।।
बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्रीअष्टापद मुक्ति मँझार, ते वन्दौं नित सुरत सँभार।। १६।।
अचलापुर की दिशा ईसान तहाँ मेढ्रगिरि नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोडि मुनिराय तिनके चरण नमूँ चित लाय।। १७।।
वंशस्थल वन के ढिग होय, पश्चिम दिशा कुन्थुगिरि सोय।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम।। १८।।
जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँच सौ लहे।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वन्दन करूँ जोरि जुगपान।। १९।।
समवसरण श्रीपार्श्व-जिनन्द, रेसिन्दीगिरी नयनानन्द।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दौं नित धरम-जहाज।। २०।।
मथुरापुर पवित्र उद्यान, जम्बूस्वामी जी निर्वाण।
चरमकेवली पंचमकाल, ते वन्दौं नित दीनदयाल।। २१।।
तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वन्दन कीजै तहाँ।
मनवचकायसहितसिरनाय, वन्दनकरहिंभविकगुणगाय।। २२।।
संवत् सतरह सौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वन्दनकरहिंत्रिकाल, जयनिर्वाणकाण्डगुणमाल।। २३।।

।। इति निर्वाणकाण्ड।।

सुप्रभात-स्तोत्रम्

यत्स्वर्गा-वतरोत्सवे यदभवज् जन्मा-भिषेकोत्सवे,
यद्दीक्षा ग्रहणोत्सवे यदखिल, ज्ञान-प्रकाशोत्सवे।
यन्निर्वाण-गमोत्सवे जिनपतेः, पूजाद्भुतं तद्भवैः,
सङ्गीतस्तुतिमङ्गलैः प्रसरतां, मे सुप्रभातोत्सवः।। १।।

श्रीमन् नतामर किरीट मणिप्रभाभि,
रालीढपाद युग दुर्द्धर कर्मदूर।
श्रीनाभिनन्दन ! जिनाजित ! शम्भवाख्य !
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।२।।

छत्रत्रय - प्रचल - चामर - वीज्यमान,
देवाभिनन्दनमुने ! सुमते ! जिनेन्द्र।
पद्मप्रभा रुणमणि द्युतिभासुराङ्ग,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।३।।

अर्हन् सुपार्श्व कदली - दलवर्ण गात्र,
प्रालेयतार-गिरि मौक्तिक वर्णगौर।
चन्द्रप्रभ - स्फटिक - पाण्डुर - पुष्पदन्त !
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।४।।

सन्तप्त काञ्चनरुचे जिन-शीतलाख्य,
श्रेयान् विनष्ट-दुरिताष्ट-कलङ्क-पङ्क।
बंधूक - बंधुररुचे जिनवासुपूज्य,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।५।।

उद्दण्ड-दर्पक-रिपो विमला-मलाङ्ग,
स्थेमन् - ननन्त - जिदनन्त - सुखाम्बुराशे।
दुष्कर्म - कल्मष - विवर्जित - धर्मनाथ,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।६।।

देवामरी - कुसुम - सन्निभ - शान्तिनाथ,
कुन्थो ! दयागुण विभूषण भूषिताङ्ग।
देवाधिदेव - भगवन् - नरतीर्थ - नाथ,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।७।।
यन्मोह मल्लमद - भञ्जन - मल्लि - नाथ,
क्षेमङ्करा - वितथ - शासन - सुव्रताख्य।
सत्-सम्पदा प्रशमितो नमि नामधेय
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।८।।
तापिच्छ - गुच्छ - रुचिरोज्ज्वल - नेमिनाथ,
घोरापसर्ग-विजयिन् जिन-पार्श्वनाथ।
स्याद्वाद सूक्ति मणि-दर्पण वर्द्धमान,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।९।।
प्रालेय-नील हरि-तारुण पीत-भासं,
यन्मूर्ति-मव्यय सुखावसथं मुनीन्द्राः।
ध्यायन्ति सप्तमि-शतं जिन-वल्लभानां,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।१०।।
सुप्रभातं सुनक्षत्रं, माङ्गल्यं परिकीर्तितम्।
चतुर्विंशति तीर्थानां, सुप्रभातं दिने दिने।।११।।
सुप्रभातं सुनक्षत्रं, श्रेयः प्रत्यभिनन्दितम्।
देवता ऋषयः सिद्धाः, सुप्रभातं दिने दिने।।१२।।
सुप्रभातं तवैकस्य, वृषभस्य महात्मनः।
येन प्रवर्तितं तीर्थं, भव्यसत्त्व सुखावहम्।।१३।।
सुप्रभातं जिनेन्द्राणां, ज्ञानोन्मीलितचक्षुषाम्।
अज्ञानतिमिरांधानां, नित्यमस्तमितो रविः।।१४।।

सुप्रभातं जिनेन्द्राय वीरः कमललोचनः।
येन कर्माटवीदग्धा, शुक्लध्यानोग्र वह्निना।। १५।।
सुप्रभातं सुनक्षत्रं, सुकल्याणं सुमङ्गलम्।
त्रैलोक्यहितकर्तॄणां, जिनानामेव शासनम्।। १६।।

।। इति सुप्रभात-स्तोत्रम्।।

आचार्य-वन्दना

श्रीसिद्धभक्ति

अथ पौर्वाह्णिक (आपराह्णिक) आचार्य वन्दनाक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकलकर्मक्षयार्थं, भावपूजावन्दना-स्तवसमेतं श्रीसिद्धभक्ति कार्योत्सर्गं करोम्यहम्।

सम्मत्त-णाण-दंसण-वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरु-लघु-मव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं।। १।।
तव सिद्धे णय-सिद्धे संजम-सिद्धे चरित्त-सिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमंसामि।। २।।

इच्छामि भंते! सिद्ध भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण - सम्मदंसण - सम्मचरित्त - जुत्ताणं, अट्ठविहकम्म-विप्पमुक्काणं, अट्ठगुण-संपण्णाणं, उड्ढलोय-मत्थयम्मि पयट्ठियाणं, तवसिद्धाणं, णयसिद्धाणं, संजमसिद्धाणं, चरित्त-सिद्धाणं, अतीदाणागदवट्टमाण-कालत्तय-सिद्धाणं, सव्व-सिद्धाणं, णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि, वंदामि, णमंमासि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुण-संपत्ति होउ मज्झं।

श्री श्रुत भक्ति

अथ पौर्वाह्णिक (आपराह्णिक) आचार्यवन्दनाक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं, भाव-पूजा-वंदना-स्तव-समेतं श्रीश्रुतभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

कोटीशतं द्वादश चैव कोट्यो, लक्षाण्यशीतिस्त्र्यधिकानि चैव।
पञ्चाशदष्टौ च सहस्रसंख्य-मेतच्छ्रुतं पञ्चपदं नमामि।। १।।

अरहंत-भासियत्थं गणहर-देवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भत्तिजुत्तोसुद-णाण-महोवहिं सिरसा।। २।।

इच्छामि भंते ! सुदभति काउस्सग्गो कओ, तस्सालोचेउं अंगोवंगपइण्णयपाहुडयपरियम्मसुत्तपढमाणिओगपुव्वगयचूलिया चेव सुत्तत्थयथुइधम्मकहाइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

आचार्य भक्ति

अथ पौर्वाह्णिक (आपराह्णिक) आचार्य वन्दनाक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकलकर्मक्षयार्थं, भावपूजावन्दना स्तवसमेतं, श्री आचार्य भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

श्रुतजलधिपारगेभ्यः, स्वपरमतविभावना-पटुमतिभ्यः
सुचरित-तपोनिधिभ्यो, नमो गुरुभ्योगुण-गुरुभ्यः।।१।।
छत्तीसगुण-समग्गे, पञ्च-विहाचार-करण-संदरिसे।
सिस्साणुग्गह-कुसले, धम्माइरिए सदा वन्दे।।२।।
गुरु-भत्ति संजमेण य, तरन्ति संसार-सायरं घोरम्।
छिण्णंति अट्ठ-कम्मं, जम्मण-मरणंण पावेंति।।३।।
ये नित्यंव्रत-मन्त्रहोम-निरता, ध्यानाग्नि-होत्राकुलाः।
षट्कर्माभि-रतास्तपोधनधनाः, साधु-क्रियाः साधवः।।
शील-प्रावरणा-गुणप्रहरणाश्-चन्द्रार्कतेजोऽधिकाः।
मोक्ष-द्वार-कपाट-पाटनभटाः, प्रीणन्तु मां साधवः।।४।।
गुरवः पांतु नो नित्यं, ज्ञान-दर्शन-नायकाः।
चारित्रार्णव - गम्भीरा, मोक्ष - मार्गोपदेशकाः।।५।।

इच्छामि भंते! आयरियभत्तिकाउस्सग्गो कओ, तस्सालोचेउं, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचारित्त-जुत्ताणं, पंच-विहाचाराणं, आयरियाणं आयारादिसुदणाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं तिरयणगुण-पालणरयाणं सव्वसाहूणं;

णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

(नोट : सुबह १८ बार शाम को ३६ बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

विद्यासागर-विश्व-वन्द्य-श्रमण, भक्त्या सदा संस्तुवे,
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं, सर्वार्थसिद्धिप्रदं।
ज्ञानध्यान-तपोभि-रक्तमुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रयं,
साकारं श्रमणं विशालहृदयं, सत्यं शिवं सुन्दरम्।।

आलोचना पाठ

बंदो पाँचों परम-गुरु, चौबीसों जिनराज।
करूँ शुद्ध आलोचना, शुद्धि करन के काज।।१।।
सुनिये जिन अरज हमारी, हम दोष किये अति भारी।
तिनकी अब निर्वृत्ति काजा, तुम सरन लही जिनराजा।।२।।
इक वे ते चउ इंद्री वा, मन रहित सहित जे जीवा।
तिनकी नहिं करुणा धारी, निरदइ ह्वै घात विचारी।।३।।
समरंभ समारंभ आरंभ , मन वच तन कीने प्रारंभ।
कृत कारित मोदन करिकैं, क्रोधादि चतुष्टय धरिकैं।।४।।
शत आठ जु इमि भेदनतैं, अघ कीने परिछेदन तैं।
तिनकी कहुँ कोलों कहानी, तुम जानत केवलज्ञानी।।५।।
विपरीत एकान्त विनयके, संशय अज्ञान कुनय के।
वश होय घोर अघ कीने, वचतैं नहिं जाय कहीने।।६।।
कुगुरुन की सेवा कीनी, केवल अदया करि भीनी।
या विधि मिथ्यात भ्रमायो, चहुँगति मधि दोष उपायो।।७।।
हिंसा पुनि झूठ जु चोरी, पर वनिता सों दृग जोरी।
आरंभ परिग्रह भीनो, पन पाप जु या विधि कीनो।।८।।
सपरस रसना घ्रानन को, चखु कान विषय सेवन को।
बहु करम किये मनमाने, कछु न्याय अन्याय न जाने।।९।।

फल पंच उदम्बर खाये, मधु मांस मद्य चित्त चाये।
नहिं अष्ट मूलगुण धारे, सेये कुव्यसन दुखकारे।।१०।।
दुइबीस अभख जिन गाये, सो भी निश-दिन भुंजाये।
कछु भेदाभेद न पायो, ज्यों त्यों करि उदर भरायो।।११।।
अनंतानु जु बंधी जानो, प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यानो।
संज्वलन चौकड़ी गुनिये, सब भेद जु षोडश मुनिये।।१२।।
परिहास अरति रति शोग, भय ग्लानि तिवेद संयोग।
पनबीस जु भेद भये इम, इनके वश पाप किये हम।।१३।।
निद्रा वश शयन कराई, सुपने मधि दोष लगाई।
फिर जागि विषय वन धायो, नाना विध विषफल खायो।।१४।।
आहार विहार नीहारा, इनमें नहिं जतन विचारा।
बिन देखी धरी उठाई, बिन शोधी वस्तु जु खाइ।।१५।।
तब ही परमाद सतायो, बहुविधि विकलप उपजाओ।।
कछु सुधि बुधि नाहिं रही है, मिथ्यामति छाय गई है।।१६।।
मरजादा तुम ढिग लीनी, ताहू में दोष जु कीनी।
भिन भिन अब कैसैं कहिये, तुम ज्ञान विषैं सब पइये।।१७।।
हा हा ! मैं दुठ अपराधी, त्रस-जीवन राशि विराधी।
थावर की जतन न कीनी, उर में करुणा नहिं लीनी।।१८।।
पृथिवी बहु खोद कराई, महलादिक जागां चिनाई।
पुनि विन गाल्यो जल ढोल्यो, पंखातैं पवन बिलोल्यो।।१९।।
हा हा ! मैं अदयाचारी, बहु हरित कार्य जु विदारी।
तामधि जीवन के संदा, हम खाये धरि आनंदा।।२०।।
हा हा ! परमाद बसाई, बिन देखे अगनि जलाई।
तामध्य जीव जे आये, ते हू परलोक सिधाये।।२१।।
बीध्यो अन राति पिसायो, ईंधन बिन सोधि जलायो।
झाड़ू ले जागां बुहारी, चींटी आदिक जीव विदारी।।२२।।

जल छानि जिवानी कीनी, सो हू पुनि डारि जु दीनी।
नहिं जल-थानक पहुंचाई, किरिया बिन पाप उपाई।।२३।।
जल मल मोरिन गिरवायो, कृमि-कुल बहु घात करायो।
नदियन बिच चीर धुवाये, कोसन के जीव मराये।।२४।।
अन्नादिक शोध कराई, तातें जु जीव निसराई।
तिनका नहिं जतन कराया, गरियालैं धूप डराया।।२५।।
पुनि द्रव्य कमावन काजै, बहु आरंभ हिंसा साजै।
किये तिसनावश अघ भारी, करुणा नहिं रंच विचारी।।२६।।
इत्यादिक पाप अनंता, हम कीने श्री भगवंता।
संतति चिरकाल उपाई, वाणी तैं कहिय न जाई।।२७।।
ताको जु उदय अब आयो, नाना विध मोहि सतायो।
फल भुंजत जिय दुख पावै, वचतैं कैसे करि गावै।।२८।।
तुम जानत केवल ज्ञानी, दुख दूर करो शिवथानी।
हम तो तुम शरण लही है, जिन तारन विरद सही है।।२९।।
इक गांव पती जो होवे, सो भी दुखिया दुख खोवै।
तुम तीन भुवन के स्वामी, दुख मेटहु अंतरजामी।।३०।।
द्रोपदि को चीर बढ़ायो, सीता-प्रति कमल रचायो।
अंजन से किये अकामी, दुख मेटो अंतरजामी।।३१।।
मेरे अवगुन न चितारो, प्रभु अपनो विरद सम्हारो।
सब दोष-रहित करि स्वामी, दुख मेटहु अंतरजामी।।३२।।
इंद्रादिक पदवी नहिं चाहूँ, विषयनि में नाहिं लुभाऊँ।
रागादिक दोष हरीजे, परमातम निज पद दीजे।।३३।।

दोहा

दोष-रहित जिनदेवजी, निज-पद दीज्यो मोय।
सब जीवन के सुख बढ़ै, आनंद मंगल होय।।
अनुभव माणिक पारखी, जौहरि आप जिनन्द।
ये ही वर मोहि दीजिये, चरण शरण आनन्द।।

सामायिक पाठ

भावना बत्तीसी

प्रेम भाव हो सब जीवों से, गुणी जनों में हर्ष प्रभो।
करुणा स्त्रोत बहे दुखियों पर, दुर्जन में मध्यस्थ विभो।। १।।
यह अनन्त बल शील आत्मा, हो शरीर से भिन्न प्रभो।
ज्यों होती तलवार म्यान से, वह अनन्त बल दो मुझको।। २।।
सुख दुख बैरी बन्धु वर्ग में काँच कनक में समता हो।
वन उपवन प्रासाद कुटी में, नहीं खेद नहिं ममता हो।। ३।।
जिस सुन्दरतम पथ पर चलकर, जीते मोह मान मन्मथ।
वह सुन्दर पथ ही प्रभु मेरा, बना रहे अनुशीलन पथ।। ४।।
एकेन्द्रिय आदिक प्राणी की, यदि मैंने हिंसा की हो।
शुद्ध हृदय से कहता हूँ वह, निष्फल हो दुष्कृत्य प्रभो।। ५।।
मोक्ष मार्ग प्रतिकूल प्रवर्तन, जो कुछ किया कषायों से।
विपथ गमन सब कालुष मेरे, मिट जावें सद्भावों से।। ६।।
चतुर वैद्य विष विक्षत करता, त्यों प्रभु ! मैं भी आदि उपान्त।
अपनी निन्दा आलोचन से, करता हूँ पापों को शान्त।। ७।।
सत्य अहिंसादिकव्रत में भी, मैंने हृदय मलीन किया।
व्रत विपरीत प्रवर्तन करके, शीलाचरण विलीन किया।। ८।।
कभी वासना की सरिता का, गहन सलिल मुझ पर छाया।
पी-पीकर विषयों की मदिरा, मुझमें पागलपन आया।। ९।।
मैंने छली और मायावी, हो असत्य आचरण किया।
परनिन्दा गाली चुगली जो, मुँह पर आया वमन किया।। १०।।
निरभिमान उज्जवल मानस हो, सदा सत्य का ध्यान रहे।
निर्मल जल की सरिता सदृश,हिय में निर्मल ज्ञान बहे।। ११।।
मुनि चक्री शक्री के हिय में,जिस अनन्त का ध्यान रहे।
गाते वेद पुराण जिसे वह, परम देव मम हृदय रहे।। १२।।

दर्शन ज्ञान स्वभावी जिसने, सब विकार ही वमन किये।
परम ध्यान गोचर परमातम, परम देव मम हृदय रहे।। १३।।
जो भव दुख का विध्वंसक है, विश्व विलोकी जिसका ज्ञान।
योगी जन के ध्यान गम्य वह, बसे हृदय में देव महान।। १४।।
मुक्तिमार्ग का दिग्दर्शक है, जनम मरण से परम अतीत।
निष्कलंक त्रैलोक्यदर्शी वह, देव रहे मम हृदय समीप।। १५।।
निखिल विश्व के वशीकरण वे, राग रहे ना द्वेष रहे।
शुद्ध अतीन्द्रिय ज्ञानस्वरूपी, परम देव मम हृदय रहे।। १६।।
देख रहा जो निखिल विश्व को, कर्म कलंक विहीन विचित्र।
स्वच्छ विनिर्मल निर्विकार वह, देव करे मम हृदय पवित्र।। १७।।
कर्म कलंक अछूत न जिसको, कभी छू सके दिव्य प्रकाश।
मोह तिमिर को भेद चला जो, परम शरण मुझको वह आप्त।। १८।।
जिसकी दिव्य ज्योति के आगे, फीका पड़ता सूर्य प्रकाश।
स्वयं ज्ञानमय स्व-पर प्रकाशी, परम शरण मुझको वह आप्त।। १९।।
जिसके ज्ञान रूप दर्पण में, स्पष्ट झलकते सभी पदार्थ।
आदि अन्त से रहित शान्त शिव, परम शरण मुझको वह आप्त।।२०।।
जैसे अग्नि जलाती तरु को, तैसे नष्ट हुए स्वयमेव।
भय, विषाद, चिन्ता नहीं जिनको,परम शरण मुझको वह देव।।२१।।
तृण चौकी शिल शैल शिखर नहीं, आत्म समाधि के आसन।
संस्तर, पूजा, संघ-सम्मिलन, नहीं समाधि के साधन।। २२।।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, विश्व मनाता है मातम।
हेय सभी हैं विषय वासना, उपादेय निर्मल आतम।। २३।।
बाह्य जगत कुछ भी नहीं मेरा, और न बाह्य जगत का मैं।
यह निश्चय कर छोड़ बाह्य को, मुक्ति हेतु नित स्वस्थ रमें।।२४।।
अपनी निधि तो अपने में है, बाह्य वस्तु में व्यर्थ प्रयास।
जग का सुख तो मृग तृष्णा है, झूठे हैं उसके पुरुषार्थ।। २५।।

अक्षय है शाश्वत है आत्मा, निर्मल ज्ञान स्वभावी है।
जो कुछ बाहर है, सब पर है, कर्माधीन विनाशी है।। २६।।
तन से जिसका ऐक्य नहीं हो, सुत तिय मित्रों से कैसे।
चर्म दूर होने पर तन से, रोम समूह रहे कैसे।। २७।।
महाकष्ट पाता जो करता, पर पदार्थ जड़-देह संयोग।
मोक्ष महल का पथ है सीधा,जड़-चेतन का पूर्ण वियोग।।२८।।
जो संसार पतन के कारण,उन विकल्प जालों को छोड़।
निर्विकल्प निर्द्वन्द आत्मा, फिर-फिर लीन उसी में हो।। २९।।
स्वयं किये जो कर्म शुभाशुभ, फल निश्चय ही वे देते।
करे आप, फल देय अन्य तो, स्वयं किये निष्फल होते।। ३०।।
अपने कर्म सिवाय जीव को, कोई न फल देता कुछ भी।
'पर देता है' यह विचार तज स्थिर हो, छोड़ प्रमादी बुद्धि।।३१।।
निर्मल, सत्य, शिवं सुन्दर है, अमितगति वह देव महान।
शाश्वत निज में अनुभव करते, पाते निर्मल पद निर्वाण।।३२।।
इन बत्तीस पदों से जो कोई,परमातम को ध्याते हैं।
साँची सामायिक को पाकर, भवोदधि तर जाते हैं।। ३३।।

आरती - पंचपरमेष्ठी

इहविधि मंगल आरती कीजै, पंच परमपद भज सुख लीजै।। टेक।
पहली आरती श्री जिनराजा, भवदधि पार उतार जिहाजा।। इह.
दूसरी आरती सिद्धन केरी, सुमरन करत मिटै भव फेरी।। इह.
तीसरी आरती सूरि मुनिन्दा, जनम-मरण दुख दूर करिन्दा।। इह.
चौथी आरती श्रीउवज्झाया, दर्शन देखत पाप पलाया।। इह.
पांचमी आरती साधु तिहारी, कुमति-विनाशन शिव अधिकारी।। इह.
छट्ठी आरति श्रीजिनवाणि, 'द्यानत' सुरग-मुकतिसुखदानी।। इह.
संध्या करके आरती कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।। इह.
सोन का दीप कपूर की बाती जग-मग ज्योति जलें सारी बाती।। इह.

आरती विद्यासागर जी

विद्यासागर की, गुण आगर की, शुभ मंगलदीप सजायके।
मैं आज उतारूँ आरतिया...। टेक।।
मल्लप्पा श्री, श्रीमती के गर्भ विषैं गुरु आये।
ग्राम सदलगा जन्म लिया है, सब जन मंगल गाये।
गुरुजी सब जन मंगल गाये।.......
न रागी की, न द्वेषी की, शुभ मंगल दीप सजायके।
मैं आज उतारूँ आरतिया....।। १।।
गुरुवर पाँच महाव्रत धारी, आतम ब्रह्म बिहारी।
खड्गधार शिव पथ पर चलकर, शिथिलाचार निवारी।।
गुरुजी शिथिलाचार निवारी।....
गृह त्यागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे
मैं आज उतारूँ आरतिया......।। २।।
गुरुवर आज नयन से लखकर, आलौकिक सुख पाया।
भक्ति भाव से आरति करके, फूला नहीं समाया।।
गुरुजी फूला नहीं समाया।......
ऐसे मुनिवर को, ऐसे ऋषिवर को, हो वन्दन बारम्बार।
मैं आज उतारूँ आरतिया....।। ३।।

आरती प्रमाणसागर जी

ओम जय प्रमाण सागर, मुनि जय प्रमाण सागर
चलते-फिरते तीरथ-२, आगम के आगर,
ओम जय प्रमाण......
हजारीबाग में जन्में, सोहनी के तारे,
माता सोहनी के तारे
पिता सुरेन्द्र जी सेठी-२ के घर में आये,
ओम जय प्रमाण...........

सोनागिर में देखो, मंगल घड़ी आई,
मंगल घड़ी आई
गुरु विद्यासागर से मुनि दीक्षा पाई,
ओम जय प्रमाण सागर, मुनि जय प्रमाण सागर
जीव दया करुणा का, करते आवाहन,
मुनिवर करते आवाहन
मूक पशु, प्राणी रक्षा में जीवन है अर्पण,
ओम जय प्रमाण.....
सबको सब कुछ देता, ये संत है अलबेला
संत है अलबेला
श्री सम्मेदशिखर में, भक्तों का मेला,
ओम जय प्रमाण........
गुरु विद्यासागर की, महिमा बिखराते,
महिमा बिखराते
मंगल प्रवचन करते, जिनवाणी गाते,
ओम जय प्रमाण सागर।

❇❇❇

प्रमाणसागर जी महाराज! आज थारी उतारूँ....
आरती उतारूँ, थारी मूरत निहारूँ...
तीर्थ बिहारी मुनिराज आज...

आत्म पिपासु ये श्रावक आये-२
अध्यात्म अमृत पाने को आये-२
बरसा दो अमृत आप-२
आज थारी उतारूँ...

कब से ये प्यासी हैं अखियाँ हमारी-२
वीतराग मूरत है प्यारी-२
सपना हुआ साकार-२
आज थारी उतारूँ...

प्रमाण गुरु की है महिमा न्यारी-२
इनके आशीष का अतिशय है भारी-२
ज्ञान का पाऊँ उपहार-२
आज थारी उतारूँ...

चरणों की रज को आज सिर पर लगाऊँ-२
जनम-मरण के कष्ट मिटाऊँ-२
मुक्ति का पाऊँ साम्राज्य-२
आज थारी उतारूँ...

❖❖❖

प्रमाण सागर की, गुणआगर की, शुभ मंगल दीप सजाय के
आज उतारूँ आरतिया-२
सुरेन्द्र कुमार श्री सोहनी देवी के गर्भ विषैं गुरु आये-२
नगर हजारीबाग जन्म लिया है, सब जन मंगल गाये-२
गुरुजी सब जन मंगल गाये,
न रागी की न द्वेषी की, शुभ मंगल दीप सजायके
आज उतारूँ आरितया-२
गुरुवर पाँच महाव्रत धारी, आत्म ब्रह्म बिहारी-२
खड्‌गधार शिवपथ पर चलकर, शिथिलाचार निवारी-२
गुरुजी शिथिलाचार निवारी
गृहत्यागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे
आज उतारूँ आरतिया...
गुरुवर आज नयन से लखकर, आलौकिक सुख पाया-२
भक्तिभाव से आरती करके, फूला नहीं समाया-२
ऐसे मुनिवर को, ऐसे ऋषिवर को, हो वन्दन बारम्बार हो
आज उतारूँ आरतिया...

❖❖❖

हे गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करने आये हैं,
हम वंदन करने आये हैं, आरती करने आये हैं।
तुम काम क्रोध मद लोभ छोड़, निज आतम को पहचाना है,
घर कुटुम्ब छोड़कर निकल पड़े, धर लिया दिगम्बर बाना है।
हे गुरुवर................

छोटी-सी आयु में स्वामी, विषयों से मन अकुलाया है,
सत् संयम शील साधना से, दृढ़ अपने मन को ठीना है,
हे गुरुवर................

कितनी भी भीषण ताप पड़े, हो क्षुधा तृषा की बाधायें,
स्थिर मन से सब सहते हैं, विपदायें कितनी भी आयें,
हे गुरुवर................

नहीं ब्याह किया, घरबार तजा, समता के दीप जलाये हैं,
हे महाव्रती संयमधारी, हम आरती करने आये हैं
हे गुरुवर................

❖❖❖

श्रद्धा का थाल सजाऊँ, ज्ञान का दीप जलाऊँ।
जगमग उतारूँ थारी आरती॥

ओ गुरुवर श्रावक उतारे थारी आरती...।
हजारी बाग में जन्म लिया, सब नर नारी हर्षाये।
सोनागिर की धरा धन्य हुई, जब देव नीर बरसाये॥
गुरुवर! प्यारी मूरत को ध्याऊँ, चरणों में वारी जाऊँ।
भक्ति करूँ मैं गुरुवर आपकी, ओ गुरुवर जगमग...॥ १॥

वीतराग पथ भाया तुमको छोड़ा घर परिवारा।
विद्या सिंधु से दीक्षा लेकर, रत्नत्रय को धारा॥
गुरुवर! ज्ञानी ध्यानी वैरागी, मुक्ति पथ के अनुरागी।
चरणों में आया लेके आरती, ओ ऋषिवर जगमग...॥ २॥

आत्म तत्त्व में लीन सदा हो स्व-पर भेद विज्ञानी।
जग में रहकर निज में रहते शांत मूर्ति वरदानी॥
गुरुवर! थारी तपस्या भारी, तुम हो शिव के अधिकारी।
थारा गुण गावें माता भारती। ओ मुनिवर जगमग...॥ ३॥

सब दुनिया जयकारा बोले, साँचा मन सूं ध्यावे।
दूर-दूर सूं दर्शन करवाँ, थारे शरणा आवे॥
गुरुवर! डगमग डोले है नैया, पकड़ो हमारी बैय्या।
पार लगा दो, मेरी नावड़ी॥ ओ यतिवर जगमग...॥ ४॥

❖❖❖

हे गुरुवर हम सब उतारें तेरी आरती,
हे ऋषिवर हम सब उतारें तेरी आरती,
ॐ जय गुरुवर कष्ट हरो, स्वामी जय गुरु कष्ट हरो
हम हैं चरण पुजारी, गुरुवर हमको नहीं बिसारो
हे गुरुवर..........

विश्वभ्रमण से थककर गुरुवर चरण शरण आया-२
ज्योतिपुंज के सन्मुख गुरुवर २, आत्म ज्योति लाया
दया धर्म उद्धारक गुरुवर, तुम सुख के दाता-२
भविजन के हो तुम तो गुरुवर, हम सबके त्राता
हे गुरुवर..........

परम शान्ति छवि धारी गुरुवर, ध्यान धरो उर में,
सुख मग मुझे दिखाओ गुरुवर पहुँचे शिवपुर में
हे गुरुवर..........

हम हैं दास तुम्हारे गुरुवर, तुम जीवन आशा,
गुरुवर हमें न भूलो तुम तो, पूरो अभिलाषा
हे गुरुवर..........

प्रार्थना

इतनी शक्ति हमें देना गुरुवर,
मन का विश्वास कमजोर हो ना।
हम चलें मोक्षमार्ग में हमसे,
भूलकर भी कोई भूल हो ना।
दूर अज्ञान के हों अंधेरे,
तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।
हर बुराई से बचते रहें हम,
तू हमें मोक्ष की साधना दे।
बैर हो ना किसी का किसी से,
भावना मन में बदले की हो ना।
हम चलें मोक्ष.....

हम ना सोचें हमे क्या मिला है,
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण।
फूल समता के बांटें सभी को,
सबका जीवन ही बन जाये मधुवन।
अपनी समता का जल तू बहा दे,
कर दे पावन हर एक मन का कोना।
हम चलें मोक्ष.....

श्रावकप्रतिक्रमण

समता सर्वभूतेषू, संयमः शुभभावना।
आर्त्तरौद्रपरित्यागस्तद्धि प्रतिक्रमणं मतम्।

सब जीवों पर साम्यभाव धारण करके शुभ भावनापूर्वक संयम पालते हुये, आर्त–रौद्र का त्याग प्रतिक्रमण कहलाता है।

हे जिनेन्द्र ! हे देवाधिदेव ! हे वीतरागी सर्वज्ञ हितोपदेशी अरिहन्त प्रभु। मैं

पापों के प्रक्षालन के लिए, पापों से मुक्त होने के लिए, आत्म उत्थान के लिए, आत्म जागरण के लिए प्रतिक्रमण करता हूँ। (इस प्रकार प्रतिज्ञा करके एक आसन से बैठकर प्रतिक्रमण प्रारंभ करें।)

पापी, दुरात्मा, जड़बुद्धि, मायावी, लोभी और राग-द्वेष से मलिन चित्तवाले मैंने जो दुष्कर्म किया है, उसे हे तीन लोक के अधिपति। हे जिनेन्द्र देव। निरन्तर समीचीन मार्ग पर चलने की इच्छा करने वाला मैं आज आपके पादमूल में निन्दापूर्वक उसका त्याग करता हूँ।

हाय मैंने शरीर से दुष्टकार्य किया हे, हाय मैंने मन से दुष्ट विचार किया है, हाय मैंने मुख से दुष्ट वचन बोला है। उसके लिए मैं पश्चाताप करता हुआ भीतर ही भीतर जल रहा हूँ।

निन्दा और गर्हा से युक्त होकर द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावपूर्वक किये गये अपराधों की शुद्धि के लिए मैं मन, वचन और काय से प्रतिक्रमण करता हूँ।

समस्त संसारी जीवों की सर्व योनियाँ (जातियाँ) चौरासी लाख हैं एवं सर्व संसारी जीवों के सर्व कुल एक सौ साढ़े निन्यानवे (१९९-१/२) लाख करोड़ होते हैं, इनमें उपस्थित जीवों की विराधना की हो एवं इनके प्रति होने वाले राग द्वेष से जो पाप लगे हों - तस्स मिच्छा में दुक्कडं (तत्सम्बन्धी मेरा दृष्कृत मिथ्या हो)

जो एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय तथा पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक जीव हैं, इनका जो उत्तापन, परितापन, विराधन और उपघात किया हो, कराया हो और करने वाले की अनुमोदना की हो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

सूक्ष्म, बादर-पर्याप्तक, निर्वृत्त्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक जीवों में से किसी भी जीव की विराधना की हो - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

एकान्त, विपरीत, संशय, वैनयिक और अज्ञान - इन पांच प्रकार के मिथ्यामार्ग और उनके सेवकों की मन-वचन से प्रशंसा की हो-तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

जिनदर्शन, जलगालन, रात्रिभोजनत्याग, पाँच उदुम्बर त्याग, मद्य त्याग, मांस

त्याग, मधुत्याग और जीवदया पालन – इन आठ श्रावक के मूलगुणों में अतिचार के द्वारा जो पाप लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

हे भगवन् ! मूलगुणों के अंतर्गत जिनदर्शन व्रत पालन में प्रमाद किया हो, अविनय से दर्शन किया हो तथा दर्शन या पूजन करते समय मन, वचन, काय की शुद्धि नहीं रखी हो, जिनदर्शन व्रत पालन करते हुये जिनमार्ग में शंका की हो, शुभाचरण पालन कर संसार–सुख की वांछा की हो, धर्मात्माओं के मलिन शरीर को देखकर ग्लानि की हो, मिथ्यामार्ग और उसके सेवन करने वालों की मन से प्रशंसा की हो तथा मिथ्यामार्ग की वचन से स्तुति की हो, इत्यादि अतिचार अनाचार दोष लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

हे नाथ ! मूलगुणों के अंतर्गत जलगालन व्रत पालन में प्रमाद किया हो, जल छानने के ४८ मिनट बाद उसे फिर नहीं छानकर उसी का उपयोग किया हो, प्रमाण से छोटे, इकहरे, मलिन जीर्ण एवं सछिद्र वस्त्र से जल छाना हो, गर्म पानी की मर्यादा समाप्त हो जाने पर उसका उपयोग किया हो, छानने से शेष बचे जल को और जीवानी को यथास्थान (कड़े वाली बाल्टी से कुओं में) न पहुँचाया हो उसे नाली आदि में डाल दिया हो, तथा जीवानी की सुरक्षा में या पानी छानने की विधि में प्रमाद किया हो इत्यादि अनाचार मुझे लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

हे देवाधिदेव ! मूलगुणों के अंतर्गत रात्रि भोजन त्याग व्रत में रात्रि में बने भोजन का, सूर्योदय से ४८ मिनट के भीतर या सूर्यास्त के एक मुहूर्त्त पूर्व तथा औषधि के निमित्त रात्रि को रस, फल आदि का सेवन किया हो, कराया हो या करते हुए अनुमोदना की हो, तज्जन्य अन्य भी अतिचार–अनाचार दोष लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

हे करुणा के सागर ! मूलगुणों के अंतर्गत पंच–उदम्बर फल त्याग व्रत में सूखे अथवा औषधि निमित्त उदम्बर फलों को, सर्व साधारण वनस्पति का, अदरक–मूली आदि अनन्तकायिक वनस्पति का, त्रस जीवों के आश्रयभूत वनस्पति का, बिना फाड़ किये सेमफली आदि एवं अनजान फलों का सेवन किया हो, कराया हो या करने वालों की अनुमोदना की हो, इत्यादि अतिचार–अनाचार दोष लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

हे दया के सागर ! मूलगुणों के अंतर्गत मद्यत्याग व्रत में मर्यादा के बाहर का अचार, मुरब्बा आदि सर्व प्रकारके सन्धानों का, दो दिन व दो रात्रि व्यतीत हुए दही, छाछ एवं काँजी आदि का, आसवों एवं अर्कों का तथा भांग, नागफेन, धतूरा, पोस्त का छिलका, चरस और गांजा आदि नशीले पदार्थों का स्वयं सेवन किया हो, कराया हो या सेवन करने वालों की अनुमोदना की हो तथा अन्य और भी जो अतिचार-अनाचार जन्य दोष लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

हे करुणा के सागर ! मूलगुणों के अंतर्गत मांस त्यागव्रत में चमड़े के बेल्ट, पर्स, जूता-चप्पल, घड़ी का पट्टा आदि का स्पर्श हो गया या चमड़े से आच्छादित अथवा स्पर्शित हींग, घी, तेल एवं जल आदि का, अशोधित भोजन का, जिसमें त्रस जीवों का संदेह हो ऐसे भोजन का, बिना छना हुआ अथवा विधिपूर्वक दुहरे छन्ने (वस्त्र) से नहीं छाना गया घी, दूध, तेल एवं जल आदि का, सड़े घुने हुये अनाज आदि का, शोधनविधि से अनभिज्ञ साधर्मी या शोधन-विधि से अपरिचित विधर्मी के हाथ से तैयार हुए भोजन का, बासा भोजन का, रात्रि भोजान का, चलित रस पदार्थों का, बिना दो फाड़ किये काजू, पुरानी मूंगफली, सेमफली एवं भिंडी आदि का और अमर्यादित दूध, दही तथा छांछ आदि पदार्थों का स्वयं सेवन किया हो, कराया हो या करते हुए ही अनुमोदना की हो, तज्जन्य अन्य जो भी अतिचार अनाचार दोष लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

हे परमपिता परमात्मा ! मूलगुणों के अंतर्गत मधुत्याग व्रत में औषधि के निमित्त मधु का, फलों के रसों का एवं गुलकन्द आदि स्वयं सेवन किया हो, कराया हो, करते हुए ही अनुमोदना की हो, तज्जन्य अन्य भी अतिचार-अनाचार दोष लगे हों - तस्स मिच्छा में दुक्कडं।

हे नित्य निरंजन देव ! मूलगुणों के अंतर्गत जीवदया व्रत पालन में प्रमाद किया हो, अज्ञान रखा हो, उपेक्षा की हो, बिना प्रयोजन जीवों को सताया हो तथा अंगोपांग छेदन किये हों, कराये हों या अनुमोदना की हो, तज्जन्य जो भी दोष लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

(नौ बार णमोकार मन्त्र का जाप करें)

जुआ, मांस, मदिरा, शिकार, वेश्यागमन, चोरी और परस्त्रीरमण इन सप्तव्यसन सेवन में जो पाप लगा हो – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

देव–दर्शन, पूजन, साधु उपासन–वैयावृत्ति, स्वाध्याय, संयमपालन, इच्छायें सीमित करना और अर्जित संपत्ति का सदुपयोग (दान देना) इन षडावश्यक पालन में अतिचारपूर्वक जो दोष लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

इष्टवियोग, अनिष्टसंयोग, पीड़ाचिन्तन और निदान – ये चार आर्तध्यान। हिंसानन्द, हिंसानन्द, मृषानन्द, चौर्यानन्द और परिग्रहानन्द – ये चार रौद्रध्यान द्वारा जो पाप लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

राजकथा, चोरकथा, स्त्रीकथा और भोजनकथा करने से जो पाप लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

जीवों को सताने वाला दुष्ट मन, दुष्ट वचन और दुष्ट काय – ये तीन दण्ड, माया, मिथ्या और निदान ये तीन शल्य और शब्द गारव, ऋद्धि गारव और सात गारव द्वारा जो पाप लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

आहार, भय, मैथुन और परिग्रह – इन चार संज्ञाओं के द्वारा जो पाप बन्ध हुआ हो – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

इहलोकभय, परलोकभय, मरणभय, वेदनाभय,अगुप्तिभय, अरक्षाभय (अत्राणभय) और अकस्मात् भय द्वारा जो पापबन्ध हुआ हो – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

(नौ बार णमोकार मन्त्र का जाप करें)

स्थूल हिंसाविरति व्रत का पालन करते हुए जीवों को मारा हो, बांधा हो, अंगोपांग छेदे हों, अधिक बोझ लादा हो, एवं अन्न–पान का निरोध किया हो, इत्यादि अनेक दोष कृत–कारित अनुमोदना से किया हो –तस्स मिच्छा मे दुक्कड़।

स्थूल चौर्यविरति व्रत के पालन करने में चोर द्वारा चुराया हुआ द्रव्य ग्रहण किया हो, राज्य के विरुद्ध कार्य किया हो, धरोहर हरण करने के भाव किये हों, तौलने के बाँट कमती या बढ़ती रखे हों और अधिक कीमती वस्तु में अल्प कीमती वस्तु

मिलाकर बेची हो एवं मन, वचन, काय एवं कृत–कारित अनुमोदना से, चोरी का प्रयोग बतलाने से जो दोष लगे हों –तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

स्थूल अब्रह्मविरति व्रत पालन करने में व्यभिचारिणी स्त्री के साथ आने–जाने का व्यवहार रखा हो, कुमारी, विधवा एवं सधवा आदि अपरिगृहीत स्त्रियों के साथ आने–जाने का लेन–देन का व्यवहार रखा हो, काम सेवन के अंगों को छोड़कर दूसरे अंगों से कुचेष्टाएं की हों, काम के तीव्र वेग से बीभत्स विचार बने हों और मन, वचन, काय और कृत, कारित, अनुमोदना से अन्य के पुत्र–पुत्रियों का विवाह किया हो, इस प्रकार जो भी दोष लगे हों –तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

स्थूल परिग्रह–परिमाण व्रत में मन, वचन, काय एवं कृत, कारित अनुमोदना से जमीन और मकान आदि के प्रमाण का उल्लंघन किया हो, गाय, बैल आदि धन, अनाज आदि धान्य, दासी–दास, चांदी–सोना, वस्त्र एवं बर्तन आदि के प्रमाण का उल्लंघन किया हो, तज्जन्य जो भी दोष लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

(नौ बार णमोकार का जाप करें)

दिग्व्रत, देशव्रत, अनर्थदण्डविरति व्रत – ये तीन गुणव्रत और भोग–परिमाणव्रत, परिभोगपरिमाणव्रत, अतिथिसंविभागव्रत, समाधिमरणव्रत, ये चार शिक्षाव्रत रूप बारह व्रतों में जो दोष लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

पाँच इन्द्रियों और मन को वश में न करने सो जो पाप लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

मोह के वशीभूत होकर अनेक प्रकार के उत्तमोत्तम वस्त्र एवं स्त्रियों को आकर्षित करने वाला शरीर का श्रृंगार किया हो, राग के उद्रेक से युक्त हँसी में अशिष्ट वचनों का प्रयोग किया हो और परस्पर प्रीति से रहने वालों के बीच में द्वेष किया हो, तज्जन्य जो दोष लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

तप और स्वाध्याय से हीन असम्बद्धप्रलाप करने में, अन्यथा पढ़ने–पढ़ाने से एवं अन्यथा ग्रहण (सुने) करने से जो दोष लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

मुनि, आर्यिका, श्रावक और श्राविका की किसी भी प्रकार से निन्दा की हो, कराई हो, सुनी हो, सुनाई हो इससे जो पाप लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

साधुओं वा साधर्मियों से कटु वचन बोला हो एवं आहार दान देने में प्रमाद करने से जो दोष लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

देव–शास्त्र–गुरु की अविनय एवं आसादना से जो पाप लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

पाश्चात्य वेशभूषा का उपयोग कर टी.वी. आदि देखकर एवं उपन्यास आदि पढ़कर शील में जो पाप लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

उच्च कुलों को गर्हित कुल बनाने में कृत–कारित–अनुमोदना से सहयोग देने में जो पाप लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

चलने–फिरने, शरीर को हिलने–हिलाने, उठने–बैठने, छींकने–खांसने, सोने, जम्हाई लेने और मार्ग चलते–चलाने में, देखे–अनदेखे तथा जाने–अनजाने में जो दोष लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

किसी भी जीव को मैंने दबा दिया हो, कुचल दिया हो, घुमा दिया हो, भयभीत कर दिया हो, त्रास दिया हो, वेदना पहुँचाई हो, छेदन–भेदन कर दिया हो, अथवा किसी प्रकार से भी कष्ट पहुँचाया हो – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

जाने–अनजाने में और भी जो दोष लगे हों – तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

हा दुट्ठकयं हा दुट्ठचिंतियं, भासियं च हा दुट्ठं।
अंतो अंतो डज्झमि पच्छत्तावेण वेयंतो।।

हाय–हाय। मैंने दृष्ट कर्म किये, मैंने दुष्ट कर्मों का बार–बार चिन्तवन किया, मैंने दुष्ट मर्म–भेदक वचन कहे – इस प्रकार मन, वचन और काय की दुष्टता से मैंने अत्यन्त कुत्सित कर्म किये। उन कर्मों का अब मुझे अत्यन्त पश्चाताप है।

हे प्रभु ! मेरा किसी के भी साथ राग नहीं है, द्वेष नहीं है, बैर नहीं है तथा क्रोध, मान, माया, लोभ नहीं है, अपितु सर्व जीवों के प्रति उत्तम क्षमा है।

जब तक मोक्षपद की प्राप्ति न हो तब तक भव-भव में मुझे शास्त्रों के पठन-पाठन का अभ्यास, जिनेन्द्र पूजा, निरन्तर श्रेष्ठ पुरुषों की संगति, सच्चरित्र, सम्पन्न पुरुषों के गुणों की चर्चा, दूसरों के दोष कहने में मौन, सभी प्राणियों के प्रति प्रिय और हितकारी वचन एवं आत्मकल्याण की भावना (प्रतीत) ये सब वस्तुएँ प्राप्त होती रहें।

हे जिनेन्द्र ! मुझे जब तक मोक्ष की प्राप्ति न हो, तब तक आपके चरण मेरे हृदय में और मेरा हृदय आपके चरणों में लीन रहे।

हे भगवन् ! मेरे दु:खों का क्षय हो, कर्मों का नाश हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो, शुभगति हो, सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो, समाधिमरण हो और श्री जिनेन्द्र के गुणों की प्राप्ति हो- ऐसी मेरी भावना है, ऐसी मेरी भावना है, ऐसी मेरी भावना है।

सामायिक - महिमा

हे भगवन् ! ऊर्ध्वलोक में अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विराजमान हैं उनके चरण कमलों में हमारा मन से, वचन से, काय से, अत्यन्त भक्ति भाव से, महाभक्ति भाव से सबको एक साथ, प्रत्येक को अलग-अलग बारम्बार बारम्बार नमस्कार हो।

हे भगवन् ! पूर्वदिशा में विदिशाओं में जितने भी अरिहन्त, सिद्ध साधु विराजमान है, जितने भी कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय हैं, जितने भी सिद्धक्षेत्र हैं, अतिशय क्षेत्र हैं उन सबको हमारा मन से, वचन से, काय से, अत्यन्त भक्ति भाव से, महाभक्ति भाव से सबको एक साथ, प्रत्येक को अलग-अलग बारम्बार बारम्बार नमस्कार हो।

हे भगवन् ! दक्षिणदिशा में विदिशाओं में जितने भी अरिहन्त, सिद्ध, साधु विराजमान है, जितने भी कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय हैं, जितने भी सिद्धक्षेत्र हैं, अतिशय क्षेत्र हैं उन सबको हमारा मन से, वचन से, काय से, अत्यन्त भक्ति

भाव से, महाभक्ति भाव से सबको एक साथ, प्रत्येक को अलग–अलग बारम्बार बारम्बार नमस्कार हो।

हे भगवन् ! पश्चिमदिशा में विदिशाओं में जितने भी अरिहन्त, सिद्ध, साधु विराजमान है, जितने भी कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय हैं, जितने भी सिद्धक्षेत्र हैं, अतिशय क्षेत्र हैं उन सबको हमारा मन से, वचन से, काय से, अत्यन्त भक्ति भाव से, महाभक्ति भाव से सबको एक साथ, प्रत्येक को अलग–अलग बारम्बार बारम्बार नमस्कार हो।

हे भगवन् ! उत्तरदिशा में विदिशाओं में जितने भी अरिहन्त, सिद्ध,साधु विराजमान हैं, जितने भी कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय हैं, जितने भी सिद्धक्षेत्र हैं, अतिशय क्षेत्र हैं उन सबको हमारा मन से, वचन से, काय से, अत्यन्त भक्ति भाव से, महाभक्ति भाव से सबको एक साथ, प्रत्येक को अलग–अलग बारम्बार बारम्बार नमस्कार हो।

इस प्रकार चारों दिशाओं में खड़े होकर नमस्कार करें।

पश्चात् पद्मासन मुद्रा में बैठकर इस प्रकार संकल्प करें।

हे भगवन्। जब तक मैं सामायिक अवस्था में रहूंगा तब तक सम्पूर्ण सांसारिक आरंभ का त्याग करता हूँ।

जब तक मैं सामायिक अवस्था में रहूँगा तब तक इस शरीर पर जितना परिग्रह है उसे छोड़ अन्य सम्पूर्ण परिग्रह का त्याग करता हूँ।

जब तक मैं सामायिक अवस्था में रहूँगा, तब तक सामायिक शब्दों को छोड़ अन्य सांसारिक चर्चाओं का त्याग कर मौनपूर्वक सामायिक ग्रहण करता हूँ।

समाधि-भक्ति

तेरी छत्रच्छाया भगवन् ! मेरे शिर पर हो।
मेरा अन्तिम मरणसमाधि, तेरे दर पर हो।।
जिनवाणी रसपान करूँ मैं, जिनवर को ध्याऊँ।
आर्यजनों की संगति पाऊँ, व्रत-संयम चाहूँ।।
गुणीजनों के सद्गुण गाऊँ, जिनवर यह वर दो।
मेरा अन्तिम मरणसमाधि, तेरे दर पर हो।। १।।
तेरी...........।।

परनिन्दा न मुँह से निकले, मधुर वचन बोलूँ।
हृदय तराजू पर हितकारी, सम्भाषण तौलूँ।।
आत्म-तत्त्व की रहे भावना, भाव विमल भर दो।
मेरा अन्तिम मरणसमाधि, तेरे दर पर हो।। २।।
तेरी.............।।

जिनशासन में प्रीति बढ़ाऊँ, मिथ्यापथ छोड़ूँ।
निष्कलंक चैतन्य भावना, जिनमत से जोड़ूँ।।
जन्म-जन्म में जैनधर्म, यह मिले कृपा कर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।। ३।।
तेरी..............।।

मरण समय गुरु, पाद-मूल हो सन्त समूह रहे।
जिनालयों में जिनवाणी की, गंगा नित्य बहे।।
भव-भव में संन्यास मरण हो, नाथ हाथ धर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।। ४।।
तेरी..............।।

बाल्यकाल से अब तक मैंने, जो सेवा की हो।
देना चाहो प्रभो ! आप तो, बस इतना फल दो।।
श्वांस-श्वांस, अन्तिम श्वासों में, णमोकार भर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।। ५।।
तेरी................।।

विषय कषायों को मैं त्यागूँ, तजूँ परिग्रह को।
मोक्षमार्ग पर बढ़ता जाऊँ, नाथ अनुग्रह हो।।
तन पिंजर से मुझे निकालो, सिद्धालय घर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।। ६।।
तेरी............।।

भद्रबाहु सम गुरु हमारे, हमें भद्रता दो।
रत्नत्रय संयम की शुचिता, हृदय सरलता दो।।
चन्द्रगुप्त सी गुरु सेवा का, पाठ हृदय भर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।। ७।।
तेरी................।।

अशुभ न सोचूँ, अशुभ न चाहूँ, अशुभ नहीं देखूँ।
अशुभ सुनूँ ना, अशुभ कहूँ ना, अशुभ नहीं लेखूँ।।
शुभ चर्या हो, शुभ क्रिया हो, शुद्ध भाव भर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।। ८।।
तेरी...............।।

तेरे चरण कमल द्वय, जिनवर ! रहें हृदय मेरे।
मेरा हृदय रहे सदा ही, चरणों में तेरे।।
पण्डित-पण्डित मरण हो मेरा, ऐसा अवसर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।। ९।।
तेरी..............।।

मैंने जो जो पाप किए हों, वह सब माफ करो।
खड़ा अदालत में हूँ स्वामी, अब इंसाफ करो।।
मेरे अपराधों को गुरुवर, आज क्षमा कर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।। १०।।
तेरी...............।।

दुःख नाश हो, कर्म नाश हो, बोधि-लाभ वर दो।
जिन गुण से प्रभु आप भरे हो, वह मुझमें भर दो।।

यही प्रार्थना, यही भावना, पूर्ण आप कर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।। ११।।
तेरी............।।

तेरी छत्रच्छाया भगवन् ! मेरे शिर पर हो।
मेरा अन्तिम मरणसमाधि, तेरे दर पर हो।।

जिनवाणी-भक्ति

श्वांस-श्वांस में तुझे बसायें, हे जिनवाणी माँ।
बार-बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।
मूल अर्थ कर्त्ता हैं तेरे, तीर्थंकर स्वामी।
उत्तर ग्रन्थ रचयिता तेरे, श्री गणधर स्वामी।।
हम सब श्रोता सुनने आये, श्री जिनवाणी माँ।
बार-बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।
श्वांस................।। १।।

ज्ञान सूर्य सम निर्मल बनता, तेरी वाणी से।
चारित चन्दा सा उज्जवल हो, तेरी वाणी से।।
अखिल विश्व कल्याण कारिणी, आगम वाणी माँ।
बार-बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।
श्वांस................।। २।।

ग्वाला को भी कुन्दकुन्द सा, संत बनाती माँ।
ग्रन्थ सिखा निर्ग्रन्थ बना, अरिहन्त बनाती माँ।।
तीर्थंकर की दिव्य देशना, मोक्ष दायिनी माँ।
बार-बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।
श्वांस................।। ३।।

तेरे अमृत अक्षर माता ! अक्षय पद दाता।
तेरे पद हर आपद हरते, हैं शिव पद दाता।।
ओम् नमः अर्हं सिखलाती, अर्हद् वाणी माँ।
बार-बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।
श्वांस................।। ४।।

अहो भारती सरस्वती माँ, सरस्वती माता।
वीर हिमाचल से निकली हो, ज्ञान सलिल दाता।।
पाप-ताप संताप हारिणी, जग कल्याणी माँ।
बार-बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।
श्वांस................।। ५।।

दर्शन-भावना

पुनः दर्शन-पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।
यही है भावना स्वामी-यही है प्रार्थना स्वामी।।
तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, कहाँ हम चैन पायेंगे।
प्रभुवर ! याद आयेंगी - नयन आँशू बहायेंगे।।
निकाली नीर से मछली, तड़पती चेतना स्वामी।
पुनः दर्शन-पुनः दुर्शन-पुनः दर्शन मिल स्वामी।।
बिना स्वाति की बूँदों के, पपीहा प्राण तज देगा।
कृपा के मेघ बरसा दो, जिनेश्वर नाम रट लेगा।।
निहारे चातका तुमको, यही रटना रटे स्वामी।
पुनः दर्शन पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।।
विरह की वेदना स्वामी-तुम्हें कैसे सुनायें हम।
चाँद बिन ज्यों चकोरे सा-हमारा आज ये तन-मन।।
शिशु माता से बिछड़ा ज्यों, रुदन करता रहे स्वामी।
पुनः दर्शन पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।।
नहीं सुर सम्पदा चाहूँ - नहीं मैं राजपद चाहूँ।
यही है कामना मेरी, प्रभु तुमसा ही बन जाऊँ।।
मिले निर्वाण न जौलों, रहो नयनों के पथगामी।
पुनः दर्शन पुनः दर्शन पुनः दर्शन मिले स्वामी।।

॥ इति शुभम्॥